Daksh®

No. 1 BEST SELLER

RSSB द्वारा आयोजित

A Complete Guide (Covering 100% Syllabus)

NTT | ECCE

(Nursery Teacher Training) | (Early Childhood Care and Education)

पूर्व प्राथमिक अध्यापक

प्रतियोगी परीक्षा

Salient Features

- वर्तमान परीक्षाओं में पूछे जा रहे नवीनतम पैटर्न पर आधारित प्रश्नों का समावेश
- विगत वर्षों के प्रश्नपत्रों के प्रश्न एवं उनके विश्लेषण पर आधारित गाइड
- नवीनतम पाठ्यक्रम में शामिल प्रत्येक टॉपिक पर आधारित प्रश्नों का समावेश
- कम समय में निश्चित सफलता हेतु एकमात्र गाइड

दक्ष®

Buy Online at :
WWW.DAKSHBOOKS.COM

Daksh®

COVERING 100% SYLLABUS

RSSB द्वारा आयोजित

A Complete Guide

No.1 BEST SELLER

NTT | ECCE

(Nursery Teacher Training) | (Early Childhood Care and Education)

पूर्व प्राथमिक अध्यापक

प्रतियोगी परीक्षा

- कम समय में 300 अंकों की तैयारी के साथ निश्चित सफलता।
- नवीनतम RSSB परीक्षा पैटर्न पर आधारित, कठिन प्रश्नों का सटीक समाधान।
- RSSB की अन्य परीक्षाओं में पूछे गए अध्यायवार महत्त्वपूर्ण प्रश्नों का अद्वितीय संग्रह।

लेखकगण

रामजीलाल यादव | आचार्य संदीप मालाकार

NET, साहित्याचार्य, शिक्षा शास्त्री

DAKSH PUBLICATIONS

(A Unit of College Book Centre)

WWW.DAKSHBOOKS.COM

प्रकाशक :
परितोष वर्धन जैन
कॉलेज बुक सेन्टर
A-19, सेठी कॉलोनी,
जयपुर-302 004

© सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

DTP :
Pooja Enterprises
Jaipur

Printed by :
K.D. Printers
Jaipur

Code No.: D-973

Scheme of Examination and Syllabus for
NTT
पाठ्यक्रम

(i)	राजस्थान का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक ज्ञान, राजस्थानी भाषा का ज्ञान	100 अंक
(ii)	राजस्थान का सामान्य ज्ञान, शैक्षिक परिदृश्य, निशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियम, 2009 और समसामयिक मामले।	80 अंक
(iii)	प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा (नर्सरी अध्यापक के प्रशिक्षण पर आधारित) से सम्बन्धित विषय-वस्तु (क) बाल विकास (0 से 6 वर्ष); (ख) शारीरिक विकास; (ग) सामाजिक और भावनात्मक विकास; (घ) भाषाई विकास; (ङ) संज्ञानात्मक विकास; (च) सृजनात्मक विकास; (छ) दिव्यांगजन बच्चे, मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता; (ज) अधिगम-प्रेरणा, हित, अभ्यास एवं आचरण; (झ) अध्यापन अधिगम प्रक्रिया एवं प्रणाली विज्ञान; (ञ) बच्चों की उपलब्धियों का निर्धारण एवं मूल्यांकन।	100 अंक
(iv)	शिक्षा मनोविज्ञान	10 अंक
(v)	सूचना प्रौद्योगिकी	10 अंक

PATTERN OF QUESTION PAPER

1. Maximum Marks — 300
2. Duration of Paper — 3 (Three) Hours
3. There will be 150 questions of multiple choice (Objective Type), carrying equal marks.
4. There will be negative marking. 1/3 mark will be deducted for each wrong answer.

● प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इस पुस्तक के किसी भी अंश का किसी भी प्रणाली के सहारे पुन:उत्पत्ति का प्रयास अथवा किसी भी तकनीकी तरीके (इलेक्ट्रॉनिक, मैकेनिकल, फॉटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, डिजिटल, वेब) के माध्यम से अथवा इस पुस्तक का नाम, टाईटल, चित्र, रेखाचित्र, नक्शे, डिजाईन, कवर डिजाईन, सैटिंग, शिक्षण-सामग्री, विषय-वस्तु, पूर्ण या आंशिक रूप से किसी भी भाषा में हूबहू या तोड़-मरोड़ कर या अदल-बदल कर प्रकाशन या वितरण नहीं किया जा सकता है। इस पुस्तक के पूर्ण प्रतिलिप्याधिकार *(Copyright)* प्रकाशक के पास सुरक्षित हैं।
● पुस्तक का कम्पोजिंग कार्य कम्प्यूटर द्वारा कराया गया है। पुस्तक के लेखन व प्रकाशन कार्य में लेखक, प्रूफ रीडर, कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं प्रकाशक द्वारा पूर्ण सावधानी बरतने के बावजूद भी अधूरी या पुरानी जानकारी का होना/कुछ ग़लतियों/कमियों का रह जाना मानवीय भूलवंश सम्भव है, जिसके लिए पुस्तक प्रकाशन से जुड़े मुद्रक, लेखक एवं प्रकाशक उत्तरदायी नहीं होंगे। पाठकों के सुझाव सादर आमंत्रित हैं।
● सभी विवादों का न्यायक्षेत्र जयपुर, राजस्थान होगा।

अनुक्रमणिका

अध्याय सं. | अध्याय का नाम .... पृष्ठ संख्या

Part-I

राजस्थान का भौगोलिक ज्ञान
[Geographical Knowledge of Rajasthan] 1–56

1 राजस्थान की अवस्थिति, विस्तार, सामान्य परिचय एवं भौतिक स्वरूप 1
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 9
2 जलवायु दशाएँ 10
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 12
3 प्राकृतिक वनस्पति 13
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 15
4 प्रमुख मृदाएँ 16
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 17
5 अपवाह तंत्र : नदियाँ, झीलें, बाँध 18
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 23
6 राजस्थान में सिंचाई परियोजनाएँ 24
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 26
7 राजस्थान में खनिज सम्पदा 27
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 30
8 पशु सम्पदा 31
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 33
9 वन्य जीव, अभयारण्य एवं संरक्षण 34
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 37
10 जनसंख्या : वितरण, वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात 38
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 40
11 प्रमुख जनजातियाँ 41
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 42
12 राजस्थान में पर्यटन 43
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 45
13 राजस्थान में कृषि 46
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 48
14 राजस्थान में उद्योग 49
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 51

अध्याय सं.	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
15	राजस्थान में ऊर्जा संसाधन	52
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	54
16	राजस्थान में परिवहन	55
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	56

Part-I

राजस्थान का ऐतिहासिक ज्ञान [Historical Knowledge of Rajasthan] 57–86

1	प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ और पुरातात्विक स्थल	57
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	60
2	प्रमुख शासक और उनकी उपलब्धियाँ	62
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	70
3	1857 का विद्रोह	71
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	72
4	किसान एवं जनजाति आंदोलन	73
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	75
5	प्रजामंडल आंदोलन	76
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	78
6	राजस्थान का एकीकरण	79
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	80
7	प्रमुख व्यक्तित्व	81
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	86

Part-I

राजस्थान का सांस्कृतिक ज्ञान [Cultural Knowledge of Rajasthan] 87–119

1	राजस्थान में स्थापत्य कला	87
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	92
2	राजस्थान की चित्रकला	93
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	95
3	लोक संगीत, वाद्य यंत्र, नृत्य, नाटक	96
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	100, 103
4	प्रमुख संत-सम्प्रदाय, लोक देवता एवं लोक देवियाँ	104
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	109
5	सामाजिक जीवन : वेशभूषा, आभूषण, मेले, त्यौहार, रीति-रिवाज और परम्पराएँ	110
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	115
6	राजस्थानी साहित्य	116
	❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर	119

अध्याय सं. अध्याय का नाम .... पृष्ठ संख्या

Part-I

राजस्थानी भाषा का ज्ञान [Knowledge of Rajasthani Language] 120–121

1 राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ 120
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 121

Part-II

राजस्थान का सामान्य ज्ञान [General Knowledge of Rajasthan] 122–169

1 राजस्थान के प्रतीक चिह्न 122
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 124
2 राजस्थान में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाएँ 125
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 126
3 राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र 127
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 128
4 राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल 129
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 133
5 राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी 135
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 140
6 राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल 141
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 146
7 राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था 147
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 164
8 राजस्थान में कल्याणकारी योजनाएँ 166
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 169

Part-II

शैक्षिक परिदृश्य [Educational Scenario] 170–194

1 शिक्षण अधिगम के नवाचार 170
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 177
2 राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार 178
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 182
3 विद्यालय प्रबंधन एवं सम्बन्धित समितियाँ 183
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 190
4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 (राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में) 191
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 194

अध्याय सं. अध्याय का नाम .... पृष्ठ संख्या

Part-II

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 [Right of Children to Free & Compulsory Education Act-2009] .. 195–200

1 निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 195
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 199

Part-III

प्रारम्भिक बाल्यावस्था शिक्षा [Early Childhood Education (ECE)] 201–296

1 बाल विकास (0 से 6 वर्ष) 201
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 211
2 शारीरिक विकास 213
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 227
3 सामाजिक और भावनात्मक विकास 229
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 238
4 भाषाई विकास 240
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 245
5 संज्ञानात्मक विकास 247
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 253
6 सृजनात्मक विकास 255
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 263
7 दिव्यांगजन बच्चे, मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता 265
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 276
8 अधिगम-प्रेरणा, हित, अभ्यास एवं आचरण 277
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 283
9 अध्यापन अधिगम प्रक्रिया एवं प्रणाली विज्ञान 286
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 289
10 बच्चों की उपलब्धियों का निर्धारण एवं मूल्यांकन 292
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 295

Part-IV

शिक्षा मनोविज्ञान [Education Psychology] 297–328

1 शिक्षा मनोविज्ञान 297
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 326

Part-V

सूचना प्रौद्योगिकी [Information Technology] 329–362

1 सूचना प्रौद्योगिकी 329
❖ बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर 361

1 राजस्थान की अवस्थिति, विस्तार, सामान्य परिचय एवं भौतिक स्वरूप

राजस्थान की अवस्थिति, विस्तार, सामान्य परिचय

- राजस्थान और इसके निकटवर्ती क्षेत्र को ऋग्वेद में **'ब्रह्मवर्त'** तथा वाल्मीकि कृत रामायण में **'मरूकान्तर'** नाम से पुकारा गया है।
- राजस्थान शब्द का प्राचीनतम अभिलेखीय साक्ष्य सिरोही के चावडा वंश के शासक वर्मलात के समय के **बसंतगढ़ शिलालेख** (वि.स. 682/625 ई.) में मिलता है, जिसमें **'राजस्थानीयादित्य'** शब्द प्रयुक्त हुआ है।
- साहित्यिक रूप से **'राजस्थान'** शब्द का सर्वप्रथम उल्लेख **'मुहणौत नैणसी री ख्यात'** में किया गया है। इसके अतिरिक्त 1731 ई. में वीरभान द्वारा रचित **'राजरूपक'** नामक ग्रन्थ में भी राजस्थान शब्द का उल्लेख मिलता है।
- भारतीय इतिहास में 7-12वीं शताब्दी का काल **'राजपूत काल'** कहलाता है। इस समय यहाँ अनेक राजपूत राजवंशों ने शासन किया।
- 1800 ई. में सर्वप्रथम **जॉर्ज थॉमस** द्वारा इस भू-भाग के लिए **'राजपूताना'** शब्द का प्रयोग किया गया
- ब्रिटिश काल में प्रसिद्ध अंग्रेज इतिहासकार **कर्नल जेम्स टॉड** ने 1829 ई. में प्रकाशित अपनी पुस्तक **'एनाल्स एंड एण्टीक्विटीज ऑफ राजस्थान'** (सेंट्रल एण्ड वेस्टर्न राजपूत स्टेट्स ऑफ इंडिया) में इस भू-भाग के लिए सर्वप्रथम **'राजस्थान'** शब्द का प्रयोग किया।
- कर्नल टॉड ने प्राचीन बहियों एवं दस्तावेजों के आधार पर **'रजवाड़ा'** एवं **'रायथान'** शब्दों का प्रयोग भी किया है।
- राजस्थान के एकीकरण की प्रक्रिया में दूसरे चरण (25 मार्च 1948) के दौरान रखे गए नाम **'पूर्व राजस्थान संघ'** में पहली बार राजस्थान शब्द जोड़ा गया। एकीकरण के चौथे चरण अर्थात 30 मार्च 1949 को राजस्थान एकीकरण का अधिकांश कार्य पूर्ण हो जाने के उपलक्ष्य में **'30 मार्च'** को **राजस्थान दिवस** घोषित किया गया।
- एकीकरण के छठे चरण के दौरान **26 जनवरी 1950** को राजस्थान शब्द को **संवैधानिक मान्यता** प्राप्त हुई एवं 1 नवम्बर 1956 को एकीकरण पूर्ण होने पर वर्तमान राजस्थान का भौगोलिक स्वरूप सामने आया।
- वर्तमान राजस्थान का निर्माण ऐतिहासिक घटनाक्रम का प्रतिफल है। प्राचीन व मध्यकाल में राजस्थान के भिन्न-भिन्न क्षेत्र अपने विशिष्ट प्रादेशिक पहचान बनाए हुए थे, जो निम्नलिखित तालिका से स्पष्ट हैं—

प्राचीन नाम	वर्तमान स्थान
यौद्धेय	गंगानगर के आसपास का क्षेत्र
अहिच्छत्रपुर	प्राचीन नागौर का क्षेत्र
गुर्जरत्रा	जोधपुर-पाली क्षेत्र
वल्ल/दुंगल/माड	जैसलमेर क्षेत्र
स्वर्णगिरी/जाबालीपुर	जालौर क्षेत्र
चन्द्रावती	सिरोही-आबू क्षेत्र
शिवि/मेदपाट	उदयपुर-चितौड़ क्षेत्र
वागड़	डूंगरपुर, बाँसवाड़ा का क्षेत्र
कांठल	प्रतापगढ़ (माही नदी का क्षेत्र)
मेवल/देवलिया	डूँगरपुर-बाँसवाड़ा के बीच का भाग
ऊपरमाल	भैंसरोडगढ़ से बिजौलिया तक का पठारी क्षेत्र
ढूंढ़ाड़	जयपुर के आसपास ढूंढ़ नदी का प्रवाह क्षेत्र
शूरसेन	भरतपुर-डीग-करौली-धौलपुर क्षेत्र
जांगल	बीकानेर व जोधपुर का उत्तरी भाग
शाकम्भरी	सांभर, अजमेर क्षेत्र
व्याघ्रवार	बाँसवाड़ा
पालन/दशपुर	झालावाड़ क्षेत्र
थली	चूरू-सरदार शहर क्षेत्र
श्रीमाल	बाड़मेर क्षेत्र
मेरवाड़ा	अजमेर, राजसमंद का मेर बाहुल्य क्षेत्र
मारवाड़	मुख्यतः जोधपुर संभाग
नेहड़	बाड़मेर, जालौर का कच्छ के रन को स्पर्श करता क्षेत्र, यहाँ समुद्र का जल लहराता था।
गोड़वाड़	पाली एवं दक्षिण-पूर्वी जोधपुर, बालोतरा, बाड़मेर व जालौर जिलों में लूणी नदी द्वारा निर्मित मैदानी क्षेत्र।
बांगड़	अरावली के पश्चिम में पाली, नागौर, डीडवाना-कुचामन, सीकर, झुंझुनूं जिलों का पुरानी जलोढ़ मिट्टी का क्षेत्र।
राठ क्षेत्र	यदुवंश द्वारा शासित बहरोड़, नीमराणा, मुण्डावर तथा कोटपूतली क्षेत्र।
शेखावाटी	सीकर, झुंझुनूँ, चूरू जिले।
तोरावाटी	सीकर, झुंझुनूँ जिलों में कांतली नदी अपवाह क्षेत्र।
हाड़ौती	कोटा-बूँदी-बारां-झालावाड़ क्षेत्र।
मालव देश	मालवा के पठार से लगा प्रतापगढ़ व झालावाड़ जिलों का क्षेत्र।
माळ	टोंक जिले का मालपुरा क्षेत्र।
खेराड़	जहाजपुर (भीलवाड़ा)।
डांग	करौली, सवाईमाधोपुर, धौलपुर का बीहड़ ग्रस्त क्षेत्र।

प्राचीन नाम	वर्तमान स्थान
ब्रज नगर	झालरापाटन कस्बा (झालावाड़)।
बृज नगर	बृज क्षेत्र U.P. से संलग्न भरतपुर का क्षेत्र।
मेवात	अलवर-भरतपुर का मेव बाहुल्य क्षेत्र।
देवड़ावाटी	आबू को छोड़कर शेष सिरोही रियासत।
बरड़	बूँदी जिले का दक्षिण-पश्चिमी पथरीला क्षेत्र।
राड़धरा	गुढामालाणी क्षेत्र (बाड़मेर)।
गौड़ाटी	मारोठ एवं निकटवर्ती क्षेत्र (नागौर)।
नरूखण्ड	लक्ष्मणगढ़ क्षेत्र (अलवर)।
नैहड़ा	थानागाजी, टहला, प्रतापगढ़ क्षेत्र (अलवर)।
पचवारा	लालसोट, रामगढ़ क्षेत्र (दौसा)।
मेरू	अरावली क्षेत्र का प्राचीन नाम।
सुजला क्षेत्र	सुजानगढ़-जसवंतगढ़-लांडनूँ क्षेत्र।

राजस्थान के महत्त्वपूर्ण तथ्य

- राजस्थान का राज्य वृक्ष .... —**खेजड़ी**
- राजस्थान का राज्य पुष्प .... —**रोहिड़ा**
- राजस्थान का राज्य पक्षी .... —**गोडावण**
- राजस्थान का राज्य पशु (वन्यजीव श्रेणी) .... —**चिंकारा**
- राजस्थान का राज्य पशु (पालतू जीव) .... —**ऊँट**
- राजस्थान का राज्य खेल .... —**बॉस्केटबॉल**
- राजस्थान (राज्य) स्थापना दिवस .... —**30 मार्च**
- राजस्थान का प्रवेश द्वार/पूर्वी द्वार .... —**भरतपुर**
- राजस्थान का सिंह द्वार .... —**अलवर**
- राजस्थान का स्कॉटलैण्ड .... —**अलवर**
- राजस्थान का गौरव .... —**चित्तौड़गढ़ दुर्ग**
- राजस्थान का शिमला..................... —**माउंट आबू (सिरोही)**
- राजस्थान का पेरिस.. —**जयपुर**
- गुलाबी नगरी (पिंक सिटी) .... —**जयपुर**
- औद्योगिक नगरी.. —**कोटा**
- वर्तमान नालन्दा, शिक्षा नगरी.............................. —**कोटा**
- प्राचीन भारत का टाटा नगर .... —**रैढ़ (टोंक)**
- राजस्थान की अणु शक्ति नगरी........ —**रावतभाटा (चित्तौड़गढ़)**
- राजस्थान का पंजाब (पाँच नदियों की भूमि) ... —**सांचोर (जालोर)**
- राजस्थान का नागपुर (संतरा उत्पादन)..................... —**झालावाड़**
- राजस्थान का भुवनेश्वर (स्थापत्य कला) ..... —**ओसियाँ (जोधपुर)**
- राजस्थान का धातु नगर (लघु लौह औजार निर्माण)........ —**नागौर**
- राजस्थान का खजुराहो (स्थापत्य कला) .... —**किराड़ू (बाड़मेर)**
- हाड़ौती का खजुराहो......................... —**भण्डदेवरा (बाराँ)**
- राजस्थान का मैनचेस्टर या वस्त्र नगरी .... —**भीलवाड़ा**
- राजस्थान का हरिद्वार .... —**मातृकुण्डिया (चित्तौड़गढ़)**
- जलमहलों की नगरी .... —**डीग**
- बावड़ियों का शहर .... —**बूँदी**
- राजस्थान की छोटी काशी .... —**बूँदी**
- भारत की छोटी काशी.. —**जयपुर**
- ग्रेनाइट नगरी (सिटी), ऋषि जाबलि की नगरी .... —**जालोर**
- सूर्य नगरी (सन सिटी) .... —**जोधपुर**
- पहाड़ों की नगरी .... —**डूँगरपुर**
- झीलों की नगरी .... —**उदयपुर**
- राजस्थान का कश्मीर .... —**उदयपुर**
- पूर्व का वेनिस .... —**उदयपुर**
- स्वर्ण नगरी .... —**जैसलमेर**
- रेगिस्तान का गुलाब/नखलिस्तान .... —**जैसलमेर**
- म्यूजियम सिटी/झरोखों की नगरी .... —**जैसलमेर**
- स्तम्भों का वन (मन्दिर) .... —**रणकपुर (पाली)**
- राजस्थान का जिब्राल्टर .... —**तारागढ़ (अजमेर)**
- थार की वैष्णों देवी.................... —**तनोट माता (जैसलमेर)**
- राजस्थान की वैष्णो देवी .... —**अर्बुदा देवी (माउंट आबू)**
- थार का घड़ा .... —**चाँधन नलकूप (जैसलमेर)**
- रेगिस्तान का सागवान .... —**रोहिड़ा**
- मरुगंगा, थार की जीवन रेखा .... —**इंदिरा गांधी नहर**
- मारवाड़ का अमृत सरोवर/मानसरोवर ..... —**जवाई बाँध (पाली)**
- मंकी वैली/तीर्थ गुरु/उत्तर तोताद्रि .... —**गलता (जयपुर)**
- राजस्थान का हेरिटेज तीर्थ/कोंकण तीर्थ .... —**पुष्कर (अजमेर)**
- राजस्थान का आधुनिक विकास तीर्थ .... —**सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)**
- शेखावाटी की स्वर्ण नगरी .... —**नवलगढ़ (झुंझुनूँ)**
- राजस्थान का बर्खोयान्सक (ठण्डा स्थान) —**माउण्ट आबू (सिरोही)**
- घण्टियों का शहर.................... —**झालरापाटन (झालावाड़)**
- राजस्थान का नंदनकानन.................. —**सिलीसेढ़ (अलवर)**
- भारत की महान दीवार .... —**कुंभलगढ़ दुर्ग का परकोटा**
- फाउंटेन व माउंटेन का शहर .... —**उदयपुर**
- व्हाइट सिटी .... —**उदयपुर**
- रेड डायमंड सिटी.. —**धौलपुर**
- मेरवाड़ा का कुंभ .... —**पुष्कर मेला**
- भारत की मोनालिसा .... —**बणी-ठणी, किशनगढ़ शैली**
- राजस्थान की कामधेनु .... —**राठी गाय**
- राजस्थान का ताजमहल .... —**जसवंत थड़ा (जोधपुर)**
- तीर्थस्थलों (तीर्थों) का मामा/तीर्थराज .... —**पुष्कर (अजमेर)**
- तीर्थ स्थलों (तीर्थों) का भांजा .... —**मचकुण्ड (धौलपुर)**
- दुर्गों का सिरमौर .... —**चित्तौड़गढ़**
- जागीरी किलों का सिरमौर . —**कुचामन दुर्ग (डीडवाना-कुचामन)**
- मरु आशा .... —**लूणी नदी**
- घोड़ों का तीर्थस्थल .... —**आलमजी का धोरा (बाड़मेर)**
- एकीकरण के अंतिम चरण के दौरान 1 नवम्बर, 1956 को वर्तमान राजस्थान की भौगोलिक सीमाएँ अस्तित्व में आयी। इस दौरान राजस्थान में कुल 26 जिले थे। **26वां** जिला **अजमेर** को बनाया गया था।
- 15 अप्रैल 1982 को भरतपुर से अलग होकर **धौलपुर** राज्य का **27वां** जिला बनाया गया।
- 10 अप्रैल 1991 को कोटा से पृथक करके **बारां** को राज्य का **28वां** जिला बनाया गया तथा इसी दिन जयपुर से अलग करके **दौसा** को राज्य का **29वां** जिला एवं उदयपुर से पृथक करके **राजसमंद** को राज्य का **30वां** जिला बनाया गया था। इसी क्रम में 12 जुलाई 1994 को श्रीगंगानगर से विभाजित करके **हनुमानगढ़** को राजस्थान का **31वां** जिला बनाया गया।
- इसी प्रकार 19 जुलाई 1997 को सवाई माधोपुर से अलग करके **करौली** को राज्य का **32वां** जिला बनाया गया तथा 26 जनवरी 2008 को तीन

जिलों (उदयपुर, बांसवाड़ा एवं चित्तौड़गढ़) का पुनर्गठन करके **प्रतापगढ़** को राजस्थान का **33वां** जिला बनाया गया था।

- राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2022-23 की बजट घोषणा की अनुपालना में 21 मार्च 2022 को नवीन जिलों के निर्माण की अभिशंषा देने हेतु सेवानिवृत आई.ए.एस. श्री रामलुभाया की अध्यक्षता में एक **उच्च स्तरीय समिति** गठित की गई थी।
- उक्त कमेटी की अंतरिम रिपोर्ट के आधार पर 17 मार्च 2023 को माननीय मुख्यमंत्री अशोक गहलोत द्वारा विधानसभा के बजट सत्र के दौरान **19 नए जिलों** एवं **3 नए संभागों** की घोषणा की गई थी।
- **रामलुभाया कमेटी** द्वारा 02 अगस्त 2023 को अपनी अंतिम रिपोर्ट राज्य सरकार को प्रस्तुत की गई, इस समिति की रिपोर्ट पर 04 अगस्त 2023 को मंत्रीमण्डल द्वारा विचार-विमर्श कर 19 नए जिलों एवं 3 नए संभागों के गठन का अनुमोदन किया गया।
- अनुमोदन के पश्चात् 06 अगस्त 2023 को राज्य सरकार द्वारा 19 नए जिलों एवं 3 संभागों की अधिसूचना जारी की गई है। यह अधिसूचना **07 अगस्त 2023** से प्रभावी हुई।
- राजस्थान सरकार द्वारा **29 दिसम्बर 2024** को जारी नवीन जिलों की अधिसूचना के अनुसार राजस्थान भू-राजस्व अधिनियम, 1956 की धारा 15 व 16 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग कर एवं इस संबंध में जारी पूर्व अधिसूचनाओं का अधिक्रमण करते हुए 5 अगस्त 2023 को गठित 19 जिलों में से **9 जिलों** को निरस्त करते हुए, इन जिलों में सम्मिलित उपखण्ड एवं तहसीलों को यथावत मूल जिलों में शामिल किया गया है।
- वर्तमान में प्रशासनिक दृष्टि से राजस्थान **7 संभागों, 41 जिलों** में बंटा हुआ है। इसके संभाग जयपुर, अजमेर, बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर, कोटा एवं भरतपुर है।
- वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार प्रदेश में **6,85,48,437** व्यक्ति निवास करते हैं। औसत जनसंख्या घनत्व **200 व्यक्ति प्रति वर्ग किलोमीटर** है।
- राजस्थान, भारत के उत्तर-पश्चिम में पतंगाकार विषमकोणीय चतुर्भुज रूप में **23°3' उत्तरी अक्षांश से 30°12' उत्तरी अक्षांश** तथा **69°30' पूर्वी देशांतर से 78°17' पूर्वी देशान्तर** के मध्य स्थित है।
- अक्षांशीय दृष्टि से राजस्थान उत्तरी गोलार्द्ध एवं देशांतरीय दृष्टि से पूर्वी गोलार्द्ध में स्थित है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम तक अधिकतम लम्बाई **869 किलोमीटर** तथा उत्तर से दक्षिण तक अधिकतम चौड़ाई **826 किलोमीटर** है।
- राजस्थान के पूर्व-पश्चिम और उत्तर-दक्षिण विस्तार में अंतर **43 किलोमीटर** है।
- राजस्थान की पूर्व से पश्चिम तथा उत्तर से दक्षिण चौड़ाई दर्शाने वाली दोनों रेखाएँ नागौर जिले में एक-दूसरे को काटती है।
- कर्क रेखा (23½° उत्तरी अक्षांश) राज्य के दक्षिण भाग (बाँसवाड़ा और डूँगरपुर जिलों) से होकर गुजरती है।
- **राजस्थान का विस्तार**—
  - **उत्तरी छोर**—कोणा गाँव, श्री गंगानगर (30°12' उत्तरी अक्षांश)
  - **दक्षिणी छोर**—बोरकुण्ड गाँव, बाँसवाड़ा (23°03' उत्तरी अक्षांश)
  - **पश्चिमी छोर**—कटरा गाँव, जैसलमेर (69°30' पूर्वी देशान्तर)
  - **पूर्वी छोर**—सिलॉन गाँव, धौलपुर (78°17' पूर्वी देशान्तर)
- राजस्थान का कुल क्षेत्र **3,42,239 वर्ग किलोमीटर (132140 वर्ग मील)** है, जो कि हमारे देश भारत का **10.43 प्रतिशत** है। क्षेत्रफल की दृष्टि से इसका भारत में प्रथम स्थान है।
- विश्व के प्रमुख देशों की तुलना में राजस्थान की स्थिति निम्नलिखित हैं—

क्र.स.	प्रमुख देश		राजस्थान की स्थिति
1.	जर्मनी	—	लगभग बराबर
2.	जापान/कांगो गणराज्य	—	लगभग बराबर
3.	ब्रिटेन	—	लगभग 2 गुना बड़ा
4.	इटली/फिलीपींस	—	लगभग बराबर
5.	इजराइल	—	लगभग 17 गुना बड़ा
6.	श्रीलंका	—	लगभग 5 गुना बड़ा
7.	भूटान	—	लगभग 9 गुना बड़ा

- राज्य की पश्चिमी सीमा का **1070 किलोमीटर** भाग पाकिस्तान से **अंतर्राष्ट्रीय सीमा (रेडक्लिफ लाइन)** बनाता है। यह सीमा उत्तर में हिन्दूमलकोट (श्रीगंगानगर) से शुरू होकर दक्षिण में बाखासर (शाहगढ़, बाड़मेर) तक फैली है। राज्य के पाँच जिले श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर एवं फलौदी अंतर्राष्ट्रीय सीमा बनाते हैं।
- राज्य की अंतर्राज्यीय सीमा 5 राज्यों से लगती है। राज्य के पूर्व में उत्तर-प्रदेश व मध्य प्रदेश, उत्तर में पंजाब व हरियाणा तथा दक्षिण में गुजरात व मध्य-प्रदेश के जिले स्थित हैं।
- राजस्थान की अंतर्राज्यीय सीमा की लंबाई **4850 किमी.** है। सीमा की लंबाई के अनुसार राज्यों का अवरोही क्रम इस प्रकार हैं—
  मध्यप्रदेश (1600 किमी.), हरियाणा (1262 किमी.), गुजरात (1022 किमी.), उत्तर प्रदेश (877 किमी.) एवं पंजाब (89 किमी.)।
  नोट:—राज्य की कुल स्थलीय सीमा की लंबाई **5920 किमी.** (अंतर्राष्ट्रीय सीमा 1070 + अंतर्राज्यीय सीमा 4850 किमी.) है।

पड़ोसी राज्यों के राजस्थान के साथ लगने वाले जिले

राज्य	राजस्थान से लगने वाले जिलों की संख्या एवं नाम
पंजाब	2 जिले - फाजिल्का, मुक्तसर
हरियाणा	7 जिले - हिसार, भिवानी, महेन्द्रगढ़, सिरसा, मेवात फतेहाबाद, रेवाड़ी
उत्तर प्रदेश	2 जिले - आगरा, मथुरा
मध्य प्रदेश	10 जिले - मुरैना, श्योपुर, शिवपुरी, गुना, राजगढ़, आगर मालवा, नीमच, मंदसौर, रतलाम, झाबुआ
गुजरात	6 जिले - कच्छ, बनासकांठा, साबरकांठा, अरावली, माहीसागर, दाहोद

राजस्थान के पड़ोसी राज्यों के साथ लगने वाले जिले

क्र.स.	पड़ोसी राज्य	राजस्थान के जिलों की संख्या एवं नाम जो पड़ोसी राज्यों से लगते हैं
1.	पंजाब	2 जिले - श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़
2.	हरियाणा	8 जिले - हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूँ, सीकर, कोटपूतली-बहरोड़, तिजारा-खैरथल, डीग, अलवर
3.	उत्तर प्रदेश	3 जिले - भरतपुर, धौलपुर, डीग
4.	मध्य प्रदेश	10 जिले - धौलपुर, करौली, सवाईमाधोपुर, कोटा, बाराँ, चितौड़, भीलवाड़ा, बांसवाड़ा, प्रतापगढ़, झालावाड़
5.	गुजरात	6 जिले - बाड़मेर, जालौर, सिरोही, उदयपुर, बाँसवाड़ा, डूँगरपुर

राजस्थान का भौतिक स्वरूप

- राजस्थान का भौतिक स्वरूप अधिक प्राचीन है। यहाँ पर्वत, पठारी, मैदानी व रेगिस्तानी भूदृश्य मिलते हैं। राजस्थान में अरावली पर्वतमाला के पश्चिम में शुष्क एवं अर्द्ध शुष्क मैदान पाए जाते हैं जहाँ वायु द्वारा निर्मित भूदृश्यावलियाँ पायी जाती है। इनमें से बालूका स्तूप सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।
- राजस्थान में पश्चिमी थार मरुस्थल एवं पूर्वी मैदानी प्रदेश **टेथिस सागर** का ही अवशेष माना जाता है। राजस्थान में आज भी **सांभर, डीडवाना, पचपदरा, लूणकरणसर** आदि खारे पानी की झीलें मौजूद हैं।
- राजस्थान की अरावली पर्वतमाला तथा दक्षिणी पठारी भाग **गौंडवाना लैण्ड के भू-भाग हैं। राज्य में मिलने वाली भौतिक** विविधताओं की दृष्टि से इसको भौगोलिक स्थिति के अनुसार निम्नलिखित **चार भागों** में बांटा गया है—

1. पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश

- पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश अरावली पर्वतमाला के उत्तर-पश्चिम और पश्चिम में विस्तृत है। यह क्षेत्र शुष्क और अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र है, जिसे **''भारत का विशाल मरुस्थल''** या **''थार मरुस्थल''** कहा जाता है।
- यह क्षेत्र गंगानगर, हनुमानगढ़, झुन्झुनू, सीकर, चूरू, बीकानेर, नागौर, जोधपुर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालोर, सिरोही, बालोतरा, पाली, पश्चिमी ब्यावर, फलौदी, डीडवाना-कुचामन जिलों में फैला हुआ है। राजस्थान में मरुस्थल का विस्तार पश्चिम से पूर्व की ओर है।
- इस प्रदेश की सामान्य ढाल पूर्व से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण की ओर है। इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 238254 वर्ग किमी. है। इसकी लंबाई 640 किलोमीटर एवं चौड़ाई 300 किलोमीटर है। समुद्र तल से ऊँचाई—
  - **उत्तर-पूर्वी भाग :** लगभग 300 मीटर
  - **दक्षिणी भाग :** लगभग 150 मीटर
- यह विश्व का ऐसा मरुस्थल है, जो जैव-विविधता और जनसंख्या के मामले में सबसे समृद्ध है। यहाँ वायु-क्रिया का प्रभुत्व है, और रेतीली मिट्टी (एंटीसोल) व कंटीली वनस्पति (मरुद्भिद) पाई जाती है।
- यह विश्व का एकमात्र मरुस्थल है जो दक्षिणी-पश्चिमी मानसून हवाओं द्वारा निर्मित है। इस क्षेत्र की सबसे प्रमुख एवं सबसे बड़ी नदी लूनी है।
- इस प्रदेश की उत्तरी सीमा पंजाब-हरियाणा से तथा दक्षिणी सीमा गुजरात से मिलती है। इसकी पश्चिमी सीमा भारत एवं पाकिस्तान के मध्य अंतर्राष्ट्रीय सीमा है तथा अरावली के सहारे पूर्वी सीमा 50 सेमी. सम वर्षा रेखा एवं महान भारतीय जल विभाजक द्वारा अंकित है अर्थात् यह वर्षा रेखा अरावली की पश्चिमी सीमा एवं पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश की पूर्वी सीमा का निर्धारण करती है।
- 10 सेमी. वर्षा रेखा थार के मरुस्थल की पश्चिमी सीमा का निर्धारण करती है तथा जैसलमेर से होकर गुजरती है।
- 25 सेमी. वर्षा रेखा उत्तर-पश्चिमी मरुस्थल को लगभग दो समान भागों में विभाजित करती है। इसके पश्चिम में शुष्क रेतीला मरुस्थल एवं पूर्व में अर्द्ध शुष्क मरुस्थल है।
- थार मरुस्थल को उच्चावच के आधार पर उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर **चार उपभौतिक प्रदेशों** में विभाजित किया गया है—

  1. महान मरुभूमि　　2. पथरीला मरुस्थल
  3. लघु मरुस्थल　　4. अर्द्ध शुष्क
- **इर्ग**—यह पूर्णतः रेतीला मरुस्थल होता है। इसमें भूमि बालुका स्तूपों से ढकी है। इसे **महान मरुस्थल** भी कहते हैं। इसका विस्तार भारत-पाक सीमा के सहारे-सहारे कच्छ की खाड़ी से पंजाब तक है।
- **हम्मादा**—यह **पथरीला मरुस्थल** होता है। यहाँ कठोर चट्टानें समतल अथवा पहाड़ियों के रूप में फैली हुई। यह बालुका मुक्त प्रदेश है। इसका विस्तार जैसलमेर, बालोतरा, फलौदी, बीकानेर एवं बाड़मेर में है।
- **रन**—यह प्रदेश चट्टानी प्रदेश के पूर्व में कच्छ के रन से शुरू होकर बीकानेर के महान मरुभूमि तक विस्तृत है। यहाँ बालुकास्तूपों के मध्य कहीं-कहीं निम्न भूमि या छोटे-छोटे गड्ढे भी होते हैं जिनमें वर्षा का पानी भर जाता है जिन्हें 'रन' कहा जाता है।
- धरातलीय स्वरूप एवं शुष्कता के आधार पर पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश को मुख्यतः **दो भागों** में विभाजित किया गया है।

1. शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र (महान भारतीय मरुभूमि)

- यह अंतर्राष्ट्रीय सीमा रेखा से पूर्व में 25 सेमी. समवर्षा रेखा तक विस्तृत है। इसका विस्तार राज्य के जैसलमेर, फलौदी, बीकानेर, उत्तरी-पश्चिमी जोधपुर, बाड़मेर, उत्तरी-पश्चिमी बालोतरा एवं पश्चिमी चूरू में है।
- शुष्क मरुस्थलीय क्षेत्र को दो भागों में बाँटा गया है—

(i) बालुका स्तूप युक्त मरुस्थलीय प्रदेश

- यह प्रदेश बालुका स्तूपों से आच्छादित है। यहाँ स्थाई एवं स्थानान्तरित दोनों प्रकार के बालुका स्तूप विद्यमान है। पश्चिमी मरुस्थलीय प्रदेश का लगभग 59-60% भाग बालुका स्तूपों से आच्छादित है। इन बालुका स्तूपों को स्थानीय भाषा में **'धोरे'** कहते हैं।
- इस क्षेत्र में धरातलीय अपवाह तंत्र का पूर्णतः अभाव है तथा यहाँ शुष्क जलवायु पाई जाती है। यह राजस्थान का वनस्पति रहित क्षेत्र है, यहाँ प्रदेश की सबसे विरल आबादी पाई जाती है।
- **रेतीले टीले क्षेत्र की भौगोलिक संरचना के आधार पर निम्न प्रकार के होते हैं—**

(a) रेखीय या पवनानुवर्ती बालुका स्तूप—यह बालुका स्तूप जैसलमेर के दक्षिण-पश्चिम, रामगढ़ के दक्षिण-पश्चिम, जोधपुर और बाड़मेर जिलों में वायु की दिशा के अनुरूप फैले हुए हैं।
- तेज हवाओं के साथ ये रेतीले टीले अपना स्थान बदलते रहते हैं। यह सभी प्रकार के बालुका स्तूपों में सबसे ऊँचे होते हैं।
- ये बालुका स्तूप तीन प्रकार (सीफ, वनस्पति युक्त रेखीय एवं पवनविमुख रेखीय) के होते हैं।
- जब अर्द्धचंद्राकार बालुका स्तूप (बरखान) की एक भुजा आगे बढ़ जाती है, तो इसे **'सीफ'** कहा जाता है।

(b) बरखान या अर्द्धचंद्राकार स्तूप—इन बालुका स्तूपों का विस्तार जैसलमेर, शेखावाटी क्षेत्र (चूरू, सीकर, सूरतगढ़), करणी माता मंदिर (देशनोक, बीकानेर), लूणकरणसर, बाड़मेर, ओसियाँ और जोधपुर में है।
- **आकार और संरचना:**
  - **ऊँचाई:** 10-20 मीटर
  - **चौड़ाई:** 100-200 मीटर
- ये नवीन रंध्रयुक्त बालुका स्तूप होते हैं, जो शृंखलाबद्ध रूप में पाए जाते हैं। प्रायः ये वनस्पति विहीन होते हैं, लेकिन शेखावाटी क्षेत्र में इन पर वनस्पति पाई जाती है। यह बालुका स्तूप मंद पवनामुखी ढाल और तीव्र पवनाविमुखी ढाल वाले होते हैं।

(c) अनुप्रस्थ बालुका स्तूप—यह बालुका स्तूप दीर्घकाल तक एक दिशा में चलने वाली वायु के समकोण पर बनते हैं। यह बीकानेर-पूगल, हनुमानगढ़-रावतसर, गंगानगर-सूरतगढ़, चूरू और झुंझुनूं जिलों में पाए जाते हैं।

(d) पेराबोलिक बालुका स्तूप—यह बालुका स्तूप मरुस्थलीय वनस्पति की मदद से बनते हैं। इनकी आकृति **हेयर-पिन** जैसी होती है।

- इनका वक्र भाग पवनानुमुखी और ढाल पवन विमुखी होता है।
- ये स्तूप ऊँचे टीले और मरुस्थलीय वनस्पति की जड़ों एवं चूने की वजह से स्थायी हो चुके हैं तथा ये संपूर्ण मरुस्थलीय क्षेत्रों में पाए जाते हैं।

(e) **तारा बालुका स्तूप**—इस प्रकार के बालुका स्तूप जैसलमेर (सोहनगढ़, पोकरण) और गंगानगर (सूरतगढ़) क्षेत्रों में मिलते हैं। ये अनियमित पवन क्षेत्रों में बनते हैं। इन टीलों में तीन या अधिक भुजाएँ होती हैं।

- ये **पथरीले मरुस्थल (हम्मादा)** के चारों ओर शृंखलाबद्ध रूप में मिलते हैं। इनकी **ऊँचाई** 10-25 मीटर होती है।

(f) **अवरोधी बालुका स्तूप**—इन बालुका स्तूपों का जमाव किसी अवरोध (झाड़ियाँ, पेड़, भवन, या पहाड़ी) के कारण होता है। पुष्कर, बूढ़ा पुष्कर, नाग पहाड़, बिचून पहाड़, जोबनेर, और सीकर की पहाड़ियाँ इस प्रकार के टीलों को जन्म देती हैं। इन्हें अवशिष्ट अवरोधी जीवावशेष युक्त बालुका स्तूप भी कहा जाता है।

(g) **शब्र-काफीज बालुका स्तूप**—छोटी-छोटी झाड़ियों और घास के झुंड के आसपास बालू के जमाव से शब्र-काफीज बालुका स्तूप का निर्माण होता है। ये पश्चिमी राजस्थान में सर्वत्र पाए जाते हैं।

(ii) बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश

- बालुका स्तूप मुक्त प्रदेश महान मरुस्थल के पूर्व में जैसलमेर, फलौदी, बालोतरा एवं बाड़मेर जिलों के कुछ भागों में स्थित है। यहाँ बालुका स्तूप मुक्त अथवा टीला रहित क्षेत्र पाया जाता है।
- यहाँ बालुका स्तूपों का पूर्णतः अभाव है तथा सम्पूर्ण क्षेत्र अवसादी/परतदार चट्टानों से आवृत है। इन चट्टानों में जुरासिक काल के वनस्पति अवशेष एवं जीवावशेष मिलते हैं। **आकल वुड फॉसिल्स पार्क** (जैसलमेर) इसका विशिष्ट उदाहरण है।
- राष्ट्रीय मरु उद्यान में स्थित इस स्थान पर प्राचीन वनस्पति एवं काष्ठ जीवाश्म मौजूद हैं। फलौदी जिले में बाप नामक स्थान पर पुराजीवी महाकल्प के परमिलन कार्बेनिफेरस काल के हिमानी गोलाश्म के अवशेष मिले हैं जिसे **'बाप बोल्डर बैड'** कहा जाता है।
- जैसलमेर के उत्तर तथा पोकरण के दक्षिण में बालुका स्तूपों के मध्य कहीं-कहीं निम्न भूमि (धोरों) में वर्षा जल एकत्रित होने से अस्थायी **'प्लाया'** झीलों का निर्माण होता है इन्हें रन भी कहा जाता है। सर्दियों में इन झीलों की भूमि पर रबी फसल बोई जाती है। बालुका स्तूपों के बीच छोटे गर्तों में वर्षा का पानी भरने से **रन या टाट** बनते हैं।
- **लाठी सीरीज**—यह जैसलमेर में भारत-पाकिस्तान सीमा के पास लगभग 80 किमी लंबी मीठे जल की भूगर्भीय पट्टी है। यह क्षेत्र **सेवण घास** के लिए प्रसिद्ध है।
- **खड़ीन**—जैसलमेर के पालीवाल ब्राह्मणों द्वारा विकसित परंपरागत वर्षा जल संरक्षण प्रणाली जिसमें एक तरफ पत्थर की दीवार और बाकी ओर मिट्टी की पाल होती है। पानी सूखने के बाद इसकी भूमि पर खेती की जाती है। जैसलमेर जिले की प्लाया झीलें खड़ीन कहलाती है इनमें केन्द्रोमुखी जल प्रवाह पाया जाता है।
- जैसलमेर में लाठी सीरीज के निकट कम गहराई में ही 2.30 लाख लीटर प्रति घंटे क्षमता वाला एक नलकूप है जिसे **'चंदन नलकूप'** (घर का घड़ा) कहते हैं।

2. अर्द्धशुष्क मरुस्थलीय प्रदेश (राजस्थान बांगर)

- अरावली पर्वत एवं पश्चिमी शुष्क प्रदेश के मध्य में स्थित इस प्रदेश का विस्तार राज्य के गंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, झुंझुनूं, सीकर, डीडवाना-कुचामन, नागौर, पश्चिम ब्यावर, जोधपुर, पाली, उत्तरी सिरोही, जालौर, बालोतरा एवं दक्षिण-पूर्वी बाड़मेर में है।
- 25 सेमी. की सम वर्षा रेखा रेतीली मरुभूमि एवं अर्द्ध शुष्क मैदान को विभाजित करती है। इस प्रदेश की पूर्वी सीमा 50 सेमी सम वर्षा रेखा है।
- घग्घर नदी इस प्रदेश की उत्तरी सीमा बनाती है। यह प्रदेश शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु के मध्य स्थित है। राजस्थान बांगर को **चार भागों** में विभाजित किया गया है—

(i) नागौर उच्चभूमि

- लूनी बेसिन और शेखावाटी प्रदेश के बीच की ऊँची भूमि को नागौर उच्च भूमि कहा जाता है।
- यह प्रदेश बंजर एवं रेतीला है। यहाँ की मिट्टी में सोडियम क्लोराइड पाया जाता है। नमकीन झीलें (सांभर, डीडवाना, डेगाना) एवं चट्टानी-चूनेदार धरातल इस क्षेत्र की प्रमुख विशेषताएँ है।
- यहाँ चूना-पत्थर एवं संगमरमर का महत्त्वपूर्ण जमाव मिलता है। सफेद संगमरमर के लिए यहाँ का मकराना क्षेत्र (डीडवाना-कुचामन) प्रसिद्ध है।

(ii) लूनी-जवाई बेसिन (गोडवाड़ प्रदेश)

- यह एक अर्द्ध-शुष्क क्षेत्र है, जो लूनी नदी और उसकी सहायक नदियों (जवाई, लीलड़ी, सूकड़ी, जोजड़ी, बांडी आदि) द्वारा बनाया गया है।
- यह पाली, जालौर, जोधपुर और नागौर जिले के दक्षिणी भाग में फैला है। लूनी बेसिन में सर्वाधिक विस्तृत मैदानी भाग **समतल प्राचीन कांपीय मैदान** है।
- इस मैदान में यत्र-तत्र एकाकी पहाड़ियाँ दिखाई देती हैं। पचपद्रा, सनवरला, कपराना जैसे खारे पानी के गर्त इस क्षेत्र में पाए जाते हैं।
- पश्चिमी सीमा पर बालुका-स्तूप (रेतीले टीले) भी देखे जा सकते हैं।
- इस प्रदेश में विस्तृत प्राचीन चट्टानों की पहाड़ियों में **'जालौर-सिवाना की पहाड़ियाँ'** प्रमुख हैं।
- बालोतरा से सिवाना में ग्रेनाइट निर्मित **छप्पन पहाड़ियों का समूह** (छप्पन की पहाड़ियाँ), बालोतरा में नाकोड़ा पर्वत तथा अरावली के दक्षिण भाग में जसवंतपुरा पहाड़ी की सर्वोच्च चोटी (डोरा पर्वत) प्रमुख है।
- छप्पन की पहाड़ियों (बालोतरा) में स्थित हल्देश्वर महादेव मंदिर (पीपलूद) **'रेगिस्तान का माउंट आबू'** या **'राजस्थान का लघु माउंट आबू'** कहलाता है।

(iii) शेखावाटी प्रदेश

- लूनी नदी के बेसिन के उत्तर में शेखावाटी प्रदेश के अंतर्गत सीकर, चूरू, झुंझुनूं और डीडवाना-कुचामन जिले का उत्तरी भाग शामिल है। इसे **''बांगर प्रदेश''** भी कहा जाता है।
- यह एक रेतीला क्षेत्र है, जहाँ अपेक्षाकृत कम ऊँचाई के बालुका-स्तूप (रेतीले टीले) फैले हुए हैं। यहाँ डीडवाना, डेगाना, सुजानगढ़, तालछापर, परिहारा, कुचामन जैसे लवणीय पानी के गर्त मिलते हैं।
- अर्द्धवृत्ताकार बालुका-स्तूप (बरखान) पर वनस्पति का आवरण देखने को मिलता है। यहाँ देशांतरीय और विच्छिन्न बालुका-स्तूप भी मौजूद हैं।
- इस क्षेत्र में कोई बड़ी नदी नहीं है। छोटी-छोटी अंतःप्रवाही नदियाँ (जो कुछ दूरी तक बहकर विलुप्त हो जाती हैं) मिलती हैं।
- **मेन्था/मेंढा और रूपनगढ़** अरावली से निकलकर सांभर झील में गिरती हैं।
- **कांतली नदी** अरावली से निकलकर राजगढ़ के पास रेत में विलुप्त हो जाती है। इसका प्रवाह क्षेत्र तोरावाटी कहलाता है। इस क्षेत्र की पहाड़ियाँ **'तोरावाटी की पहाड़ियाँ'** कहलाती है।

❖ शेखावाटी क्षेत्र में कच्चे एवं पक्के कुओं का निर्माण वर्षा जल संग्रहित करने हेतु किया जाता है जिसे स्थानीय भाषा में **जोहड़/नाड़ा** कहा जाता है। शेखावाटी क्षेत्र में घास के मैदान एवं पशु चारागाह के सार्वजनिक स्थल **'बीड़'** कहलाते हैं।

(iv) घग्घर का मैदान

❖ यह मैदानी क्षेत्र गंगानगर और हनुमानगढ़ जिलों में विस्तृत है और इसका निर्माण घग्घर नदी के प्रवाह से हुई बाढ़ के कारण हुआ है।
❖ **घग्घर नदी** प्राचीन वैदिक कालीन सरस्वती नदी का अवशेष है।
❖ वर्तमान में इसे **''मृत नदी''** (Dead River) कहा जाता है, क्योंकि इसका प्रवाह तल स्पष्ट नहीं है। वर्षा ऋतु में इसमें बाढ़ आ जाती है।
❖ नोहर-भादरा (हनुमानगढ़) क्षेत्र में दृशद्वती नदी की शुष्क घाटी स्थित है।
❖ घग्घर नदी के तल को स्थानीय भाषा में **''नाली''** कहा जाता है। इसका विस्तार हनुमानगढ़, सूरतगढ़, अनूपगढ़ होते हुए पाकिस्तान के फोर्ट अब्बास तक है। घग्घर मैदान का उत्तर-पूर्वी उपजाऊ मिट्टी वाला क्षेत्र **''बग्गी''** कहलाता है।
❖ प्रारंभ में गंग नहर और वर्तमान में इंदिरा गांधी नहर ने इस क्षेत्र में सिंचाई सुविधाएँ विकसित की हैं। इस कारण यह क्षेत्र राजस्थान का प्रमुख कृषि उत्पादक क्षेत्र बन गया है।
❖ इस क्षेत्र में अधिक सिंचाई के कारण **सेम की समस्या** (जलभराव और क्षारीयता) बढ़ रही है, जिससे भूमि की उर्वरता घट रही है।

2. अरावली पर्वतीय प्रदेश

❖ अरावली पर्वतमाला राजस्थान की प्री-कैम्ब्रियन युगीन वलित पर्वतमाला है। वर्तमान में यह अवशिष्ट पर्वतमाला के रूप में विद्यमान है जो गौंडवान लैंड का अवशेष है।
❖ अरावली को **'भारत का अप्लेशियन'** कहा जाता है। राज्य का 9% क्षेत्रफल इसके अंतर्गत आता है। अरावली की कुल लंबाई 692 किमी. (गुजरात के पालनपुर से दिल्ली की रायसीना हिल्स तक) है।
❖ राजस्थान में इसकी लंबाई 550 किमी. (खेड़ब्रह्मा, गुजरात से खेतड़ी, राजस्थान तक) है। इसका विस्तार दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्व दिशा की ओर है। इसका दक्षिण-पश्चिम भाग ऊँचा एवं चौड़ा है जो उत्तर-पूर्व की ओर कम होता जाता है।
❖ अरावली का विस्तार मुख्यतः राज्य के सिरोही, उदयपुर, राजसमंद, अजमेर, जयपुर, दौसा, अलवर, सीकर, झुंझुनूं जिलों में है।
  ✧ **अधिकतम विस्तार:** उदयपुर जिला।
  ✧ **न्यूनतम विस्तार:** अजमेर जिला।
  नोटः-नवीन जिलों के पुनर्गठन के बाद अरावली का विस्तार ब्यावर, कोटपूतली-बहरोड़, खैरथल-तिजारा एवं डीडवाना-कुचामन जिलों में भी है।
❖ अरावली पर्वतमाला की औसत ऊँचाई 930 मीटर है। राजस्थान में इसकी सबसे अधिक ऊँचाई सिरोही जिले में है। **गुरु शिखर** (माउण्ट आबू) इसकी सबसे ऊँची चोटी है जिसकी ऊँचाई **1722 मीटर** है। यह क्षेत्र हरियाणा राज्य के साथ अपनी सीमा साझा करता है। अरावली पर्वतीय प्रदेश का **उप-प्रदेशों में विभाजन** निम्न प्रकार है—

दक्षिणी अरावली

❖ यह प्रदेश सिरोही, उदयपुर, सलूम्बर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़, डूँगरपुर, बाँसवाड़ा, पाली जिलों में विस्तृत है।
❖ यह पूर्व दिशा में बहने वाली नदियों का उद्गम स्थल भी है। यहाँ अरावली की श्रेणियाँ अत्यधिक सघनता और उच्चता लिए हुए हैं। यह क्षेत्र प्राकृतिक सौंदर्य से भरपूर है।
❖ इस प्रदेश में अरावली पर्वतमाला के कई महत्वपूर्ण ऊँचे शिखर स्थित हैं। इन शिखरों की सूची और उनके विवरण की जानकारी इस प्रदेश के भौगोलिक और पर्यावरणीय महत्व को दर्शाती है।
❖ दक्षिणी अरावली प्रदेश को **दो भागों** में विभाजित किया गया है—

(i) भोराठ का पठार

❖ इसका विस्तार राज्य के डूंगरपुर, उदयपुर एवं सिरोही जिलों में है। आबू के अतिरिक्त अरावली शृंखला का उच्चतम भू-भाग उदयपुर के उत्तर-पश्चिम में कुंभलगढ़ और गोगुन्दा के बीच एक पठार के रूप में अवस्थित है जिसे स्थानीय भाषा में भोराठ का पठार कहा जाता है।
❖ इस पठार का दक्षिणी भाग अरब सागर एवं बंगाल की खाड़ी के जल प्रवाह के बीच जल विभाजक का कार्य करता है। इस पठार की औसत ऊँचाई 1300 मीटर है। पूर्वी सिरोही के पश्चिम से तीव्र ढाल वाले तथा ऊबड़-खाबड़ भाग को स्थानीय भाषा में **'भाकर'** कहा जाता है।
❖ उदयपुर को घेरी हुई तश्तरीनुमा पहाड़ियों को स्थानीय भाषा में **'गिरवा'** कहा जाता है। उदयपुर का उत्तर-पश्चिमी पर्वतीय जनजाति बहुल भू-भाग **'मगरा'** के नाम से जाना जाता है।
❖ दक्षिण राजस्थान का अरावली पर्वतीय क्षेत्र (उदयपुर, डूंगरपुर, सलूम्बर एवं सिरोही) **भोमट** कहलाता है। यहाँ भील जनजाति का बाहुल्य है। डूंगरपुर एवं बांसवाड़ा के मध्य का पहाड़ी क्षेत्र **'मेवल'** तथा **सिरोही** जिले में आबू पर्वतीय क्षेत्र **'आर्बुद'** कहलाता है।

क्र.सं.	पर्वत शिखर	जिला	ऊँचाई (मीटर में)
1.	गुरुशिखर	सिरोही	1722 मीटर
2.	सेर	सिरोही	1597 मीटर
3.	देलवाड़ा	सिरोही	1442 मीटर
4.	जरगा	उदयपुर	1431 मीटर
5.	अचलगढ़	सिरोही	1380 मीटर
6.	आबू	सिरोही	1295 मीटर
7.	कुम्भलगढ़	राजसमंद	1224 मीटर
8.	धोनिया	उदयपुर	1183 मीटर
9.	जयराज	सिरोही	1090 मीटर
10.	ऋषिकेश	सिरोही	1017 मीटर
11.	कमलनाथ	उदयपुर	1001 मीटर
12.	सुंधा पर्वत	जालौर	991 मीटर
13.	सज्जनगढ़	उदयपुर	938 मीटर
14.	सायरा	उदयपुर	900 मीटर
15.	लीलागढ़	उदयपुर	874 मीटर
16.	डोरा पर्वत	जालौर	869 मीटर
17.	नागपानी	उदयपुर	867 मीटर
18.	गोगुन्दा	उदयपुर	840 मीटर
19.	इसराना भाखर	जालौर	839 मीटर
20.	रोजा भाखर	जालौर	730 मीटर
21.	झारोला भाखर	जालौर	588 मीटर
22.	कोटड़ा	उदयपुर	450 मीटर
23.	ऋषभदेव	उदयपुर	400 मीटर

(ii) आबू पर्वत खण्ड

- यह समुद्रतल से लगभग 1200 मीटर से भी ऊँचा है तथा 19 किमी. लम्बा एवं 8 किमी. चौड़ा है। इसकी सबसे ऊँची (1722 मीटर) चोटी गुरुशिखर (सिरोही) है जो राज्य का सर्वोच्च शिखर है।
- कर्नल टॉड ने गुरुशिखर को **'संतों का शिखर'** एवं **'गुरुमाथा'** तथा अरावली को हिन्दू आल्पस कहा है। गुरुशिखर पर ऋषि दत्तात्रेय का मंदिर बना है माना जाता है कि गुरुशिखर का नाम दत्तात्रेय ऋषि के नाम पर ही पड़ा है। सिरोही के पश्चिम में जालौर जिले के जसवंतपुरा क्षेत्र में **डोरा पर्वत (869 मीटर)** स्थित है।
- भीनमाल (जालौर) में **सुंधा पर्वत (991 मीटर)** स्थित है। यहाँ चामुंडा देवी मंदिर है, जहाँ **राजस्थान का पहला रोपवे** (2006) शुरू हुआ।
- **सिवाना क्षेत्र** में छप्पन की पहाड़ियाँ और नाकोड़ा पर्वत गोलाकार रूप में फैले हैं।

दक्षिण अरावली क्षेत्र में स्थित पठार

पठार	विशेष विवरण
उडिया का पठार (सिरोही)	गुरु शिखर के नीचे स्थित, दक्षिणी अरावली में राजस्थान का सबसे ऊँचा पठार (1360 मीटर)।
आबू का पठार (सिरोही)	1200 मीटर ऊँचा यह राजस्थान का दूसरा सबसे ऊँचा पठार है। इस पर राजस्थान का सबसे ऊँचा बसा शहर 'माउन्ट आबू' स्थित है।
भोराठ का पठार	दक्षिणी अरावली क्षेत्र में कुम्भलगढ़ (राजसमंद) से गोगुन्दा (उदयपुर) तक विस्तृत पठार, यह भी राजस्थान के ऊँचे पठारों में से एक है।
लसाड़िया पठार (उदयपुर)	जयसमंद झील के पूर्व में स्थित विच्छेदित (कटा-फटा) एवं अपरदित पठार है। इसकी ऊँचाई 325 मीटर से 650 मीटर है।
भोमठ का पठार	दक्षिणी अरावली में स्थित पठारी क्षेत्र, जो मुख्यत: डूँगरपुर व उदयपुर में विस्तृत है। यह पठार जनजाती बाहुल्य क्षेत्र है।
बीजासण पठार	माण्डगढ़ क्षेत्र (भीलवाड़ा) में स्थित पठार।
ऊपरमाल का पठार	भैंसरोड़गढ़ (चितौड़गढ़) से बिजौलिया (भीलवाड़ा) तक विस्तृत पठार। इस पठार पर प्रसिद्ध जोगणियाँ माता मंदिर स्थित है तथा मेनाल जल प्रपात यहाँ प्राकृतिक सौन्दर्य वाला पर्यटन स्थल है।
मेसा का पठार (चित्तौड़गढ़)	इस पठार पर चितौड़गढ़ दुर्ग स्थित है।
मानदेसरा पठार	भैसरोड़गढ़ अभयारण्य (चितौड़) इसी पठार पर है।
धीराजी पठार	यह पठार भी चितौड़गढ़ में है।
कांकणवाड़ी पठार	सरिस्का (अलवर) क्षेत्र में अवस्थित है।
कांसका पठार	सरिस्का (अलवर) क्षेत्र में अवस्थित है।

मध्य अरावली

- यह मुख्यत: अजमेर और ब्यावर जिले में फैला हुआ क्षेत्र है। इस क्षेत्र में पर्वत श्रेणियों के साथ संकीर्ण घाटियाँ और समतल स्थल मौजूद हैं।
  - **उत्तरी अजमेर:** समतल क्षेत्र।
  - **ब्यावर क्षेत्र:** पहाड़ियों से युक्त असमतल प्रदेश।
- यह प्रदेश पश्चिम में सांभर बेसिन, पूर्व में करौली उच्च भूमि, उत्तर में अलवर पहाड़ियाँ एवं दक्षिण में बनाम मैदान द्वारा सीमांकित है।
- अजमेर के दक्षिण-पश्चिम में स्थित इस क्षेत्र की मुख्य चोटी **तारागढ़ (873 मीटर)** है।
- अजमेर के पश्चिम में **नागपहाड़ (795 मीटर)** सर्पिलाकार पर्वत श्रेणियाँ है। यह लूनी नदी का उद्गम क्षेत्र भी है। मध्य अरावली में सर्वाधिक दर्रे पाए जाते हैं।
- **ब्यावर क्षेत्र** के प्रमुख दर्रे—
  - बर
  - पखेरिया
  - सूरा घाट
  - शिवपुर घाट
  - कच्छवाली दर्रा
  - उदाबारी दर्रा
- **पीपली की नाल** राजस्थान की सर्वाधिक ऊँचाई पर स्थित नाल है।

मध्य अरावली की प्रमुख चोटियाँ

क्र.सं.	पर्वत शिखर	जिला	ऊँचाई
1.	गोरमजी (मध्य अरावली की सबसे ऊँची चोटी)	ब्यावर	934 मीटर
2.	मारायजी	ब्यावर	933 मीटर
3.	तारागढ़	अजमेर	873 मीटर
4.	नागपहाड़	अजमेर	795 मीटर

- मारवाड़ के मैदान को मेवाड़ के उच्च पठार से अलग करने वाली टॉडगढ़ (ब्यावर) के समीप की पर्वत श्रेणी **'मेरवाड़ा पहाड़ियाँ'** कहलाती हैं। इसका सर्वोच्च शिखर तारागढ़ (अजमेर) है। तारागढ़ के पश्चिम में स्थित सर्पिलाकार पर्वत श्रेणियाँ **नाग पहाड़** कहलाती हैं।

उत्तरी अरावली

- उत्तरी अरावली का विस्तार जयपुर, कोटपूतली-बहरोड़, दौसा, अलवर, खैरथल-तिजारा, सीकर, झुंझुनूं के दक्षिणी पूर्वी भाग एवं डीडवाना-कुचामन जिलों में है।

उत्तरी अरावली की प्रमुख चोटियाँ

क्र.सं.	पर्वत शिखर	जिला	ऊँचाई
1.	**रघुनाथगढ़**	सीकर	1055 मीटर
2.	मालखेत	सीकर	1052 मीटर
3.	**लोहार्गल**	झुंझुनूँ	1051 मीटर
4.	भोजगढ़	झुंझुनूँ	997 मीटर
5.	खो पहाड़ी	जयपुर	920 मीटर
6.	**हर्ष की पहाड़ी**	सीकर	820 मीटर
7.	भैरांच	अलवर	792 मीटर
8.	बरवाड़ा	जयपुर	786 मीटर
9.	**बाबाई पहाड़ी**	झुंझुनूँ	780 मीटर
10.	बिलाली	कोटपूतली-बहरोड़	775 मीटर
11.	मनोहरपुरा	जयपुर	747 मीटर
12.	बैराठ	कोटपूतली-बहरोड़	704 मीटर
13	सरिस्का	अलवर	677 मीटर
14.	**सिरावास**	अलवर	651 मीटर
15.	भानगढ़	अलवर	649 मीटर
16.	**जयगढ़**	जयपुर	648 मीटर
17.	**नाहरगढ़**	जयपुर	599 मीटर
18.	अलवर दुर्ग (बाला किला)	अलवर	597 मीटर

- इस क्षेत्र में अरावली पर्वतमाला क्रमबद्ध न होकर छितरी हुई पहाड़ियों के रूप में पाई जाती है। यहाँ अरावली श्रेणियाँ क्वार्टजाइट एवं फाईलाइट शैलों से निर्मित है।
- **प्रमुख पहाड़ियाँ:** शेखावाटी की पहाड़ियाँ, तोरावाटी की पहाड़ियाँ, जयपुर और अलवर की पहाड़ियाँ।
- इस क्षेत्र में पहाड़ियों की सामान्य ऊँचाई 450 से 750 मीटर के बीच है।
- सीकर जिले का रघुनाथगढ़ शिखर (1055 मीटर) इस क्षेत्र का सबसे ऊँचा शिखर है।
- मालाणी पहाड़ी जालौर, बालोतरा एवं बाड़मेर के मध्य स्थित है। बीजासन पहाड़ मांडलगढ़ (भीलवाड़ा) में, मोड़ा पहाड़ झुंझुनू में एवं आर्बुद पर्वत सिरोही में है।

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश

- राजस्थान का पूर्वी क्षेत्र एक मैदानी प्रदेश है, जो अरावली के पूर्व में विस्तृत है। इसके अन्तर्गत भरतपुर, डीग, अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, जयपुर, दौसा, टोंक, चित्तौड़गढ़, सलूम्बर, प्रतापगढ़, डूंगरपुर, बांसवाड़ा तथा भीलवाड़ा जिलों के मैदानी भाग सम्मिलित हैं।
- राजस्थान का पूर्वी मैदान **50 सेमी. समवर्षा रेखा** द्वारा विभाजित।
- इसके अन्तर्गत राजस्थान का 23% क्षेत्र आता है तथा लगभग 39% प्रतिशत जनसंख्या इस क्षेत्र में निवास करती है।
- इस मैदान की दक्षिण-पूर्वी सीमा विंध्य पठार द्वारा बनाई जाती है।
- यह प्रदेश **'नदी बेसिन प्रदेश'** है अर्थात् नदियों द्वारा जमा की **जलोढ़ मिट्टी** से इस प्रदेश का निर्माण हुआ है। इस मैदानी क्षेत्र को **तीन उप-प्रदेशों** में विभक्त किया गया है—

(i) बनास-बाणगंगा बेसिन

- यह मैदान बनास और उसकी सहायक नदियों (जैसे कोठारी, मोरेल, बेड़च आदि) द्वारा निर्मित है। बनास बेसिन की पश्चिमी सीमा 50 सेमी. की वर्षा रेखा द्वारा, उत्तरी सीमा अलवर पहाड़ी द्वारा तथा पूर्वी सीमा विन्ध्यन कगार द्वारा निर्धारित है।
- यहाँ का ढाल पूर्व दिशा में है और औसत ऊँचाई 280-500 मीटर के बीच है। इस क्षेत्र में जलोढ़ मिट्टी का जमाव पाया जाता है, जो कृषि के लिए अत्यंत उपजाऊ है।
- बनास बेसिन को दो मुख्य हिस्सों में विभाजित किया गया है—
  - (a) **मेवाड़ का मैदान**—यह बनास बेसिन का दक्षिणी भाग है। इसमें बेड़च और गंभीर जैसी नदियों द्वारा निर्मित मैदान शामिल हैं। यह मैदान मुख्यतः चित्तौड़गढ़ और भीलवाड़ा जिलों में फैला हुआ है।
  - (b) **मालपुरा-करौली का मैदान**—बनास बेसिन का उत्तर-पूर्वी भाग **''मालपुरा-करौली का मैदान''** कहलाता है।
  - ✧ इसमें टोंक, सवाई माधोपुर और करौली जिलों का क्षेत्र शामिल है।
- **बाणगंगा बेसिन** बाणगंगा नदी के बहाव क्षेत्र का मैदान है। यह जयपुर, दौसा, डीग एवं भरतपुर जिलों में विस्तृत है। यह सर्वाधिक उपजाऊ मैदानी क्षेत्र है। राज्य के **भरतपुर** जिले में बाणगंगा नदी बेसिन का सर्वाधिक प्रतिशत भाग स्थित है।

(ii) चंबल बेसिन

- यह बेसिन चंबल नदी द्वारा बनाया गया है। यह कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, सवाई माधोपुर, करौली और धौलपुर जिलों में फैला हुआ है।
- चंबल बेसिन भारत का सबसे अधिक गली **अपरदित (बीहड़)** क्षेत्र है। चम्बल बेसिन की खण्ड-भूमि को **अवनलिकायें** कहा जाता है।
- यह कटा-फटा इलाका है, लेकिन बीच में कुछ समतल क्षेत्र भी पाए जाते हैं। यहाँ मुख्यतः **''उत्खात स्थलाकृति''** (Badland Topography) पाई जाती है। इस क्षेत्र में **नवीन कांपीय जमाव** (Recent Alluvial Deposits) भी देखे जाते हैं।
- ''उत्खात स्थलाकृति'' को स्थानीय भाषा में **''डांग''** कहा जाता है। करौली में सबसे अधिक डांग भूमि है, इसलिए इसे **''डांग की रानी''** कहा जाता है।

(iii) छप्पन का मैदान (मध्य माही बेसिन)

- यह मैदान उदयपुर के दक्षिण-पूर्वी भाग, सलूम्बर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा और प्रतापगढ़ में फैला हुआ है।
- इसका कुल क्षेत्रफल लगभग 7056 वर्ग किलोमीटर है। इसकी औसत ऊँचाई 200 से 400 मीटर के बीच है।
- प्रतापगढ़ और बाँसवाड़ा के बीच स्थित छप्पन ग्राम समूह के कारण इसे **''छप्पन का मैदान''** कहा जाता है।
- प्रतापगढ़ में माही नदी का बहाव क्षेत्र **'कांठल का मैदान'** कहलाता है।
- यह क्षेत्र माही नदी के प्रवाह क्षेत्र में आता है और अत्यधिक असमतल है। यह बेसिन अधिक गहराई तक विच्छेदित होने के कारण इस विच्छेदित मैदान एवं पहाड़ी भू-भाग को स्थानीय भाषा में 'वागड़' कहा जाता है।
- यहाँ छोटी-छोटी पहाड़ियाँ पाई जाती हैं। सोम, जाखम, कागदर और झामरी माही नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ है।
- बांसवाड़ा को नदियों की अधिकता के कारण **''सौ टापुओं का क्षेत्र''** कहा जाता है।
- इस मैदान में लाल चिकनी मिट्टी पाई जाती है। मुख्यतः मक्का और चावल की खेती यहाँ होती है।
- इस क्षेत्र में भील और गरासिया जनजातियाँ निवास करती हैं। ये स्थानांतरित कृषि (झूम खेती) करते हैं। इस क्षेत्र का ढाल **पश्चिम की ओर** है।

4. दक्षिण-पूर्वी पठारी प्रदेश (हाड़ौती पठार)

- यह क्षेत्र मालवा के पठार का विस्तार है और इसे ''हाड़ौती का पठार'' कहा जाता है। यह क्षेत्र गोंडवाना लैंड का अवशेष है। वनरक्षक
- राजस्थान के कुल क्षेत्रफल का 6.89% हिस्सा इस पठार में आता है, जबकि राज्य की 11% जनसंख्या यहाँ निवास करती है।
- इसका विस्तार कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़, भीलवाड़ा, पूर्वी बांसवाड़ा और पूर्वी चित्तौड़गढ़ तक है।
- यह प्रदेश मध्यप्रदेश राज्य के साथ अपनी सीमा (पूर्वी, दक्षिणी एवं दक्षिणी-पश्चिमी सीमा) साझा करता है।
- यहाँ लावा मिश्रित शैल और विंध्यन शैलें पाई जाती हैं। इस पठारी भाग की समुद्र तल से औसत ऊँचाई 500 मीटर है। इस क्षेत्र में काली व लाल मिट्टी पाई जाती है।
- चम्बल, पार्वती एवं काली सिंध इस क्षेत्र की प्रमुख नदियाँ हैं। चम्बल पर भैंसरोड़गढ़ के निकट प्रसिद्ध **चूलिया जल प्रपात** है। भैंसरोड़गढ़ व बिजौलिया के बीच के पठारी भाग को **'ऊपरमाल'** कहा जाता है।
- इस भू-भाग में बूँदी व मुकुन्दरा पहाड़ियाँ स्थित है।
  - (a) **बूंदी की पहाड़ियाँ**—यह दोहरी पर्वतमाला है, जो अर्द्धचंद्राकार रूप में 96 कि.मी. तक फैली है। इसका **सर्वोच्च शिखर ''सतूर''** (353 मीटर) है।
  - (b) **मुकुंदरा पर्वत श्रेणी**—यह श्रेणी हाड़ौती के मध्य उत्तर-पश्चिम से दक्षिण-पूर्व की ओर 120 कि.मी. तक फैली है।इसका विस्तार झालावाड़ एवं कोटा दोनों जिलों में है। इसका **सर्वोच्च शिखर** चंदवाड़ी क्षेत्र (517 मीटर) है।
- बूंदी, जैतावास, रामगढ़-खटगढ़ और लाखेरी के पास चार प्रमुख दर्रे

स्थित हैं। चंबल नदी और उसकी सहायक नदियाँ (कालीसिंध, पार्वती, मेज) यहाँ उपजाऊ मैदान का निर्माण करती हैं।

❖ इस क्षेत्र में काली/कपासी/रेगुर मिट्टी पायी जाती है। राजस्थान में सबसे अधिक वर्षा इसी क्षेत्र में होती है।

❖ हाड़ौती पठार को भौतिक दृष्टि से दो उप-प्रदेशों में विभाजित किया जाता है—

(i) विंध्यन कगार भूमि

❖ यह कगार मुख्य रूप से बलुआ व चूना पत्थरों से बना है। इसकी औसत ऊँचाई 350 से 550 मीटर के बीच है। कगारों का मुख बनास व चम्बल नदी के बीच क्रमबद्ध दक्षिण-पूर्व एवं पूर्व दिशा की ओर है। उत्तर में चम्बल के सहारे-सहारे ये सवाई माधोपुर, करौली व धौलपुर क्षेत्र में फैले हुए हैं।

❖ राज्य के दक्षिणी पूर्वी भाग से **महान सीमा भ्रंश** गुजरता है, जो अरावली पर्वत के पूर्व में स्थित है। अरावली एवं विंध्याचल पर्वतमाला का मिलन स्थल होने के कारण इसे 'महान सीमा भ्रंश' कहते है। इसका विस्तार राज्य के बूंदी, कोटा, सवाई माधोपुर एवं धौलपुर जिलों में हैं।

(ii) दक्कन का लावा पठार

❖ यह दक्षिणी पूर्वी राजस्थान का चौड़ा व ऊपर उठा पथरीला भू-भाग है। यह बलुआ पत्थर व चूना पत्थर चट्टानों से निर्मित है।

❖ इस पठार का विस्तार **कोटा, बूँदी, बारां** एवं **झालावाड़** जिलों में हैं। यहाँ चम्बल एवं उसकी सहायक नदियों ने उपजाऊ मैदान का निर्माण किया है।

❖ इसका पूर्वी व दक्षिणी भाग लावा से ढका है। यहाँ पर उपजाऊ काली मिट्टी पाई जाती है। चम्बल व उसकी सहायक काली सिन्ध व पार्वती नदियों ने कोटा में एक **'त्रिकोणीय जलोढ़ मैदान'** की रचना की है।

(iii) शाहबाद उच्च क्षेत्र

❖ यह बारां जिले के पूर्वी भाग में, मध्य प्रदेश की सीमा से सटा क्षेत्र है। समुद्र तल से इसकी ऊँचाई 300 मीटर से अधिक है। इसका सर्वोच्च शिखर थाना कस्बा (456 मीटर) है।

❖ रामगढ़ कस्बे के पास **घोड़े की नाल के आकार** (Horse Shoe Type) की पर्वत श्रृंखला है। इसके क्रेटर के मध्य एक छोटी झील स्थित है। वर्ष 2021 में यूनेस्को ने **रामगढ़ क्रेटर** को विश्व धरोहर सूची में शामिल किया। कनाडा स्थित अर्ध इम्पैक्ट डाटा बेस सोसायटी ने इसे विश्व का 200वां मान्यता प्राप्त क्रेटर घोषित किया।

❖ **झालावाड़ पठार एवं डग-गंगधार की उच्च भूमि**—दक्षिणी हाड़ौती क्षेत्र में स्थित है तथा मालवा के पठार का उत्तरी भाग है। यहाँ काली मिट्टी का विस्तार है।

❖ **डग-गंगधार की उच्च भूमि**—पठार के दक्षिण-पश्चिमी भाग में स्थित है। सामान्य ऊँचाई: 450 मीटर। क्षेत्र में छोटी-छोटी पहाड़ियाँ यत्र-तत्र फैली हुई हैं।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. राजस्थान के इन क्षेत्रों में से कौन सा 'शुष्क उत्तर पश्चिमी मैदान' का एक भाग है?
(A) उत्तर पश्चिमी बीकानेर (B) बाड़मेर
(C) गंगानगर (D) हनुमानगढ़ **[B]**

2. निम्नलिखित में से राजस्थान का कौन सा भौगोलिक क्षेत्र हरियाणा राज्य के साथ अपनी सीमा साझा नहीं करता है ?
(A) दक्षिण पूर्वी पठारी क्षेत्र (B) अर्धशुष्क क्षेत्र
(C) पूर्वी मैदानी क्षेत्र (D) अरावली क्षेत्र **[A]**

3. निम्न में से कौन सा राजस्थान का अक्षांशीय विस्तार है?
(A) 23°03' उत्तर एवं 30°12' उत्तर
(B) 23°03' उत्तर एवं 30°12' दक्षिण
(C) 23°30' उत्तर एवं 30°21' उत्तर
(D) 23°30' दक्षिण एवं 30°12' दक्षिण **[A]**

4. राजस्थान के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में किस क्षेत्र का योगदान सर्वाधिक है?
(A) कृषि (B) सेवा (C) उद्योग (D) पशुपालन **[B]**

5. 'बरखान' स्थलाकृतियाँ निम्न में से किस भौतिक प्रदेश से संबंधित है?
(A) तटीय प्रदेश (B) मरुस्थलीय प्रदेश
(C) पर्वतीय प्रदेश (D) पठारी प्रदेश **[B]**

6. राजस्थान का निम्न में से कौन सा स्थान भारत के अनुसूचित मरुस्थल क्षेत्रों में नहीं है ?
(A) झुंझुनू (B) उदयपुर (C) जोधपुर (D) जैसलमेर **[B]**

7. भारत के कुल भूभाग का कितना प्रतिशत भाग राजस्थान में है? निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें।
(A) 7.3% (B) 13.3% (C) 10.4% (D) 12.4% **[C]**

8. निम्न में से अरावली पर्वतमाला का सबसे ऊँचा शिखर कौन सा है?
(A) सेर (B) गुरुशिखर (C) दिलवाड़ा (D) ऋषिकेश **[B]**

9. सूची I को सूची II से सुमेलित करें:

सूची I (देश-राज्य)	सूची II (राजस्थान की सीमा)
(a) पाकिस्तान	(i) दक्षिण
(b) मध्यप्रदेश	(ii) पूर्व
(c) पंजाब	(iii) उत्तर
(d) गुजरात	(iv) उत्तर-पश्चिम

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें :
(A) (a)-(i), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(iv)
(B) (a)-(iv), (b)-(iii), (c)-(ii), (d)-(i)
(C) (a)-(iv), (b)-(ii), (c)-(iii), (d)-(i)
(D) (a)-(iv), (b)-(i), (c)-(ii), (d)-(iii) **[C]**

10. राजस्थान के किस भौतिक प्रदेश में मुकन्दरा की पहाड़ियाँ स्थित हैं?
(A) उत्तरी अरावली (B) मध्य अरावली
(C) दक्षिणी अरावली (D) हाड़ौती पठार **[D]**

11. अरावली की दूसरी सबसे ऊँची चोटी है—
(A) गुरुशिखर (B) सेरगढ़
(C) अचलगढ़ (D) तारागढ़ **[B]**

12. मालपुरा-करौली के मैदानी भाग है—
(A) लूनी बेसिन का (B) चम्बल बेसिन का
(C) माही बेसिन का (D) बनास बेसिन का **[D]**

13. थार मरुस्थल में 'ढ़ांड' के नाम से कौनसा जाना जाता है?
(A) नखलिस्तान (B) चन्द्राकार बालुका स्तूप में गर्त
(C) उत्स्रुत बेसिन (D) मरुस्थल में प्लाया **[B]**

14. 'छप्पन का मैदान' स्थित है—
(A) बांसवाड़ा और कुशलगढ़ के बीच
(B) बांसवाड़ा और डूंगरपुर के बीच
(C) चित्तौड़गढ़ और प्रतापगढ़ के बीच
(D) प्रतापगढ़ और बांसवाड़ा के बीच **[D]**

2 जलवायु दशाएँ

- राजस्थान में अरावली के पश्चिम में शुष्क जलवायु (उच्च दैनिक एवं वार्षिक तापमान, निम्न आर्द्रता) तथा पूर्व में अर्द्ध शुष्क एवं उप-आर्द्र जलवायु (वर्षा की मात्रा में वृद्धि, वायु की गति में कमी) पायी जाती है।
- राजस्थान का अधिकांश भाग (99%) **उपोष्ण कटिबंध** में आता है इस कारण राजस्थान की जलवायु उपोष्ण जलवायु कहलाती है, कर्क रेखा के कारण बाँसवाड़ा एवं डूँगरपुर **उष्ण कटिबंध** में आता है।
- जलवायु का प्रभाव जल की उपलब्धता एवं प्राकृतिक वनस्पति पर प्रत्यक्ष होता है। जनसंख्या का वितरण, घनत्व, आवास प्रारूप, कृषि, सिंचाई, पशुपालन आदि भी जलवायु से प्रभावित होते हैं।
- किसी स्थान पर विशेष समय में वायुमंडलीय दशाओं (तापमान, आर्द्रता, वायु, वर्षा आदि) का योग 'मौसम' कहलाता है।
- राजस्थान में शुष्क एवं अर्द्धशुष्क जलवायु की प्रधानता है।
- यहाँ वर्षा के वितरण में अधिक विषमता परिलक्षित होती है।
- रेत की अधिकता के कारण दैनिक एवं वार्षिक तापान्तर अधिक पाया जाता है।
- ग्रीष्म ऋतु में यहाँ उच्च दैनिक तापमान 49-50°C तक पहुँच जाता है।
- ग्रीष्मकाल में सम्पूर्ण क्षेत्र में प्रचण्ड, शुष्क व गर्म धूलभरी आँधियाँ (लू) चलती है। शीतकाल में विशेषकर चूरू, फलौदी, जैसलमेर आदि क्षेत्रों में तापमान जमाव बिन्दु तक पहुँच जाता है।
- अधिकांश वर्षा, वर्षा ऋतु में होती है तथा **पूर्व से पश्चिम व दक्षिण से उत्तर की ओर वर्षा की मात्रा घटती जाती है।**
- वर्षा की परिवर्तनशीलता एवं न्यूनता के कारण सूखा एवं अकाल की स्थिति अधिक होना भी एक मुख्य विशेषता है।
- राजस्थान की अवस्थिति, समुद्र से दूरी, उच्चावच, वर्षा की मात्रा, तापमान, प्राकृतिक वनस्पति आदि राज्य की जलवायु को प्रभावित करने वाले तत्व है।

जलवायु प्रदेश

- तापमान व वर्षा के आधार पर राजस्थान को **पाँच मुख्य** जलवायु प्रदेशों में बाँटा जा सकता है—

1. **शुष्क प्रदेश**—इसे मरुस्थलीय प्रदेश भी कहते हैं। इस प्रदेश में शुष्क व उष्ण जलवायु दशाएँ पाई जाती हैं।
- यहाँ ग्रीष्मकाल में 45° से. से 49° सेन्टीग्रेड तक अधिकतम तापमान हो जाता है तथा शीतकाल में 8° सेन्टीग्रेड से शून्य डिग्री तक न्यूनतम तापमान पहुँच जाता है। यहाँ 25 से.मी. से कम वर्षा होती है।
- रेत की अधिकता के कारण ग्रीष्म ऋतु में धूल भरी आंधियाँ चलना आम है। अधिक दैनिक व वार्षिक तापान्तर यहाँ की विशेषता है।
- यहाँ मरुद्भिद कंटीली वनस्पति तथा बालुकास्तूप पाये जाते हैं।
- इस प्रकार की जलवायु **जैसलमेर, बाड़मेर, बीकानेर, फलौदी, उत्तर-पश्चिमी जोधपुर, पश्चिमी नागौर, पश्चिमी चूरू, दक्षिणी गंगानगर** में पाई जाती है।

2. **अर्द्ध-शुष्क प्रदेश**—अरावली के पश्चिम एवं शुष्क जलवायु प्रदेश के मध्य यह प्रदेश फैला है। यहाँ 25 से 45 से.मी. तक वार्षिक वर्षा होती है। गर्मियों में तापमान 36° से 42° सेन्टीग्रेड और शीतकाल का 10° से 17° सेन्टीग्रेड रहता है।
- इस प्रकार की जलवायु श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, **झुंझुनूं**, सीकर, डीडवाना-कुचामन, नागौर, जोधपुर, उत्तरी ब्यावर, पाली, उत्तरी सिरोही, जालौर, बालोतरा एवं द. पूर्वी बाड़मेर में पाई जाती है।
- यहाँ की मुख्य वनस्पति खेजड़ी, बबूल, रोहिड़ा, ओक, धोक, खींप, कंटीली झाड़ियाँ, सेवण, धामण, लावण घास आदि है।

3. **उपआर्द्र जलवायु प्रदेश**—इस प्रदेश में वार्षिक औसत 40 से 60 सेन्टीमीटर के मध्य वर्षा होती है। ग्रीष्म ऋतु का औसत तापमान 28° से 36° से. तथा शीत ऋतु का औसत तापमान 12° से 18° से. रहता है।
- इसके अन्तर्गत जयपुर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, अलवर, ब्यावर, अजमेर, भीलवाड़ा, सिरोही, दौसा, टोंक एवं पाली का दक्षिणी-पूर्वी भाग सम्मिलित है।
- यहाँ की मुख्य वनस्पति आँवला, बहड, खेरी, नीम, आम, हरड़ आदि है तथा बाजरा, गेहूँ, सरसो, चना, मूँगफली, जौ आदि की कृषि की जाती है। इस क्षेत्र में जलोढ़ मृदा पायी जाती है।

4. **आर्द्र जलवायु प्रदेश**—इस प्रदेश में 50 से 75 सेन्टीमीटर तक वर्षा होती है। ग्रीष्मकालीन तापमान 32° से 34° से. तथा शीतकालीन तापमान 12° से 18° से. रहते हैं।
- **भरतपुर, धौलपुर, सवाई माधोपुर, उदयपुर, डीग, उ. सलूम्बर, करौली, कोटा, बारां, बूँदी, राजसमन्द, चित्तौड़गढ़** एवं **प्रतापगढ़** जिले का उत्तरी भाग इस प्रदेश में सम्मिलित हैं।
- इस प्रदेश में पतझड़ वनस्पति पायी जाती है। जिसमें बेर, नीम, आम, शीशम, बबूल, शहतूत, गूगल, जामुन आदि वृक्ष शामिल है।

5. **अति आर्द्र जलवायु प्रदेश**—इस प्रदेश में 75 सेन्टीमीटर से अधिक वर्षा होती है। इसके अन्तर्गत **झालावाड़, दक्षिणी सलूम्बर, बांसवाड़ा, डूंगरपुर, सिरोही, दक्षिणी उदयपुर** व **प्रतापगढ़** जिला शामिल है। मानसून इस प्रदेश में सर्वाधिक सक्रिय रहता है।
- इस प्रदेश में सवाना वनस्पति पाई जाती है तथा आम, सागवान, जामुन, शहतूत, बांस, शीशम, खेरी आदि के वृक्ष बहुतायत से मिलते हैं।

जलवायु परिस्थितियाँ

- परम्परागत रूप से राजस्थान को जलवायु के आधार पर मुख्तः **तीन ऋतुओं** में बांटा गया है—

1. **शीत ऋतु**
- शीत ऋतु को सामान्यतः **दो भागों** में विभाजित किया गया है—
  - **(i) मानसून का प्रत्यावर्तन काल** (अक्टूबर से मध्य दिसम्बर)—वर्षा ऋतु का समापन अचानक नहीं होता बल्कि धीरे-धीरे होता है।

3 प्राकृतिक वनस्पति

❖ राजस्थान के कुल क्षेत्र वन क्षेत्र **33020.32 वर्ग किमी.** है जो कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 9.64% है। (**31 मार्च, 2025** तक की स्थिति)

❖ ISFR-2023 की **वन रिपोर्ट** के अनुसार राजस्थान में **अभिलेखित वन** या **घोषित वन** क्षेत्र **32869 वर्ग कि.मी.** है जो राजस्थान के **9.60 प्रतिशत** भू-भाग पर विस्तृत है।

❖ राजस्थान में कुल वनों एवं वृक्षों से आच्छादित क्षेत्रफल 27389.33 वर्ग कि.मी. है जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 8% है।

वनावरण (Forest Cover)	16548.31 वर्ग कि.मी.	4.84%
• अभिलेखित वन के अन्तर्गत वनावरण	12706.14 वर्ग कि.मी.	
• अभिलेखित वन के बाहर वनावरण	3842.07 वर्ग कि.मी.	
वृक्षावरण (Tree Cover)	10841.12 वर्ग कि.मी.	3.16%
कुल वनावरण एवं वृक्षावरण	**27,389.37 वर्ग कि.मी.**	**8%**

❖ वन रिपोर्ट के अनुसार 2021 के आंकलन की तुलना में 2023 में कुल वनावरण (वन आच्छादित क्षेत्र) में 83.80 वर्ग किमी. की कमी हुई है तथा वृक्षावरण में 478.26 वर्ग कि.मी. की वृद्धि हुई है। इस प्रकार कुल वन एवं वृक्षावरण में 394.46 वर्ग कि.मी. की बढ़ोत्तरी हुई हैं। राजस्थान में **घनत्व के आधार पर वनों की स्थिति** निम्न तालिका से स्पष्ट है—

अति सघन वन (VDF)	223.20 वर्ग कि.मी.	0.07%
मध्यम सघन वन (MDF)	4237.41 वर्ग कि.मी.	1.24%
खुले वन (OF)	12087.60 वर्ग कि.मी.	3.53%
कुल वनावरण	**16548.21 वर्ग कि.मी.**	**4.84%**
कुल झाड़ी क्षेत्र (Scrub)	5476.75 वर्ग कि.मी.	1.60%

❖ राजस्थान में वन क्षेत्र में **सर्वाधिक वृद्धि** एवं **सर्वाधिक कमी वाले जिले**—

रैंक	सर्वाधिक वृद्धि वाले जिले		सर्वाधिक कमी वाले जिले	
1.	सीकर	19.14 वर्ग किमी.	बारां	33.29 वर्ग किमी.
2.	बाड़मेर	19.00 वर्ग किमी.	प्रतापगढ़	30.79 वर्ग किमी.
3.	अलवर	16.39 वर्ग किमी.	अजमेर	18.34 वर्ग किमी.
4.	उदयपुर	12.46 वर्ग किमी.	बीकानेर	14.85 वर्ग किमी.
5.	जैसलमेर	11.46 वर्ग किमी.	चूरू	11.74 वर्ग किमी.

❖ राजस्थान में **सर्वाधिक** एवं **न्यूनतम वनावरण वाले जिले**—

रैंक	सर्वाधिक वनावरण वाले जिले		न्यूनतम वनावरण वाले जिले	
1.	उदयपुर	2766.30 वर्ग किमी.	चूरू	62.73 वर्ग किमी.
2.	अलवर	1198.74 वर्ग किमी.	हनुमानगढ़	92.29 वर्ग किमी.
3.	प्रतापगढ़	996.86 वर्ग किमी.	जोधपुर	111.23 वर्ग किमी.
4.	चित्तौड़गढ़	988.08 वर्ग किमी.	श्रीगंगानगर	113.46 वर्ग किमी.
5.	बारां	975.13 वर्ग किमी.	दौसा	121.80 वर्ग किमी.

❖ **सर्वाधिक** एवं **न्यूनतम वनावरण प्रतिशत वाले जिले**—

रैंक	सर्वाधिक वनावरण % वाले जिले		न्यूनतम वनावरण % वाले जिले	
1.	उदयपुर	23.60%	चूरू	0.45%
2.	प्रतापगढ़	22.48%	जोधपुर	0.49%
3.	सिरोही	17.50%	बीकानेर	0.86%
4.	करौली	15.18%	जैसलमेर	0.89%
5.	अलवर	14.30%	हनुमानगढ़	0.95%

❖ राजस्थान में झाड़ी क्षेत्र 5476.75 वर्ग किमी. है, जो राज्य के भौगोलिक क्षेत्र का 1.60% है। वन रिपोर्ट 2021 की तुलना में झाड़ी क्षेत्र में 668.24 वर्ग किमी. की वृद्धि हुई है।

❖ राजस्थान में नवीनतम वन रिपोर्ट 2023 के अनुसार सर्वाधिक एवं न्यूनतम झाड़ी क्षेत्र वाले जिले—

रैंक	सर्वाधिक झाड़ी क्षेत्र वाले जिले		न्यूनतम झाड़ी क्षेत्र वाले जिले	
1.	पाली	453.45 वर्ग कि.मी.	हनुमानगढ़	8.92 वर्ग कि.मी.
2.	अलवर	320.99 वर्ग कि.मी.	गंगानगर	16.38 वर्ग कि.मी.
3.	जयपुर	318.60 वर्ग कि.मी.	चूरू	36.36 वर्ग कि.मी.
4.	अजमेर	276.83 वर्ग किमी.	बीकानेर	50.17 वर्ग कि.मी.
5.	करौली	269.28 वर्ग किमी.	बाँसवाड़ा	58.28 वर्ग कि.मी.

वनों के प्रकार

1. उष्ण कटिबंधीय कंटीले वन

❖ इस प्रकार के वन **पश्चिमी मरुस्थलीय शुष्क व अर्द्ध-शुष्क प्रदेशों में** पाये जाते हैं। जैसलमेर, बाड़मेर, जोधपुर, फलौदी, पाली, बीकानेर, चूरू, नागौर, डीडवाना-कुचामन, सीकर, झुंझुनूं आदि जिलों में इस प्रकार की वनस्पति पाई जाती है।

❖ इन वनों में पेड़ बहुत छोटे आकार के होते हैं व छोटी झाड़ियों की अधिकता होती है। इस प्रकार के शुष्क जलवायु वाले वनों में **खेजड़ी, रोहिड़ा, बैर, कैर, थोर** आदि के वृक्ष व झाड़ियाँ उगते हैं। इन पेड़ों व झाड़ियों की जड़े लम्बी होती हैं तथा पत्तियाँ कंटीली होती हैं।

❖ मरुस्थलीय प्रदेश में खेजड़ी की अत्यधिक उपयोगिता के कारण इसे **'मरुस्थल का कल्पवृक्ष'** कहा जाता है।

❖ इन वनों में कई तरह की झाड़ियां भी पाई जाती हैं। **फोग, आकड़ा, कैर, लाना, अरणा** व **झड़बेर** इस क्षेत्र की प्रमुख झाड़ियां है। इनके अतिरिक्त इस क्षेत्र में कई तरह की घास भी पाई जाती है। इन घासों में **सेवण** व **धामण** नाम की घास बहुत प्रसिद्ध है। धामण घास दुधारू पशुओं के लिए बहुत उपयोगी होती है जबकि सेवण घास सभी पशुओं के लिए पौष्टिक होती है।

2. उष्ण कटिबन्धीय शुष्क पतझड़ वाले वन

❖ इन वनों का विस्तार राजस्थान के बहुत बड़े क्षेत्र में है। ये वन राजस्थान के 50 से 100 से.मी. वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। ये वन राजस्थान

4 प्रमुख मृदाएँ

❖ राजस्थान की मिट्टियों को रंग, गठन व उपजाऊपन के आधार पर निम्न वर्गों में बांटा गया हैं—

1. मरुस्थलीय/रेतीली मिट्टी

❖ यह मिट्टी पश्चिमी राजस्थान में पाई जाती है। जालौर, बाड़मेर, बालोतरा, जैसलमेर, जोधपुर, फलौदी, बीकानेर, चूरू, झुंझनूं, नागौर आदि जिलों के अधिकांश क्षेत्रों में यह मिट्टी पाई जाती है। यह मिट्टी कम उपजाऊ होती है। इसका निर्माण प्रधानतः भौतिक अपक्षय द्वारा होता है। यह मृदा पवनों के द्वारा स्थानान्तरित होती रहती है।

❖ इसमें उपजाऊ तत्वों की मात्रा कम व लवणता अधिक होती है। इसमें जल धारण क्षमता कम पाई जाती है। इस मिट्टी में 90-95% तक बालूकण पाए जाते हैं।

❖ यह मिट्टी 25 सेमी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में मिलती है। इस मृदा में pH मान की अधिकता एवं जैविक पदार्थों की कमी पायी जाती है।

❖ इसमें बाजरा, मोठ, ज्वार आदि खरीफ फसलों को बोया जाता है।

❖ यह राज्य में सबसे अधिक भू-भाग में पायी जाने वाली मिट्टी है।

2. लाल-पीली मिट्टी

❖ इस प्रकार की मृदा सवाई माधोपुर एवं भीलवाड़ा जिले के पश्चिमी भाग तथा सिरोही, राजसमन्द, करौली, टोंक, **अजमेर**, उदयपुर जिलों में पाई जाती है। इसमें चीका एवं दोमट दोनों प्रकार की मिट्टियाँ पाई जाती हैं। इस मिट्टी में उपजाऊ तत्वों की कमी होती है परन्तु नमी धारण करने की क्षमता होती है।

❖ इसमें चूना व नाइट्रोजन की कमी पाई जाती है। लौह अंश के कारण इस मिट्टी का रंग लाल व पीला होता है। यह मिट्टी मूंगफली व कपास की कृषि के लिए उपयुक्त है।

3. लैटेराइट/लाल-लोमी मिट्टी

❖ यह डूंगरपुर, बाँसवाड़ा, सलूम्बर, उदयपुर के मध्य व दक्षिणी भागों एवं दक्षिणी राजसमन्द जिले में मिलती है। यह प्राचीन स्फट्कीय व कायान्तरित चट्टानों से निर्मित है। इस मिट्टी के कण बारीक होते हैं जिसके कारण यह लम्बे समय तक आर्द्रता बनाये रखती है।

❖ इसमें नाइट्रोजन, फॉस्फोरस, ह्यूमस आदि की कमी पाई जाती है। लौह तत्व की उपस्थिति के कारण इस मिट्टी का रंग लाल दिखाई देता है।

❖ इस मिट्टी में मक्का, चावल व गन्ने की खेती की जाती है।

4. मिश्रित लाल व काली मिट्टी

❖ यह मिट्टी बांसवाड़ा, राजसमंद, सलूम्बर, पूर्वी उदयपुर, डूंगरपुर, चित्तौडगढ़, भीलवाड़ा जिलों में मिलती है।

❖ इस मिट्टी का निर्माण मालवा के पठार की काली मिट्टी एवं दक्षिणी अरावली की लाल मिट्टी के मिश्रण से हुआ है।

❖ इसमें चूना, नाइट्रोजन व फॉस्फोरस की कमी पाई जाती है पर पोटाश पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है।

❖ इस मिट्टी में चीका की अधिकता पाई जाती है। यह उपजाऊ मिट्टी है, इसमें कपास, गन्ना, मक्का आदि की खेती की जाती है।

5. काली/रेगुर मिट्टी

❖ यह मिट्टी राज्य के दक्षिणी-पूर्वी जिलों कोटा, बूंदी, बारां व झालावाड़ में मिलती है। यह उपजाऊ मिट्टी ज्वालामुखी निर्मित बैसाल्ट चट्टानों के अपरदन से बनी है। यह चीका प्रधान दोमट मिट्टी है।

❖ इस मिट्टी में कैल्शियम व पोटाश पर्याप्त मात्रा में पाया जाता है पर नाइट्रोजन की कमी मिलती है। यह उपजाऊ मिट्टी है जिसमें व्यापारिक फसलों गन्ना, धनिया, चावल व सोयाबीन की अच्छी पैदावार होती है।

❖ यह मिट्टी कपास की खेती के लिए अधिक उपयुक्त है अतः इसे **'कपासी मिट्टी'** भी कहा जाता है।

❖ यह मिट्टी गीली होने पर फूल जाती है और चिपचिपी होती है। सूखने पर यह मिट्टी सिकुड़ जाती है एवं इसमें दरारे पड़ जाती है, इस प्रकार इसमें **स्वतः जुताई का गुण** पाया जाता है। काली मिट्टी में बारीक कण होने के कारण नमी धारण की क्षमता अधिक होती है।

6. कछारी/जलोढ़ मिट्टी

❖ यह राज्य के उत्तरी व पूर्वी जिलों गंगानगर, हनुमानगढ़, अलवर, खैरथल-तिजारा, कोटपूतली-बहरोड़, डीग, भरतपुर, धौलपुर, करौली, सवाई माधोपुर, दौसा, जयपुर व टोंक में मिलती है।

❖ इस मिट्टी का निर्माण अवसादी चट्टानों के क्षरण से होता है। इसे नदियों द्वारा वहित एवं निक्षेपित किया जाता है। इस मिट्टी का विस्तार राज्य के पूर्वी मैदानी भागों की घाटियों एवं नदियों में है।

❖ यह हल्के भूरे लाल रंग की होती है। यह गठन में रेतीली **दोमट** प्रकार की होती है। यह मिट्टी उपजाऊ होती है। इसमें चूना, फॉस्फोरस, पोटाश व लौह अंश पर्याप्त मात्रा में पाये जाते हैं पर नाइट्रोजन की कमी पाई जाती है। यह मिट्टी गेहूँ, सरसों, कपास व तम्बाकू के लिए बहुत उपयोगी है।

7. भूरी रेतीली मिट्टी

❖ यह मिट्टी नागौर, डीडवाना-कुचामन, बाड़मेर, बालोतरा, जालौर, पाली, जोधपुर, सिरोही, सीकर एवं झुझुनूं जिलों में मिलती हैं।

❖ इसमें फास्फेट की मात्रा पर्याप्त होती है। मृदा की उर्वरता नाइट्रेट की उपस्थिति के कारण और अधिक बढ़ जाती है। इसका रंग पीला-भूरा होता है। इसे **'सीरोजम मिट्टी'** भी कहा जाता है।

❖ इसमें ज्वार, बाजरा-मूंग, मोठ आदि की खेती की जाती है।

8. भूरी मिट्टी

❖ इस मिट्टी का विस्तार अरावली के पूर्वी भागों में है। यह भीलवाड़ा, सवाई माधोपुर, टोंक एवं अजमेर जिलों में पायी जाती है।

❖ यह मिट्टी बनास बेसिन में पायी जाती है। इसमें हाइड्रोजन एवं फास्फोरस की मात्रा कम होती है। यह कृषि के लिए उपयुक्त होती है।

9. लवणीय मिट्टी

❖ यह मिट्टी बाड़मेर, बालोतरा, जालौर एवं पाली जिलों में पायी जाती है।

❖ इसमें सोडियम, पोटेशियम एवं मैग्नीशियम की मात्रा अधिक होती है।

❖ क्षारीयता के कारण कम उपजाऊ होती है। इसमें केवल झाड़ीनुमा पौधे

5 अपवाह तंत्र : नदियाँ, झीलें, बाँध

राजस्थान की नदियाँ

❖ अरावली पर्वतमाला **'महान् भारतीय जल विभाजक रेखा'** का हिस्सा है। इसके पूर्व की नदियाँ **बंगाल की खाड़ी** और पश्चिमी भाग की नदियाँ **अरब सागर** अपवाह प्रणाली का हिस्सा है। **चम्बल** के अलावा राजस्थान की सभी नदियाँ मौसमी हैं। राजस्थान में अपवाह प्रणाली के **तीन रूप** हैं—

1. आंतरिक अपवाह प्रणाली

घग्घर नदी **उपनाम–सरस्वती नदी, मृत नदी, दृषद्वती नदी (कुल लम्बाई - 465 किमी., राजस्थान में 100 किमी.)**	✧ **उद्गम**—शिवालिक श्रेणी (हिमाचल प्रदेश)। ✧ **विलीन**—हनुमानगढ़ में विलीन, बाढ़ के समय पानी **फोर्ट अब्बास** (पाकिस्तान) तक जाता है। ✧ यह हनुमानगढ़ जिले में टिब्बी तहसील से प्रवेश करती है। यह राज्य की एकमात्र नदी है जो उत्तर दिशा से प्रवेश करती है। ✧ **प्रवाह**—हिमाचल प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, राजस्थान। ✧ **तलवाड़ा झील**—हनुमानगढ़ में इसी नदी द्वारा निर्मित है। ✧ राजस्थान की अन्तःप्रवाह की सबसे लम्बी नदी है। ✧ **नाली**—घग्घर नदी के पाट को **नाली** कहते हैं। ✧ **हाकरा**—पाकिस्तान में इस नदी का प्रवाह हाकरा कहलाता है।
साबी नदी **(185 किमी.)**	✧ **उद्गम**—सेवर की पहाड़ियाँ (शाहपुरा, जयपुर)। ✧ **प्रवाह क्षेत्र**—जयपुर, कोटपूतली-बहरोड़ व खैरथल-तिजारा। ✧ **विलीन**—पटौदी (हरियाणा)। ✧ मुगलकाल में यह नदी अलवर जिले में बाढ़ के लिए कुख्यात थी।
कान्तली नदी **(100 किमी.)**	✧ **उद्गम**—खण्डेला (सीकर)। ✧ **प्रवाह क्षेत्र**—सीकर, झुँझुनूँ ✧ **विलीन**—चूरू सीमा पर मंडरेला **(झुँझुनूँ)** में। ✧ **तोरावाटी बेसिन**—कान्तली नदी का अपवाह क्षेत्र। ✧ इनके किनारे सीकर जिले में 'गणेश्वर सभ्यता' एवं लौहयुगीन पुरास्थल 'सुनारी' स्थित हैं।
काकनी नदी, **उपनाम– मसूरदी, काकनेय**	✧ **उद्गम**—जैसलमेर में कोटड़ी गाँव की पहाड़ियाँ। ✧ **विलीन**—बुझ झील (जैसलमेर)।
मेंथा/मेंढ़ा नदी	✧ **उद्गम**—मनोहरपुर (जयपुर)। ✧ **प्रवाह**—जयपुर, डीडवाना-कुचामन। ✧ **विलय**—नागौर में सांभर झील में। ✧ प्रसिद्ध जैन तीर्थ लूणवाँ (डीडवाना-कुचामन) मेन्था नदी के किनारे ही स्थित है।
रूपनगढ़	✧ अजमेर में किशनगढ़ की पहाड़ियों से निकलकर सांभर झील में विलय। ✧ निम्बार्क 'सम्प्रदाय की प्रधानपीठ', 'सलेमाबाद' (अजमेर) इसी नदी के किनारे स्थित है।
रूपारेल **उपनाम–वराह, लसवाड़ी**	✧ अलवर में **उदयनाथ पहाड़ी** से निकलकर कुसलपुर (भरतपुर) के निकट लुप्त। ✧ भरतपुर में रूपारेल नदी में सीकरी बाँध का निर्माण किया गया है। ✧ सीकरी बाँध से मोती झील (भरतपुर) को जलापूर्ति होती है। ✧ मोती झील से सुजानगंगा नहर द्वारा लोहागढ़ दुर्ग की खाई को जलापूर्ति होती है।
कुकुन्द नदी	✧ भरतपुर जिले में प्रवाहित इस नदी पर बयाना (भरतपुर) में 'बारेठा बाँध' बनाया गया है। ✧ इसके समीपवर्ती इलाकों में बन्ध बारेठा अभयारण्य बनाया गया है।

2. अरब सागरीय अपवाह तंत्र

लूनी नदी (लवणती/मरु आशा/सागरमती/आधी मीठी आधी खारी) **(495 किमी.)** **(राज्य में 330 किमी.)**	✧ **उद्गम**—नाग पहाड़ (पुष्कर, अजमेर) ✧ **बहाव क्षेत्र**—अजमेर, नागौर, ब्यावर, जोधपुर, बालोतरा, बाड़मेर, जालौर। ✧ **सहायक नदियाँ**—जवाई, बांडी, लीलड़ी, मीठड़ी, सरस्वती, गुहिया, सूकड़ी, सागी, जोजड़ी। ✧ **जोजड़ी**—लूनी की एकमात्र सहायक नदी जो अरावली पर्वत से नहीं निकलती और लूनी में दायीं ओर से मिलती है। ✧ **बालोतरा**—लूनी नदी के पेटे से नीचे स्थित शहर, यहाँ से इसका पानी खारा हो जाता है। ✧ यह पश्चिमी राजस्थान की सबसे लम्बी नदी है। ✧ **गौडवाड़ प्रदेश**—इसके प्रवाह क्षेत्र को गौड़वाड़ प्रदेश कहते हैं। ✧ राजस्थान की दूसरी सर्वाधिक जलग्रहण क्षेत्र वाली नदी है। **मल्लीनाथ पशु मेला**—तिलवाड़ा (बालोतरा) में लूनी नदी के किनारे यह पशु मेला लगता है। ✧ जालौर में लूनी नदी के बाढ़ के जल को रेल या नाड़ा कहते हैं। ✧ **विलय**— कच्छ की खाड़ी (अरब सागर) में विलय।
जवाई नदी **(96 किमी.)**	✧ **उद्गम**—गोरिया गाँव, बाली तहसील (पाली) ✧ **बहाव क्षेत्र**—पाली, सिरोही, जालौर, बाड़मेर। ✧ **सहायक नदी**—खारी ✧ **जवाई बाँध** (मारवाड़ का अमृत सरोवर)—सुमेरपुर (पाली) के निकट जवाई नदी पर यह बाँध बना हुआ है। इस बाँध की जलापूर्ति के लिए सेई नदी पर सेई बाँध (उदयपुर) बनाकर सुरंग द्वारा पानी लाया जाता है। ✧ **विलय**—बाड़मेर में लूनी नदी में मिल जाती है।

6 राजस्थान में सिंचाई परियोजनाएँ

बहुउद्देशीय परियोजनाएँ

भाखड़ा नाँगल परियोजना

❖ भाखड़ा नाँगल परियोजना (देश की **सबसे बड़ी** बहुउद्देश्यीय परियोजना) **पंजाब, हरियाणा** एवं **राजस्थान** की संयुक्त परियोजना है।
   (i) भाखड़ा बाँध (1962 में निर्मित) बिलासपुर, हिमाचल प्रदेश इसकी ऊँचाई 225.55 मीटर है। (भारत का सबसे ऊँचा बाँध)
   (ii) नाँगल बाँध (1952 में निर्मित) रोपड़, पंजाब

❖ **भाखड़ा नहर प्रणाली** (1954) से राजस्थान में सिंचाई एवं पेयजल हेतु जल उपलब्ध होता है। इस परियोजना से राज्य के **हनुमानगढ़** एवं **श्रीगंगानगर** जिले में सिंचाई होती है।

❖ बिस्त दोआब नहर नाँगल बाँध से नीचे सतलज नदी पर रोपड़ हैडवर्क्स से निकाली गई है जो पंजाब को सिंचाई सुविधा प्रदान करती है।

❖ राजस्थान को भाखड़ा नाँगल परियोजना से (पंजाब सरकार व राजस्थान के मध्य 1959 में हुए भाखड़ा नाँगल समझौते के तहत) 15.22 प्रतिशत हिस्सा (विद्युत व जल दोनों में) प्राप्त होता है।

❖ इस परियोजना से राजस्थान को विद्युत व **2.3 लाख हैक्टेयर** क्षेत्र में सिंचाई सुविधा उपलब्ध होती है। चूरू, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, सीकर, झुंझुनूँ व बीकानेर जिलों को विद्युत प्राप्त होती है।

व्यास परियोजना

❖ यह **पंजाब, हरियाणा** एवं **राजस्थान की संयुक्त परियोजना** है।

❖ व्यास नदी पर हिमाचल प्रदेश में **पंडोह** एवं **पोंग** बाँध बनाए गए हैं।

❖ राजस्थान को अधिकांश जल एवं जल विद्युत **पोंग बाँध** (कांगड़ा) से प्राप्त होता है। व्यास परियोजना के पोंग बाँध से इंदिरा गांधी नहर परियोजना को शीतकाल में **अतिरिक्त जल की आपूर्ति** होती है।

❖ **व्यास-सतलज लिंक परियोजना** भाखड़ा व नाँगल बाँध में पानी की आपूर्ति बनाये रखने एवं व्यास नदी के अतिरिक्त जल को प्रयुक्त करने हेतु पंडोह बाँध से निकाली गई है। देहर के बाद यह लिंक नहर सतलज में मिला दी गई है।

❖ रावी व्यास नदी जल-विवाद के हल हेतु राजीव-लोंगोवाल समझौते के तहत 1986 में गठित इराडी कमीशन द्वारा राजस्थान के लिए 86 लाख एकड़ फीट पानी का अतिरिक्त हिस्सा निर्धारित किया गया।

चम्बल घाटी परियोजना

❖ यह **राजस्थान** एवं **मध्य प्रदेश** की समान भागीदारी (50 : 50) वाली परियोजना है। इस पर चार बाँध बनाये गये हैं—
   (i) गाँधी सागर (मंदसौर, मध्यप्रदेश)—यह परियोजना के प्रथम चरण में **1959 ई.** में बनाया गया **परियोजना का सबसे बड़ा बाँध** है।
   (ii) राणा प्रताप सागर (चित्तौड़गढ़, राजस्थान)—चम्बल नदी पर **राजस्थान में बनाया गया सबसे बड़ा बाँध।**
   (iii) जवाहर सागर बाँध (कोटा, राजस्थान)—1972 में निर्मित।
   (iv) कोटा बैराज (कोटा, राजस्थान)—1960 में निर्मित।

❖ इस परियोजना के तहत **4.5 लाख हेक्टेयर भूमि** पर सिंचाई की जाती है।

❖ चम्बल परियोजना से राजस्थान में सिंचाई **कोटा, बूँदी एवं बाराँ** जिलों में होती है।

❖ चम्बल परियोजना के तहत सिंचाई करने हेतु कोटा बैराज से दो प्रमुख नहरें निकाली गयी।
   (A) बायीं मुख्य नहर (LMC)—इसकी लम्बाई 259 कि.मी. है, इस नहर से लाडपुरा (कोटा), केशवरायपाटन, बूँदी एवं इन्द्रगढ़ (बूँदी) तहसीलों में सिंचाई की सुविधा प्राप्त है।
   (B) दायीं मुख्य नहर (RMC)—124 कि.मी. लम्बी इस नहर से दीगोद, पीपलदा, लाडपुरा (कोटा), अन्ता, माँगरोल (बाराँ) तहसीलों में सिंचाई की जाती है। इस नहर से सिंचाई हेतु कुल 8 लिफ्ट नहरे बनायी गई है - कोटा में जालीपुरा व दीगोद तथा बारां में अंता, अंता माईनर, पंचेल, गणेशगंज, सोरखण्ड एवं कचारी। इस नहर से मध्यप्रदेश में भी सिंचाई की जाती है।

माही बजाज सागर परियोजना

❖ माही परियोजना के निर्माण हेतु राजस्थान एवं गुजरात राज्यों के मध्य समझौता वर्ष 1966 में हुआ। परियोजना का कार्य 1972 ई. में प्रारम्भ हुआ। यह परियोजना माही नदी पर **गुजरात (55%)** एवं **राजस्थान (45%)** की भागीदारी से बनाई गई है।

❖ **बाँध :**
   (i) **माही बजाज सागर** (बोरखेड़ा गाँव, **बाँसवाड़ा**), 1983 में निर्मित।
   (ii) **कागदी पिक-अप बाँध** (कागदी गाँव, **बाँसवाड़ा**), घाटोल एवं गानोड़ा विद्युत गृह।
   (iii) **कडाणा बाँध** (**पंचमहल**, गुजरात)

❖ इस परियोजना की समस्त विद्युत **राजस्थान** को मिलती है।

❖ इस परियोजना से राजस्थान के डूँगरपुर जिले की आसपुर, सागवाड़ा एवं सीमलवाड़ा तहसील व बाँसवाड़ा जिलों के जनजाति क्षेत्रों में सिंचाई उपलब्ध हुई है।

❖ माही परियोजना का नामकरण प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं राष्ट्रीय नेता श्री जमनालाल बजाज के नाम पर माही बजाज सागर परियोजना किया गया।

वृहद सिंचाई परियोजनाएँ

नर्मदा नहर परियोजना

❖ नर्मदा जल विवाद प्राधिकरण द्वारा राजस्थान के हिस्से का निर्धारित **0.50 MAF** पानी के उपयोगार्थ **सरदार सरोवर बाँध (गुजरात)** से 532 किमी. लम्बी नहर निकाली गई है। इस नहर की 458 किमी. लम्बाई गुजरात में एवं **74 किमी. लम्बाई राजस्थान** में है।

❖ नर्मदा नहर से **जालोर तथा बाड़मेर** जिलों में 233 गाँवों की 2.46 लाख हेक्टेयर भूमि पर सिंचाई तथा तीन नगरों—**सांचोर, भीनमाल** एवं **जालौर** नगरों में पेयजल उपलब्ध है। यह राजस्थान की पहली

7 राजस्थान में खनिज सम्पदा

- ❖ राजस्थान खनिज संसाधनों की दृष्टि से भारत के सबसे समृद्ध राज्यों में से एक है, यहाँ **82 प्रकार के खनिजों के भण्डार** हैं, जिनमें से **57 खनिजों का वर्तमान में वाणिज्यिक उत्पादन** किया जा रहा है।
- ❖ यह राज्य चूना पत्थर, सीसा-जस्ता, वोलस्टोनाइट, गार्नेट, बैराइट्स, सिलिका सैण्ड, ग्रेनाइट, संगमरमर एवं तांबा जैसे प्रमुख खनिजों का अग्रणी उत्पादक है।
- ❖ राजस्थान कोयला, लिग्नाइट एवं जिप्सम के राष्ट्रीय उत्पादन में भी महत्वपूर्ण योगदान देता है। इसके अतिरिक्त, यह राज्य राष्ट्रीय स्तर पर पत्थर उद्योग में विशेषतः मार्बल, सैण्ड स्टोन और ग्रेनाइट के क्षेत्र में प्रमुख स्थान पर है।

देश के खनिज संसाधनों में राज्य की हिस्सेदारी

खनिज का नाम	हिस्सेदारी (%)	खनिज का नाम	हिस्सेदारी (%)
पोटाश	94%	मार्बल	63%
सीसा एवं जस्ता अयस्क	89%	एस्बेस्टस	61%
चांदी अयस्क	88%	तांबा अयस्क	54%
वोलास्टोनाइट	88%	कैल्साइट	50%
जिप्सम	82%	टैल्क / स्टीएटाइट / सोप स्टोन	49%
गेरू	81%	बॉल क्ले	38%
बेंटोनाइट	75%	रॉक फॉस्फेट	31%
फ्लर्स अर्थ	74%	फ्लोराइट	29%
डोलोमाइट	72%	टंगस्टन	27%
फेल्डस्पार	66%		

राजस्थान खनिज नीति 2024

- ❖ इसका उद्देश्य पर्यावरण संरक्षण एवं सामुदायिक कल्याण सुनिश्चित करते हुए आर्थिक विकास के लिए राज्य के प्रचुर खनिज संसाधनों का लाभ उठाते हुए टिकाऊ एवं पारदर्शी खनिज विकास को बढ़ावा देना है।
- ❖ खनिज आधारित उद्योगों को बढ़ावा देना, निवेश आकर्षित करना और राज्य के सकल राज्य घरेलू उत्पाद (G.S.D.P.) में इस क्षेत्र के योगदान को बढ़ाना।
- ❖ शून्य-अपशिष्ट खनन, पर्यावरण-अनुकूल तकनीकों और अपशिष्ट प्रबंधन रणनीतियों को लागू करना।
- ❖ उन्नत अन्वेषण तकनीकों, ए.आई.- आधारित निगरानी और डिजिटल प्रशासन अपनाकर पारदर्शिता सुनिश्चित करना।
- ❖ जी.पी.एस.-आधारित ट्रैकिंग, जियो-फेंसिंग और रियल-टाइम निगरानी का उपयोग कर अवैध गतिविधियों को रोकना।

राजस्थान एम-सैंड नीति 2024

- ❖ राजस्थान एम-सैंड नीति 2024 एक रणनीतिक पहल है, जिसका उद्देश्य निर्माण कार्यों में नदी रेत (बजरी) के स्थान पर एक स्थायी विकल्प के रूप में निर्मित रेत (एम-सैंड) के उत्पादन और उपयोग को प्रोत्साहन देना है।
- ❖ निर्माण सामग्री की बढ़ती मांग और नदी रेत खनन से जुड़ी पर्यावरणीय चिंताओं को ध्यान में रखते हुए, यह नीति संसाधनों के उत्तरदायी प्रबंधन को सुनिश्चित करने के साथ साथ आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने का प्रयास करती है।
- ❖ **एम-सैंड के उपयोग को बढ़ावा देना**
- ❖ **एम-सैंड इकाइयों के लिए प्रोत्साहन**
  - ✧ वित्तीय लाभ
  - ✧ निवेश सब्सिडी
  - ✧ बिजली शुल्क छूट
  - ✧ स्टाम्प शुल्क में कमी
  - ✧ रोजगार लाभ
- ❖ **गुणवत्ता मानक एवं नियंत्रण**
- ❖ **अपशिष्ट प्रबंधन और स्थिरता**
- ❖ **कार्यान्वयन रणनीति**
- ❖ **कार्यान्वयन रणनीति**

खनिजों का वर्गीकरण

1. **धात्विक खनिज (Metallic Minerals)**—लोहा, चाँदी, टंगस्टन, मैंगनीज, सीसा-जस्ता, ताँबा, सोना, केडमियम, बॉक्साइट आदि।

(a) **लौह धात्विक खनिज (Iron Metallic Minerals)**—लोहा (Fe), एल्यूमिनियम (Al), एण्टीनम, गैलियम, लिथियम (Li), मैंगनीज (Mn), मर्करी, मॉलिब्डेनम, यूरेनियम (U), रेडमियम, थोरियम, टाइटेनियम आदि।

(b) **अलौह धात्विक खनिज (Non-Iron Metallic Minerals)**—ताँबा (Cu), निकिल (Ni), प्लेटिनम, सोना (Au), चाँदी (Ag), कोबाल्ट (Co), क्रोमियम (Cr), जिंक (Zn), लैड (Pb), बिस्मिथ, टंगस्टन (W), टेण्टलम/नियोबियन आदि।

2. **अधात्विक खनिज (Non-Metallic Minerals)**—एस्बेस्टॉस, अभ्रक, वोलस्टोनाइट, वरमीक्यूलाइट, फेल्सपार, सिलिका रेत, क्वार्ट्ज, डोलोमाइट, चायना क्ले, बॉलक्ले, फायरक्ले, पन्ना, गारनेट, जिप्सम ($CaSO_4 2H_2O$), राक फॉस्फेट, पाइराइट्स, चूना पत्थर, फ्लोर्सपार, बेराइट्स, बेन्टोनाइट, मुल्तानी मिट्टी, संगमरमर, ग्रेनाइट व इमारती पत्थर, सोपस्टोन, कैल्साइट, गेरू, नमक, केओलिन, स्लेट पत्थर आदि।
   - (a) **आणविक खनिज (Atomic Minerals)**—लिथियम, यूरेनियम, बेरिलियम, थोरियम आदि।
   - (b) **उर्वरक खनिज**—जिप्सम, रॉक फॉस्फेट, पाइराइट्स, पोटाश, गंधक, नाइट्रेट।
   - (c) **बहुमूल्य पत्थर**—हीरा, पन्ना, तामड़ा।
   - (d) **रासायनिक खनिज**—फ्लोराइट, नमक, चूना पत्थर, बेराइट।
   - (e) **ईंधन खनिज (Fuel Minerals)**—लिग्नाइट, पेट्रोलियम एवं प्राकृतिक गैस आदि।
   - (f) **गौण खनिज**—कैल्साइट, ग्रेनाइट, संगमरमर, स्लेटी पत्थर, मुल्तानी मिट्टी, घीया पत्थर आदि।

8 पशु सम्पदा

- **भारत** के **कुल पशुधन** का **10.60% राजस्थान** में पाया जाता है।
- दुग्ध उत्पादन में राजस्थान का देश में **दूसरा स्थान** है।
- राजस्थान का ऊन उत्पादन में देश में **प्रथम स्थान (47.53%** ऊन) है।
- राज्य में सर्वाधिक ऊन उत्पादक जिला **जोधपुर** है।
- एशिया की सबसे बड़ी ऊन मण्डी **बीकानेर** है।
- विश्व की सबसे बड़ी गौशाला **पथमेड़ा** (सांचौर, जालौर) में है।

20वीं पशुगणना (2019) के अनुसार राजस्थान में श्रेणीवार पशुओं की संख्या (अस्थायी आंकड़े)

क्र. सं.	पशु प्रजाति	2012 पशुगणना में संख्या	2019 पशुगणना में संख्या	कमी/वृद्धि प्रतिशत में	राज्य का देश में स्थान
1.	गाय	133,24,462	139,37,630	+4.41%	छठवां
2.	भैंस	129,76,095	136,93,316	+5.53%	दूसरा
3.	भेड़	90,79,702	79,03,857	–12.95%	चौथा
4.	बकरी	216,65,939	208,40,203	–3.81%	**प्रथम**
5.	घोड़े एवं टट्टू	37776	33679	–10.85%	तीसरा
6.	गधे	81468	23374	–71.31%	**प्रथम**
7.	ऊँट	325713	212739	–34.69%	**प्रथम**
8.	सूअर	237674	154808	–34.87%	—
9.	खच्चर	3375	1339	–60.33%	—
	Total	**57732204**	**56800945**	**–1.66%**	**दूसरा**
	कुक्कुट	8024424	14622975	+82.23%	—

राजस्थान में पशुधन में वृद्धि

वर्ष	कुल पशुओं की संख्या (लाखों में)	वृद्धि/कमी (लाखों में)
1951	255.21	—
1961	335.09	79.88
1972	388.78	33.69
1982	496.50	107.72
1988	409.01	–87.41
1992	484.45	75.44
1997	546.74	62.99
2003	492.43	–54.31
2007	566.63	74.20
2012	577.32	10.59
2019	568.00	–9.00

पशुगणना 2019 के मुख्य तथ्य

- पशु घनत्व—**166, पशु प्रति वर्ग किमी.**
- सर्वाधिक पशु घनत्व—**डूँगरपुर (433)**
- सबसे कम पशु घनत्व—**जैसलमेर (62)**
- पशुधन संख्या—**सर्वाधिक बाड़मेर और न्यूनतम धौलपुर**
- पशुओं में सर्वाधिक संख्या—**बकरी**
- राजस्थान में पशु आहार संयंत्र—तबीजी (अजमेर), झोटवाड़ा (जयपुर), नदबई (भरतपुर), लालगढ़ (बीकानेर), जोधपुर।
- अविका क्रेडिट कार्ड योजना, अविकापाल जीवन रक्षक, अविका कवच योजना और अविरक्षक योजना भेड़ पालन से सम्बन्धित है।
- नवीनतम पशुगणना के अनुसार **बकरी, ऊँट** एवं **गधों** की संख्या के दृष्टिकोण से राजस्थान देश में **प्रथम** स्थान पर है।
- पशुगणना-2019 के अनुसार राजस्थान में देश का कुल पशुधन है—
  (1) **7.24** प्रतिशत—गौवंश (2) **12.47** प्रतिशत—भैंस
  (3) **14.00** प्रतिशत—बकरियाँ (4) **10.64** प्रतिशत—भेड़
  (5) **84.43** प्रतिशत—ऊँट
- 2019 की पशुगणना में 2012 की तुलना में गौवंश तथा भैंस के अतिरिक्त सभी पशुओं की संख्या में कमी अंकित की गई है।
- नवीनतम पशुगणना में प्रतिशत की दृष्टि से सर्वाधिक कमी **–71.31%** गधों की संख्या में दर्ज की गई है, जबकि सर्वाधिक वृद्धि **+5.53%** भैंस की संख्या में हुई है।
- वर्ष 2012 की तुलना में 2019 में संख्या की दृष्टि से सर्वाधिक वृद्धि **भैंस** की संख्या में (7.17 लाख) हुई है, जबकि संख्यात्मक दृष्टि से **सर्वाधिक कमी भेड़ों** की संख्या में (–11.75 लाख) हुई है।
- 20वीं पशुगणना (2019) के अनुसार राजस्थान में सर्वाधिक संख्या में पाए जाने वाले पशु निम्न हैं—
  (1) बकरी—36.69 प्रतिशत (2) गाय—24.47 प्रतिशत
  (3) भैंस—24.12 प्रतिशत (4) भेड़—13.91 प्रतिशत

प्रदेश में पशुधन

ऊँट

- भारत में सर्वाधिक ऊँट राजस्थान (2.13 लाख) में हैं।
- राजस्थान में सर्वाधिक ऊँट जैसलमेर एवं न्यूनतम प्रतापगढ़ में है।
- **नाचना** (जैसलमेर) का ऊँट सुन्दरता, हिम्मत व बोझा ढोने के लिए प्रसिद्ध है।
- **गोमठ** (फलौदी) का ऊँट सवारी के लिए श्रेष्ठतम है।
- **'केन्द्रीय ऊँट अनुसंधान संस्थान' जोड़बीड़ (बीकानेर)** में है।
- **प्रमुख नस्लें**-बीकानेरी, जैसलमेरी, सिंधी, अलवरी, कच्छी।

भेड़

- राजस्थान का भेड़ों की संख्या की दृष्टि से चौथा स्थान है। सर्वाधिक भेड़ बाड़मेर में न्यूनतम बांसवाड़ा जिले में पायी जाती है।
- राष्ट्रीय भेड़ अनुसंधान संस्थान **अविकानगर (टोंक)** में हैं।
- भेड़-बकरियों के झुण्ड को **'रेवड़'** कहते हैं।
- भेड़ प्रजनन केन्द्र **फतेहपुर (सीकर)** व **बांकलिया (नागौर)** में है।
- केन्द्रीय ऊन विकास बोर्ड **जोधपुर** में है।
- भेड़ एवं ऊन प्रशिक्षण संस्थान **जयपुर** में है।
- केन्द्रीय ऊन विश्लेषण प्रयोगशाला **बीकानेर** में हैं।

9 वन्य जीव, अभयारण्य एवं संरक्षण

- ❖ राजस्थान में राजस्थान राज्य वन्य पशु एवं पक्षी संरक्षण अधिनियम, 1951, 23 अप्रेल **1951** को लागू हुआ।
- ❖ राजस्थान में 7 नवम्बर, **1955** को प्रथम बार राज्य के पाँच रियासती शिकारगाहों को वन्य जीवों के लिए आरक्षित क्षेत्र घोषित किया।
- ❖ भारत सरकार द्वारा पारित वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम, **1972, 1 सितम्बर, 1973** से राज्य में लागू किया गया। इस अधिनियम के तहत वन्य जीवों के शिकार पर पूर्ण प्रतिबंध लगाया गया।
  नोटः–42वें संविधान संशोधन द्वारा वन्यजीव को समवर्ती सूची का विषय बनाया गया है।
- ❖ देश में बाघों के संरक्षण के लिए **1 अप्रेल, 1973** को बाघ परियोजना प्रारम्भ की गई, इस परियोजना के प्रथम चरण में **1973** को **रणथम्भौर** में बाघ परियोजना प्रारम्भ की, तत्पश्चात् **1978-79** में **सरिस्का** (अलवर) में भी बाघ परियोजना लागू की।
- ❖ वर्तमान में देश में कुल **58** बाघ परियोजनाएँ कार्यरत है इनमें से **5** बाघ परियोजनाएँ राजस्थान में हैं जो निम्नलिखित हैं—

क्र.	टाइगर रिजर्व	विस्तार वाले जिले	क्षेत्रफल (वर्ग किमी.)
1.	**रणथम्भौर टाइगर रिजर्व**	सवाई माधोपुर, करोली, बूंदी, टोक	1530.23
2.	**सरिस्का टाइगर रिजर्व**	अलवर, जयपुर, कोटपूतली–बहरोड़	1213.34
3.	**मुकुन्दरा हिल्स टाइगर रिजर्व**	कोटा, बूंदी, झालावाड़, चित्तौड़गढ़	1135.79
4.	**रामगढ़ विषधारी हिल्स**	बूंदी, कोटा, भीलवाड़ा	1496.49
5.	**धौलपुर–करौली टाइगर रिजर्व**	धौलपुर, करौली	1057.88

- ❖ राजस्थान राज्य नम भूमि प्राधिकरण का गठन 10 अप्रैल 2018 को किया गया। वर्तमान में राजस्थान में **3** राष्ट्रीय उद्यान, **26** वन्य जीव अभयारण्य, **33** आखेट निषिद्धक्षेत्र, **4** जन्तुआलय, **4** बायोलॉजिकल पार्क, **7** मृगवन, **40** कंजर्वेशन रिजर्व, **76** अधिसूचित वैटलैण्ड एवं **5** नमभूमि क्षेत्र है। राज्य का जोधपुर जन्तुआलय **पक्षीशाला** एवं **गोडावण** के प्रजनन केन्द्र के लिए प्रसिद्ध है। जयपुर जन्तुआलय घड़ियाल के प्रजनन के लिए प्रसिद्ध है।

राज्य के जन्तुआलय

1. **जयपुर** (1876) 2. **उदयपुर** (1878)
3. **बीकानेर** (1922) 4. **कोटा** (1954)

- ❖ उदयपुर जन्तुआलय को पक्षी घर के रूप में विकसित किया जा चुका है तथा जयपुर व बीकानेर स्थित जन्तुआलय को पक्षी घर के रूप में विकसित किया जा रहा है।

राज्य में नम भूमियाँ

1. केवलादेव राष्ट्रीय उद्यान (1982 में अधिसूचित)
2. साँभर झील (1990 में अधिसूचित)।
3. खींचन गाँव, फलौदी (**जून 2025** में अधिसूचित)
4. मेनार गाँव, उदयपुर (**जून 2025** में अधिसूचित)
5. सिलीसेढ़ झील, अलवर (**दिसम्बर 2025** में अधिसूचित)

राज्य के जैविक उद्यान

क्र.	जैविक उद्यान	जिला	उद्घाटन तिथि
1.	सज्जनगढ़, (प्रथम)	उदयपुर	12 अप्रैल 2015
2.	नाहरगढ़	जयपुर	4 जून 2016
3.	माचिया	जोधपुर	20 जनवरी 2016
4.	अभेड़ा	कोटा	18 दिसम्बर 2021

- ❖ बीकानेर में मरुधरा जैविक उद्यान, अजमेर में पुष्कर जैविक उद्यान तथा अलवर जैविक उद्यान विकसित किये जा रहे हैं। बजट घोषणा 2025-26 के अनुसार भरतपुर जैविक उद्यान प्रस्तावित है।

राजस्थान के आखेट निषिद्ध क्षेत्र

क्र.	जिला	संख्या	आखेट निषिद्ध क्षेत्रों के नाम
1.	जोधपुर	**5**	डोली, गुड़ा विश्नोई, जम्मेव वरजी, साथिन एवं फीटकासनी
2.	फलौदी	**2**	ढेचू एवं लोहवट
3.	बीकानेर	**6**	जोहड़बीड़, मुकाम, बज्जू, दीयात्रा, देशनोक एवं सम्वतसर कोटसर
4.	अजमेर	**3**	तिलोरा, खोखलिया, गंगवाना
5.	खैरथल–तिजारा	**1**	जोहड़िया
6.	कोटपूतली–बहरोड़	**1**	बरदोद
7.	नागौर	**2**	रोटू व जरोदा
8.	जैसलमेर	**2**	रामदेवरा, उज्जला
9.	जयपुर	**2**	सन्थाल सागर, महला
10.	उदयपुर	**1**	बाकदरा
11.	चित्तौड़गढ़	**1**	मेनाल
12.	बारां	**1**	सोरसन
13.	बूंदी	**1**	कनक सागर
14.	बाड़मेर	**1**	धोरी मन्ना
15.	पाली	**1**	जवाई बाँध
16.	जालौर	**1**	सांचौर
17.	टोंक	**1**	रानीपुरा
18.	सवाई माधोपुर	**1**	कंवाल जी

10 जनसंख्या : वितरण, वृद्धि, घनत्व, साक्षरता एवं लिंगानुपात

❖ भारत सरकार के **गृह मंत्रालय** के अधीन **जनगणना आयुक्त एवं रजिस्ट्रार जनरल** के द्वारा राज्यों/के.शा.प्र. के सहयोग से **प्रत्येक 10 वर्ष** के अंतराल में जनगणना करवायी जाती है। भारत की **प्रथम जनगणना 1872 ई.** में, प्रथम व्यवस्थित जनगणना-**1881 ई.** में तथा **15वीं** जनगणना **2011 ई.** में की गयी। इसके अनुसार **राजस्थान का देश में आठवाँ स्थान** है। **2 जून, 2014** को **तेलंगाना राज्य के गठन** के पश्चात् राजस्थान का **सातवाँ स्थान** हो गया है। **16वीं जनगणना–2021** (आदर्श वाक्य : हमारी जनगणना, हमारा भविष्य) के तहत **मकान चिह्निकरण** का कार्य **अप्रेल–सितम्बर, 2020** की समयावधि में प्रारम्भ किया गया।

राजस्थान की जनगणना 2001 व 2011 का तुलनात्मक अध्ययन

क्र.सं.	तथ्य	2001	2011 (अनंतिम)	2011 (अंतिम)
1.	**राजस्थान की जनसंख्या**	5,65,07,188	6,86,21,012	**6,85,48,437**
2.	**जनसंख्या घनत्व (प्रति वर्ग किमी.)**	165	201	**200**
3.	**लिंगानुपात**	921	926	**928**
4.	**दशकीय जनसंख्या वृद्धि दर**	28.41%	21.44%	**21.3%**
5.	**सर्वाधिक जनसंख्या वाला जिला**	जयपुर	जयपुर	**जयपुर**
6.	**न्यूनतम जनसंख्या वाला जिला**	जैसलमेर	जैसलमेर	**जैसलमेर**
7.	**सर्वाधिक जनसंख्या घनत्व**	जयपुर (471)	जयपुर (598)	**जयपुर (595)**
8.	**न्यूनतम जनसंख्या घनत्व**	जैसलमेर (13)	जैसलमेर (17)	**जैसलमेर (17)**
9.	**सर्वाधिक लिंगानुपात वाला जिला**	डूँगरपुर (1022)	डूँगरपुर (990)	**डूँगरपुर (994)**
10.	**न्यूनतम लिंगानुपात वाला जिला**	जैसलमेर (821)	धौलपुर (845))	**धौलपुर (846)**
11.	**सर्वाधिक दशकीय वृद्धि दर** (2001-2011)	जैसलमेर (47.52%)	बाड़मेर (32.55%)	**बाड़मेर (32.5%)**
12.	**न्यूनतम दशकीय वृद्धि दर**	राजसमंद (19.97%)	गंगानगर (10.06%)	**गंगानगर (10.0%)**
13.	0-6 **आयु वर्ग की जनसंख्या का प्रतिशत**	18.84%	15.31%	**15.5%**
14.	0-6 **आयु वर्ग की सर्वाधिक जनसंख्या**	जयपुर	जयपुर	**जयपुर**
15.	0-6 **आयु वर्ग की न्यूनतम जनसंख्या**	जैसलमेर	जैसलमेर	**जैसलमेर**
16.	0-6 **आयु वर्ग का लिंगानुपात**	909	883	**888**
17.	0-6 **आयु वर्ग में सर्वाधिक लिंगानुपात**	बाँसवाड़ा (964)	प्रतापगढ़ (926)	**बाँसवाड़ा (934)**
18.	0-6 **आयु वर्ग में न्यूनतम लिंगानुपात**	गंगानगर (850)	झुँझुनूँ (831)	**झुँझुनूँ (837)**
19.	**कुल साक्षरता**	60.41%	67.06%	**66.1%**
20.	**पुरुष साक्षरता**	75.70%	80.51%	**79.2%**
21.	**महिला साक्षरता**	43.90%	52.66%	**52.1%**
22.	**सर्वाधिक साक्षरता**	कोटा (73.50%)	कोटा (77.48%)	**कोटा (76.6%)**
23.	**न्यूनतम साक्षरता**	बांसवाड़ा (44.60%)	जालौर (55.58%)	**जालौर (54.9%)**
24.	**सर्वाधिक पुरुष साक्षरता**	झुँझुनूँ	झुँझुनूँ	**झुँझुनूँ (86.9%)**
25.	**न्यूनतम पुरुष साक्षरता**	बाँसवाड़ा	प्रतापगढ़	**प्रतापगढ़, बाँसवाड़ा (69.5%)**
26.	**सर्वाधिक महिला साक्षरता**	कोटा	कोटा	**कोटा (65.9%)**
27.	**न्यूनतम महिला साक्षरता**	जालौर	जालौर	**जालौर (38.5%)**

11 प्रमुख जनजातियाँ

- ❖ राजस्थान भारत के सर्वाधिक जनजाति जनसंख्या वाले राज्यों में **चौथे स्थान** पर है। राज्य में 2011 की जनगणना के अनुसार 9,238534 अनुसूचित जनजाति की जनसंख्या निवास करती है।
- ❖ 2011 की जनगणना के अनुसार राजस्थान में अनुसूचित जनजाति राज्य की कुल जनसंख्या का **13.48 प्रतिशत** है। कुल जनजाति जनसंख्या का **94.6%** भाग ग्रामीण क्षेत्रों में रहता है।
- ❖ संविधान के **अनुच्छेद 342** के अनुसार राष्ट्रपति जनजातियों को अधिसूचित करते हैं। राजस्थान में वर्तमान में कुल **12 जनजातियाँ** अधिसूचित हैं।
- ❖ राजस्थान में सर्वाधिक अनुसूचित जनजाति प्रतिशत वाले जिले क्रमशः **बाँसवाड़ा** (76.38%), **डूँगरपुर** (70.82%), **प्रतापगढ़** (63.42%) एवं **उदयपुर** (49.71%) (कुल जनसंख्या के हिसाब से उदयपुर में सर्वाधिक जनजातीय जनसंख्या (15,25,289) निवास करती है)।
- ❖ राज्य में न्यूनतम जनजातीय जनसंख्या वाला जिला **बीकानेर** है। यहाँ मात्र 0.33% जनजातीय जनसंख्या निवास करती है।
- ❖ राजस्थान में सर्वाधिक जनसंख्या **मीणा** जनजाति की है। इसके पश्चात् क्रमशः भील, गरासिया और सहरिया है।
- ❖ राजस्थान में सबसे प्राचीन जनजाति **भील** है।
- ❖ भारत सरकार के आदिम जनजाति समूह की सूची में शामिल राजस्थान की एकमात्र जनजाति **सहरिया** है।
- ❖ राजस्थान में जनजातियों की जनसंख्या का सर्वाधिक अनुपात **बांसवाड़ा** और न्यूनतम **नागौर** में है।

भील-जनजाति

- ❖ **वनपुत्र**—कर्नल टॉड ने भीलों को **'वनपुत्र'** कहा है।
- ❖ **फाइरे-फाइरे**—भीलों का रणघोष है।
- ❖ **कू**—भीलों के घर को **'कू'** कहा जाता है।
- ❖ **फला**—भीलों के घरों का छोटा समूह **'फला'** और बड़ा समूह **'पाल'** कहलाता है।
- ❖ **गमेती**—भीलों के गाँवों के मुखिया को गमेती कहा जाता है।
- ❖ **मावड़ी**—भील **महुआ पेड़** से कच्ची शराब (मावड़ी) बनाकर पीते हैं।
- ❖ **कायटा**—भीलों द्वारा किया जाने वाला मृत्युभोज **कायटा (काट्टा)** कहलाता है।
- ❖ **टोटम**—भीलों के कुलदेवता को कहा जाता है।
- ❖ **खोयतु**—भील पुरुष कमर में **खोयतु या ढेपाड़ा** पहनते हैं और ऊपर अंगरखी या बण्डी पहनते हैं तथा सिर पर पोतिया बाँधते हैं।
- ❖ **फालू**—भील पुरुषों का अंगोछा **फालू** कहलाता है।
- ❖ **भराड़ी**—इस लोकदेवी का चित्र विवाह के समय दीवार पर बनाया जाता है।
- ❖ **चीरा बावसी**—भीलों के पूर्वज जिसकी लकड़ी की मूर्ति बनाकर पूजा की जाती है।
- ❖ **छेड़ा फाड़ना**—पति द्वारा पत्नी की ओढ़नी का पल्लू फाड़कर तलाक देना।
- ❖ **टापरा**—भीलों के झोंपड़े को कहते हैं।
- ❖ **डागला**—भीलों का मचाननुमा छपरा, जिसके ऊपर अनाज या चारा सुखाते हैं।
- ❖ **ढालिया**—भीलों के घरों के बाहर का बरामदा।
- ❖ **चिमाता**—पहाड़ी भागों में वनों को जलाकर की जाने वाली कृषि।
- ❖ **दजिया**—मैदानी भागों में वनों को जलाकर की जाने वाली कृषि।
- ❖ **लोकाई (कांडिया)**—आदिवासियों का मृत्युभोज।
- ❖ **हाथीवेड़ो**—पीपल या बाँस के पेड़ को साक्षी मानकर विवाह करने की भीलों में प्रचलित प्रथा।
- ❖ **भगोरिया**—भीलों का त्योहार, इस अवसर पर युवक जीवन साथी चुनते हैं।
- ❖ **पाखरिया**—सैनिक के घोड़े को मारने वाला भील।
- ❖ **डाम देना**—बीमार व्यक्ति को गर्म धातु से दागकर इलाज करना।
- ❖ **हमसीढ़ो**—भील स्त्री-पुरुषों द्वारा गाया जाने वाला सामूहिक गीत।

मीणा जनजाति

- ❖ **अर्थ**—मीणा का शाब्दिक अर्थ है—मत्स्य या मीन (मछली) है।
- ❖ **मीणा पुराण**—यह ग्रंथ मुनि मगनसागर ने लिखा।
- ❖ **लीला-मोरिया संस्कार**—मीणाओं में प्रचलित विवाह से सम्बन्धित संस्कार।
- ❖ **जयपुर**—मीणा जनजाति की सर्वाधिक जनसंख्या जयपुर जिले में है।
- ❖ **बुझ देवता**—मीणाओं के कुल देवता।
- ❖ **झगड़ा राशि**—युवती को भगाकर विवाह करने वाले पुरुष से पंचायत द्वारा वसूला गया मुआवजा।
- ❖ **बडालिया**—माता-पिता द्वारा तय विवाह सम्बन्धों में मध्यस्थता करने वाले फूफा या मामा को कहते हैं।
- ❖ **कीकमारी**—संकट के समय मुँह पर हथेली लगाते हुए जोर से चिल्लाना।
- ❖ **गेली**—मीणा युवकों के गेर खेलने की लकड़ी को कहते हैं।

गरासिया जनजाति

- ❖ **तीसरा स्थान**—राज्य में तीसरी सबसे बड़ी जनसंख्या वाली जनजाति है।
- ❖ **आबूरोड क्षेत्र**—गरासियों का मूल स्थान है। गरासिये सिरोही व उदयपुर में रहते हैं।
- ❖ **ताणना विवाह**—गणगौर मेले से लड़का लड़की को भगाकर ले जाता है। तत्पश्चात पंचों द्वारा निर्धारित दापा (वधू मूल्य) वर पक्ष चुकाता है।
- ❖ **मौरबंधिया विवाह**—ब्राह्मण की उपस्थिति में चंवरी में फेरे लेकर विवाह करना।
- ❖ **खेवणा (नाता) विवाह**—विवाहित स्त्री किसी पुरुष के साथ भाग जाती है और प्रेमी उसके पति को दण्ड राशि देता है।
- ❖ **पहरावना विवाह**—ब्राह्मण की अनुपस्थिति में किया गया विवाह।
- ❖ **छेड़ा छूट**—पति द्वारा दण्ड चुकाकर पत्नी को तलाक देने की प्रथा।
- ❖ **जीवित नाता**—कोई पुरुष किसी भी स्त्री के पति को राशि देकर उससे विवाह कर सकता है।
- ❖ **घेर**—गरासियों के घर को घेर और घरों के समूह को **'फालिया'** कहते हैं।
- ❖ **सहलोत**—गरासियों के गाँव का मुखिया।

12 राजस्थान में पर्यटन

- **कलेण्डर वर्ष 2025** के दौरान कुल **2544.48 लाख** (2525.03 लाख स्वदेशी एवं 19.45 लाख विदेशी) पर्यटकों ने राजस्थान में भ्रमण किया।
- घरेलू पर्यटक विजिट्स की संख्या के अनुसार शीर्ष जिले **सीकर** (धार्मिक पर्यटन स्थलों में) व **जैसलमेर** (ऐतिहासिक हेरिटेज स्थलों में) तथा अंतर्राष्ट्रीय पर्यटनों में शीर्ष जिला **जयपुर** है। राज्य में सर्वाधिक विदेशी पर्यटक क्रमशः USA, UK, फ्रांस एवं जर्मनी से आए।
- **पर्यटन निदेशालय-1955** द्वारा पर्यटकों के आवास, परिवहन एवं साहित्य प्रकाशन की व्यवस्था की जाती है।
- राजस्थान में 1956 में स्थापित '**पर्यटन विभाग**' पर्यटन की व्यवस्था हेतु राज्य सरकार की नोडल एजेन्सी है।
- राज्य में पर्यटनों को आवास, भोजन सुविधाएँ उपलब्ध कराने हेतु होटल की स्थापना एवं रखरखाव करने के उद्देश्य से **7 जून 1965** को जयपुर में **राजस्थान राज्य होटल निगम लिमिटेड** की स्थापना की गई।
- राज्य में पर्यटन स्थलों के संरक्षण एवं विकास हेतु **1 अप्रैल 1979** को '**राजस्थान पर्यटन विकास निगम (RTDC)**' की स्थापना की गई, जिसका मुख्यालय-**जयपुर** है।
- राजस्थान का पर्यटन लोगो वर्ष 1993 में '**पधारो म्हारे देश**' लांच किया गया, इसे 2008 में बदलकर '**कलरफुल राजस्थान**' तथा 2016 में बदलकर '**जाने क्या दिख जाये**' कर दिया। वर्ष **2019** में पुनः '**पधारो म्हारे देश**' को राजस्थान का पर्यटन लोगो बनाया गया।
- राजस्थान के पर्यटन विभाग का पंचवाक्य '**राजस्थान : भारत का अतुल्य राज्य**' (The Incredible State of India) है।
- राज्य में पर्यटन गतिविधियों हेतु मानव संसाधन का विकास करने हेतु **राजस्थान इंस्टीट्यूट ऑफ ट्यूरिज्म एंड ट्रेवल मैनेजमेंट (RITTMAN)** की स्थापना **29 अक्टूबर 1996** को की गई, इसका मुख्यालय भी **जयपुर** में है।
- वर्ष 2000 में मुख्यमंत्री की अध्यक्षता में '**राज्य पर्यटन सलाहकार मण्डल**' की स्थापना की गई।
- राजस्थान की **प्रथम ईको ट्यूरिज्म पॉलिसी 2010** में जारी की गई, इसमें 10 स्थलों का चयन किया गया था।
- जुलाई 2021 में राजस्थान सरकार ने प्राकृतिक क्षेत्रों के संरक्षण एवं पर्यटन को आकर्षित करने के लिए '**राजस्थान इको ट्यूरिज्म पॉलिसी 2021**' जारी की।
- राजस्थान पर्यटन से जुड़े निवेशकों एवं उद्यमियों को देय लाभों में वृद्धि करने तथा निजी क्षेत्र में नई पर्यटन इकाइयों की स्थापना को प्रोत्साहित कर इसके माध्यम से रोजगार एवं उद्यमिता के अवसर उपलब्ध कराने के उद्देश्य से **4 दिसम्बर, 2024** को राजस्थान पर्यटन इकाई नीति (RTUP)-2024 लागू की गई है।
- राज्य में निम्न पर्यटन त्रिकोण स्थित हैं—
  - **मरु त्रिकोण**—जैसलमेर-बीकानेर-जोधपुर
  - **स्वर्णिम त्रिकोण**—दिल्ली-आगरा-जयपुर।
- पर्यटन की दृष्टि से 'स्वर्णिम त्रिभुज' (गोल्डन ट्रायंगल)—**जयपुर, आगरा, दिल्ली** को कहा जाता है।
- राजस्थान में पर्यटन को बढ़ावा देने हेतु शाही रेलगाड़ियों का संचालन निम्नानुसार किया जा रहा है—
  - **पैलेस ऑन व्हील्स**—26 जनवरी **1982** को प्रारंभ की गई लक्जरी ट्रेन। **R.T.D.C** एवं भारतीय रेलवे का संयुक्त उपक्रम।
  - **रॉयल्स राजस्थान ऑन व्हील्स**—**11 जनवरी 2009** को प्रारंभ की गई लक्जरी ट्रेन। **R.T.D.C** एवं भारतीय रेलवे का संयुक्त उपक्रम।

राजस्थान के पर्यटन परिपथ

क्र.	परिपथ	परिपथ के क्षेत्र
1.	**मरु सर्किट**	बीकानेर, जैसलमेर, जोधपुर, बाड़मेर।
2.	**ढूँढाड़ सर्किट**	जयपुर, दौसा, (आमेर, आभानेरी, मेहंदीपुर, भांडारेज, रामगढ, आलूदा, सामोद)।
3.	**शेखावाटी सर्किट**	चूरू, सीकर, झुंझुनूँ (खाटूश्यामजी, सालासर, तालछापर, शाकम्भरी माता मंदिर, लोहार्गल, गणेश्वर सभ्यता स्थल, लक्ष्मणगढ़, रेवासा, जीणमाता, महणसर, नवलगढ़, नरहड़ आदि)।
4.	**हाड़ौती सर्किट**	कोटा, बूँदी, झालावाड़ (रामेश्वर महादेव, गागरोन दुर्ग)।
5.	**मेवात सर्किट**	अलवर, भरतपुर, सवाई माधोपुर (**सिलीसेढ़,** सरिस्का घाना पक्षी विहार, पांडुपोल, भर्तृहरी, राजगढ़, तिजारा, भानगढ़)।
6.	**मेवाड़ सर्किट**	उदयपुर, राजसमंद, चित्तौड़गढ़ (त्रिपुरा सुन्दरी, कुंभलगढ़, मेनाल, जयसमंद, गोगुन्दा, नाथद्वारा, हल्दीघाटी, कैलाशपुरी, गलियाकोट, कपासन)।
7.	**मेरवाड़ा सर्किट**	अजमेर, नागौर (पुष्कर, मेड़ता, ब्रह्मा मंदिर, नारेली, किशनगढ़)।
8.	**वागड़ सर्किट**	डूँगरपुर, बाँसवाड़ा (बेणेश्वर, अर्थूणा-त्रिपुरा सुन्दरी, गलियाकोट, देव सोमनाथ, घोटिया अम्बा, मानगढ़ धाम, माही बजाज सागर, कागजी पिकअप)
9.	**गोडवाड़ सर्किट**	पाली, सिरोही, जालौर (माउण्ट आबू, दिलवाड़ा, रणकपुर, केरला आदि)
10.	**रणथम्भौर सर्किट**	सवाई माधोपुर, टोंक ।

13 राजस्थान में कृषि

राजस्थान में कृषि पद्धतियों का वर्गीकरण

- ❖ **शुष्क कृषि (बारानी)**—50 सेमी. से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में वर्षा जल का सुनियोजित रूप से संरक्षण व उपयोग कर कम पानी की आवश्यकता वाली व शीघ्र पकने वाली फसलों की कृषि की जाती है। यह कृषि राज्यों के अधिकांश जिलों में की जाती है।
- ❖ **आर्द्र कृषि**—100 सेमी. से अधिक वर्षा वाले क्षेत्रों में उपजाऊ काँप व काली मिट्‌टी पर उन्नत व व्यापारिक फसल प्राप्त की जाती है, वह **'आर्द्र कृषि'** कहलाती है। राज्य के **बारां, झालावाड़, कोटा, बाँसवाड़ा**, एवं **चित्तौड़गढ़** में आर्द्र कृषि की जाती है।
- ❖ **सिंचित कृषि**—राज्य की लगभग 32 प्रतिशत कृषि भूमि पर वर्षा के अलावा अन्य स्रोतों से पानी देकर फसल तैयार की जाती है। यह 50 से 100 सेमी. वर्षा वाले क्षेत्रों में की जाती है।
- ❖ **अलवर, भरतपुर, डीग, करौली, सवाई माधोपुर, भीलवाड़ा, अजमेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़** आदि जिले इसमें शामिल हैं।
- ❖ **झूमिंग कृषि**—आदिवासियों द्वारा **डूँगरपुर, उदयपुर, प्रतापगढ़** एवं **बाँसवाड़ा** क्षेत्र में जंगल में आग लगाकर बची हुई राख फैलाकर वर्षा होने पर अनाज बोकर फसल तैयार की जाती है। उसे झूमिंग या **स्थानान्तरित कृषि** कहते हैं। आदिवासियों में यह **'वालरा'** नाम से जानी जाती है। पहाड़ी क्षेत्रों की वालरा **'चिमाता'** एवं मैदानी क्षेत्रों (राज्य के दक्षिण-पूर्व क्षेत्र) की वालरा **'दजिया'** कहलाती है।

राज्य की फसलों के प्रकार

- ❖ **खरीफ (सियालू / सावणू)**—यह फसलें **जून-जुलाई** में बोई जाती हैं व **सितम्बर-अक्टूबर** में काटी जाती हैं।चावल, ज्वार, बाजरा, मक्का, अरहर, उड़द, मूँग, चवला, मोठ, मूँगफली, अरण्डी, तिल, सोयाबीन, कपास, गन्ना, ग्वार आदि खरीफ की फसलें हैं।
- ❖ राज्य में लगभग 90 प्रतिशत खरीफ की फसलें **बारानी क्षेत्र** में पैदा की जाती है, जो पूर्णतः वर्षा पर निर्भर होती हैं। खाद्यान्नों में **बाजरे का कृषित क्षेत्रफल सर्वाधिक** है।
- ❖ **रबी (उनालू)**—रबी की फसलें **अक्टूबर-नवम्बर** में बोकर **मार्च-अप्रेल** में काट ली जाती हैं। सर्वाधिक क्षेत्र **गेहूँ** का होता है। रबी तिलहनों में मुख्यतः **राई व सरसों** की खेती होती है।
  रबी की फसलें—गेहूँ, जौ, चना, मसूर, मटर, सरसों, अलसी, तारामीरा, सूरजमुखी, धनिया, जीरा, मेथी आदि।
- ❖ **जायद**—पानी की उपलब्धता वाले राज्य के कुछ क्षेत्रों में एक तीसरी फसल भी **मार्च से जून के मध्य** ली जाती है, जिसे **'जायद'** कहते हैं। इसमें तरबूज, खरबूजा, ककड़ी व सब्जियाँ पैदा की जाती हैं।

राजस्थान की फसलों की विभिन्न किस्में

- ❖ **मक्का**—माही कंचन, माही धवल, नवजोत, मेघा एवं सविता
- ❖ **गेहूँ**—सोना कल्याण, सोनालिका, मैक्सिकन एवं कोहिनूर
- ❖ **जौ**—ज्योति, मोल्वा एवं राजकिरण

राज्य में फसलों का सर्वाधिक उत्पादन एवं क्षेत्रफल वाले जिले

फसल	राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन (2022-23)	राजस्थान में सर्वाधिक उत्पादन (2023-24)	राजस्थान का स्थान (2023-24)
चावल	बूँदी	बूँदी	—
गेहूँ	हनुमानगढ़	हनुमानगढ़	पाँचवाँ
ज्वार	अजमेर	अजमेर	चौथा
बाजरा	बाड़मेर	अलवर	प्रथम
मक्का	भीलवाड़ा	भीलवाड़ा	9वाँ
जौ	गंगानगर	गंगानगर	द्वितीय
मूंग	नागौर	नागौर	प्रथम
उड़द	बूँदी	बूँदी	चौथा
मोठ	बाड़मेर	बाड़मेर	प्रथम
चंवला	झुंझुनू	झुंझुनू	—
अरहर	बाँसवाड़ा	बाँसवाड़ा	—
चना	अजमेर	चूरू	तीसरा
मसूर	झालावाड़	झालावाड़	छठा
तिल	पाली	पाली	—
मूँगफली	बीकानेर	बीकानेर	द्वितीय
सरसों	टोंक	बीकानेर	प्रथम
सोयाबीन	बारां	झालावाड़	तीसरा
अरंडी	जालौर	जालौर	—
तारामीरा	जयपुर	नागौर	प्रथम
अलसी	प्रतापगढ़	प्रतापगढ़	प्रथम
कपास	गंगानगर	गंगानगर	4वाँ
गन्ना	गंगानगर	गंगानगर	—
जीरा	जोधपुर	बाड़मेर	द्वितीय
तम्बाकू	जालोर	जालोर	—
ईसबगोल	नागौर	जैसलमेर	प्रथम
अफीम	चित्तौड़गढ़	चित्तौड़गढ़	—
ग्वार	बीकानेर	बीकानेर	प्रथम

स्रोत : राजस्थान कृषि सांख्यिकी

- ❖ **राई व सरसों**—पूसा कल्याणी, वरुणा एवं दुर्गामणि
- ❖ **चना**—सम्राट, RS-11, GNG-116, दोहद येलो एवं पूसा 2085
- ❖ **तम्बाकू**—निकोटिना टुबेकम, निकोटिना एवं रास्टिका
- ❖ **ज्वार**—राजस्थान चरी एवं 1 सी.एस.वी. 10
- ❖ **ग्वार**—दुर्गाबिहार, दुर्गापुरा सफेद एवं दुर्गा जय
- ❖ **चावल**—माही सुगन्धा, बासमती, कावेरी, चम्बल एवं परमल
- ❖ **मूँगफली**—चन्द्रा, आर.जी.-141, आर.एस.बी.-87
- ❖ **आलू**—कुफरी
- ❖ **कपास**—बीकानेरी, नरमा, गंगानगर, वराह लक्ष्मी एवं अगेती
- ❖ **मोठ**—जड़िया, ज्वाला, RMO-40 एवं साठी

14 राजस्थान में उद्योग

❖ वर्तमान में राजस्थान में **43 जिला उद्योग एवं वाणिज्य केन्द्रों** के साथ-साथ **6 उप-केन्द्र** उद्यमियों को सहायता प्रदान कर रहे हैं।

सूती वस्त्र उद्योग

❖ सूती वस्त्र उद्योग राज्य का **सबसे प्राचीन** एवं **संगठित** उद्योग है। 1949 के आस-पास राज्य में सात सूती वस्त्र उद्योग थे।

❖ राज्य में प्रथम सूती वस्त्र मिल निजी क्षेत्र की **द कृष्णा मिल्स लि. 1889** में दामोदर दास राठी एवं श्याम जी कृष्ण वर्मा द्वारा **ब्यावर** में स्थापित की गई, जो अब राज्य सरकार के अधीन है। इसके बाद दूसरी सूती वस्त्र मिल **एडवर्ड मिल्स (1906) ब्यावर** में स्थापित की गई।

❖ राज्य की निजी क्षेत्र की प्रमुख सूती वस्त्र मिलें निम्न हैं—महालक्ष्मी मिल्स (ब्यावर), मेवाड़ टेक्सटाईल (भीलवाड़ा), महाराजा उम्मेद मिल्स (पाली) एवं सार्दुल टेक्सटाईल (श्रीगंगानगर)।

❖ राज्य में सार्वजनिक क्षेत्र में **ब्यावर** तथा **विजयनगर** में मिलें स्थापित की गई हैं जबकि सहकारी क्षेत्र में **गुलाबपुरा** (भीलवाड़ा), **गंगापुर** (भीलवाड़ा) तथा **हनुमानगढ़** में सूती वस्त्र मिलें स्थापित हैं।

❖ **1 अप्रैल, 1993** को तीनों सहकारी क्षेत्र की मिलों को मिलाकर **SPINFED** बना दिया गया है। वर्तमान समय में **भीलवाड़ा को सूती वस्त्र उद्योग की अधिकता के कारण राजस्थान का मेनचेस्टर** कहा जाता है। राजस्थान में सबसे बड़ी सूती वस्त्र मिल उम्मेद मिल्स पाली है। भीलवाड़ा में सर्वप्रथम वर्ष 1938 में मेवाड़ टेक्सटाइल मिल की स्थापना हुई। भारत सरकार के वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय द्वारा भीलवाड़ा को **'टाउन ऑफ एक्सपोर्ट एक्सीलेंस फॉर टेक्सटाइल'** घोषित किया गया है। केन्द्र सरकार द्वारा फरवरी, 2009 में भीलवाड़ा को **'वस्त्र निर्यातक नगर'** का दर्जा दिया गया।

चीनी उद्योग

❖ राज्य के गन्ना उत्पादन में प्रथम स्थान **श्रीगंगानगर** तथा द्वितीय स्थान **बूँदी** जिले का है, जबकि तीसरा स्थान राजसमन्द का है। राज्य में चीनी की तीन वृहद इकाइयाँ कार्यरत हैं—

(i) **द मेवाड़ शुगर मिल्स लि.—निजी क्षेत्र** की (भोपालसागर, चित्तौड़गढ़) राज्य की पहली चीनी मिल है। इसकी स्थापना **1932** में की गई थी।

(ii) **गंगानगर शुगर मिल्स लि.—1937** में स्थापित यह राज्य की **प्रथम सार्वजनिक शुगर मिल** है। इसमें **गन्ना एवं चुकन्दर** से चीनी बनाई जाती है। इसके अधीन एक **शराब एवं स्प्रिट बनाने का कारखाना** भी है।

(iii) **केशोरायपाटन सहकारी शुगर मिल्स लि.**—1965 में स्थापित राज्य की **एकमात्र सहकारी मिल** है, जो कि वर्तमान में बंद पड़ी है।

❖ **उदयपुर शुगर मिल** की स्थापना भोपाल सागर चीनी मिल की सहायक कम्पनी के रूप में 1976 में की गई।

ऊन उद्योग

❖ राज्य में ऊन का उत्पादन देश के ऊन उत्पादन का **47.53%** होता है।

❖ राजस्थान में उत्तर एवं पश्चिम में स्थित शुष्क व अर्द्धशुष्क जिलों में ऊन उत्पादन होता है।

❖ ऊन से सम्बन्धित संस्थाएँ एवं फैक्ट्रियाँ निम्न हैं—

- ✧ स्टेट वूलन मिल—**बीकानेर**
- ✧ जोधपुर ऊन फैक्ट्री—**जोधपुर**
- ✧ विदेशी आयात-निर्यात संस्था—**कोटा**
- ✧ वर्स्टेड स्पिनिंग मिल्स—**चूरू** तथा **लाडनूँ** (डीडवाना-कुचामन)
- ✧ एशिया की सबसे बड़ी ऊन मण्डी—**बीकानेर**
- ✧ अखिल भारतीय ऊन विकास बोर्ड—**जोधपुर**
- ✧ गलीचा प्रशिक्षण केन्द्र—**बीकानेर**
- ✧ ऊनी कपड़ा सबसे अधिक—**भीलवाड़ा**

❖ राजस्थान में ऊन की प्रचुर मात्रा को देखते हुए केन्द्र सरकार द्वारा मालपुरा (टोंक) में एक अनुसंधान केन्द्र स्थापित किया गया है, जो ऊन विकास के लिए एशिया का सबसे बड़ा अनुसंधान केन्द्र है।

सीमेण्ट उद्योग

❖ राज्य में प्रथम सीमेन्ट कारखाना **1915** में **ACC** द्वारा **लाखेरी (बूँदी)** में स्थापित किया गया था। वर्ष 1917 में उत्पादन शुरू हुआ।

❖ आजादी के पश्चात् राज्य का प्रथम कारखाना सवाई माधोपुर में स्थापित किया गया था। उत्पादन क्षमता की दृष्टि से जे.के. सीमेण्ट **निम्बाहेड़ा** का कारखाना सबसे बड़ा है। राज्य में सफेद सीमेन्ट का कारखाना **गोटन** (नागौर) में है। वर्तमान में **मांगरोल** (चित्तौड़गढ़) में भी सफेद सीमेन्ट का नया कारखाना स्थापित हुआ है। जोधपुर के **खारिया खंगार** में भी सफेद सीमेण्ट का कारखाना स्थापित किया गया है।

❖ **राजस्थान में सीमेंट उद्योग के प्रमुख संयंत्र**—(1) ए.सी.सी.लि., लाखेरी (बूँदी) (2) जयपुर उद्योग, सवाई माधोपुर (3) बिड़ला सीमेंट वर्क्स लि., चित्तौड़गढ़ (4) चित्तौड़गढ़ सीमेंट वर्क्स लि., चित्तौड़गढ़ (चेतक छाप) (5) मंगलम सीमेंट, मोडक (कोटा) बिड़ला (6) श्री सीमेंट, ब्यावर (श्रीछाप) (7) जे.के. सीमेंट लि. (जे.के. छाप) (निम्बाहेड़ा) (8) स्ट्रा प्रोडक्टस बनास (सिरोही) (9) श्रीराम सीमेंट, श्री रामनगर (कोटा) (10) बिड़ला व्हाइट सीमेंट, गोटन (11) हिन्दुस्तान सीमेंट, उदयपुर (12) राज श्री सीमेंट, खारिया, मीरापुर (नागौर)

❖ **सफेद सीमेंट के कारखाने**—(1) जे.के. व्हाइट सीमेंट, गोटन (नागौर) 1984—यह भारत का पहला सफेद सीमेंट संयंत्र है। (2) बिरला व्हाइट सीमेंट, भोपालगढ़ (जोधपुर) (3) खारिया खंगार सफेद सीमेंट, खारियाखंगार (जोधपुर)

काँच उद्योग

❖ काँच उद्योग के लिए मुख्यत: बालू मिट्टी की आवश्यकता होती है।

❖ जयपुर, बीकानेर, बूँदी तथा धौलपुर आदि में उत्तम श्रेणी के बालू पत्थर पाए जाते हैं। राज्य में काँच उद्योग मुख्यत: **धौलपुर** में केन्द्रित है।

15 राजस्थान में ऊर्जा संसाधन

❖ राज्य की कुल अधिष्ठापित विद्युत क्षमता **31556.43 MW** है। (दिसम्बर 2025 तक)

❖ राजस्थान में विद्युत विकास हेतु सर्वप्रथम व्यवस्थित प्रयास **1 जुलाई, 1957 को राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल की स्थापना** के साथ प्रारम्भ हुए।

❖ **राजस्थान विद्युत नियामक आयोग** का गठन **2 जनवरी, 2000 को किया गया।** यह आयोग विद्युत उत्पादन, प्रसारण एवं वितरण कम्पनियों को लाइसेंस जारी करने एवं विद्युत की दरें निर्धारित करने का कार्य करता है। राजस्थान सरकार ने **राजस्थान विद्युत क्षेत्र सुधार अधिनियम, 1999** पारित करवाया, जो **1 जून, 2000** से लागू किया गया।

❖ राज्य में ऊर्जा के **पारम्परिक** व **गैर-पारम्परिक** दोनों ही प्रकार के स्रोत विकसित हुए हैं—

(i) **पारम्परिक/अनवीकरणीय ऊर्जा स्रोत**—ये वे ऊर्जा स्रोत हैं, जिन्हें मानव परम्परा से हजारों वर्षों से उपयोग में लेता आ रहा है तथा इनके भण्डार सीमित हैं, जैसे—**कोयला, खनिज तेल, आणविक खनिज** एवं **प्राकृतिक गैस।**

(ii) **गैर-पारम्परिक/नवीकरणीय ऊर्जा स्रोत**—जिनका उपयोग निकट भूतकाल में ही होना प्रारम्भ हुआ तथा ये सतत् प्राप्त होने रहने वाले स्रोत हैं, जैसे **सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, ज्वारीय ऊर्जा, बायो गैस, भूतापीय ऊर्जा, बायोमास** इत्यादि।

❖ अप्रैल 2011 में **राज्य की पहली सौर ऊर्जा नीति** को मंजूरी दी गई।

❖ राज्य में प्रतिवर्ष **14 दिसम्बर** को **ऊर्जा संरक्षण दिवस** मनाया जाता है।

पवन ऊर्जा

❖ **21 अक्टूबर, 1999** को राज्य का प्रथम पवन ऊर्जा संयंत्र राजस्थान स्टेट पॉवर कॉर्पोरेशन लि. (RSPCL) द्वारा **जैसलमेर** जिले के **अमर सागर** में (2 MW का) लगाया गया था।

❖ राज्य में **निजी क्षेत्र** की **प्रथम** पवन ऊर्जा परियोजना **बड़ा बाग (जैसलमेर)** में मैसर्स कालानी इण्डस्ट्रीज द्वारा **2001** में शुरू की गई।

❖ 4 फरवरी, 2000 को राज्य सरकार ने **पवन ऊर्जा प्रोत्साहन नीति, 2000** की घोषणा की। इसी सरकार ने पुन: **अप्रैल 2003** में **नई पवन ऊर्जा नीति** घोषित की।

❖ राज्य में **1999** में **कैप्टिव पावर प्लाण्ट योजना** लागू हुई, जिसके तहत 100 MW क्षमता का पहला कैप्टिव पावर प्लांट राजस्थान राज्य खनिज निगम लिमिटेड (RSMML) तथा हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड के संयुक्त प्रयास से **झामर कोटड़ा (उदयपुर)** में स्थापित हुआ।

❖ नेशनल हाइड्रो इलेक्ट्रिक पॉवर कॉर्पोरेशन (भारत की सबसे बड़ी पन बिजली उत्पादक कम्पनी) द्वारा जैसलमेर में 50 मेगावाट की पवन विद्युत परियोजना 30 सितम्बर, 2016 को कमीशन की गई है।

❖ सुजलोन एनर्जी द्वारा विकसित जैसलमेर विंडपार्क राज्य का सबसे बड़ा विंडपार्क है।

❖ लोद्रवा, जैसलमेर में Oil India Ltd. द्वारा 31 मार्च, 2012 को 12.6 MW का पवन ऊर्जा संयंत्र स्थापित किया गया है।

❖ वेलस्पन एनर्जी द्वारा (कम्पनी का सबसे बड़ा ऊर्जा संयंत्र) 7 दिसम्बर, 2015 को 126 MW क्षमता का पवन ऊर्जा संयंत्र प्रतापगढ़ जिले में स्थापित किया गया है।

❖ राजस्थान में रेलवे का पहला पवन ऊर्जा संयंत्र (26 MW क्षमता) 30 दिसम्बर, 2015 को कोडियासर (फतेहगढ़, जैसलमेर) में स्थापित किया गया है।

पवन ऊर्जा संयंत्र

अमरसागर, जैसलमेर (राज्य का प्रथम पवन ऊर्जा संयंत्र)	आकल, जैसलमेर
देवगढ़, प्रतापगढ़	पोहरा, जैसलमेर
बीठड़ी, फलौदी	बड़ा बाग, जैसलमेर
सोढा बाँधन, जैसलमेर (राज्य अक्षय ऊर्जा निगम का प्रथम बड़ा पवन ऊर्जा संयंत्र)	हर्ष पर्वत, सीकर

गैस व तरल ईंधन आधारित ऊर्जा

(1) **रामगढ़ गैस विद्युत परियोजना – रामगढ़ (जैसलमेर)**
- ✧ राज्य की स्वयं की प्रथम गैस आधारित परियोजना (RRVUN द्वारा संचालित)
- ✧ क्षमता -273.5 MW
- ✧ यहाँ उपकरणों की आपूर्ति हिन्दुस्तान एरोनॉटिक्स, बेंगलुरु से होती है। यहाँ गैस **जैसलमेर** के तनोट, डांडेवाला और बागी एवं मनिहारी टिब्बा, घोटारू, आसुवाला, बाघेवाला, सादेवाला (तेल एवं प्राकृतिक गैस मंत्रालय) द्वारा उपलब्ध करवाई जाती है।

(2) **अंता गैस विद्युत परियोजना – अंता (बाराँ)**
- ✧ राज्य में स्थापित प्रथम गैस आधारित विद्युत परियोजना।
- ✧ NTPC द्वारा संचालित, कुल क्षमता – 419.33 MW
- ✧ राजस्थान का हिस्सा – 19.81% (83.07 MW)

(3) **धौलपुर कंबाइंड साइकिल गैस आधारित परियोजना (धौलपुर)** क्षमता - 330 MW

(4) **झामर-कोटड़ा गैस थर्मल पॉवर – उदयपुर**
- ✧ RSMML + हिन्दुस्तान जिंक लि. द्वारा संचालित।
- ✧ कुल क्षमता – 4 MW

(5) **केशोरायपाटन थर्मल पॉवर प्लांट (बूँदी) कुल क्षमता-1000MW**

(6) **औरैया – (उत्तर प्रदेश)**
- ✧ कुल क्षमता – 663 MW, राजस्थान का हिस्सा – 9.2%

(7) **दादरी (उत्तर प्रदेश)**

16 राजस्थान में परिवहन

सड़क परिवहन

- राजस्थान में **मार्च 2025** तक सड़कों की कुल लम्बाई **3,35,306** कि.मी. है। **31 मार्च, 2025** तक राज्य में प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर सड़कों का घनत्व **97.97 कि.मी.** है, जबकि राष्ट्रीय सड़क घनत्व प्रति 100 वर्ग किलोमीटर पर **165.24 कि.मी.** है।
- राज्य की कुल 3,35,306 कि.मी. सड़कों में से 1,97,051 कि.मी. सड़कों का रख-रखाव सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा किया जाता है। सार्वजनिक निर्माण विभाग द्वारा 99% सड़क कार्य ग्रामीण क्षेत्रों में एवं 1% सड़क कार्य शहरी क्षेत्रों में किए जा रहे हैं।
- राज्य की सड़कों में **मार्च 2025** तक राष्ट्रीय राजमार्गों की कुल लम्बाई **10,790 कि.मी.** है।
- राजस्थान का सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग - NH52 (793.55 किमी.)
- राजस्थान का सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 919 (5 किमी.)
- सर्वाधिक राष्ट्रीय राजमार्गों वाला जिला - जयपुर
- जिला जिसमें कोई राष्ट्रीय राजमार्ग नहीं गुजरता - डीग एवं सलूम्बर
- पूर्णतः राज्य में गुजरने वाला सबसे लंबा राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 25 (481.17 किमी.)
- पूर्णतः राज्य सबसे व्यस्ततम् राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 48
- पूर्णतः राज्य में गुजरने वाला सबसे छोटा राष्ट्रीय राजमार्ग - NH 248 (28 किमी.)
- राष्ट्रीय राजमार्गों की सर्वाधिक लम्बाई बाड़मेर (879 किमी.) में तथा न्यूनतम लंबाई करौली (58 किमी.) जिले में है।
- राज्य में **1994** में **सड़क नीति घोषित** की गई, जिसका प्रमुख उद्देश्य सड़क निर्माण में निजी क्षेत्र की भागीदारी को प्रोत्साहित करना था। सड़क नीति घोषित करने वाला **राजस्थान देश का प्रथम राज्य** है।
- राजस्थान स्टेट हाइवेज अथोरिटी का गठन 2015 में किया गया था।
- राज्य में सड़कों की सर्वाधिक लम्बाई **बाड़मेर** जिले में तथा सड़कों की न्यूनतम लम्बाई **खैरथल-तिजारा** में है।
- सड़कों से जुड़े सर्वाधिक गाँवों वाला जिला-**श्रीगंगानगर** है तथा सड़कों से जुड़े न्यूनतम गाँवों वाला जिला-**सिरोही** है।
- सड़कों से जुड़ी हुई सर्वाधिक ग्राम पंचायत मुख्यालय वाला जिला **बाड़मेर** है, जबकि सड़कों से जुड़ी न्यूनतम ग्राम पंचायत मुख्यालय वाला जिला **खैरथल-तिजारा** है।
- राज्य में 1979 में 'राजस्थान स्टेट ब्रिज लिमिटेड' की स्थापना की गई थी, जिसका नाम परिवर्तित कर, 2001 में **'राजस्थान राज्य सड़क विकास एवं निर्माण निगम लिमिटेड'** कर दिया गया।

राज्य राजमार्ग

- राजस्थान के राज्य राजमार्गों का संचालन, रख-रखाव एवं विकास राज्य सरकार द्वारा किया जाता है इनकी कुल लंबाई 17237.59 किमी. है।
- राज्य का सबसे लंबा राज्य राजमार्ग SH 1 (403 किमी.) एवं सबसे छोटा राज्य राजमार्ग SH 34 B (3 किमी.) है।
- राज्य राजमार्गों की सर्वाधिक लंबाई वाला जिला नागौर (1498 किमी.) एवं न्यूनतम लंबाई वाला जिला सिरोही (126 किमी.) है।
- राज्य राजमार्गों की सर्वाधिक संख्या वाला जिला नागौर है।

राजस्थान राज्य पथ परिवहन निगम (R.S.R.T.C.)

- सड़क परिवहन निगम अधिनियम 1950 के अधीन **1 अक्टूबर, 1964** को R.S.R.T.C. की स्थापना की गई। इसका मुख्यालय **जयपुर** में है।
- **रिड़कोर**—इसकी स्थापना **2004** में राजस्थान सरकार और इन्फ्रास्ट्रक्चर लीजिंग व फाइनेंशियल सर्विसेज की 50:50 भागीदारी से हुई। यह उपक्रम मेगाहाइवे परियोजनाओं का क्रियान्वयन कर रहा है।
- राज्य में इलेक्ट्रिक वाहनों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु **"राजस्थान इलेक्ट्रिकल व्हीकल नीति-2022"** की अधिसूचना दिनांक 31 अगस्त, 2022 को जारी कर **1 सितम्बर, 2022** से 5 वर्ष के लिए प्रभावी की गई है।

रेल-परिवहन

- राजपूताना में **1874** में पहली रेल **आगरा फोर्ट से बाँदीकुई** तक प्रारंभ की गई थी। तत्पश्चात् दिल्ली से अलवर-बाँदीकुई तक रेलमार्ग प्रारंभ हुआ। (ध्यातव्य है कि भारत में पहली बार 1853 ई. में महाराष्ट्र के मुम्बई से थाणे के बीच रेल चलाई गई।)
- अगस्त 1879 में **अजमेर** में लोको कारखाना स्थापित किया गया, जिसमें 1895 में पहला लोको इंजन बनकर तैयार हुआ। राजस्थान में मार्च 2024 तक रेलमार्गों की लंबाई **6135 कि.मी.** हो गई, जो कि राज्य में भारत के कुल 69181 किमी. रेलमार्ग का 8.86% है।
- राज्य मे **एकमात्र नैरोगेज लाईन 'धौलपुर'** जिले में है, जिसका निर्माण 1908 में हुआ। यह धौलपुर से बाड़ी होते हुए ताँतपुर और समरथपुरा तक जाती है। (89KM) वर्तमान में इसका परिचालन बंद है।
  - **ब्राडगेज**—पटरियों के मध्य 1.67 मीटर की दूरी।
  - **मीटर गेज**—पटरियों के मध्य 1.06 मीटर की दूरी।
  - **नैरो गेज**—पटरियों के मध्य 0.76 मीटर की दूरी।
- उपर्युक्त में से **उत्तर-पश्चिमी रेलवे** का मुख्यालय **जयपुर**, राजस्थान में है, जिसकी स्थापना **14 जून 2002** को हुई थी।
- राजस्थान में **पाँच रेलवे मण्डल—1. जयपुर, 2. अजमेर, 3. बीकानेर, 4. जोधपुर, 5. कोटा** हैं। इनमें शुरुआती चार मण्डल उत्तर-पश्चिमी रेलवे जोन (जयपुर) के अन्तर्गत आते हैं, जबकि **कोटा रेलवे मण्डल** पश्चिम मध्य रेलवे जोन (जबलपुर) के अन्तर्गत आता है।
- राजस्थान की सबसे बड़ी रेल सुरंग (2150 मीटर) गंगापुर-दौसा रेलमार्ग पर डीडवाना-इंदावा के मध्य बनाई गई है।
- **थार एक्सप्रेस** बाड़मेर के **मुनाबाव** स्टेशन से पाकिस्तान के **खोखरापार** के मध्य चलती है। खोखरापार से मीरपुर खास 131 किमी. है, जो इस ट्रेन का आखिरी स्टेशन होगा।

- **उदयपुर** में देश का सबसे बड़ा रेलवे मॉडल कक्ष स्थापित है, जहाँ **1965** से पश्चिमी रेलवे का क्षेत्रीय प्रशिक्षण केन्द्र कार्यरत है।

जयपुर मेट्रो रेल सेवा

- जयपुर मेट्रो के प्रथम चरण (फेज I-A) की शुरुआत **3 जून, 2015** को हुई, जिसका संचालन मानसरोवर से चाँदपोल तक (9.25 KM) हो रहा है। **23 सितम्बर, 2020** को जयपुर मेट्रो प्रथम चरण के फेज **I-B** की शुरुआत हुई, जो चाँदपोल से बड़ी चौपड़ को जोड़ता है। जयपुर मेट्रो फेज-I-C- बड़ी चौपड़ से ट्रांसपोर्ट नगर तक होगा।
- जयपुर मेट्रो के फेज - 2 को **8 अप्रैल 2026** को केन्द्र सरकार से मंजूरी मिल गई है। प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में केंद्रीय कैबिनेट ने इसे स्वीकृति दी। यह परियोजना प्रहलादपुरा से टोडी मोड़ तक 41 किलोमीटर लंबे उत्तर-दक्षिण कॉरिडोर पर विकसित होगी, जिस पर **13038 करोड़** रुपए खर्च होंगे। इसे **सितम्बर 2031** तक पूरा करने का लक्ष्य है और निर्माण कार्य **राजस्थान मेट्रो रेल निगम लिमिटेड** करेगा।

वायु परिवहन

- राज्य में सर्वप्रथम जोधपुर में महाराजा **उम्मेद सिंह** द्वारा **1929 ई.** में **फ्लाईंग क्लब** की शुरुआत की गई।
- राजस्थान में वर्तमान में 10 हवाई अड्डे हैं (4 नागरिक, 6 सैन्य) तथा 22 हवाई पट्टियाँ हैं (18 राजकीय, 4 निजी)।

राज्य के प्रमुख हवाई अड्डे

क्र.सं.	नाम (हवाई अड्डा)	स्थान	विशेष विवरण
1.	**सांगानेर अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा**	जयपुर (2005)	❖ दिसम्बर 2005 को इसे राजस्थान का प्रथम व भारत का 14वाँ अंतरराष्ट्रीय एयरपोर्ट का दर्ज़ा दिया गया व अधिसूचना 2006 में जारी की गई। यह देश का 11वाँ सबसे व्यस्तम एयरपोर्ट है।
2.	**महाराणा प्रताप हवाई अड्डा** (डबोक एयरपोर्ट)	उदयपुर (2008)	❖ यह एक घरेलू हवाई अड्डा है, जिसे अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे का दर्ज़ा दिया जाना प्रस्तावित है।
3.	**रातानाडा हवाई अड्डा**	जोधपुर (1985)	❖ भारतीय वायु सेना के अधीन है। यह नागरिक व सैन्य दोनों सेवाओं के लिए प्रयुक्त होता है।
4.	**जैसलमेर हवाई अड्डा**	जैसलमेर (2016)	❖ यह भी भारतीय वायुसेना द्वारा उपयोग में लिया जाता है।
5.	**किशनगढ़ हवाई अड्डा**	अजमेर (2017)	❖ यह एयरपोर्ट दिल्ली, अहमदाबाद, बेलगाम, इंदौर, हैदराबाद के लिए वायु सेवाएँ देता है।
6.	**नाल हवाई अड्डा**	बीकानेर (2017)	❖ यह भारतीय वायुसेना का भूमिगत हवाई अड्डा है, सामान्य स्थिति में नागरिक सेवाओं हेतु भी प्रयुक्त होता है।
7.	**कोटा हवाई अड्डा**	कोटा	❖ 1951 में राजपूताना एयरपोर्ट के नाम से शुरू हुआ, 1997 में इसे बंद कर दिया गया। 2017 से पुनः जयपुर, कोटा के बीच हवाई सेवा शुरू की गई।
8.	**सूरतगढ़ हवाई अड्डा**	श्रीगंगानगर	❖ यह मुख्यतः वायुसेना के लड़ाकू मिग-21 हेतु संचालित किया जाता है।
9.	**कोटकासिम हवाई अड्डा**	खैरथल-तिजारा	❖ DMIC के तहत् यहाँ ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट बनना प्रस्तावित है।

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. रातानाडा हवाईअड्डा अपनी सेवायें उपलब्ध कराता है—
(A) जोधपुर को (B) कोटा को
(C) बीकानेर को (D) उदयपुर को **[A]**

2. राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8 राजस्थान के निम्नलिखित में से किस ज़िले से नहीं गुजरता है?
(A) जयपुर (B) अजमेर (C) नसीराबाद (D) उदयपुर **[C]**

3. पूर्व-पश्चिम गलियारा राजस्थान के निम्नलिखित में से किस जिले से नहीं गुजरता है?
(A) कोटा (B) बूँदी (C) बारां (D) झालावाड़ **[D]**

4. निम्नलिखित में से कौन-सा राष्ट्रीय राजमार्ग राजस्थान से होकर गुजरने वाला प्रमुख राजमार्ग है, जो दिल्ली से जयपुर, अजमेर और उदयपुर से होते हुए मुंबई जाता है?
(A) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-48 (B) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-9
(C) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-24 (D) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या-3 **[A]**

5. नए नेशनल हाईवे नंबर के अनुसार और राजस्थान से गुजरने वाले नेशनल हाईवे को सुमेलित करें।
नया नेशनल हाईवे शुरू होता है / खत्म होता है
a. NH 11 I. मियाज्लार से रेवाड़ी
b. NH 709 II. रोहतक से राजगढ़
c. NH 919 III. पलवल से रेवाड़ी
d. NH 23 IV. कोथुम से धौलपुर
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(A) a-I, b-II, c-III, d-IV (B) a-II, b-III, c-IV, d-I
(C) a-II, b-I, c-III, d-IV (D) a-I, b-IV, c-II, d-III **[A]**

6. भारत के उत्तर-पश्चिम रेलवे मंडल (ज़ोन) का मुख्यालय, निम्नलिखित में से किस स्थान पर स्थित है ?
(A) अजमेर (B) बीकानेर (C) जोधपुर (D) जयपुर **[D]**

7. निम्नलिखित में से किस वर्ष में राजस्थान राज्य सड़क परिवहन निगम (RSRTC) की स्थापना हुई थी?
(A) 1955 (B) 1960 (C) 1962 (D) 1964 **[D]**

8. स्वर्णिम चतुर्भुज परियोजना के तहत राजस्थान में निम्नलिखित में से किस राष्ट्रीय राजमार्ग को जयपुर से अजमेर तक 6 लेन में परिवर्तित किया गया है ?
(A) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 14 (B) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 8
(C) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 3 (D) राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 11 **[B]**

9. ''ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे'' परियोजना, जो राजस्थान के औद्योगिक विकास की कुंजी है, का उद्देश्य किस औद्योगिक गलियारे के लिए कनेक्टिविटी में सुधार करना है?
(A) अमृतसर-कोलकाता औद्योगिक गलियारा
(B) चेन्नई-बेंगलुरु औद्योगिक गलियारा
(C) पश्चिमी समर्पित माल ढुलाई गलियारा
(D) दिल्ली-मुंबई औद्योगिक गलियारा **[A]**

1 प्रमुख प्राचीन सभ्यताएँ और पुरातात्विक स्थल

कालीबंगा सभ्यता

- ❖ प्राचीन **दृषद्वती** और **सरस्वती नदी** घाटी (वर्तमान में घग्घर नदी का क्षेत्र) क्षेत्र में हड़प्पा सभ्यता से भी प्राचीन कालीबंगा की सभ्यता विकसित हुई। राजस्थान के **हनुमानगढ़** जिले में जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम दिशा में स्थित यह सभ्यता आज से 6 हजार वर्ष से भी अधिक प्राचीन मानी जाती है।
- ❖ सिंधु सरस्वती सभ्यता के महत्वपूर्ण केन्द्र कालीबंगा को **सिंधु सभ्यता की तीसरी राजधानी** माना जाता है। इस स्थल का कालीबंगा नाम यहाँ से खुदाई के दौरान प्राप्त काली चूड़ियों के कारण पड़ा है, क्योंकि पंजाबी भाषा में बंगा का अर्थ होता है - चूड़ी।
- ❖ सर्वप्रथम **1952 ई. में अमलानन्द घोष** ने इसकी खोज की और तत्पश्चात् **1961–69** ई. में **बी.बी. लाल, बी.के. थापर, जे.वी. जोशी, एम.डी. खरे, एम.पी. जैन एवं के.एम. श्रीवास्तव** द्वारा यहाँ उत्खनन कार्य करवाया गया।
- ❖ उत्खनन में इस सभ्यता के **पाँच स्तर** सामने आये हैं, प्रथम दो स्तर तो हड़प्पा सभ्यता से भी प्राचीन है, वहीं तीसरे, चौथे व पाँचवे स्तर की सामग्री हड़प्पा सभ्यता की सामग्री के समान और समकालीन है।
- ❖ कालीबंगा टीले में मुख्य रूप से नगर योजना के तीन खंड एवं कुछ उत्खनन से प्राप्त सामग्री मिली है।
- ❖ इस आधार पर कालीबंगा की सम्यता को दो भागों में बांटा गया है—
  (i) पूर्व हड़प्पाकालीन सभ्यता (2400 ई.पू. से 2250 ई.पू.)
  (ii) हड़प्पाकालीन सभ्यता (2200 ई.पू. से 1700 ई.पू.)
- ❖ कालीबंगा दुर्ग पश्चिम में तथा आवास क्षेत्र पूर्व दिशा में है। यहाँ रक्षा प्राचीरों से दुर्ग तथा निचले नगर के घिरे होने का स्पष्ट साक्ष्य मिला है। कालीबंगा के पश्चिमी टीले को **कालीबंगा प्रथम** नाम दिया गया है।
- ❖ कालीबंगा सुव्यवस्थित रूप से बसा हुआ नगर था। मकान बनाने में **मिट्टी की ईंटों** को धूप में पकाकर प्रयुक्त किया जाता था तथा फर्श में अलंकृत ईंटों का प्रयोग हुआ है।
- ❖ कालीबंगा से **लकड़ी की नाली के अवशेष** मिलते हैं। उत्खनन से प्राप्त **मिट्टी के बर्तन** एवं उनके अवशेष पतले और हल्के हैं। बर्तनों का रंग लाल है, जिन पर काली एवं सफेद रंग की रेखाएँ खींची गई हैं।
- ❖ यहाँ से जुते हुए खेत के साक्ष्य मिलते हैं। खेत में ग्रिड पैटर्न की गर्तधारियों के निशान है और ये दो तरह के निशान एक-दूसरे के समकोण पर बने हुए हैं। ऐसा अनुमान है कि लोग एक ही खेत में **दो फसलें उगाते** थे।
- ❖ कालीबंगा वासी पशुपालन का कार्य भी करते थे। यहाँ से ऊँट की अस्थियाँ एवं पालतू कुत्ते के साक्ष्य मिले हैं।
- ❖ यहाँ से उत्खनन में मटकियाँ, भांड, कटोरे, थालियाँ, हत्थे वाले बर्तन मिले हैं। बर्तन भूरे एवं काले रंग के हैं जिन पर गोल, अर्द्धचंद्राकार व तिर्यक रेखायें बनी हुई हैं।
- ❖ कालीबंगा से उत्खनन में कांसे के दर्पण, हाथीदाँत का कंघा, सोने व मूंगे तथा सीपों के आभूषण और ताँबे की पिनें मिली हैं।
- ❖ कालीबंगा से मिले कब्रिस्तान से यहाँ के निवासियों की शवाधान पद्धतियों की जानकारी मिलती है। शवों की अंत्येष्टि की तीन विधियों – पूर्ण समाधिकरण, आंशिक समाधिकरण एवं दाहकर्म के प्रमाण मिले हैं।
- ❖ यहाँ से एक **युगल शवाधान** तथा **अण्डाकार कब्रें** भी प्राप्त हुई हैं साथ ही एक **बच्चे के कंकाल की खोपड़ी** में छः छिद्र मिले हैं, जिसे मस्तिष्क शोध बीमारी के इलाज का प्रमाण माना जाता है।
- ❖ यहाँ से प्राप्त खिलौना बैलगाड़ी, हवनकुण्ड या अग्निकुण्ड (सात अग्निवेदियों की पंक्ति) व बेलनाकार मुहर का हड़प्पा सभ्यता में अपना विशिष्ट स्थान है।
- ❖ यहाँ से सैन्धव लिपि युक्त मृद् पात्र पर लिपि की ओवर लैपिंग के साक्ष्य प्राप्त हुए हैं यह लिपि दाहिने से बायें ओर लिखी जाती थी।
- ❖ कालीबंगा से प्राप्त मूर्तिकला साक्ष्यों में मिट्टी से बना कुत्ता, भेड़ियाँ, चूहा और हाथी की प्रतिमाएँ, बगुले की प्रतिमा, भग्नावस्था में तीन मानवाकृतियाँ, वृषभाकृति आदि विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं।
- ❖ यहाँ प्राक-हड़प्पाकालीन भूकम्प के साक्ष्य मिले हैं।

नोटः—इस सभ्यता की पहली व्यवस्थित जानकारी इटली के विद्वान डॉ. एल.पी. टेसीटोरी ने दी थी।

आहड़ सभ्यता

- ❖ **उदयपुर** शहर के पास बहने वाली **आहड़ नदी** (आयड़ नदी) के तट पर बसे आहड़ के उत्खनन के फलस्वरूप चार हजार वर्ष पुरानी पाषाण धातु युगीन सम्यता के अवशेष सामने आए।
- ❖ यह सभ्यता बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी नदियों के तटों और घाटियों में फैली हुई थी। यह सभ्यता एक टीले के नीचे दबी हुई प्राप्त हुई थी जिसे **धूलकोट** (धूल यानि मिट्टी का टीला) कहते हैं।
- ❖ 10वीं 11वीं शताब्दी में इसे **आघाटपुर** अथवा **आघट दुर्ग** के नाम से जाना जाता था। आहड़ को बनास सभ्यता का हिस्सा माना जाता है, इसलिए इसे **'बनास संस्कृति'** भी कहते हैं। डॉ. गोपीनाथ शर्मा के अनुसार यह सभ्यता 1900 ई.पू. से 1200 ई.पू. की है।
- ❖ सर्वप्रथम 1953 में यहाँ **अक्षयकीर्ति व्यास** एवं उसके बाद **रतन चन्द्र अग्रवाल** एवं **एच.डी. साँकलियां** के निर्देशन में उत्खनन कार्य करवाया गया। आहड़ के उत्खनन में बस्तियों के **आठ स्तर** मिले हैं।
- ❖ इस सभ्यता के लोग मकान बनाने में धूप में सुखाई गई ईंटों एवं पत्थरों का प्रयोग करते थे। यहाँ के मकानों में एक से अधिक चूल्हे मिले हैं, जो संयुक्त परिवार प्रणाली का संकेत देते हैं।
- ❖ मकानों से पानी निकालने की वैज्ञानिक पद्धति थी। यह पद्धति **'चक्रकूप पद्धति'** कहलाती थी।
- ❖ आहड़ से अनाज रखने के बड़े-बड़े मृद्भाण्ड प्राप्त हुए हैं जिन्हें स्थानीय भाषा में **'गोरे व कोठ'** कहा जाता है।

2 प्रमुख शासक और उनकी उपलब्धियाँ

राजपूत राजवंश

राजपूतों की उत्पत्ति

- ❖ सम्राट हर्षवर्धन के मृत्युपरान्त भारत में नये राजवंशों का उदय हुआ, जिसमें **सांभर में चौहान, बुंदेलखण्ड में चन्देल**, गुजरात में **चालुक्य (सोलंकी), बंगाल में पाल वंश** व तत्पश्चात **सेनवंश** प्रमुख हैं, ये सभी राजपूत कहलाये तथा **7वीं** से **12वीं** शताब्दी तक का काल भारतीय इतिहास में **'राजपूत काल'** कहलाया।
- ❖ **राजपूतों की उत्पत्ति के सम्बन्ध में भिन्न-भिन्न मत प्रचलित हैं—**

(1) **वैदिक क्षत्रियों की सन्तान—मनुस्मृति** में क्षत्रियों की उत्पत्ति **'ब्रह्मा'** से तथा **ऋग्वेद** में **ब्रह्मा** की बाँहों से मानी जाती है। **श्री गौरीशंकर हीराचंद ओझा** व **श्री सी.एम. वैद्य** ने राजपूतों को वैदिक आर्यों की संतान बताया है।

(2) **अग्निकुण्ड से उत्पत्ति**—चन्द्रबरदाई कृत **'पृथ्वीराज रासो'** के अनुसार वशिष्ठ मुनि ने **आबू** के यज्ञकुण्ड से **परमार, चालुक्य, प्रतिहार** तथा **चौहान** योद्धाओं को यज्ञ की रक्षा हेतु उत्पन्न किया।

(3) **ब्राह्मणों से उत्पत्ति—डॉ. भण्डारकर** बिजोलिया शिलालेख के आधार पर कुछ राजपूत वंशों को ब्राह्मणों से उत्पन्न हुआ मानते हैं तथा **डॉ. गोपीनाथ शर्मा** ने मेवाड़ के **गुहिलोतों** को **नागर ब्राह्मण गुहेदत्त** का वंशज बताया है।

(4) **सूर्य व चन्द्रवंशी—10वीं शताब्दी में चारण साहित्यकारों** तथा **चित्तौड़ के शिलालेख** (1274 ई.) व **अंकलेश्वर के शिलालेख** (1285 ई.) तथा आबू में तेजपाल मंदिर के **शिलालेख (1230 ई.)** में राजा **धूमपाल** को व **हर्षनाथ मंदिर (सीकर)** से प्राप्त शिलालेख में **चौहानों को** सूर्यवंशी बताया गया है।

(5) **पाश्चात्य विद्वानों का मत—कर्नल जेम्स टॉड शक अथवा सिथियन** के वंशज, **वी.ए. स्मिथ 'हूणों की संतान'** एवं कर्नल जेम्स टॉड ने अग्निकुण्ड से उत्पत्ति की कहानी को स्वीकार किया। **विलियम क्रुक** के अनुसार राजपूतों के कई वंशों का उद्‌भव **'शक' व 'कुषाण'** आक्रमण के समय हुआ।

(6) **चट्टोपाध्याय का मत (मिश्रित मूल का सिद्धान्त)—डी.पी. चट्टोपाध्याय वैदिक कालीन क्षत्रियों से** मानना सर्वाधिक संगत है।

गुर्जर-प्रतिहार राजवंश

- ❖ छठी शताब्दी के उत्तरार्द्ध में मारवाड़ में क्षत्रिय वंशी प्रतिहारों का उदय हुआ। उस समय यह क्षेत्र **'गुर्जरत्रा'** कहलाता था। इसलिए प्रतिहारों को **गुर्जर प्रतिहार** कहा गया।
- ❖ मुहणौत नैणसी ने गुर्जर प्रतिहारों की **26 शाखाओं का वर्णन** किया है, इनमें से मण्डोर की शाखा सबसे प्राचीन मानी जाती है।

मण्डौर के प्रतिहार

- ❖ **हरिश्चन्द्र (रोहिलद्धि)** को गुर्जर प्रतिहारों का आदि पुरुष एवं प्रतिहार वंश का संस्थापक कहते हैं।
- ❖ हरिश्चन्द्र के चार पुत्रों (भोगभट्ट, कद्धक, रज्जिल, दह) ने मिलकर मण्डोर जीतकर वहाँ गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य की स्थापना की।
- ❖ रज्जिल का पौत्र **नागभट्ट प्रथम गुर्जर प्रतिहार वंश का प्रथम प्रतापी शासक** हुआ, जिसने अपनी राजधानी **मण्डोर** से **मेड़ता,** मेड़ता से **भीनमाल** और अंत में **उज्जैन** को बनाया।
- ❖ **भोज, शीलुक, झोट, कक्क, बाउक** और **कक्कुक मण्डोर** शाखा के प्रसिद्ध प्रतिहार शासक हुए।

भीनमाल और कन्नौज के प्रतिहार

- ❖ चीनी यात्री युवानच्वांग (ह्वेनसांग) ने गुर्जर प्रतिहार राज्य की राजधानी का नाम **पीलो मोलो (भीनमाल)** बताया है। यह वर्तमान जालोर जिले में स्थित है।
- ❖ **नागभट्ट प्रथम** (730-760) **भीनमाल (जालौर)** के गुर्जर प्रतिहार साम्राज्य के संस्थापक थे। इनका दूसरा नाम **'नागावलोक'** था। उसे ग्वालियर प्रशस्ति में **'म्लेच्छों का नाशक'** कहा गया है।
- ❖ नागभट्ट प्रथम को प्रतिहार **साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक** कहा जाता है। उसे **'इन्द्र के दंभ का नाशक'** भी कहते हैं।
- ❖ नागभट्ट प्रथम के बाद **वत्सराज** प्रतापी राजा हुआ। इसे **रणहस्तिन की उपाधि** मिली। इनके समय में राजस्थानी भाषा में **कुवलयमाला** की रचना हुई। वत्सराज ने **ओसियाँ में महावीर स्वामी का जैन मंदिर** बनाया था।
- ❖ वत्सराज का पुत्र नागभट्ट द्वितीय (795-833 ई.) ने चक्रायुध को हराकर **कन्नौज** को अपनी राजधानी बनाया और विशाल साम्राज्य की स्थापना की।
- ❖ **नागभट्ट द्वितीय** ने धर्मपाल को हराकर **'परमभट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर'** की उपाधि धारण की।
- ❖ **मिहिरभोज प्रथम** (836-885 ई.) अपने पिता रामभद्र की हत्या कर शासक बना इसलिए उसे **'प्रतिहारों में पितृहंता'** कहा जाता है। **अरब यात्री सुलेमान** ने उसे अरबों का अमित्र तथा इस्लाम का शत्रु बताया है।
- ❖ मिहिर भोज ने **आदिवराह** और **प्रभास पाटन** की उपाधियाँ धारण की। इसके समय ग्वालियर प्रशस्ति की भी रचना हुई।
- ❖ मिहिर भोज के समय प्रतिहारों की शक्ति चरमोत्कर्ष पर थी। **बग्रमा लेख** में इसे **'संपूर्ण पृथ्वी को जीतने वाला'** बताया गया है।
- ❖ **महेन्द्रपाल प्रथम** (885-910 ई.) को **निर्भय नरेश, निर्भयराज, रघुकुल चूड़ामणि, महीशपाल तथा महेन्द्रायुध** आदि नामों से भी पुकारा गया। इसने **परमेश्वर व परमभट्टारक** की उपाधि धारण की।
- ❖ महेन्द्रपाल के दरबारी कवि **राजशेखर** ने कर्पूरमंजरी, हरविलास और काव्यमीमांसा आदि ग्रंथ लिखे।
- ❖ **महीपाल प्रथम** (914-943 ई.) को आर्यावर्त का महाराजाधिराज, रघुकुल मुकुटमणी, विनायकपाल एवं हेरम्भपाल के नाम से भी जाना जाता है।
- ❖ महीपाल प्रथम के समय प्रतिहारों का पतन शुरू हो गया। उसके समय **अरब यात्री अलमसूदी** भारत यात्रा पर आया था।

3 1857 का विद्रोह

- 29 मार्च, 1857 को मंगल पांडे द्वारा बैरकपुर की छावनी में विद्रोह करने तथा **10 मई 1857** को मेरठ की छावनी से 1857 की क्रांति का बिगुल बजने पर राजस्थान में भी क्रांति का दीप प्रज्वलित हो गया।
- नसीराबाद की छावनी की **15वीं नैटिव इंफैन्ट्री ने 28 मई, 1857** को विद्रोह का झण्डा गाड़ दिया।
- 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में 6 स्थानों पर ब्रिटिश सैनिक छावनियाँ थीं—**नसीराबाद, नीमच, देवली, ब्यावर, एरिनपुरा** व **खैरवाड़ा**।
- 1857 की क्रांति के समय राजस्थान में **ए.जी.जी.** (**एजेन्ट टू गवर्नर जनरल**) **जार्ज पैट्रिक लॉरेन्स** था तथा मारवाड़ में **मैक मोसन**, मेवाड़ में **मेजर शावर्स**, जयपुर में **कर्नल ईडन** और कोटा में **मेजर बर्टन** पॉलिटिकल एजेन्ट थे।

नसीराबाद सैनिक छावनी में विद्रोह

- राजस्थान में अजमेर ब्रिटिश सत्ता का **प्रमुख केन्द्र** था। **15वीं नेटिव इंफेन्ट्री के सैनिकों ने तोपखाने के सैनिकों को अपनी ओर मिलाकर विद्रोह कर दिया** तथा तोपों पर अधिकार कर लिया। 28 मई, 1857 को **30वीं नेटिव इंफेन्ट्री** में भी असंतोष फूट पड़ा।
- क्रांतिकारी सैनिकों ने छावनी को तहस-नहस करने के बाद **दिल्ली की ओर कूच किया।**
- अंग्रेज अधिकारी **वाल्टर व हीथकोट** ने मेवाड़ के सैनिकों की सहायता से इनका असफल पीछा किया।

नीमच छावनी

- 3 जून, 1857 को नीमच के सैनिकों ने **हीरासिंह** के नेतृत्व में विद्रोह किया। इन्होंने 5 जून, 1857 को देवली व आगरा होते हुए दिल्ली के लिए कूच किया। अंग्रेज कैप्टन **हार्डकेसल** व लेफ्टि. **वाल्टर** के नेतृत्व में जोधपुर की सेनाओं एवं कैप्टन **शावर्स** के नेतृत्व में मेवाड़ की सेनाओं ने इनका पीछा किया परन्तु वे क्रांतिकारियों को रोकने में सफल नहीं हुए।
- **मेजर शावर्स** (मेवाड़ के पालिटिकल एजेन्ट) ने मेवाड़ की सेना की सहायता से क्रांतिकारियों द्वारा बंधक 40 अंग्रेजों को छुड़ाकर उदयपुर पहुँचाया जहाँ **महाराणा स्वरूप सिंह** ने उन्हें पिछोला झील के जगमंदिर में शरण दी।
- नीमच छावनी के **कप्तान मेकडोनाल्ड** ने किले को क्रांतिकारियों से बचा न सके।

आउवा का विद्रोह

- मारवाड़ में विद्रोह का **शक्तिशाली केन्द्र आउवा** नामक स्थान था।
- 1835 ई. में कम्पनी सरकार द्वारा जोधपुर लीजन सैनिक टुकड़ी का गठन किया जिसको **एरिनपुरा छावनी** पर रखा गया।
- जोधपुर लीजन की पूर्बिया सैनिकों की एक टुकड़ी ने 21 अगस्त, 1857 को आबू में विद्रोह कर दिया। क्रांतिकारियों ने अंग्रेजों को बंदी बना लिया। **23 अगस्त, 1857** को जोधपुर लीजन के **दफेदार मोतीखाँ एवं सूबेदार शीतल प्रसाद के नेतृत्व में एरिनपुरा छावनी के पूर्बिया सैनिकों ने क्रांति का बिगुल बजा दिया एवं छावनी को लूटकर 'चलो दिल्ली मारो फिरंगी'** के नारे लगाते हुए दिल्ली की ओर रवाना हुए।
- **आउवा के ठाकुर कुशालसिंह** के नेतृत्व में क्रांतिकारियों ने **जोधपुर के महाराजा तख्तसिंह व कैप्टन हीथकोट की सेना** को आउवा के निकट **बिथौड़ा (पाली)** नामक स्थान पर **8 सितम्बर, 1857** को हराया जिसमें जोधपुर सेना के **प्रमुख अनाड़सिंह** मारा गया।
- **18 सितम्बर, 1857** को क्रांतिकारियों ने **चेलावास (आऊवा) के युद्ध** में एजीजी लॉरेन्स को हराया। इस युद्ध में जोधपुर का पॉलिटिकल एजेन्ट का सिर काटकर आउवा के किले के दरवाजे पर लटका दिया।
- जोधपुर लीजन के क्रांतिकारी 10 अक्टूबर, 1857 को **आसोपा के ठाकुर शिवनाथ सिंह के नेतृत्व में दिल्ली की ओर चल पड़े।**
- गवर्नर जनरल **लॉर्ड केनिंग ने कर्नल होम्स की अगुवाई** में **20 जनवरी, 1858** को आउवा पर आक्रमण किया। 24 जनवरी, 1858 को दुर्ग पर ब्रिटिश सेना का अधिकार हो गया।
- **ठाकुर कुशालसिंह ने कोठारिया के रावत जोधसिंह के यहाँ जाकर शरण ली।**

कोटा में विद्रोह

- कोटा में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष राजकीय सेना तथा आमजन ने किया। **कोटा के पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन थे।**
- **15 अक्टूबर, 1857** को लाला जयदयाल व मेहराब खां के नेतृत्व में सैनिकों ने विद्रोह कर दिया।
- पॉलिटिकल एजेन्ट मेजर बर्टन, उसके दो पुत्रों एवं एक डॉक्टर सैडलर काटम की हत्या कर दी गई। **क्रांतिकारियों ने बर्टन का सिर धड़ से अलग कर दिया व इसको सारे शहर में घुमाया।**
- क्रांतिकारियों ने कोटा के **महाराव रामसिंह** को नजरबंद करके कोटा रियासत पर **अधिकार** कर लिया।
- **करौली के महारावल मदनपाल की सेना** भी मेजर जनरल रॉबर्ट्स के साथ थी। 6 माह तक क्रांतिकारियों के अधीन रहने के बाद कोटा पुनः महाराव को प्राप्त हुआ।

धौलपुर में क्रांति

- धौलपुर में क्रांतिकारी सैनिकों ने **राव रामचन्द्र एवं हीरालाल** के नेतृत्व में स्थानीय सैनिकों की सहायता से विद्रोह कर राज्य पर अपना अधिकार कर लिया। **2 माह बाद पटियाला की सेना ने आकर विद्रोह को समाप्त किया।**
- 31 मई, 1857 को भरतपुर में विद्रोह होने पर मेजन मॉरीशन आगरा भाग गया।

टोंक में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

- टोंक रियासत के **द्वितीय नवाब वजीर खां (वजीरुद्दौला खाँ) के शासन काल (1834-1864 ई.) में भारत का प्रथम स्वतंत्रता**

4 किसान एवं जनजाति आंदोलन

किसान आंदोलन

बिजौलिया किसान आन्दोलन (1897 से 1941 ई.)

- बिजौलिया (वर्तमान भीलवाड़ा जिले में) ठिकाने की स्थापना राणा सांगा के समय **अशोक परमार** द्वारा की गई थी। यहाँ पर राजस्थान का प्रथम संगठित किसान आन्दोलन प्रारम्भ हुआ जिसका कारण स्थानीय जागीरदार द्वारा अधिक लाग-बाग वसूलना था।
- **1897 ई.** में ऊपरमाल क्षेत्र (बिजौलिया) के लोगों ने महाराणा मेवाड़ फतेहसिंह से जागीरदार के जुल्मों के विरुद्ध शिकायत करने हेतु **नानजी व ठाकरी पटेल** को भेजा लेकिन महाराणा ने इस पर ध्यान नहीं दिया और बिजौलिया के तत्कालीन ठाकुर **राव कृष्ण सिंह** ने नानजी व ठाकरी पटेल को निर्वासित कर दिया।
- 1903 में कृष्णसिंह ने चवरी कर लगाया, जिसके अनुसार हर व्यक्ति को अपनी बेटी की शादी पर 5 रुपये कर देना पड़ता था।
- कृष्णसिंह के पुत्र **राव पृथ्वीसिंह** द्वारा **तलवार बंधाई का लाग** (नया ठाकुर बनने पर दिया जाने वाला कर) लागू करने पर **साधु सीताराम दास, फतेहकरण चारण** व **ब्रह्मदेव** के नेतृत्व में किसानों ने भूमि को पड़त रखकर विरोध करते हुए कोई कर नहीं दिया।
- 1916 ई. में साधु सीताराम दास के आग्रह पर **विजयसिंह पथिक** (भूपसिंह) इस आन्दोलन से जुड़े तथा 1917 ई. में **'ऊपरमाल किसान पंच बोर्ड'** की स्थापना की।
- किसानों की मांगों का औचित्य जाँच करने हेतु अप्रैल 1919 में गठित न्यायमूर्ति **बिन्दुलाल भट्टाचार्य** जाँच आयोग की रिपोर्ट में लाग-बाग को समाप्त करने की अनुशंषा की गई।
- कानपुर से प्रकाशित **'प्रताप'** समाचार पत्र (गणेशशंकर विद्यार्थी) के माध्यम से अखिल भारतीय स्तर पर इस आन्दोलन को उजागर किया गया।
- कांग्रेस नेताओं के हस्तक्षेप से 1922 ई. में ए.जी.जी. हॉलेण्ड व किसानों के बीच समझौता हुआ जिसमें 84 में से 35 लाग माफ कर दिये।
- **1927 ई.** में पथिक जी के इस आन्दोलन से अलग होने पर इसका नेतृत्व **जमनालाल बजाज** व **हरिभाऊ उपाध्याय** ने संभाला। 1931 ई. में जमनालाल बजाज व मेवाड़ के प्रधानमंत्री सुखदेव प्रसाद के मध्य एक समझौता हुआ लेकिन उसका ईमानदारी से पालन नहीं किया।
- **1941 ई.** में मेवाड़ के प्रधानमंत्री टी.वी. राघवाचार्य ने राजस्व विभाग के मंत्री **डॉ. मोहन सिंह मेहता** को बिजौलिया भेजकर किसानों की माँगें मानकर जमीनें वापस कर दी, इसके बाद बिजौलिया आन्दोलन समाप्त हो गया।

बेगूँ किसान आन्दोलन

- चित्तौड़गढ़ जिले में स्थित बेगूँ ठिकाने के किसानों ने अपने जागीरदार के विरुद्ध आन्दोलन शुरू किया जिसका नेतृत्व **रामनारायण चौधरी** ने किया।
- मई, **1921 ई.** में बेगूँ ठिकाने के कर्मचारियों ने **चाँदखेड़ी** नामक स्थान पर सभा में किसानों पर अमानुषिक व्यवहार किया।
- बिजौलिया आन्दोलन से प्रेरित बेगूँ के किसानों ने **मेनाल** में एकत्रित होकर लाग-बाग व लगान को न्यायपूर्ण बनाने के लिए संघर्ष करने का आह्वान किया।
- दो वर्षो के संघर्ष के पश्चात बेगूँ **ठाकुर अनूपसिंह** व किसानों के मध्य समझौता हुआ लेकिन इसे **'बोल्शेविक'** की संज्ञा दी गई। सरकार ने जाँच हेतु **ट्रेंच आयोग** का गठन किया। **13 जुलाई, 1923** में किसानों की सभा पर सेना द्वारा लाठीचार्ज करने पर **रूपाजी एवं कृपाजी धाकड़** शहीद हो गये।
- इसके पश्चात् **पथिकजी** इस आन्दोलन से जुड़े। आन्दोलन के कारण बन रहे दबाव के फलस्वरूप बन्दोबस्त व्यवस्था लागू कर लगान की दरें कम की एवं अधिकांश लागें वापस ली व बेगार प्रथा समाप्त की।

अलवर किसान आन्दोलन

- अलवर रियासत में किसानों की खड़ी फसलों में सूअरों द्वारा नुकसान पहुँचाने पर भी उन्हें मारने पर प्रतिबंध था। इस समस्या के विरोध में **1921 ई.** में किसानों ने आन्दोलन किया जिसके फलस्वरूप सूअर मारने की अनुमति दे दी गई।

बूँदी किसान आन्दोलन

- लाग-बाग, बेगार प्रथा व लगान की ऊँची दरों के विरोध में बूँदी के किसानों ने **1921-22** में आन्दोलन प्रारम्भ किया जिसका नेतृत्व **पं. नयनूराम शर्मा** ने किया। इस आन्दोलन के दौरान **'डाबी'** नामक स्थान पर 2 अप्रैल, 1923 को किसानों की सभा में **'झण्डागीत'** गाते समय **नानक भील** की गोली मारकर हत्या कर दी गई। **बूँदी में 1936** में एक बार पुन: किसान आन्दोलन हुआ।

नीमूचणा किसान आन्दोलन

- बढ़ी हुई लगान दरों के विरोध में 14 मई, 1925 को कोटपूतली-बहरोड़ के नीमूचणा नामक स्थान पर किसानों की सभा पर अंधाधुंध फायरिंग में सैकड़ों किसान मारे गये। गांधीजी ने इसे **'दूसरा जलियाँवाला बाग हत्याकाण्ड'** कहा। इस आन्दोलन में अंतत: किसानों की माँगें मान ली गईं।

मेव किसान आन्दोलन

- अलवर एवं भरतपुर रियासत के मेव किसानों ने बढ़ी हुई लगान देने से इंकार करते हुए **1932 ई.** में आन्दोलन प्रारम्भ किया जिसका नेतृत्व **डॉ. मोहम्मद अली** ने किया।

सीकर व शेखावाटी में किसान आन्दोलन

- जयपुर रियासत में सीकर ठिकाने के ठाकुर कल्याणसिंह द्वारा बढ़ी हुई दर से लगान वसूलने पर राजस्थान **जाट क्षेत्रीय सभा (1931)** के तत्त्वाधान में **'पलथाना'** में जाट सम्मेलन **1933** ई. में आयोजित किया।

5 प्रजामंडल आंदोलन

जयपुर प्रजामण्डल (1931)

- **कर्पूरचन्द पाटनी** की अध्यक्षता में सर्वप्रथम 1931 में गठित लेकिन मृतप्राय रहा। जमनालाल बजाज की प्रेरणा से वर्ष 1936-37 जयपुर प्रजामण्डल का पुनर्गठन किया गया। **चिरंजीलाल मिश्रा** की अध्यक्षता में पुनर्गठित प्रजामण्डल के 1938 ई. में जमनालाल बजाज अध्यक्ष, हीरालाल शास्त्री महामंत्री, कर्पूरचन्द्र पाटनी संयुक्त मंत्री बनाये गये। बाबा हरिश्चन्द्र, हंस डी. राय, लादूराम जोशी, टीकाराम पालीवाल, पूर्णानन्द जैन आदि इस प्रजामण्डल के प्रमुख सदस्य थे।
- इस प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन 8-9 मई, 1938 को नथमल का कटला, जयपुर में जी.एल. बजाज की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।
- इस प्रजामण्डल का दूसरा वार्षिक अधिवेशन 25-26 मई, 1940 को सम्पन्न हुआ। इस अधिवेशन के सभापति जी.एल. बजाज थे।
- 1942 ई. के भारत छोड़ो आन्दोलन में सक्रिय भाग नहीं लेने वाले प्रजामण्डल, जयपुर प्रजामण्डल तथा अलवर प्रजामण्डल थे।
- **जेन्टिलमेंस एग्रीमेंट—सितम्बर, 1942 ई.** में जयपुर के प्रधानमंत्री **मिर्जा इस्माइल** व **श्री हीरालाल शास्त्री** के मध्य हुआ समझौता।
- **आजाद मोर्चा'**—भारत छोड़ो आन्दोलन में जयपुर प्रजामण्डल की निष्क्रियता से असंतुष्ट होकर **श्री बाबा हरिशचन्द्र, रामकरण जोशी, दौलत भण्डारी, श्री हंस दी राय,** द्वारा गठित संगठन जिसका विलय प्रजामण्डल में 1945 को हुआ।

मारवाड़/जोधपुर प्रजामण्डल (1934)

- **भंवरलाल सर्राफ, अभयमल जैन** व **अचलेश्वर प्रसाद** के प्रयासों से मारवाड़ प्रजामण्डल गठित हुआ। जनवरी, **1938** में **नेताजी सुभाषचन्द्र बोस** ने जोधपुर आकर मारवाड़ प्रजामण्डल को नई प्रेरणा दी। कराची में वर्ष 1936 में 'अखिल भारतीय देशी राज्य लोक परिषद्' के अधिवेशन में **जयनारायण व्यास** को महामंत्री चुना गया।
- 10 मार्च, 1936 को उत्तरदायी शासन की स्थिति का अध्ययन करने हेतु **जवाहरलाल नेहरू** ने जोधपुर की यात्रा की तथा जोधपुर प्रजामण्डल को गैर-कानूनी घोषित करने पर **'नागरिक अधिकार रक्षक सभा'** नाम से नया संगठन बनाया।
- **मारवाड़ लोक परिषद** - नागरिक अधिकार रक्षक सभा को गैर-कानूनी घोषित करने पर **16 मई 1938 को रणछोड़दास गट्टानी की अध्यक्षता** में 'मारवाड़ लोक परिषद' का गठन किया गया। इसका उद्देश्य उत्तरदायी शासन की स्थापना करना था।
- जयनारायण व्यास को जून, 1940 में मारवाड़ की लोकपरिषद् की सभी शाखाओं का अध्यक्ष निर्वाचित किया गया तथा मार्च, 1941 को मारवाड़ में **'उत्तरदायी शासन दिवस'** मनाया गया।

मेवाड़ प्रजामण्डल (1938)

- **माणिक्य लाल वर्मा** के प्रयासों से स्थापित मेवाड़ प्रजामण्डल का अध्यक्ष **बलवंतसिंह मेहता,** उपाध्यक्ष भूरेलाल बया तथा **महामंत्री माणिक्यलाल** वर्मा को बनाया गया।
- नवम्बर, 1941 को इसका प्रथम अधिवेशन माणिक्य लाल वर्मा की अध्यक्षता में उदयपुर में हुआ जिसमें आचार्य **जे.बी. कृपलानी** व **विजयलक्ष्मी पण्डित** ने भाग लिया।
- जब मेवाड़ प्रजामण्डल को गैर-कानूनी घोषित किया गया तथा कार्यालय पर ताला लगाकर मुख्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया तो उसके विरोध में **11 अक्टूबर, 1938** को **नाथद्वारा** से **सविनय अवज्ञा आन्दोलन** प्रारम्भ किया जो महात्मा गांधी के परामर्श पर **3 मार्च, 1939** को स्थगित किया गया। **माणिक्यलाल वर्मा** ने अजमेर से **'मेवाड़ का वर्तमान शासन'** नामक पुस्तिका प्रकाशित कर मेवाड़ में कुशासन की पोल खोल दी। इस आंदोलन में महिलाओं ने भी बड़े उत्साह के साथ भाग लिया और गिरफ्तारियाँ दी। इनमें वर्माजी की धर्मपत्नी नारायणी देवी, पुत्री सुशीला, भगवती देवी आदि के नाम उल्लेखनीय है।

बीकानेर प्रजामण्डल (1936)

- पं. मघाराम वैद्य की अध्यक्षता में गठित बीकानेर प्रजामण्डल में श्री भिक्षालाल बोहरा, श्री सुरेन्द्र कुमार शर्मा, शेराराम व लक्ष्मणदास (मंत्री) सहयोगी रहे। बीकानेर नरेश गंगासिंह ने **मघाराम** को रियासत से निष्कासित करके इसका शैशवकाल में ही दमन कर दिया।
- **बीकानेर राज्य प्रजा परिषद** - 22 जुलाई, 1942 में यह संस्था श्री रघुवरदयाल गोयल द्वारा स्थापित की गई।

भरतपुर प्रजामण्डल (1938)

- **किशनलाल जोशी** के प्रयासों से गोपीलाल यादव की अध्यक्षता में भरतपुर प्रजामण्डल गठित हुआ। साम्यवादी नेता **एम.एन. राय** की अध्यक्षता में भरतपुर प्रजामण्डल ने फतेहपुर सीकरी में पूर्वी राजस्थान की जनता का सम्मेलन आयोजित करवाया।
- **मार्च, 1939 को ठाकुर देशराज** की पत्नी **श्रीमती देवी** के नेतृत्व में प्रजामण्डल के प्रतिनिधियों ने प्रजामण्डल को मान्यता नहीं देने पर सत्याग्रह किया गया।
- **भरतपुर प्रजा परिषद** - सत्याग्रह आन्दोलन के पश्चात 25 अक्टूबर, 1939 को राज्य सरकार और प्रजामण्डल के मध्य समझौता हुआ, जिसमें प्रजामण्डल का नाम बदलकर **'भरतपुर प्रजा परिषद'** करने पर मान्यता दी गई।

हाड़ौती प्रजामण्डल (1934)

- हाड़ौती प्रजामण्डल की **पं. नयनूराम शर्मा** द्वारा स्थापना की गई लेकिन निष्क्रिय रही। इस प्रजामण्डल का अधिवेशन 'हाजी फैज मोहम्मद' की अध्यक्षता में 1934 में सम्पन्न हुआ।

कोटा प्रजामण्डल (1939)

- **नयनूराम शर्मा** ने **पं. अभिन्न हरि** के साथ मिलकर **कोटा प्रजामण्डल** की स्थापना की। कोटा प्रजामण्डल का प्रथम अधिवेशन पं. नयनूराम शर्मा की अध्यक्षता में **माँगरोल** में हुआ। **1941 में पं. नयनूराम** की हत्या हो जाने पर कोटा प्रजामण्डल की बागडोर **पं. अभिन्न हरि** ने संभाली।

6 राजस्थान का एकीकरण

❖ राजस्थान का एकीकरण **सात** चरणों में **18 मार्च, 1948** से प्रारम्भ होकर **1 नवम्बर, 1956** को पूर्ण हुआ। राजस्थान के एकीकरण में **8 वर्ष, 7 माह** एवं **14 दिन** का समय लगा।

❖ स्वतंत्रता के समय राजस्थान में **19 रियासतें**, **3 ठिकाने (चीफशिप) लावा** (टोंक), **कुशलगढ़** (बाँसवाड़ा), **नीमराना** (कोटपूतली-बहरोड़) तथा एक चीफ कमिश्नर प्रशासित (केन्द्र शासित) प्रदेश **अजमेर-मेरवाड़ा** था।

❖ राजस्थान में क्षेत्रफल की दृष्टि से सबसे बड़ी रियासत **जोधपुर** एवं सबसे छोटी रियासत **शाहपुरा** थी।

❖ **सबसे प्राचीन रियासत मेवाड़** (उदयपुर) थी जबकि **सबसे नवीन** व अंग्रेजों द्वारा निर्मित अंतिम रियासत **झालावाड़** थी।

❖ **शाहपुरा** व **किशनगढ़** ऐसी रियासतें थीं जिन्हें तोप की सलामी का अधिकार नहीं था। **महाराणा उदयपुर** को **19 तोपों** की सलामी दी जाती थी।

❖ 19 रियासतों को तोपों की सलामी दी जाती थी इसलिए इन्हें **'सेल्यूट स्टेट'** कहा जाता था जबकि लावा, **नीमराणा, कुशलगढ़** ठिकानों के शासकों को तोपों की सलामी नहीं दी जाती थी अतः इन्हें **'नॉन सेल्यूट स्टेट'** कहा जाता है।

❖ **सिरोही** (आबू-देलवाड़ा सहित) व चीफ कमिश्नर क्षेत्र **अजमेर-मेरवाड़ा** को **राज्य पुनर्गठन आयोग** (**अध्यक्ष फैजल अली**) की सिफारिश पर राजस्थान में शामिल किया गया।

❖ मत्स्य संघ की दो रियासतें **धौलपुर** व **भरतपुर** के कुछ लोग **भाषाई आधार पर उत्तरप्रदेश** में मिलना चाहते थे लेकिन भारत सरकार द्वारा गठित **डॉ. शंकर देव राय कमेटी** की सिफारिश पर मत्स्य संघ को वृहद राजस्थान में शामिल किया गया।

❖ **बाँसवाड़ा** के **महारावल चन्द्रवीर सिंह** ने विलय पत्र पर हस्ताक्षर करते समय कहा था कि **''मैं अपने डेथ वारण्ट पर हस्ताक्षर कर रहा हूँ।''**

❖ जोधपुर के महाराजा हनुवंतसिंह, **मुहम्मद अली जिन्ना** व **भोपाल नवाब** के कहने पर पाक में मिलना चाहते थे लेकिन वी.पी. मेनन के प्रयासों से राजस्थान में विलय को तैयार हुए।

❖ वृहद राजस्थान के निर्माण के समय भारत सरकार द्वारा गठित **डॉ. पी. सत्यनारायण राव कमेटी** ने भौगोलिक व पेयजल की सुविधा की दृष्टि से **जयपुर को राजधानी बनाने**, तथा **जोधपुर** में उच्च न्यायालय, **भरतपुर** में कृषि विभाग, **उदयपुर** में खनिज विभाग तथा **बीकानेर** में शिक्षा विभाग का मुख्यालय रखने का निर्णय लिया गया।

राजस्थान के एकीकरण के चरण

चरण	तिथि	नाम	शामिल रियासतें /ठिकाने/क्षेत्र	प्रधानमंत्री /मुख्यमंत्री	राजप्रमुख	राजधानी	विशेष विवरण
प्रथम चरण	**18 मार्च, 1948**	**मत्स्य संघ**	अलवर, भरतपुर, धौलपुर, करौली, नीमराना (ठिकाना)	शोभाराम कुमावत (अलवर)	उदयभानसिंह (धौलपुर)	**अलवर**	मत्स्य संघ का नामकरण के.एम.मुंशी उद्घाटनकर्ता-वी.एन. गाडगिल।
द्वितीय चरण	**25 मार्च, 1948**	**राजस्थान संघ**	कोटा, बूँदी, झालावाड़, बांसवाड़ा, डूँगरपुर, प्रतापगढ़, शाहपुरा, किशनगढ़, टोंक, कुशलगढ़ (ठिकाना)	गोकुल लाल असावा (शाहपुरा)	महाराव भीमसिंह (कोटा)	**कोटा**	उपराज प्रमुख-महाराव बहादुर सिंह (बूँदी) उद्घाटनकर्ता-वी.एन. गाडगिल
तृतीय चरण	**18 अप्रेल, 1948**	**संयुक्त राजस्थान**	राजस्थान संघ में **उदयपुर रियासत** शामिल।	माणिक्यलाल वर्मा (उदयपुर)	महाराणा भूपाल सिंह (उदयपुर)	**उदयपुर**	वरिष्ठ उपराज प्रमुख-भीम सिंह (कोटा) उद्घाटन-पं. जवाहरलाल नेहरू
चतुर्थ चरण	**30 मार्च, 1949 (चैत्र प्रतिपदा विक्रम संवत् 2006)**	**वृहद् राजस्थान**	संयुक्त राजस्थान में जोधपुर, जयपुर, बीकानेर व जैसलमेर रियासतें शामिल।	हीरालाल शास्त्री (जयपुर)	महाराजा सवाई मानसिंह द्वितीय (जयपुर)	**जयपुर**	महाराज प्रमुख-भूपालसिंह (उदयपुर) उपराज प्रमुख-भीम सिंह (कोटा) उद्घाटन-सरदार पटेल
पंचम् चरण	**15 मई, 1949**	**संयुक्त वृहत्तर राजस्थान**	वृहद राजस्थान में मत्स्य संघ शामिल।	हीरालाल शास्त्री	महाराजा सवाई मानसिंह (जयपुर)	**जयपुर**	**डॉ. शंकर देवराय समिति** की सिफारिश पर **'मत्स्य संघ'** शामिल।

7 प्रमुख व्यक्तित्व

कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी

- कप्तान दुर्गाप्रसाद चौधरी का जन्म 1905 ई. में **नीम का थाना (सीकर)** में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अर्जुनलाल सेठी की 'वर्धमान पाठशाला' में तथा उसके उपरान्त सांभर तथा कानपुर में हुई। चौधरी ने 'राजस्थान सेवा संघ' के अन्तर्गत बिजौलिया में कार्य किया और 1930 ई. में स्वाधीनता आंदोलन में शामिल हो गए।
- 1930 ई. से 1947 ई. तक राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेने के कारण अनेक बार जेल गए। दुर्गा प्रसाद चौधरी ने एक पत्रकार के रूप में अपनी पहचान बनाई। इन्होंने अजमेर और जयपुर से प्रकाशित **'दैनिक नवज्योति'** का लंबे समय तक सम्पादन किया।

हरिदेव जोशी

- तीन बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे हरिदेव ने **'दैनिक नवयुग'** व **'कांग्रेस संदेश'** नामक पत्रिकाओं का संपादन किया तथा डूँगरपुर के आदिवासियों को राष्ट्रीय आन्दोलन के लिए जागृत किया।

कृपालसिंह शेखावत

- 'शिल्पगुरु' कृपालसिंह शेखावत का जन्म सीकर जिले के मऊ ग्राम में 1922 ई. में हुआ। इन्होंने **'ब्लू पॉटरी'** पर चित्रांकनों के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय पहचान बनाई। 1974 ई. में इन्हें **'पद्मश्री'** से भी सम्मानित किया गया।

जयनारायण व्यास

- जयनारायण व्यास का जन्म 18 फरवरी, 1899 को जोधपुर में हुआ। यह प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने **सामन्तशाही के विरुद्ध आवाज** उठाई।
- इन्हें **'राजस्थान का लोकनायक'**, **शेर-ए-राजस्थान**, **लक्कड़ और फक्कड़** एवं **धुन के धनी'** आदि नामों से जाना जाता है।
- इन्होंने 'मारवाड़ हितकारिणी सभा' की स्थापना की। प्रजामण्डल आन्दोलन के दौरान इन्हें **सिवाणा दुर्ग** (बाड़मेर) में नज़रबंद किया गया।
- राजस्थानी भाषा के प्रथम राजनीतिक समाचार-पत्र **'आगीबाण'** का प्रकाशन इन्होंने ब्यावर से किया तथा **लोकराज** नामक पत्र का सम्पादन किया। 1927 में **'तरूण राजस्थान'** के प्रधान संपादक बने। इन्होंने ही 1936 में बम्बई से **'अखण्ड भारत'** नामक दैनिक समाचार पत्र का सम्पादन किया। अपने जीवन के **अंतिम वर्षों में भी** इन्होंने दिल्ली से निकलने वाली पाक्षिक पत्रिका **'पीप'** का सम्पादन किया। 1951-52 ई. में एवं 1952-54 ई. तक दो बार राजस्थान के मुख्यमंत्री रहे। यह राजस्थान के एकमात्र मनोनीत व निर्वाचित मुख्यमंत्री थे। इन्हीं के नाम पर जोधपुर में जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय बनाया गया।

अर्जुनलाल सेठी

- राजस्थान में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी एवं क्रांतिकारी अर्जुनलाल सेठी की जन्मभूमि जयपुर थी। अर्जुनलाल सेठी ने राजस्थान में सशस्त्र क्रांति और जनजागृति का अलख जगाया। सेठी ने जयपुर में 1905 ई. में **'जैन शिक्षा प्रचारक समिति'** की स्थापना की तथा 1907 ई. में 'वर्धमान विद्यालय' की स्थापना की। 'वर्धमान छात्रावास' और 'वर्धमान पुस्तकालय' चलाए, जो क्रान्तिकारियों के प्रशिक्षण केन्द्र थे।
- तत्कालीन जयपुर के महाराजा सवाई माधोसिंह द्वितीय ने उन्हें राज्य का प्रधानमंत्री बनाने का पेशकश की थी, किन्तु राष्ट्रप्रेम के कारण उन्होंने इसे यह कहते हुए इन्कार कर दिया कि **'अर्जुनलाल नौकरी करेगा, तो अंग्रेजों को भारत से कौन निकालेगा।'**
- सेठी ने देश में भावी क्रान्ति के लिये युवकों को तैयार किया। जोरावर सिंह, प्रतापसिंह, माणिकचन्द्र, मोतीचन्द, विष्णुदत्त आदि क्रान्तिकारी इन्हीं के विद्यालय से जुड़े थे। सेठी हार्डिंग बम काण्ड, आरा हत्याकाण्ड, काकोरी कार्रवाई से सम्बद्ध थे।
- अजमेर में रहते हुए 'शूद्र मुक्ति', 'स्त्री मुक्ति', 'महेन्द्र कुमार' आदि पुस्तकें लिखी। इन्होंने हिन्दू-मुस्लिम एकता स्थापित करने का प्रयास किया। 1915 में निमाज महंत हत्याकाण्ड में शामिल होने के आरोप में इन्हें 5 वर्ष के लिए वेल्लूर जेल भेजा गया।

जमनालाल बजाज

- स्वतंत्रता सेनानी बजाज का जन्म **4 नवम्बर, 1889** को काशी का बास (सीकर) में हुआ। इन्हें **गुलाम नं. 4, गाँधीजी का पाँचवां पुत्र, राजस्थान का भामाशाह** आदि नामों से जाना जाता है।
- 1920 ई. में इन्हें भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का कोषाध्यक्ष बनाया गया और ये आजीवन इस पद पर रहे। 1921 ई. में इन्होंने वर्धा में **'सत्याग्रह आश्रम'** की स्थापना की।
- इन्होंने 1927 में जयपुर में **'चरखा संघ'** की स्थापना की। प्रथम विश्वयुद्ध में अंग्रेजों की मदद करने के कारण इन्हें **'राय बहादुर'** की उपाधि दी गई, जिसे उन्होंने असहयोग आन्दोलन के तहत वापस लौटा दिया। जमनालाल बजाज हिन्दी भाषा के प्रबल समर्थक थे, उन्होंने हिन्दी भाषा को **'ईमान की भाषा'** कहा। उन्होंने **गो सेवा संघ, गाँधी सेवा संघ** एवं **सस्ता साहित्य मण्डल** की स्थापना की।
- 1938 में जयपुर प्रजामण्डल के अध्यक्ष बने तथा **राजस्थान सेवा संघ** को पुनर्जीवित करने का कार्य किया।

मोहनलाल सुखाड़िया

- **'आधुनिक राजस्थान के निर्माता'** सुखाड़िया 13 नवम्बर, 1954 को राजस्थान के मुख्यमंत्री बने तथा 17 वर्ष तक शासन करके **'राजस्थान में सर्वाधिक समय तक मुख्यमंत्री'** रहने का गौरव प्राप्त किया। इन्होंने इन्दुबाला के साथ अंतर्जातीय विवाह करके मेवाड़ के सामाजिक जीवन में क्रांति लाई। राजस्थान के मुख्यमंत्रित्व के पश्चात् वे तीन राज्यों (कर्नाटक, आन्ध्रप्रदेश व तमिलनाडु) के राज्यपाल रहे।

स्वामी केशवानन्द

- शिक्षा संत के रूप में प्रसिद्ध स्वामी केशवानन्द का जन्म **सीकर** जिले के **मंगलूणा गाँव** में **1883** ई. में चौधरी ठाकरसी के घर हुआ। इनके बचपन का नाम **'बीरमा'** था।
- इन्होंने 1921 ई. से 1931 ई. तक स्वाधीनता आन्दोलन में भाग लिया

1 राजस्थान में स्थापत्य कला

❖ अपनी स्थिति, स्थापत्य व उपयोगिता के आधार पर दुर्गों को कई प्रकारों में वर्गीकृत किया जा सकता है। दुर्गों के कुछ महत्त्वपूर्ण प्रकार निम्नलिखित हैं—
 - ✧ **औदुक दुर्ग अर्थात् जल दुर्ग** ऐसे दुर्ग को कहते हैं जो विशाल जल राशि से घिरा हुआ हो, जैसे—गागरोण दुर्ग।
 - ✧ **गिरि (पर्वत) दुर्ग** किसी ऊँचे पर्वत पर स्थित होता है। राजस्थान के अधिकांश दुर्ग इसी श्रेणी में आते हैं।
 - ✧ मरुभूमि में बना हुआ दुर्ग **धान्वन दुर्ग** कहलाता है, जैसे—**जैसलमेर का दुर्ग**।
 - ✧ सघन बीहड़ वन में बना हुआ दुर्ग **वन दुर्ग** कहलाता है, जैसे—**सिवाना का दुर्ग**।
 - ✧ **एरण दुर्ग** वे दुर्ग हैं जिनके मार्ग खाई, कांटों व पत्थरों से दुर्गम हों, जैसे—**चित्तौड़** व **जालौर के दुर्ग**।
 - ✧ **पारिख दुर्ग** अर्थात् जिसके चारों ओर बहुत बड़ी खाई हो। जैसे-भरतपुर दुर्ग, बीकानेर का जूनागढ़। ग्रेड-
 - ✧ जिन दुर्गों के चारों ओर बड़ी-बड़ी दीवारों का परकोटा हो वे **पारिध दुर्ग** कहलाते हैं, जैसे—**चित्तौड़, जैसलमेर**।
 - ✧ **सैन्य दुर्ग** वह हैं जिसमें युद्ध की व्यूह-रचना में चतुर सैनिक रहते हों।
 - ✧ **सहाय दुर्ग** में शूरवीर एवं सदा अनुकूल रहने वाले बांधव लोग निवास करते हैं।

दुर्ग/किले

दुर्ग का नाम	विशेषताएँ
चित्तौड़ का किला (चित्रकूट दुर्ग, **'राजस्थान का गौरव'**, राज. का द.पू. प्रवेश द्वार, **प्राचीन किलों का सिरमौर**)—चित्तौड़गढ़	सात प्रवेश द्वारों (पोळ) वाले इस दुर्ग का निर्माण मौर्य शासक चित्रांगद मौर्य ने करवाया था। इस दुर्ग में **तीन साके हुए—1303 ई.** (अलाउद्दीन खिलजी व राणा रतन सिंह के मध्य युद्ध), **1534 ई.** (बहादुर शाह व महाराणा विक्रमादित्य के मध्य युद्ध) तथा **1567 ई.** (अकबर व उदयसिंह के मध्य युद्ध)। यहाँ के प्रमुख दर्शनीय स्थल राणा कुम्भा का महल, रानी पद्मिनी महल, फतह प्रकाश महल, संग्रहालय, विजय स्तम्भ, कुम्भा स्वामी मंदिर, मीरा का मंदिर, तुलजा भवानी का मंदिर, जयमल व पत्ता की छतरियाँ आदि हैं।
कुम्भलगढ़ दुर्ग (कुंभलमेर, कुंभलनेर, कुंभलमेरेन, कुंभलमेरु, **'मेवाड़ की आँख'**)-कुंभलगढ़ (राजसमंद)	इस दुर्ग का निर्माण महाराणा कुंभा ने करवाया। उदयसिंह का लालन-पालन व राज्याभिषेक यहीं पर हुआ। **'कटारगढ़ महल'** इसी में स्थित है। अबुल फजल ने इस किले के बारे में लिखा कि—''**यह इतनी बुलन्दी पर बना हुआ है कि नीचे से ऊपर देखने पर सिर से पगड़ी गिर जाती है।**'' कर्नल टॉड ने इसकी तुलना एट्रुक्सन से की है। **जरगा की पहाड़ी पर स्थित** यह दुर्ग **36 किमी.** लम्बी एक दीवार से घिरा हुआ है।
जूनागढ़ दुर्ग (बीकानेर का किला)- बीकानेर	राजा रायसिंह द्वारा लाल पत्थरों से निर्मित यह चतुर्भुजाकर दुर्ग **हिन्दू व मुस्लिम कला** शैली का सुंदर समन्वय है। जयमल व पत्ता की गजारूढ़ मूर्तियाँ इस किले के दरवाजे पर स्थित हैं।
रणथम्भौर दुर्ग (रणतभँवर का किला)- (सवाई-माधोपुर)	इसका निर्माण **रणथम्मनदेव** (994 ई.) के द्वारा करवाया गया था। सात पर्वत शृंखलाओं से घिरा यह विशाल दुर्ग, दूर से देखने पर दिखाई नहीं देता। इसलिए अबुल फजल ने कहा था—''**अन्य सब दुर्ग नंगे हैं जबकि यह दुर्ग बख्तरबंद है।**''
लोहागढ़ दुर्ग (अजेय दुर्ग, मिट्टी का किला)- भरतपुर	इस दुर्ग का निर्माण **महाराजा सूरजमल** (1733 ई.) करवाया था जिसे न अंग्रेज जीत सके न मुस्लिम इसीलिए यह **अजेय दुर्ग** कहलाता है। **लॉर्ड लेक** ने नींव में बारूद भरकर इसे उड़ाने का असफल प्रयास किया। इसके प्रवेश द्वार पर **अष्ट धातु निर्मित मजबूत दरवाजा है।** जवाहर बुर्ज व फतेह बुर्ज इस दुर्ग के विशेष आकर्षण हैं। **जवाहर बुर्ज** पर जाट राजाओं का राज्याभिषेककिया जाता था।
नाहरगढ़ दुर्ग (सुदर्शनगढ़)-जयपुर	मराठों के विरुद्ध सुरक्षा हेतु **सवाई जयसिंह** ने इस दुर्ग का निर्माण करवाया (1734ई.)। लोक देवता नाहर सिंह भोमिया के नाम पर इसका नामकरण नाहरगढ़ किया गया। इस दुर्ग के निकट जैविक उद्यान स्थित है। **सवाई माधोसिंह द्वितीय** ने इस दुर्ग में अपनी 9 पासवान रानियों के लिए **एक जैसे नौ महल** बनवाये थे।
भटनेर दुर्ग (उत्तरी सीमा का प्रहरी, उत्तर भड़ किवाड़)-हनुमानगढ़	इसका निर्माण **भूपत भाटी** ने करवाया। तैमूर ने अपनी आत्मकथा **तुजुक-ए-तैमूरी** में लिखा है कि, ''**मैंने इतना मजबूत व सुरक्षित किला पूरे हिन्दुस्तान में नहीं देखा।**'' बीकानेर नरेश **सूरत सिंह** ने **1805 ई.** में **मंगलवार के दिन** इसे जीतकर इसका नाम हनुमानगढ़ रखा।
गागरोन दुर्ग (डोडगढ़, धूलरगढ़)- गागरोनगढ़ (झालावाड़)	**डोडिया परमारों द्वारा आहू व कालीसिंध** नदी के संगम पर इस दुर्ग का निर्माण किया गया। देवनसिंह ने 12वीं शताब्दी में जीतकर इसका नाम गागरोन दुर्ग रखा। इस दुर्ग में **हमीदुद्दीन चिश्ती** (मीठेशाह) की दरगाह स्थित है। इस दुर्ग का विशाल परकोटा **जालिम कोट** कहलाता है।

2 राजस्थान की चित्रकला

- ❖ राजस्थानी चित्रकला का विकास यहाँ की विभिन्न राजपूत रियासतों में हुआ अत: इसे '**राजपूत शैली**' भी कहा जाता है।
- ❖ राजस्थानी चित्रकला का पहला वैज्ञानिक विभाजन **1916 ई.** में **आनन्द कुमार स्वामी** द्वारा अपनी पुस्तक '**राजपूत पेंटिंग्स**' में किया गया। स्व. स्वामी के अनुसार राजपूत शैली के विषय राजपूताना, **पंजाब, हिमाचल** एवं **पहाड़ी** रियासतों से सम्बन्धित रहे हैं।
- ❖ राजस्थानी चित्रकला को आनन्द कुमार स्वामी, हैवेल, बेसिलग्रे एवं ओ.सी. गांगुली ने '**राजपूत चित्रकला**' का नाम दिया है जबकि रामकृष्णदास एवं कर्नल जेम्स टॉड ने इसे '**राजस्थानी चित्रकला**' कहा, जो कालान्तर में मान्य हो गया।
- ❖ 15वीं शताब्दी में **अपभ्रंश शैली** से स्वतंत्र राजस्थानी चित्रकला शैली का प्रादुर्भाव हुआ।

राजस्थानी चित्रशैलियाँ

I-मेवाड़ स्कूल

उदयपुर शैली

- ❖ **चित्रकार**—साहिबदीन, मनोहर, कृपाराम, उमरा।
- ❖ **विषय—गीत गोविन्द,** भागवत पुराण, शूकर क्षेत्र माहात्म्य, भ्रमरगीत सार।
- ❖ **प्रमुख रंग**—लाल और पीला।
- ❖ **वृक्ष, पशु, पक्षी**—कदम्ब, हाथी, चकोर।
- ❖ **पुरुष**—गठीला शरीर, छोटा कद, लम्बी मूँछे, पगड़ी, कमर में पटका, कान में मोती।
- ❖ **स्त्री**—मछली जैसी आँखें, लम्बी नाक, पारदर्शी ओढ़नी।
- ❖ **विशेष—महाराणा जगतसिंह** का काल इस शैली का '**स्वर्गयुग**' माना जाता है। उन्होंने उदयपुर के राजमहलों में '**चितेरों की ओवरी**' (तस्वीरां रो कारखानो) विद्यालय स्थापित करवाया।

नाथद्वारा शैली

- ❖ **चित्रकार**—नारायण, घासीराम, चतुर्भुज, उदयराम, खूबीराम।
- ❖ **विषय**—कृष्णलीला के चित्र, श्रीनाथजी के विग्रह, राधा-कृष्ण-यशोदा के चित्र।
- ❖ **प्रमुख रंग**—पीला व हरा।
- ❖ **वृक्ष, पशु, पक्षी**—केला, गाय, मोर।
- ❖ **पुरुष**—पुष्ट शरीर, तिलक।
- ❖ **स्त्री**—तिरछी चकोर सी आँखें, उरोजों का गोल उभार, मांसल शरीर, मंगल सूत्र।
- ❖ **विशेष**—नाथद्वारा **पिछवाई चित्रण** के लिए प्रसिद्ध है। मंदिर में मूर्ति के पीछे **पर्दे पर कृष्णलीला का चित्रण** करना पिछवाई कहलाता है।

देवगढ़ शैली

- ❖ **चित्रकार**—बैजनाथ, चोखा, कँवला।
- ❖ **विषय**—शिकार के दृश्य, अन्तःपुर, राजसी ठाठ-बाट, सवारियाँ।
- ❖ **विशेष**—इस शैली पर जोधपुर, जयपुर,उदयपुर तीनों शैलियों का प्रभाव है।

चावण्ड शैली

- ❖ **चित्रकार—नसीरुद्दीन** (निसरदी)।
- ❖ **विषय**—प्रताप के शासनकाल में शुरू और अमरसिंह के समय नसीरुद्दीन ने 'रागमाला' ग्रंथ चित्रित किया।
- ❖ **विशेष**—आकाश को सर्पाकार व लहरियादार तरंगित बादलों के रूप में प्रदर्शित किया है।

शाहपुरा उपशैली

- ❖ शाहपुरा उपशैली की प्रमुख विशेषताएँ **लोक जीवन** एवं **फड़-चित्रण** रही है। इस उपशैली के कुछ चित्र जयपुर स्थित '**रामचरण संग्रहालय**' में सुरक्षित हैं।
- ❖ शाहपुरा उपशैली के फड़ चित्रांकन का कार्य यहाँ के जोशी परिवार द्वारा किया जा रहा है। श्री दुर्गालाल, श्रीलाल एवं शांतिलाल प्रमुख फड़ चित्रकार हैं। इस शैली के चित्रों में राजा उम्मेद सिंह का 1778 ई. में चित्रित जाति चित्र तथा 1712 में चित्रित रागमाला सैट प्रमुख हैं।

II-मारवाड़ स्कूल

जोधपुर शैली

- ❖ **चित्रकार**—नारायण दास, शिवदास, अमरदास, किशनदास, देवीदास भाटी, वीरजी, रतनजी भाटी।
- ❖ **विषय—ढोला मारू,** वेलि क्रिसण रुकमणि री, नाथ चरित्र, सूरसागर, रागमाला सैट, पंचतंत्र, कामसूत्र।
- ❖ **प्रधान रंग**—पीला।
- ❖ **वृक्ष, पशु, पक्षी**—आम, ऊँट, घोड़ा, चील, कौआ।
- ❖ **नारी आकृति**—बादाम सी आँखें, लम्बे बाल, लम्बी अँगुलियाँ, लाल-पीले फूँदने वाला लहंगा, गठीला बदन।
- ❖ **पुरुष आकृति**—लम्बा कद, घनी दाढ़ी-मूँछे, पगड़ी, कलंगी, मोतियों की माला, ढाल-तलवार।
- ❖ **विशेष**—जोधपुर शैली का उद्भव राव मालदेव के काल में हुआ।
  - ✧ जसवंत सिंह का काल इस शैली का '**स्वर्णकाल**' था

किशनगढ़ शैली

- ❖ **चित्रकार—मोरध्वज निहालचंद,** अमरचंद, मूलराज, धन्ना, अमीरचन्द, भंवरलाल, सूरध्वज, लाड़लीदास।
- ❖ **विषय—बणी-ठणी,** राधा-कृष्ण, गीतगोविन्द, कृष्णलीला, आखेट
- ❖ **प्रधान रंग**—श्वेत व गुलाबी।
- ❖ **वृक्ष, पशु, पक्षी**—केला, भ्रमर, मोर।
- ❖ **नारी आकृति—सुराहीदार लम्बी गर्दन, नुकीली नाक,** पतली कमर, **कमल व खंजन सी आँखें,** चमेली की पंखुड़ियों जैसे होंठ, चापाकार भौहे, लम्बा चेहरा, लम्बा कद।
- ❖ **पुरुष आकृति**—उन्नत ललाट, पेचबंधी पगड़ी, कमर में दुपट्टा।
- ❖ **विशेष**—राजा सावंतसिंह (नागरीदास) का काल **किशनगढ़ शैली का**

3 लोक संगीत, वाद्य यंत्र, नृत्य, नाटक

लोक संगीत

शास्त्रीय संगीत के विकास में विभिन्न रियासतों का योगदान

- ❖ महाराजा मानसिंह (आमेर) के **भाई माधवसिंह** ने **पुण्डरीक विट्ठल** को दरबार में आश्रय दिया। माधवसिंह के प्रोत्साहन से पुण्डरीक विट्ठल ने **'रसमंजरी' व 'रागमाला'** ग्रंथों की रचना की।
- ❖ **मिर्जा राजा जयसिंह** ने अपने शासनकाल में **'हस्तकार रत्नावली'** संगीत ग्रंथ लिखवाकर लोक संगीत के अध्ययन को प्रेरित किया।
- ❖ **सवाई प्रतापसिंह** विद्वान व विद्वानों के आश्रयदाता थे जो स्वयं **'बृजनिधि'** उपनाम से काव्य रचना करते थे। इन्होंने संगीतज्ञों व विद्वानों को दरबार में स्थान दिया जिसे **'गंधर्व बाईसी'** कहा जाता था। इन्होंने दरबारी संगीतज्ञ **देवर्षि ब्रजपाल भट्ट** के सहयोग से विशाल संगीत सम्मेलन का आयोजन करवाकर **'राधागोविन्द संगीतसार'** नामक प्रसिद्ध संगीत ग्रंथ की रचना करवाई।
- ❖ प्रतापसिंह के दरबारी व संगीत **गुरु उस्ताद चाँद खाँ** ने **'स्वर सागर'**, **भट्ट द्वारकानाथ** ने **'राग चन्द्रिका'** एवं **देवर्षि ब्रजपाल भट्ट** ने **'संगीत सार'** नामक ग्रंथ लिखे। प्रतापसिंह के दरबार में काव्य गुरु **गणपत भारती** थे जिन्होंने **'संगीतसागर'** ग्रन्थ की रचना की।
- ❖ **सवाई रामसिंह** ने अपने दरबार में **रजबअली** (बीनकार), **मुहम्मद अली** 'कोठी वाले', **अमृत सेन** (सितार वादक) **अमीर खाँ** (सितारवादक), **मुबाकर अली, घग्घे खुदाबख्श, बहराम खाँ अमीर सख्श, आलम हुसैन, मुन्नव खाँ** आदि प्रसिद्ध संगीतज्ञों को स्थान देकर संगीत को प्रोत्साहित किया।
- ❖ टोंक रियासत के **नवाब इब्राहीम खाँ** के शासनकाल के प्रसिद्ध संगीतज्ञों में अल्लाबख्श, फैयाज खान, सफदर हुसैन, फिदा हुसैन, फतेह अली और अली बख्श, मियाँ काले खाँ प्रमुख थे।
- ❖ **महाराणा कुम्भा** स्वयं संगीतज्ञ व विद्वानों के आश्रयदाता थे। महाराणा कुम्भा ने **संगीताराज, रसिक प्रिया, सुड़ प्रबंध, संगीत मीमांसा, संगीत सुधा, संगीत रत्नाकार टीका** आदि संगीत ग्रंथों की रचना की। कुम्भा ने दरबार में **सारंग व्यास** (संगीत गुरु), **कान्हा व्यास** (एकलिंग महात्मय के रचयिता) जैसे संगीतज्ञों को स्थान दिया।
- ❖ बीकानेर के **महाराजा अनूपसिंह** (1669-1695 ई.) ने श्रेष्ठ संगीतज्ञों और संगीत शास्त्रकारों को आश्रय प्रदान किया जिसमें **पण्डित भावभट्ट** प्रमुख थे जिन्होंने **अनूप संगीत विलास, अनूप संगीत रत्नाकर, अनूपाकुश, अनूप रागमाला, अनूप रागसागर** इत्यादि संगीत ग्रंथों की रचना की। अनूपसिंह ने स्वयं **संगीतानुराग, संगीत-विनोद** नामक संगीत ग्रंथों की रचना की।

राजस्थान में विकसित संगीत घराने

- ❖ **ध्रुपद गायकी** का प्रारम्भ **राजा मानसिंह तोमर** के काल में हुआ तथा **अकबर** के समय इसकी चार वाणियों का विकास हुआ जो निम्न हैं—
  - (1) **गौहरहारी वाणी**—उत्पत्ति **ग्वालियर** से तथा इसका प्रवर्तक **तानसेन** को माना जाता है।
  - (2) **नौहारवाणी**—प्रवर्तक **श्रीचंद नौहार**।
  - (3) **खण्डारवाणी**—**खण्डार** (उणियारा) के शासक **सम्मोखन सिंह** के द्वारा विकसित।
  - (4) **डागुरवाणी**—प्रवर्तक **ब्रजनंद डागर** लेकिन सवाई रामसिंह के दरबारी **बहराम खाँ** द्वारा विकसित।

गायन-वादन के प्रमुख घराने

	घराने का नाम	प्रवर्तक	विशेष विवरण
1.	**दिल्ली घराना**	सदारंग खाँ	✧ ख्याल गायकी का घराना
2.	**जयपुर घराना**	मनरंग खाँ (सदारंग का पुत्र)	✧ ख्याल गायकी का प्रसिद्ध घराना ✧ **प्रसिद्ध गायक**-मुहम्मद अली कोठी वाले ✧ इस घराने के गायकी की बंदिशों को **पण्डित विष्णु नारायण भातखण्डे** ने **'क्रमिक पुस्तक मालिका'** में संग्रहित किया।
3.	**पटियाला घराना**	फतहअली व अली बख्श	✧ अली बंधुओं ने अपने पिता व रामसिंह के दरबारी **मियाँ कालू खाँ,** गायिका गोकी ✧ बाई व तानरस खाँ (दिल्ली) से शिक्षा ग्रहण की तथा **टोंक** में रहने के बाद पटियाला चले गए, अत: इसे **'जयपुर घराने का उपघराना'** कहते हैं।
4.	**मेवाती घराना**	घग्घे नजीर खाँ	✧ नजीर खाँ जोधपुर महाराजा जसवंतसिंह के दरबारी गायक थे। ✧ **प्रसिद्ध गायक**—पं. मणीराम, प. प्रताप, **प. जसराज,** पूरणचंद।
5.	**अल्लादिया खाँ घराना**	अल्लादिया खाँ	✧ **प्रसिद्ध गायिका**—किशोरी अमोणकर।
6.	**अतरौली घराना**	साहब खाँ	✧ ध्रुपद की खण्डारवाणी शैली से सम्बन्धित घराना।
7.	**बीनकार घराना** (जयपुर)	रज्जब अली	✧ श्री रज्जब अली जयपुर महाराजा सवाई रामसिंह के दरबारी थे।

4 प्रमुख संत-सम्प्रदाय लोक देवता एवं लोक देवियाँ

लोक संत

निर्गुण भक्ति धारा

संत व सम्प्रदाय	विशेष विवरण
संत पीपाजी	❖ गागरोणगढ़ (झालावाड़) के राजा **कड़ावा राव खींची** के यहाँ **1425 ई.** में जन्मे पीपाजी के बचपन का नाम **राजकुमार प्रतापसिंह (प्रतापराव)** था। ये राजस्थान में **भक्ति आन्दोलन की शुरुआत** करने वाले प्रथम संत थे। इनके **गुरु रामानन्द** थे। इन्होंने **मोक्ष का साधन भक्ति को माना** है। **समदड़ी (बालोतरा)** में इनका विशाल मंदिर है। ये दर्जी समुदाय के आराध्य देवता हैं। **टोडा रायसिंह (टोंक)** में इन्होंने तपस्या की, यह स्थान **संत पीपाजी की गुफा** के नाम से प्रसिद्ध है।
संत धन्नाजी	❖ टोंक जिले के **धुवन गाँव** में **1415 ई.** में जाट परिवार में जन्मे संत धन्ना बनारस जाकर **रामानंद** के शिष्य बन गये। इनके अनुयायी 'धन्ना पंथी' कहलाये। गुरु अर्जुनदेव द्वारा सम्पादित **"आदि ग्रंथ"** में **संत धन्ना** द्वारा रचित चार पद संगृहीत हैं।
परनामी (प्रणामी) सम्प्रदाय (प्राणनाथजी)	❖ **जामनगर (गुजरात)** में जन्में प्राणनाथजी ने **गुरु निजानंद** से दीक्षा लेकर **परनामी सम्प्रदाय** की स्थापना की। ❖ इनके उपदेश **'कुजलम स्वरूप'** में संगृहीत हैं। ये **कृष्ण के निर्गुण स्वरूप** को मानते थे। ❖ परनामी सम्प्रदाय की **प्रधान पीठ पन्ना** (मध्यप्रदेश) में स्थित है। **जयपुर** में इस सम्प्रदाय का विशाल मंदिर (परनामी मंदिर) है।
गूदड़ सम्प्रदाय (संतदासजी)	❖ इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ **दांतला गाँव (भीलवाड़ा)** में है। ❖ संतदासजी **गूदड़ी के बने हुए कपड़े** पहनते थे, इसलिए इनका सम्प्रदाय **'गूदड़ सम्प्रदाय'** कहलाया।
अलखिया सम्प्रदाय (स्वामी लालगिरी)	❖ चूरू जिले के **सुलखिया** गाँव में जन्मे लालगिरी ने **अलख (अलखिया) सम्प्रदाय** का प्रवर्तन किया। इनकी समाधि **गलता (जयपुर)** में है। इस सम्प्रदाय की **प्रधान पीठ बीकानेर** में है। **'अलख स्तुति प्रकाश'** इस सम्प्रदाय का प्रमुख ग्रंथ है।
लालदासी सम्प्रदाय (संत लालदासजी)	❖ लालदासजी का जन्म **धौली दूव गाँव** (अलवर) में मेव परिवार में हुआ। इनके गुरु **गद्दन चिश्ती** थे। ❖ **नगला गाँव (भरतपुर)** में इस सम्प्रदाय की प्रधान पीठ स्थित है।
निरंजनी सम्प्रदाय (संत हरिदास जी)	❖ **कापड़ोद गाँव** (डीडवाना-कुचामन) में जन्मे हरिदासजी **डकैती** का कार्य छोड़कर संन्यासी बन गये। ❖ निरंजनी सम्प्रदाय की **प्रधान पीठ गाढ़ा (डीडवाना)** में स्थित है।
विश्नोई सम्प्रदाय (संत जाम्भोजी)	❖ जाम्भोजी महाराज (जंभेश्वर जी) का जन्म 1451 ई. में **पीपासर (नागौर)** में हुआ। इनके पिता का नाम **लोहटजी पँवार** राजपूत और माता का नाम **हँसादेवी** था। संत जम्भेश्वर का मूल नाम **धनराज** था। इन्होंने 1485 ई. में **समराथल धोरा** (मुकाम तालवा, बीकानेर) में **विश्नोई सम्प्रदाय** की स्थापना की। इन्होंने **29 नियम** (बीस + नौ) बनाये। ❖ **जम्भसंहिता, जम्भसागर शब्दवाणी** और **विश्नोई धर्म प्रकाश** जाम्भोजी द्वारा रचित प्रमुख ग्रंथ हैं। पर्यावरण प्रेम के कारण जाम्भोजी को **पर्यावरण वैज्ञानिक** माना जाता है। इनके अनुयायी हरे पेड़ नहीं काटते हैं। जाम्भोजी ने **1534 ई.** में बीकानेर जिले की **नोखा तहसील के मुकाम तालवा गाँव** में समाधि ले ली। विश्नोई सम्प्रदाय की प्रधान पीठ और मुख्य तीर्थ यहीं पर स्थित है। इस सम्प्रदाय के अन्य तीर्थ **पीपासर** (नागौर), **रामड़ावास** (जोधपुर) **जाम्भा** (फलौदी) व **लालासर** (बीकानेर) है।
दादू पंथ (संत दादूदयाल)	❖ दादूदयाल का जन्म 1544 ई. में अहमदाबाद में हुआ। कबीर के शिष्य **वृद्धानन्द** इनके गुरु थे। संत दादू को **राजस्थान का कबीर** कहा जाता है। दादूपंथ में **खालसा, विरक्त, उत्तरादे, खाकी** और **नागा** प्रमुख शाखाएँ हैं। ❖ दादूपंथ की प्रधान पीठ **जयपुर** जिले की सांभर तहसील के **नरैना (नरायणा) गाँव** में है। दादूजी ने **नरैना** में **भैराणा पहाड़ी** पर समाधि ली, जिसे **'दादूखोल'** कहते हैं। दादू पंथ के सत्संग स्थल **'अलख दरीबा'** कहलाते हैं। 1585 ई. में अकबर द्वारा धार्मिक विचार विमर्श के लिए आमंत्रित करने पर दादूदयाल ने **फतेहपुर सीकरी में अकबर से भेंट की।** ❖ **संत रज्जब**—सांगानेर में जन्मे दादू के शिष्य जो **आजीवन दूल्हे के वेश** में रहे। रज्जबपंथियों की मुख्य गद्दी **सांगानेर** में है। ❖ **संत सुन्दरदास**—दौसा में जन्मे दादू के प्रमुख शिष्य जिन्होंने दादूपंथ में **नागा साधु** वर्ग प्रारम्भ किया। ❖ **संत गरीबदास**—दादूदयाल के बाद गद्दीपति बने गरीबदास जी दादूदयालजी के पुत्र थे।

5 सामाजिक जीवन : वेशभूषा, आभूषण, मेले, त्यौहार, रीति-रिवाज और परम्पराएँ

वेशभूषा

- वेश-भूषा किसी भी समाज के जीवन आधारों, परम्पराओं, रीति-रिवाज, भौगोलिक दशा इत्यादि पर आधारित होती है। राजस्थान की वेश-भूषा प्राचीनता और विविधता की झलक लिए हुए है इसलिए तो कहा जाता है रंगीलो राजस्थान।

पुरुषों की वेशभूषा

- **पगड़ी**—पगड़ी सिर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र है। **यह आन व बान की प्रतीक** भी होती है। बड़ों के सामने बिना पगड़ी धारण किए जाना अशोभनीय माना जाता है। पगड़ी को अलग-अलग क्षेत्रों में अलग-अलग नाम से जानते हैं, जैसे—पाग, पोत्या, फैंटा, साफा आदि **पगड़ी** विशेषत: मेवाड़ क्षेत्र की प्रसिद्ध है।

विभिन्न सामन्तों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ियाँ

- **चूड़ावत शाही**—कपड़े की इमली तीन पासों तथा सिर पर जरी वाली पगड़ी जो **सलूम्बर ठिकाने** (मेवाड़) में प्रचलित थी।
- **जसवन्तशाही**—**देवगढ़** (प्रतापगढ़) के सामन्तों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ी।
- **मांडपशाही पगड़ी**—**कानोड़** (उदयपुर) में पहनी जाने वाली पगड़ी।
- **राठौड़ी पगड़ी**—**बदनोर** (ब्यावर) जागीर में बाँधी जाने वाली पगड़ी।
- **मानशाही पगड़ी**—**भैंसरोड़गढ़** (चित्तौड़गढ़) की पगड़ी।
- **हमीर शाही**—**बनेड़ा** (शाहपुरा) की पगड़ी।

मेवाड़ रियासत में प्रचलित पगड़ियाँ

	पगड़ी का प्रकार	सम्बन्धित शासक
1.	उदय शाही	महाराणा उदयसिंह, महाराणा अमर सिंह द्वितीय।
2.	अमर शाही	महाराणा अमर सिंह द्वितीय।
3.	अरसी शाही	अमर सिंह
4.	भीमशाही	महाराणा भीमसिंह
5.	स्वरूपशाही	महाराणा स्वरूपसिंह

- **अंगरखी**—शरीर के ऊपरी भाग में कमर या घुटनों तक पहना जाने वाला वस्त्र जो कई प्रकार का होता है—सूती, रेशमी, ऊनी आदि।
- **चुगा या चोगा**—अंगरखी के ऊपर पहने जाने वाला वस्त्र जो रेशम या ऊन का बना होता है।
- **धोती (धोवती)**—कमर के नीचे पहना जाने वाला वस्त्र धोती या धोवती कहलाता है।
- **आतम सुख**—कंधों से पैरों तक डाला जाने वाला कपड़ा आतम सुख कहलाता है।
- **जामा**—ये कंधे से पहले घुटनों तक पहना जाता था, बाद में पैरों तक पहनने का रिवाज़ बढ़ा, ये उत्सव में पहना जाता था।
- **पटका**—जामा या अंगरखी के ऊपर कमर पर बाँधा जाने वाला वस्त्र पटका कहलाता है।
- **पायजामा**—अंगरखी, चुगा और जामे के नीचे कमर व पैरों में पहना जाने वाला वस्त्र पायजामा कहलाता है। यह चूड़ीदार से ढीला होता है तथा सादा कपड़े का लाइनदार, चमकीला या गहरे रंग के प्रिंट का छपा हुआ होता है।
- **घूघी**—ऊन का बना वस्त्र जो सर्दी या वर्षा से बचाव हेतु ओढ़ा जाता है।
- **बिरजस/ब्रीचेस**—चूड़ीदार पायजामे के स्थान पर काम में लिया जाने वाला वस्त्र बिरजस कहलाता है। जो पैरों से घुटने तक टाईट होता है तथा घुटनों से कमर तक घेरदार चौड़ा होता है। यह मुख्यतः मारवाड़ एवं मेवाड़ में राजपूत लोगों द्वारा पहना जाता है।
- **पछेवड़ा**—सर्दी से बचाव हेतु रेजे का बना चद्दरनुमा शरीर के ऊपर डाला जाने वाला वस्त्र।
- **अंगरखा**—आदिवासी पुरुषों द्वारा बदन पर काले रंग का अंग वस्त्र पहना जाता है, जिस पर सफेद धागे से कढ़ाई की जाती है।
- **अंगोछा**—यह पुरुषों का वस्त्र है, जिसे सिर पर बाँधते हैं। इस पर मिट्टी जैसे लाल या सफेद रंग के बेल-बूटे छपे होते हैं तथा किनारे व पल्ले पर कंगूरा छपा होता है। इसमें केरी भांत का अंगोछा बहुत लोकप्रिय है।
- **पंछा**—यह सहरिया आदिवासी पुरुषों की धोती है। इनका साफा **'खपटा'** तथा अंगरखी **'सलूका'** कहलाती है।
- **ढेपाड़ा**—यह भील जनजाति के पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली तंग धोती है। इनके द्वारा कमर पर बाँधने वाली लंगोटी को **'खोयतू'** एवं पगड़ी के स्थान पर बाँधा जाने वाला मोटा वस्त्र **'पोतिया'** कहलाता है।

स्त्रियों के परिधान

- **ओढ़नी (ओढ़णा/ओरणा)**—राजस्थान में ओढ़नी के निम्न प्रकार हैं—
  - **पोमचा**—पीली व गुलाबी जमीन वाली विशेष ओढ़नी जो बालक जन्म के बाद भेजी जाती है पोमचा कहलाता है।
  - **लहरिया**—सावन के महीने में या तीज त्योहार पर राजस्थानी महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाने वाली पाँच रंग व अन्य हरे रंग की ओढ़नी लहरिया कहलाती है।
  - **चुनरी भात**—ओढ़नी साधारणतया ग्रामीण महिलाओं द्वारा ओढ़ी जाती है।
  - **मोठड़ा**—एक-दूसरे को आपस में काटती हुई धारियों वाली ओढ़नी को 'मोठड़ा' कहते हैं।
- **कुर्ती एवं काँचली**—स्त्रियों द्वारा शरीर के ऊपरी हिस्से में पहना जाने वाला वस्त्र **कुर्ती** बिना बाँह की होती हैं, जबकि काँचली बाँह वाली होती है, काँचली को **कब्जा** भी कहा जाता है।
- **घाघरा**—कमर के नीचे एड़ी तक पहना जाने वाला घेरदार वस्त्र घाघरा कहलाता है, जो कई कलियों को जोड़कर बनाया जाता है।
- **साड़ी**—कुर्ती, काँचली तथा घाघरे के ऊपर शरीर पर पहना जाने वाला

6 राजस्थानी साहित्य

- ❖ राजस्थानी भाषा के साहित्य का व्यवस्थित प्रारम्भ **1150 ई.** से माना जाता है। राजस्थानी भाषा '**प्राचीन मरुभाषा**' का ही विकसित रूप माना जाता है। रचनाकारों/साहित्यकारों की दृष्टि से राजस्थानी साहित्य को पाँच प्रकारों में वर्गीकृत किया जाता है—

(1) चारण साहित्य

- ❖ चारण साहित्य मुख्यतः **वीर रसात्मक** है। साथ ही भक्ति रस और करुण रस भी चारण साहित्य में प्रचुरता से मिलता है। **वीर सतसई, राव जैतसी रो छंद, अचलदास खींची री वचनिका, पृथ्वीराज रासो, सूरज प्रकाश, वंश भास्कर, बाँकीदास ग्रंथावली** आदि चारण साहित्य के प्रमुख ग्रंथ हैं।
- ❖ राजस्थानी भाषा के **प्रमुख चारण साहित्यकार** शिवदास गाडण, दुरसा आढ़ा, ईसरदास बारहठ, आशानंद बारहठ, वीरभांण रतनू, करणीदान कविया, कविराजा श्यामलदास, केसरीसिंह बारहठ, सूर्यमल्ल मीसण, कविराजा मुरारिदान, कृपाराम खिड़िया, विजयदान देथा, चन्द्रप्रकाश देवल, शक्तिदान कविया, अर्जुनदेव चारण इत्यादि है।

(2) जैन साहित्य

- ❖ जैन मुनियों द्वारा लिखित राजस्थानी साहित्य जैन साहित्य कहलाता है। वज्रसेन सूरि रचित **'भरतेश्वर बाहुबलि घोर', शालिचंद्र सूरि कृत 'भरतेश्वर बाहुबलिरास'** इस कोटि के महत्त्वपूर्ण ग्रंथ हैं।
- ❖ **प्रमुख जैन साहित्यकार** उद्योतन सूरि, शालिभद्र सूरि, वज्रसेन सूरि, कवि आसिगु, विजयसेन सूरि, पल्हण, राजशेखर सूरि, जिनदत्त सूरि इत्यादि है।

(3) संत साहित्य

- ❖ संत साहित्य विश्व में सर्वाधिक समृद्ध एवं प्रभावशाली साहित्य माना जाता है। संत साहित्य का प्रमुख आधार भक्ति, अध्यात्म, नीति एवं तत्व विवेचन रहा है। संत दादूदयाल, जांभोजी, संत सुन्दरदास, ईसरदास बारहठ, साँयाजी झूला, सहजोबाई, दयाबाई, मीरां बाई इत्यादि प्रमुख **राजस्थानी संत साहित्यकार** हैं।

(4) लोक साहित्य

- ❖ जिस रचना के रचयिता का पता नहीं हो लेकिन जो लिखित अथवा अलिखित रूप से दीर्घकाल से समाज में प्रचलित हो, वह लोक साहित्य कहलाता है। **लोकगीत, लोक कथा, लोकोक्ति, लोक वार्ताएँ** तथा **लोक नाट्य** इत्यादि लोक साहित्य की विधाएँ हैं।
- ❖ तीज, त्योहार, विवाह, मेले एवं लोकनृत्यों के आयोजन के अवसर पर गाये जाने वाले अधिकांश गीत लोक साहित्य का ही हिस्सा हैं।

(5) ब्राह्मण (ब्राह्मणी) साहित्य

- ❖ पंडितों, विद्वानों एवं ब्राह्मण साहित्यकारों द्वारा रचित साहित्य 'ब्राह्मण साहित्य' कहलाता है। वैद्यक, संगीत, ज्योतिष, इतिहास, पुराण, शास्त्र टीकाएँ इत्यादि ब्राह्मण साहित्य का हिस्सा हैं। विभिन्न राजाओं द्वारा अपने राज्य में अधिकांश **शिलालेख संस्कृत भाषा में लिखवाये** गये।

पद्य साहित्य

- ❖ राजस्थानी पद्य साहित्य दूहा, सोरठा, गीत, कुण्डलियाँ झमाल, छंद, छप्पय आदि रूपों में मिलता है।

राजस्थानी साहित्य की महत्त्वपूर्ण प्रवृत्तियाँ (साहित्यिक स्वरूप)

- ❖ **रास/रासो**—जिस काव्य ग्रंथ में किसी राजा या वीर की कीर्ति, विजय, युद्ध वीरता आदि का वर्णन हो। जैसे—नेमिनाथ रास, पृथ्वीराज रासो, सगतसिंह रासो इत्यादि।
- ❖ **चर्चरी**—उत्सव या समारोह में लय एवं ताल के साथ गाई जाने वाली रचना को '**चर्चरी**' कहते हैं। प्राकृत भाषा में '**चर्चरी**' छन्द का एक प्रकार है। हिन्दी भाषा में भी यह एक छंद है।
- ❖ **परची (पर्ची)**—संतों और महात्माओं का जीवन परिचय देने वाली पद्यबद्ध रचनाएँ। प्रमुख परचियाँ - ''संत नामदेव री परची,'' ''कबीर री परची,'' ''संत रैदास री परची,'' ''संत पीपा री परची,'' ''संत दादू री परची,'' ''मीराबाई री परची''।
- ❖ **वेलि**—किसी प्रणय-गाथा (प्रेमाख्यान से विवाह तक) का साहित्यिक एवं काव्यात्मक वर्णन '**वेलि**' (विवाह) कहलाता है। जैन वेलियों में '**चिहुंगति वेलि**' सबसे प्राचीन है। चारण साहित्य की वेलियों में राठौड़ पृथ्वीराज कृत '**वेलि क्रिसण रुक्मणि री**' सबसे महत्त्वपूर्ण है। साहित्य समालोचकों ने इस वेलि को '**पंचम वेद**' की संज्ञा दी है।
- ❖ **बारहमासा**—वर्ष के बारह महीनों का प्रकृति एवं श्रृंगार वर्णन '**बारहमासा**' कहलाता है। राजस्थानी साहित्य का प्रथम बारहमासा जैन कवि पल्हण द्वारा रचित '**नेमिनाथ बारहमासा**' है।
- ❖ **धमाल**—होली के अवसर पर गाये जाने वाले छन्दबद्ध गीत '**धमाल**' कहलाते हैं।
- ❖ **मरसिया**—दिवंगत व्यक्ति की याद में बनाई गई संक्षिप्त कविता जो उसके जीवन की महत्त्वपूर्ण उपलब्धियों पर प्रकाश डालती है।
- ❖ **वचनिका**—किसी ऐतिहासिक वृत्तांत/युद्ध के नायक की तुकान्त गाथा।
- ❖ **दवावैत**—गद्य एवं पद्य का मिश्रित साहित्यिक स्वरूप।
- ❖ **ख्यात**—शासकों की गौरवगाथापूर्ण वंशावली का चित्रण 'ख्यात' कहलाती है। यह मध्यकालीन इतिहासपरक ग्रंथ है। '**मुहणौत नेणसी री ख्यात**' और '**दयालदास री ख्यात**' प्रसिद्ध है।
- ❖ **वंशावली**—इसमें भाटों द्वारा लिखित राजपूत राजवंशों की वंशावलियों का विस्तृत वर्णन होता है। '**राठौड़ा री वंशावली**' और '**राजपूतों री वंशावली**' प्रसिद्ध है।
- ❖ **वात**—राजस्थानी साहित्य में कथा या कहानी 'वात' कहलाती है। राजस्थान में पौराणिक, ऐतिहासिक, प्रेमपरक और काल्पनिक कथानकों पर वात साहित्य का विपुल भण्डार है। राजस्थानी साहित्य में **जादूदान वणसूर** एवं **विजयदान देथा** की 'वातें' प्रसिद्ध है।
- ❖ **प्रकास**—किसी राजवंश या विशेष व्यक्ति की उपलब्धियों पर प्रकाश डालने वाली रचनाएँ प्रकास कहलाती हैं। **पाबू प्रकास, उदय प्रकास** और **राजप्रकास** आदि प्रकास प्रसिद्ध हैं।
- ❖ **विगत**—लेखन की यह शैली भी इतिहासपरक ग्रंथ है। '**मारवाड़ रा परगना री विगत**' इस विधा का महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है।

1 राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ

- ❖ कर्नल जेम्स टॉड द्वारा कथित '**राजस्थान प्रदेश**' की भाषा राजस्थानी कहलाती है। राजस्थानी भाषा, आर्य भाषाओं की पालि शाखा के शौरसेनी-प्राकृत स्वरूप के '**गुर्जरी अपभ्रंश**' से विकसित हुई है। प्रारम्भ में यह गुजराती के साथ मिश्रित रही है।
- ❖ प्राचीनकाल में राजस्थान की प्रधान भाषा '**मरुभाषा**' रही है। इस भाषा में लिखित पहला ग्रंथ '**कुवलयमाला**' है, जो 835 वि. में **जालौर** के जैन साहित्यकार '**उद्योतन सूरि**' द्वारा लिखा गया था।
- ❖ इस ग्रंथ में उल्लेखित अठारह भाषाओं में '**मरुभाषा**' का भी उल्लेख हैं। इसके अलावा विभिन्न जैन ग्रंथों तथा '**राठौड़ पृथ्वीराज**' द्वारा रचित '**वेलि क्रिसण रुकमणि री**' की भाषा भी मरुभाषा रही है।
- ❖ मध्यकालीन इतिहासकार '**अबुल फजल**' ने 'आइने अकबरी' में प्रमुख भारतीय भाषाओं में '**राजस्थानी**' का उल्लेख किया है।
- ❖ राजस्थानी भाषा पर ब्रज एवं गुजराती का विशेष प्रभाव रहा है।
- ❖ आधुनिक काल में राजस्थान प्रदेश की भाषा के लिए राजस्थानी शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम **डॉ. ग्रियर्सन** ने **1912** ईस्वी में **''लिंग्वेस्टिक सर्वे ऑफ इंडिया''** नामक पुस्तक में किया।
- ❖ **राजस्थानी भाषा** का स्वतंत्र रूप से विकास **17वीं शताब्दी** के अंत तक हुआ। इसके विकास क्रम को निम्न प्रकार से बाँटा जाता है—
  - (i) **गुर्जरी अपभ्रंश**—11वीं से 13वीं शताब्दी
  - (ii) **प्राचीन राजस्थान**—13वीं से 16वीं शताब्दी
- ❖ मारवाड़ी के साहित्यिक स्वरूप को '**डिंगल**' कहा जाता है। राजस्थान साहित्य की डिंगल शैली का अधिकांश साहित्य **चारण-साहित्यकारों** ने लिखा है।
- ❖ राजस्थानी भाषा की दो लिपियाँ प्रचलित हैं—मुड़िया एवं देवनागरी। मुड़िया को **महाजनी लिपि** भी कहा जाता है, इसमें हस्तलिखित अक्षरों की बनावट मुड़ी हुई होती है।

राजस्थानी भाषा का वर्गीकरण

- ❖ **सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन का वर्गीकरण**—राजस्थानी बोलियों का सर्वप्रथम वैज्ञानिक वर्गीकरण **1907-08** ई. में सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक '**लिंग्वस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया**' के **नौवें भाग** में किया है। इस सर्वे में ग्रियर्सन ने राजस्थानी भाषा की पाँच बोलियाँ वर्णित की हैं—**पश्चिमी राजस्थानी** (मारवाड़ी), **उत्तरी-पूर्वी राजस्थानी** (अहीरवाटी एवं मेवाती), **मध्य पूर्वी राजस्थानी** (ढूँढाड़ी एवं हाड़ौती), **दक्षिण पूर्वी राजस्थानी** (मालवी एवं रांगड़ी) एवं **दक्षिणी राजस्थानी** (नीमाड़ी)।
- ❖ **डॉ. टैस्सीटोरी का वर्गीकरण**—इटली निवासी एल.पी. टैस्सीटोरी ने 1914 से 1919 तक बीकानेर में रहते हुए चारण साहित्य का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया। टैस्सीटोरी ने राजस्थान एवं मालवा की भाषाओं को दो भागों में विभाजित किया—
  - ✧ **पश्चिमी राजस्थानी**—मारवाड़ी, शेखावाटी, थटकी, थली, जालौरी, बीकानेरी, वागड़ी, खैराड़ी, सिरोही (देवड़ावटी) एवं गोड़ावाड़ी।
  - ✧ **पूर्वी राजस्थानी**—तोरावाटी, ढूँढाड़ी, काठेड़ा, हाड़ौती, नागरचोल, किशनगढ़ी, अजमेरी, राजावटी एवं मालपुरी।
- ❖ **प्रो. नरोत्तम स्वामी का वर्गीकरण**—
  - ✧ **पश्चिमी राजस्थानी** (मारवाड़ी)
  - ✧ **पूर्वी राजस्थानी** (ढूँढाड़ी)
  - ✧ **उत्तरी राजस्थानी** (मेवाती एवं अहीरी)
  - ✧ **दक्षिणी राजस्थानी** (मालवी एवं नीमाड़ी)
- ❖ **डॉ. मोतीलाल मेनारिया का विभाजन**—प्रसिद्ध भाषा समालोचक डॉ. मेनारिया ने राजस्थानी भाषा को पाँच वर्गों में बाँटा है—मारवाड़ी, ढूँढाड़ी, मालवी, मेवाती एवं वागड़ी।

राजस्थानी भाषा की बोलियाँ

बोलियाँ	क्षेत्र	विशेष विवरण
मारवाड़ी (मरुभाषा)	जोधपुर, फलौदी, जैसलमेर, बीकानेर, पाली, जालौर, सिरोही एवं शेखावाटी क्षेत्र	इसकी उत्पत्ति-गुर्जरी अपभ्रंश से मानी जाती है।
(i) **गौड़वाड़ी**	पाली एवं जालौर के उत्तरी भाग में	इसका प्रारम्भ-8वीं सदी से माना जाता है।
(ii) **देवड़ावाटी**	सिरोही जिले में	राजस्थान की सर्वाधिक समृद्ध एवं महत्वपूर्ण बोली है।
(iii) **थली**	बाड़मेर, जैसलमेर के कुछ भागों में।	सर्वाधिक क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली थली है।
(iv) **शेखावाटी**	झुंझुनूँ, सीकर, चूरू, डीडवाना-कुचामन, नागौर	जैन साहित्य एवं मीरा की अधिकांश रचनाएँ मारवाड़ी बोली में हैं।
ढूँढाड़ी	जयपुर (उत्तरी भाग के अतिरिक्त), टोंक, अजमेर मेरवाड़ा का पूर्वी भाग व किशनगढ़	इसका प्राचीनतम उल्लेख 18वीं सदी में लिखित पुस्तक '**आठ देश गुजरी**' में मिलता है। यह संत दादूयाल एवं उनके शिष्यों की साहित्यिक बोली रही है।
हाड़ौती	कोटा, बूँदी, बाराँ, झालावाड़	हाड़ौती का भाषा के रूप में सर्वप्रथम प्रयोग **केलॉग** कृत **हिन्दी व्याकरण** में **1875 ईस्वी** में हुआ। राजस्थान के राज्यकवि सूर्यमल्ल मीसण की रचनाएँ इसी बोली में हैं।

बोलियाँ	क्षेत्र	विशेष विवरण
मेवाड़ी	उदयपुर, सलूम्बर, भीलवाड़ा, चित्तौड़गढ़, राजसमंद	मारवाड़ी के बाद राजस्थान की दूसरी महत्वपूर्ण बोली है। महाराणा कुम्भा द्वारा रचित कुछ नाटकों में मेवाड़ी बोली का प्रयोग हुआ है।
मेवाती	अलवर, भरतपुर, खैरथल-तिजारा, डीग	मेवाती बोली पश्चिमी हिन्दी व राजस्थान के मध्य सेतु के रूप में है। ब्रजभाषा से प्रभावित इस भाषा में लालदासी व चरणदासी सम्प्रदाय के संतों ने साहित्यिक रचना की। **सहजो बाई** व **दयाबाई** की रचनाएँ इसी भाषा में मिलती हैं।
मालवी (i) **निमाड़ी** (ii) **रांगड़ी**	झालावाड़, प्रतापगढ़ व कोटा के कुछ मध्यप्रदेश से लगते क्षेत्रों में बोली जाती है।	मालवी में मारवाड़ी व ढूँढ़ाड़ी दोनों बोलियों का मिश्रण पाया जाता है। मालवी पर मराठी का प्रभाव दृष्टिगोचर होता है। निमाड़ी को **'दक्षिणी राजस्थानी'** भी कहते हैं। यह बोली **भीली, गुजराती** व **खानपुरी** से प्रभावित है। मालवी व मारवाड़ी की मिश्रित बोली रांगडी है।
वागड़ी	बाँसवाड़ा, डूँगरपुर जिलों में एवं उदयपुर जिले के कुछ भाग में	वागड़ी बोली पर गुजराती का प्रभाव ज्यादा है। इसकी सहायक बोली भीली है।
खैराड़ी	भीलवाड़ा जिले की शाहपुरा तहसील, टोंक एवं बूँदी के कुछ भाग में	यह मेवाड़ी, ढूँढ़ाड़ी व हाड़ौती का मिश्रित रूप है।
अहीरवाटी (राठी)	बहरोड़, कोटपूतली (कोटपूतली-बहरोड़) व मुंडावर (खैरथल-तिजारा)	यह हरियाणवी (वांगरू) व मेवाती के बीच की बोली है। हम्मीर रासो (जोधराज), अली बख्शी ख्याल, भीम विलास काव्य (शंकर राव) इसी बोली में हैं।
तोरावाटी	दक्षिणी झुंझुनूँ, सीकर, कोटपूतली-बहरोड़	
अन्य बोलियाँ (i) **काठेड़ी**	जयपुर जिले के दक्षिणी भाग में	
(ii) **नागरचाल**	पश्चिमी सवाई माधोपुर व दक्षिणी पूर्वी टोंक में	
(iii) **राजावाटी**	जयपुर के पूर्वी हिस्से में	

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. सूची-I को सूची -II से सुमेलित कीजिए—

सूची-I बोली/उपभाषा	सूची-II मुख्य रूप से इन मंडलों / क्षेत्रों में बोली जाती है।
(a) हाड़ौती	(i) जोधपुर, जैसलमेर
(b) ब्रज भाषा	(ii) सीकर, झुंझुनू
(c) मारवाड़ी	(iii) भरतपुर, करौली
(d) शेखावाटी	(iv) झालावाड़, बारां

नीचे दिए गए विकल्पों में से सर्वाधिक उपयुक्त उत्तर चुनिए:
(A) (a) - (ii), (b) - (iii), (c) - (iv), (d) (i)
(B) (a) - (iii), (b) - (ii), (c) - (iv), (d) - (i)
(C) (a) - (iv), (b) - (iii), (c) - (i), (d) - (ii)
(D) (a) - (i), (b) - (iv), (c) - (iii), (d) - (ii) **[C]**

2. कौन सी बोली, चूरू, झुंझुनू, हनुमानगढ़, सूरतगढ़ और गंगानगर क्षेत्र में बोली जाती है? (निम्न में से सबसे उपयुक्त विकल्प चुनें:)
(A) मालवी (B) मेवाड़ी (C) शेखावाटी (D) मारवाड़ी **[C]**

3. राजस्थान के कोटा, बूंदी और झालावाड़ क्षेत्र की बोली कौन सी है?
(A) वागड़ी (B) मालवी (C) हाड़ौती (D) भीली **[C]**

4. राजस्थान की भाषा के लिए 'राजस्थानी' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम किस व्यक्ति ने किया?
(A) जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (B) जॉर्ज लिंकन गेरीसन
(C) जॉर्ज विलियम (D) जॉर्ज फ्रेंकलिन **[A]**

5. अहीरवाटी बोली मुख्य रूप से राजस्थान के ______ जिले में बोली जाती है।
(A) जयपुर (B) अलवर (C) भरतपुर (D) झुंझुनूं **[B]**

6. वागड़ी बोली राजस्थान के .... क्षेत्र में बोली जाती है।
(A) दक्षिण-पूर्वी (B) दक्षिण-पश्चिमी
(C) उत्तर-पश्चिमी (D) उत्तर-पूर्वी **[B]**

7. बूँदी एवं कोटा क्षेत्र में कौनसी बोली बोली जाती है?
(A) बागड़ी (B) मेवाती (C) हाड़ौती (D) ब्रज **[C]**

8. सूची I को सूची II से सुमेलित करें—

सूची I (बोलियाँ / उप-बोलियाँ)	सूची II (ज़िला)
a. गोड़वाड़ी	I. दौसा
b. राजावाटी	II. जोधपुर
c. मालवी	III. डूंगरपुर
d. वागड़ी	IV. प्रतापगढ़

नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(A) a-II, b-I, c-III, d-IV (B) a-II, b-I, c-IV, d-III
(C) a-I, b-II, c-III, d-IV (D) a-I, b-II, c-IV, d-III **[B]**

9. निम्नलिखित में से कौनसी पूर्वी राजस्थानी बोलियाँ हैं?
a. मारवाड़ी b. हाड़ौती c. मेवाड़ी d. ढूंढाड़ी
नीचे दिए गए विकल्पों में से सबसे उपयुक्त उत्तर चुनें:
(A) b और d (B) a और c
(C) c और d (D) a और d **[A]**

10. ढटकी बोली किस भाषा से संबंधित है ?
(A) मेवाड़ी (B) ढूंढाड़ी (C) मारवाड़ी (D) हाड़ौती **[C]**

1 राजस्थान के प्रतीक चिह्न

राज्य वृक्ष : खेजड़ी

❖ राजस्थान सरकार द्वारा **31 अक्टूबर 1983** को खेजड़ी को राज्य वृक्ष घोषित किया गया। इसका वानस्पतिक नाम **प्रोसोपिस सिनेरारिया** है। राज्य में खेजड़ी का वृक्ष पश्चिमी राजस्थान में सर्वाधिक पाया जाता है।

❖ **खेजड़ी के उपनाम**—
- ✧ **शमी वृक्ष**
- ✧ राजस्थान का **गौरव**
- ✧ रेगिस्तान का **कल्पवृक्ष**
- ✧ कन्नड़ भाषा में **बन्ना/बन्नी**
- ✧ सिन्धी भाषा में **छोकड़ा**
- ✧ तमिल भाषा में **पेयमये**
- ✧ व्यापारिक नाम **कांडी**
- ✧ स्थानीय भाषा में **सीमलों**
- ✧ भारतीय मरुस्थल का सुनहरा वृक्ष
- ✧ पंजाबी/हरियाणवी भाषा में **जांटी**

❖ खेजड़ी के फूलों को **मींझर,** हरी फली को **सांगरी** तथा सूखी फली को **खोखा** तथा पत्तियों के चारे को **लूम** कहा जाता है।

❖ शेखावाटी क्षेत्र में खेजड़ी सर्वाधिक पायी जाती है। खेजड़ी के वृक्ष की **विजयदशमी (दशहरे)** के दिन पूजा की जाती है।

❖ खेजड़ी को परमार/तोमर वंश का आराध्य वृक्ष माना जाता है।

❖ गोगाजी, झुंझारजी तथा केसरिया कुंवर जी लोकदेवताओं के थान खेजड़ी वृक्ष के नीचे ही होते है।

❖ 1991 में खेजड़ी के वृक्षों को बचाने हेतु **ऑपरेशन खेजड़ा** चलाया गया।

❖ भारत सरकार द्वारा **5 जून 1988** को खेजड़ी वृक्ष पर **60 पैसे** का डाक टिकट जारी किया गया।

❖ **12 सितम्बर** को 'खेजड़ी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

❖ खेजड़ी के पेड़ों को सर्वाधिक नुकसान **सेलेस्ट्रीना कीड़े** तथा **ग्राइकोट्रमा कवक** ने पहुँचाया है।

खेजड़ली आंदोलन

❖ विश्नोई सम्प्रदाय में खेजड़ी वृक्ष को पवित्र वृक्ष माना जाता है। मारवाड़ के शासक अभयसिंह के समय सन् 1730 ई. (भाद्रपद शुक्ल दशमी) में **अमृता देवी विश्नोई** के नेतृत्व में खेजड़ी के वृक्षों को बचाने हेतु **खेजड़ली गाँव जोधपुर** (मारवाड़) में 363 **लोगों** ने बलिदान दिया था। इसे राजस्थान का **'चिपको आंदोलन'** कहा जाता है।

❖ विश्नोई सम्प्रदाय में वृक्षों को बचाने के लिए बलिदान की प्रथा को **खडाना** कहा जाता है। इसी घटना के उपलक्ष में प्रतिवर्ष **भाद्रपद शुक्ल दशमी (तेजादशमी)** को खेजड़ली गाँव में विश्व का एकमात्र **वृक्ष मेला** भरता है।

❖ **खेजड़ली स्मारक**—वृक्षों को बचाने के लिए **अमृता देवी** के बलिदान की याद में खेजड़ली (जोधपुर) में खेजड़ली स्मारक बनाया गया है।

❖ **अमृता देवी विश्नोई पुरस्कार**—वन्य जीव संरक्षण व सुरक्षा, वन सुरक्षा, वानिकी विकास तथा वन अनुसंधान हेतु 1994 में अमृता देवी स्मृति पुरस्कार चालू किया गया। प्रथम अमृता देवी वन्यजीव पुरस्कार पाली जिले के गंगाराम विश्नोई को दिया गया था। वन्य जीव संरक्षण के क्षेत्र में यह राज्य का सर्वश्रेष्ठ पुरस्कार है।

राज्य पुष्प : रोहिड़ा

❖ राजस्थान सरकार द्वारा रोहिड़ा को **31 अक्टूबर, 1983** को राज्य पुष्प घोषित किया गया। इसका वानस्पतिक नाम **टिकोमेला-अंडुलेटा** है।

❖ **रोहिड़ा के उपनाम**—
- ✧ राजस्थान की मरुशोभा
- ✧ मारवाड़ का टीक/मरुटीक (जोधपुर में)
- ✧ राजस्थान का सागवान, मरुस्थल का सागवान

❖ रोहिड़ा के फूल **मार्च-अप्रैल** माह में खिलते है, जो हीरमीच (पीला, नीला, केसरिया) रंग के होते है।

❖ यह पश्चिमी राजस्थान में अधिक मात्रा में पाया जाता है।

❖ **जरविल** नामक चूहे ने रोहिड़ा को नुकसान पहुँचाया है।

राज्य पक्षी : गोडावण

❖ राजस्थान सरकार ने गोडावण को 21 **मई** 1981 को **राज्य पक्षी** का दर्जा दिया। इसका वैज्ञानिक नाम **क्रायोटिस आर्डियोटीस नाइग्रीसेप्स** है। गोडावण का अंग्रेजी भाषा में नाम **''ग्रेट इंडियन बस्टर्ड''** है।

❖ **गोड़ावण के उपनाम**—
- ✧ सोहन चिड़िया
- ✧ हुकना
- ✧ गुधनमेर
- ✧ माल मोरड़ी (हाड़ौती क्षेत्र में)

❖ गोडावण एक शर्मिला पक्षी है जो **अफ्रीका मूल** का है।

❖ भारत सरकार द्वारा **1 नवम्बर 1980** को गोडावण पर **₹2.30** का डाक टिकट जारी किया गया था। राज्य में गोडावण तीन स्थानों पर पाया जाता है, राष्ट्रीय **मरुउद्यान** (जैसलमेर), **सोरसन** (बारां), **सोंकलिया** (अजमेर)।

❖ गोडावण का प्रिय भोजन तारामीरा व मूंगफली है। गोडावण सेवण घास के मैदान में रहता है, यह सेवण घास के मैदान में अंडा देता है।

ग्रेट इंडियन बस्टर्ड प्रोजेक्ट

❖ गोडावण के संरक्षण हेतु **5 जून 2013** को राष्ट्रीय मरु उद्यान जैसलमेर में ग्रेट इंडियन बस्टर्ड प्रोजेक्ट शुरू किया। इसके लिए सम क्षेत्र जैसलमेर में कृत्रिम प्रजनन केन्द्र बनाया गया।

❖ IUCN की रेड डाटा बुक में गोडावण को **गंभीर रूप से संकटग्रस्त** प्रजाति की श्रेणी में शामिल किया गया है तथा भारतीय वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम 1972 की अनुसूची-1 में रखा गया है।

❖ राज्य पक्षी गोडावण पर प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन 1980 में जयपुर में हुआ था। गोडावण का प्रजनन काल अक्टूबर-नवम्बर माह है, इसके प्रजनन हेतु **जोधपुर जंतुआलय** प्रसिद्ध है।

2 राजस्थान में राज्य सरकार की फ्लैगशिप योजनाएँ

❖ राजस्थान सरकार ने समाज के कमजोर वर्गों को सशक्तीकरण तथा विकास की मुख्य धारा में लाने के उद्देश्य हेतु राज्य सरकार द्वारा राज्य निधि से संचालित व केन्द्र प्रवर्तित योजनाओं/कार्यक्रमों में से निम्नलिखित **25** महत्वपूर्ण कार्यक्रमों को फ्लेगशिप कार्यक्रम घोषित किया हैं—

क्र.	योजना का नाम	योजना के प्रमुख घटक	विभाग
1.	नवीन परिवारों को NFSA से लाभान्वित करना	छूटे हुए एवं पात्र परिवारों को लाभान्वित के रूप में जोड़ना	खाद्य एवं नागरिक आपूर्ति विभाग
2.	कुसुम योजना- घटक ए, बी एवं सी	**घटक एः–** ग्रिड से जुड़े 2 मेगावाट क्षमता तक के सौर ऊर्जा संयंत्रों की स्थापना। **घटक बीः–** 7.5 एचपी क्षमता तक के स्वतंत्र सौर कृषि पंपों की स्थापना। **घटक सीः–** ग्रिड से जुड़े 7.5 एचपी क्षमता तक के मौजूदा कृषि पंपों का सौर ऊर्जा से संचालन।	ऊर्जा विभाग
3.	संशोधित वितरण क्षेत्र योजना (Revamped Distribution Sector Scheme- RDSS)	विद्युत आपूर्ति के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने के लिए किये गए विभिन्न कार्य	ऊर्जा विभाग
4.	लाडो प्रोत्साहन योजना	गरीब परिवारों की बालिकाओं के जन्म पर एक लाख रुपये का बचत बॉन्ड	महिला अधिकारिता विभाग
5.	प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना	सिंचाई प्रणाली हेतु विभिन्न घटकों जैसे तारबंदी, डिग्गी, फार्मपौण्ड, जलहोज निर्माण, ग्रीन हाउस, पाली हाउस, शेड नेट, प्लास्टिक मल्चिंग, लो-टनल एवं ड्रिप/स्प्रिंकलर की स्थापना में किसानो को अनुदान तथा भूमिहीन कृषि श्रमिकों को 5 हजार रुपये लागत तक के कृषि यंत्र एवं उपकरण।	कृषि एवं उद्यानिकी विभाग
6.	प्रधानमंत्री आयुष्मान भारत स्वास्थ्य अवसंरचना मिशन	स्वास्थ्य सुविधाओं में विस्तार एवं सुधार	चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग
7.	कर्मभूमि से मातृभूमि अभियान	जल पुनर्भरण संरचनाओं का निर्माण	भू जल विभाग
8.	स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)	गांवों को खुले में शौच मुक्त स्थिति को बनाये रखना	पंचायती राज विभाग
9.	स्वामित्व योजना	सर्वे कर परिवारों को पट्टे वितरित करना	पंचायती राज विभाग
10.	मुख्यमंत्री जल स्वावलम्बन अभियान 2.0	4 हजार 700 से अधिक गांवों में Water Harvesting Structures के 1.10 लाख कार्य करवाये जायेंगे।	पंचायती राज विभाग
11.	अटल ज्ञान केन्द्र	3 हजार से अधिक आबादी वाली पंचायत मुख्यालयों में प्रेरकों द्वारा युवाओं को रोजगारपरक प्रशिक्षण एवं e-Library की व्यवस्था।	पंचायती राज विभाग
12.	मुख्यमंत्री शिक्षित राजस्थान अभियान	नवीन शिक्षा नीति के क्रियान्वयन को गति देने तथा विद्यालयों में बेहतर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु विभिन्न गतिविधियों का क्रियान्वयन।	स्कूल शिक्षा विभाग
13.	प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना	सामान्य क्षेत्रों में 500 (जनगणना 2001) व जनजातीय और रेगिस्तानी क्षेत्रों में 250 तक की आबादी की बसावटों को हर मौसम में पहुंच हेतु सड़क/पुल निर्माण	सार्वजनिक निर्माण विभाग
14.	अटल प्रगति पथ	5,000 से अधिक आबादी वाले ग्रामीण कस्बों में सीमेंट कंक्रीट सड़क निर्माण।	सार्वजनिक निर्माण विभाग
15.	प्रधानमंत्री आवास योजना - शहरी	आर्थिक दृष्टि से कमजोर आय वर्ग व अल्प आय वर्ग के परिवारों को रियायती आवास	स्वायत्त शासन विभाग
16.	स्वच्छ भारत मिशन (शहरी)	शहरी क्षेत्रों में कचरा एवं सीवेज प्रबंधन	स्वायत्त शासन विभाग
17.	मुख्यमंत्री स्वनिधि योजना	शहरी क्षेत्रों एवं कस्बों में Street Vendors के साथ ही अन्य जरूरतमंद एवं असहाय परिवारों के उत्थान के लिए	स्वायत्त शासन विभाग

3 राजस्थान के प्रमुख अनुसंधान केन्द्र

❖ **केन्द्रीय शुष्क क्षेत्र अनुसंधान संस्थान (CAZRI)**—भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा काजरी की स्थापना **1959** में जोधपुर में की गयी। यह एक स्वायत्त संस्था के रूप में देश के शुष्क क्षेत्रों में कृषि की समस्याओं के समाधान के लिए बहु-विषयक अनुसंधान कार्य करने वाली संस्था है। काजरी के **5 क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र** निम्न है—

1. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र **पाली-मारवाड़** (राजस्थान)
2. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र **जैसलमेर** (राजस्थान)
3. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र **बीकानेर** (राजस्थान)
4. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र **कुकमा-भुज** (गुजरात)
5. क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र **लेह** (लद्दाख)

✧ 1952 में यह संस्थान मरु वनीकरण केन्द्र के रूप में शुरू हुई थी।
✧ 1957 में इसका पुनर्गठन कर ''मरुस्थलीय वनीकरण और मृदा संरक्षण स्टेशन'' के रूप में नामकरण किया गया।
✧ 1959 में इसे काजरी के नाम से पुनर्गठित किया गया।

❖ **कृषि विज्ञान केन्द्र (KVK)**—यह एक जिला स्तरीय कृषि विस्तार संस्थान है जिसकी स्थापना भारती कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा अनुसंधान तथा किसानों के बीच की खाई को पाटने के लिए की गई है। कृषि विज्ञान केन्द्र **1974** में शुरू किये गये थे तथा इनका उद्देश्य कृषि प्रौद्योगिकियों को हस्तांतरित करना, किसानों को सशक्त बनाना और टिकाऊ कृषि पद्धतियों को बढ़ावा देते हुए उत्पादकता बढ़ाना है। वर्तमान में राजस्थान में **47 कृषि विज्ञान केन्द्र** है।

❖ **शुष्क वन अनुसंधान संस्थान (AFRI)**—इसकी स्थापना भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद्, पर्यावरण वन मंत्रालय के तहत **1988** में **जोधपुर** में की गयी। AFRI का मुख्य उद्देश्य **राजस्थान, गुजरात राज्यों तथा दादर नगर हवेली** तथा **दमन व द्वीव केन्द्र शासित प्रदेश** के गर्म शुष्क एवं अर्द्धशुष्क क्षेत्रों में वैज्ञानिक अनुसंधान द्वारा वानिकी के क्षेत्र में ऐसी तकनीकें विकसित करना है जिससे वानस्पतिक क्षेत्र बढ़े तथा जैव विविधता का संरक्षण हो सकें।

❖ **केन्द्रीय कृषि फार्म-सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)**—इसकी स्थापना **15 अगस्त, 1956** में रूस की सहायता से की गयी थी। यह **एशिया का सबसे बड़ा** कृषि फार्म है।

❖ **केन्द्रीय कृषि फार्म-जैतसर (श्रीगंगानगर)**—इसकी स्थापना 1962 में कनाडा की सहायता से की गयी।

❖ **राजस्थान कृषि अनुसंधान संस्थान (RARI)**—इसका पूर्व नाम केन्द्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र दुर्गापुरा, जयपुर था। इसकी स्थापना 1943 में की गयी थी। यह श्री कर्ण नरेन्द्र कृषि विश्वविद्यालय जोबनेर (जयपुर) के अधीन संचालित है।

❖ **चौधरी चरण सिंह कृषि विपणन संस्थान-जयपुर**—इसकी स्थापना 1988 में की गयी थी।

❖ **राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान निदेशालय**—भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा **20 अक्टूबर, 1993** को **''राष्ट्रीय सरसों अनुसंधान केन्द्र''** (National Research Centre on Rapseed–Mustard; NRCRM) की स्थापना **सेवर,** भरतपुर में की गयी थी। वर्ष 2009 में इसका नाम बदलकर ''सरसों अनुसंधान निदेशालय (DRMR–Directorate of Rapseed-Mustard Research) कर दिया गया है। इसका मुख्य उद्देश्य राई-सरसों के उत्पादन और उत्पादकता में वृद्धि करना है।

❖ **राष्ट्रीय बीजीय मसाला अनुसंधान केन्द्र-तबीजी (अजमेर)**—इसकी स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा **22 अप्रैल, 2000** में की गयी थी।

❖ **केन्द्रीय शुष्क उद्यानिकी (बागवानी) संस्थान-बीछवाल (बीकानेर)**—इसकी स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR) द्वारा **1993** में की गयी थी।

❖ **राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र-जोहड़बीड़, बीकानेर**—इसकी स्थापना 5 जुलाई, 1984 को की गयी। यहाँ एक कूबड़ वाले ऊँटों के साथ ही लद्दाख की नूब्रा घाटी के ठंडे मरुस्थल में पाए जाने वाले दो कूबड़ीय ऊँटों पर भी अनुसंधान होता है।

❖ **केन्द्रीय भेड़ व ऊन अनुसंधान संस्थान अविकानगर, मालपुरा (टोंक)**—इसकी स्थापना भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् (ICAR) द्वारा **1962** में की गयी। यह संस्थान **भेड़** तथा **खरगोशों** पर अनुसंधान, प्रशिक्षण और विस्तार गतिविधियों में लगा हुआ है।

❖ **राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो का क्षेत्रीय कार्यालय-जोधपुर**—एनबीपीजीआर क्षेत्रीय स्टेशन, जोधपुर की स्थापना **1965** में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के तत्कालीन पादप पुरःस्थापन प्रभाग (Plant Introduction Division) के एक उप-केंद्र के रूप में हुई थी। उस समय इस उप-केंद्र को सौंपा गया मुख्य कार्य विदेशों से प्राप्त उष्णकटिबंधीय पौधों के आनुवंशिक संसाधनों को एक व्यवस्थित आधार पर अनुकूलित करना और शुष्क/अर्ध-शुष्क परिस्थितियों के अनुकूल स्वदेशी जननद्रव्य (germplasm) को एकत्र करना था। **1976** में एनबीपीजीआर के गठन के साथ, इस उप-केंद्र को भी निदेशक, एनबीपीजीआर, नई दिल्ली के तकनीकी और प्रशासनिक नियंत्रण के तहत एक क्षेत्रीय स्टेशन का दर्जा दिया गया।

अन्य प्रमुख अनुसंधान केन्द्र

❖ केन्द्रीय पशु प्रजनन फार्म—**सूरतगढ़ (श्रीगंगानगर)**
❖ सिरैमिक इलेक्ट्रिकल रिसर्च एंड डवलपमेंट सेंटर (CERDC)—**बीकानेर**
❖ सांस्कृतिक संस्थान, भारतीय लोक कला मण्डल—**उदयपुर**
❖ राज्य सुदूर संवेदन अनुप्रयोग केन्द्र—**जोधपुर**
❖ पश्चिमी क्षेत्रीय बकरी अनुसंधान केन्द्र—**अविकानगर (टोंक)**
❖ भेड़ व ऊन प्रशिक्षण संस्थान—**जयपुर**
❖ भेड़ प्रजनन केन्द्र—**फतेहपुर (सीकर)**
❖ शूकर प्रजनन फार्म—**अलवर**

4 राजस्थान के प्रमुख धार्मिक स्थल

अजमेर

- **ब्रह्मा मंदिर (पुष्कर):** इस ऐतिहासिक मंदिर का निर्माण 14वीं शताब्दी में हुआ था। मंदिर के गर्भगृह में ब्रह्मा जी की चतुर्मुखी प्रतिमा स्थापित है तथा मंदिर परिसर में ही सूर्य भगवान की जूते पहने हुए संगमरमर की एक विशेष मूर्ति स्थित है।
- **काचरिया मंदिर (किशनगढ़):** यहाँ श्री राधाकृष्ण की मूर्ति विराजमान है। इस मंदिर में होली के दूसरे दिन डोलोत्सव मनाने की प्राचीन परंपरा है तथा यहाँ पूजा निम्बार्क पद्धति से की जाती है।
- **आंतैड़ की छतरियाँ:** यह अजमेर में स्थित दिगंबर जैन संप्रदाय की ऐतिहासिक एवं पूजनीय छतरियाँ हैं।
- **सलेमाबाद:** यह निम्बार्क संप्रदाय (हंस संप्रदाय) की प्रधान पीठ है, जिसकी स्थापना आचार्य परशुराम द्वारा की गई थी।
- **नारेली जैन मंदिर:** जयपुर राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित इस भव्य मंदिर को 'श्री ज्ञानोदय जैन तीर्थ' भी कहा जाता है, जिसके आसपास 24 लघु देवालय (जिनालय) बने हुए हैं।
- **गुरुद्वारा सिंह सभा (पुष्कर):** पुष्कर के पूर्वी भाग में स्थित इस गुरुद्वारे का निर्माण 19वीं सदी की शुरुआत में सिख गुरुओं (गुरु नानक देव जी और गुरु गोविंद सिंह जी) की यात्रा की स्मृति में करवाया गया था।
- **रंग जी मंदिर (पुष्कर):** यह मुख्य रूप से दक्षिण भारतीय स्थापत्य शैली में निर्मित मंदिर है, जिसमें राजपूत और मुगल शैली का भी मिश्रण देखने को मिलता है। यह भगवान विष्णु के अवतार रंग जी को समर्पित है।
- **सावित्री मंदिर (पुष्कर):** रत्नागिरी पर्वत की ऊँची पहाड़ी पर स्थित यह मंदिर ब्रह्मा जी की पहली पत्नी सावित्री को समर्पित है, जहाँ श्रद्धालुओं के लिए रोपवे (Rope-way) की सुविधा भी उपलब्ध है।
- **सोनी जी की नसियां:** 19वीं सदी में निर्मित इस जैन मंदिर के मुख्य कक्ष को अपनी भव्यता के कारण 'स्वर्णनगरी' के नाम से जाना जाता है।
- **ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती की दरगाह:** ईरान से भारत आए महान सूफी संत ख्वाजा मुइनुद्दीन चिश्ती (गरीब नवाज) की यह पवित्र मजार है। यहाँ रजब माह की पहली से छठी तारीख तक सालाना उर्स मनाया जाता है।
- **श्री पंचकुण्ड शिव मंदिर (पुष्कर):** पुष्कर सरोवर से थोड़ी दूरी पर स्थित इस मंदिर का निर्माण पौराणिक मान्यताओं के अनुसार पांडवों द्वारा करवाया गया था।
- **वराह मंदिर (पुष्कर):** 12वीं शताब्दी के शासक राजा **अर्णोराज चौहान** द्वारा निर्मित यह प्राचीन मंदिर भगवान विष्णु के तीसरे अवतार वराह को समर्पित है।

अलवर

- **भर्तृहरि मंदिर:** उज्जैन के राजा भर्तृहरि की स्मृति में बने इस मंदिर को 1924 में महाराजा जयसिंह द्वारा आधुनिक स्वरूप दिया गया था। यहाँ भाद्रपद मास की शुक्ल अष्टमी को विशाल मेला आयोजित किया जाता है।
- **नारायणी माता मंदिर:** अलवर से लगभग 80 किमी दूर स्थित यह मंदिर स्थानीय लोगों की गहरी आस्था का केंद्र है। यहाँ एक प्राकृतिक गर्म पानी का झरना भी स्थित है।
- **नौगाँव के जैन मंदिर:** यह दिगंबर जैन समाज का प्रमुख केंद्र है, जहाँ मल्लीनाथ जी का नौचौकिया मंदिर स्थित है। इस मूर्ति की विशेषता इसकी पीठ पर अंकित प्रशस्ति है।
- **पांडुपोल:** यहाँ हनुमान जी की शयन मुद्रा (लेटी हुई) में विशाल प्रतिमा स्थापित है। माना जाता है कि भीम ने अपनी गदा से यहाँ का मार्ग बनाया था।
- **नन्दलेश्वर तीर्थस्थल:** अलवर से 24 किमी दूर पहाड़ी शृंखलाओं के बीच स्थित यह एक प्राचीन शिव मंदिर है, जो वर्षा ऋतु में प्राकृतिक झरनों से घिरा रहता है।
- **नीलकंठ महादेव:** सरिस्का क्षेत्र के राजौरगढ़ में पहाड़ियों के बीच स्थित यह मंदिर खजुराहो स्थापत्य शैली से प्रभावित है, जिसके गर्भगृह में काले पत्थर का शिवलिंग स्थापित है।
- **तालवृक्ष:** अलवर से 40 किमी दूर स्थित यह स्थान मांडव ऋषि की प्राचीन तपस्या स्थली माना जाता है।

जयपुर

- **मोती डूंगरी गणेश मंदिर:** मोती डूंगरी पहाड़ी के नीचे स्थित यह प्रसिद्ध मंदिर जयपुर वासियों की अगाध श्रद्धा का केंद्र है।
- **गोविन्द देव जी मंदिर:** जयपुर के राजप्रसाद (सिटी पैलेस) परिसर में स्थित इस मंदिर में स्थापित भगवान कृष्ण की प्रतिमा को सवाई जयसिंह वृंदावन से लाए थे। यह गौड़ीय संप्रदाय से संबंधित है।
- **आमेर की शिलामाता का मंदिर:** कच्छावाहा राजवंश की आराध्य देवी शिलामाता की यह प्रतिमा राजा मानसिंह द्वारा बंगाल से लाई गई थी, जो काले संगमरमर से बनी है।
- **गलता जी:** गालव ऋषि की तपस्या स्थली होने के कारण इसे गलता जी कहा जाता है। बंदरों की बहुतायत के कारण इसे 'मंकी वैली' और धार्मिक महत्व के कारण 'उत्तर तोताद्रि' भी कहा जाता है। यहाँ कृष्णदास पयहारी ने रामानन्दी सम्प्रदाय की पीठ की स्थापना की थी।
- **बिड़ला मंदिर (लक्ष्मी नारायण मंदिर):** मोती डूंगरी की तलहटी में स्थित यह आधुनिक मंदिर पूरी तरह से सफेद संगमरमर से निर्मित है और भगवान विष्णु तथा लक्ष्मी को समर्पित है।
- **शील माता का मंदिर (चाकसू):** शील की डूंगरी पर स्थित इस मंदिर का निर्माण महाराजा माधोसिंह द्वारा करवाया गया था। इन्हें चेचक निवारक देवी के रूप में पूजा जाता है।
- **जगत शिरोमणि मंदिर (आमेर):** इस भव्य मंदिर का निर्माण राजा मानसिंह प्रथम की पत्नी कनकावती ने अपने पुत्र जगतसिंह की स्मृति में करवाया था।
- **जमुवाय माता का मंदिर (जमवारामगढ़):** कच्छवाह वंश के संस्थापक दुलहराय द्वारा निर्मित यह मंदिर कच्छावाहा राजवंश की कुलदेवी को समर्पित है।

5 राजस्थान के प्रमुख खिलाड़ी

23वें राष्ट्रमण्डल (कॉमनवेल्थ) खेल-2026

❖ कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 ग्लासगो (स्कॉटलैंड) में 23 जुलाई से 2अगस्त के बीच आयोजित हुए, जिसमें 122 भारतीय एथलीटों ने आठ सामान्य खेलों और पांच पैरा-स्पोर्ट्स (दिव्यांग एथलीटों के लिए खेल) में हिस्सा लिया।

❖ कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 की मेडल टैली में भारत चौथे स्थान पर रहा। भारत ने **13 गोल्ड**, 17 सिल्वर और 9 ब्रॉन्ज सहित **कुल 39 मेडल** जीते।

❖ बॉक्सिंग ने भारत के कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 अभियान में सबसे अहम भूमिका निभाई और रिकॉर्ड 10 मेडल जीते। इनमें 7 गोल्ड मेडल भी शामिल थे, जो किसी भी देश द्वारा एक ही कॉमनवेल्थ गेम्स में इस खेल में जीते गए सबसे अधिक गोल्ड मेडल हैं।

राजस्थान के खिलाड़ियों का योगदान

❖ राजस्थान के **कोटा** की मुक्केबाज **अरुंधति चौधरी** ने स्कॉटलैंड के ग्लासगो में आयोजित 2026 कॉमनवेल्थ खेलों की महिला 70 किलोग्राम भार वर्ग वाली बॉक्सिंग स्पर्धा में **स्वर्ण पदक** (Gold Medal) जीता। फाइनल में उन्होंने इंग्लैंड की चैंटेल रीड को एकतरफा अंदाज में 5-0 से हराकर गोल्ड अपने नाम किया।

❖ इससे पहले सेमीफाइनल में उन्होंने बेहद आक्रामक खेल दिखाते हुए यूके की मुक्केबाज रोसी एकेल्स को 4-0 के एकतरफा अंतर से मात दी थी।

❖ उन्होंने वर्ष 2017 की जूनियर नेशनल बॉक्सिंग चैंपियनशिप में 'बेस्ट बॉक्सर' के खिताब के साथ गोल्ड मेडल जीता था। इसके बाद उन्होंने 2021 की जूनियर यूथ वर्ल्ड बॉक्सिंग चैंपियनशिप और 2022 के कॉमनवेल्थ गेम्स में भी स्वर्ण पदक जीता था।

❖ कॉमनवेल्थ गेम्स 2026 में राजस्थान के **जयपुर** के जैवलिन थ्रोअर **यशवीर सिंह** ने 85.41 मीटर का अपना व्यक्तिगत सर्वश्रेष्ठ थ्रो करते हुए **कांस्य पदक** (Bronze Medal) जीता। यशवीर ने पूर्व विश्व चैंपियन एंडरसन पीटर्स और मौजूदा ओलंपिक स्वर्ण पदक विजेता अरशद नदीम जैसे दिग्गजों को पीछे छोड़ते हुए पोडियम पर जगह बनाई। वह उत्तर पश्चिम रेलवे (जयपुर मंडल) में कार्यरत हैं।

38वें राष्ट्रीय खेल 2025

❖ 38वें राष्ट्रीय खेलों का आयोजन 28 जनवरी से 14 फरवरी, 2025 तक उत्तराखंड में हुआ। राजस्थान के दल में कुल **497** खिलाड़ी शामिल थे, जिन्होंने विभिन्न स्पर्धाओं में शानदार प्रदर्शन करते हुए कुल **43** पदक(**9** स्वर्ण, **11** रजत तथा **23** कांस्य पदक)जीतकर देश में **15**वीं रैंक हासिक की।

क्र.	खेल	खिलाड़ी	पदक
1.	तीरंदाजी	रजत चौहान (DSP)	स्वर्ण
2.	वुशू	शुभम गौरा, नितिका बंसल, महक शर्मा, नीलम चौधरी	स्वर्ण
3.	कयाकिंग	प्रद्युम्न सिंह राठौड़ - स्कोर 149.729 सेकंड में रेस पूरी कर	स्वर्ण
4.	निशानेबाजी	अनंतजीत सिंह नरूका - स्कोर 56	स्वर्ण
5.	वेटलिफ्टिंग	हरचरण सिंह - 109 kg में	स्वर्ण
6.	कबड्डी	पुरुष टीम	स्वर्ण

प्रमुख राष्ट्रीय/अंतर्राष्ट्रीय खेल प्रतियोगिताओं में राजस्थान के खिलाड़ी

पेरिस पैरा ओलम्पिक 2024 में राजस्थान के खिलाड़ी

❖ पेरिस पैरा ओलंपिक खेलों का आयोजन फ्रांस में 28 अगस्त, 2024 से 8 सितम्बर 2024 तक हुआ था। जिसमें भारत ने कुल 29 पदक (7 स्वर्ण पदक; 9 रजत पदक; 13 कांस्य पदक) जीते।

❖ **इन खेलों में राजस्थान के 9 पैरा खिलाड़ियों ने भाग लिया इनमें से 3 ने पदक जीते।**

क्र.	खिलाड़ी	मूल निवास	खेल	विशेष विवरण
1.	अवनी लेखरा	जयपुर	शूटिंग (10 मीटर एयर राईफल, SH-1 स्पर्धा)	स्वर्ण पदक जीता (249.7 अंक)
2.	मोना अग्रवाल	सीकर	निशानेबाजी (10 मीटर एयर राईफल, SH-1 स्पर्धा)	कांस्य पदक
3.	सुन्दर गुर्जर	करौली	भाला फेंक (F-46 स्पर्धा)	कांस्य पदक (64.96 मी.)
4.	कृष्णा नागर	जयपुर	बेडमिंटन	—
5.	संदीप चौधरी	झुंझुनूँ	भाला फेंक	—
6.	श्याम सुन्दर स्वामी	बीकानेर	तीरंदाजी	—
7.	अनीता चौधरी	झुंझुनूँ	रोइंग	—
8.	निहाल सिंह	खैरथल-तिजारा	निशानेबाजी	—
9.	रूद्राक्ष खंडेलवाल	भरतपुर	निशानेबाजी	—

6 राजस्थान के प्रसिद्ध नगर एवं स्थल

अजमेर

❖ **अजमेर नगर की स्थापना:** इस ऐतिहासिक नगर की स्थापना वर्ष 1113 ई. में चौहान राजा अजयराज द्वारा की गई थी।
❖ **सांप्रदायिक सद्भाव का केंद्र:** सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती की पवित्र दरगाह और हिंदुओं के प्रसिद्ध पुष्कर तीर्थ के कारण अजमेर को सांप्रदायिक सद्भाव का संगम माना जाता है। इसे 'राजस्थान का हृदय स्थल' और 'भारत का मक्का' भी कहा जाता है।
❖ **तारागढ़ दुर्ग:** अजमेर के इस दुर्ग को 'तारागढ़' तथा 'गढ़ बीठली' के नाम से जाना जाता है।
❖ **तीर्थराज पुष्कर:** पुष्कर को सभी हिंदू तीर्थस्थलों का राजा यानी 'तीर्थराज' कहा जाता है। यहाँ का पुष्कर सरोवर अत्यंत पवित्र माना जाता है।
❖ **पुष्कर के मंदिर:** यहाँ विश्व प्रसिद्ध ब्रह्मा जी का मंदिर स्थित है, जिसमें उनकी चतुर्भुज प्रतिमा स्थापित है और प्रहरी के रूप में सूर्य भगवान की संगमरमर की मूर्ति खड़ी है। इसके अतिरिक्त यहाँ रंगनाथ मंदिर, सावित्री मंदिर और प्राचीन वराह मंदिर स्थित हैं।
❖ **कार्तिक मेला:** पुष्कर में प्रतिवर्ष कार्तिक मास की एकादशी से पूर्णिमा तक विशाल मेले का आयोजन होता है, जो पशुओं के व्यापार के साथ-साथ विदेशी पर्यटकों के आकर्षण का मुख्य केंद्र है।
❖ **अढ़ाई दिन का झोंपड़ा:** यहाँ चौहान सम्राट विग्रहराज चतुर्थ (बीसलदेव) द्वारा निर्मित एक संस्कृत पाठशाला और विष्णु मंदिर को तुड़वाकर कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 से 1210 ई. के मध्य अढ़ाई दिन के झोंपड़े का निर्माण करवाया था।
❖ **आनासागर झील:** इस सुंदर कृत्रिम झील का निर्माण सम्राट अर्णोराज (आनाजी) ने करवाया था, जिस पर बाद में जहाँगीर ने 'दौलत बाग' (सुभाष उद्यान) और शाहजहाँ ने संगमरमर की 'बारहदरी' का निर्माण करवाया।
❖ **फॉय सागर झील:** अकाल राहत कार्यों के दौरान बांडी नदी के पानी को रोककर इंजीनियर फॉय के निर्देशन में इस झील का निर्माण किया गया था।
❖ **अन्य प्रमुख स्थल:** पृथ्वीराज चौहान स्मारक, मांगलियावास (प्राचीन कल्पवृक्ष) तथा तारागढ़ में स्थित घोड़े की मजार आदि।

अलवर

❖ **स्थापना व परिचय:** अलवर की स्थापना राव राजा प्रतापसिंह द्वारा की गई थी। प्राचीन मत्स्य जनपद का हिस्सा रहा है।
❖ **भानगढ़ दुर्ग (भूतों की नगरी):** सरिस्का से 50 किमी दूर स्थित इस ऐतिहासिक नगर की स्थापना आमेर के राजा भगवंतदास के पुत्र माधव सिंह ने अपनी पहली नगरी के रूप में की थी। तांत्रिकों के शाप की किंवदंतियों के कारण यह वीरान हो गया और आज इसे भारत के सबसे रहस्यमयी स्थानों में गिना जाता है। यहाँ सोमेश्वर महादेव और गणेश मंदिर के भग्नावशेष स्थित हैं।
❖ **मूसी महारानी की छतरी:** महाराजा बख्तावर सिंह और मूसी महारानी की स्मृति में महाराजा विनय सिंह ने इस छतरी का निर्माण करवाया था, जो संगमरमर के 80 खंभों पर टिकी हुई है।
❖ **होप सर्कस:** अलवर के मध्य स्थित इस चौक का निर्माण 1939-40 ई. में तत्कालीन वायसराय लॉर्ड लिनलिथगो के अलवर आगमन पर उनकी पुत्री 'मिस होप' के नाम पर किया गया था।
❖ **सिलीसेढ़ महल:** महाराजा विनय सिंह ने अपनी रानी शीला की स्मृति में सिलीसेढ़ झील के किनारे वर्ष 1844 में इस सुंदर महल का निर्माण करवाया था, जिसे वर्तमान में 'लेक पैलेस' भी कहा जाता है।
❖ **बाला किला:** इस किले का निर्माण वि.सं. 1106 में अलघुराय द्वारा करवाया गया था। अपनी अनूठी स्थापत्य कला के कारण इसे 'आँख वाला किला' भी कहा जाता है।
❖ **अन्य प्रमुख स्थल:** विजय मंदिर पैलेस, पुर्जन विहार (कंपनी गार्डन/शिमला), पांडुपोल हनुमान जी, सरिस्का वन्यजीव अभयारण्य, भर्तृहरि तपोभूमि, नीमराणा का किला व बावड़ी तथा अजबगढ़ दुर्ग आदि।

बांसवाड़ा

❖ **स्थापना:** बांसवाड़ा की स्थापना महारावल उदय सिंह के पुत्र जगमाल सिंह ने की थी। इस क्षेत्र में बाँस के वनों की प्रचुरता के कारण इसका नाम 'बांसवाड़ा' पड़ा।
❖ **धार्मिक व ऐतिहासिक स्थल:** यहाँ बोहरा संप्रदाय के पूजनीय संत अब्दुल्ला पीर की मजार और पांडवों के अज्ञातवास की शरणस्थली 'केलापानी' स्थित है।
❖ **कुशलगढ़:** रियासत काल में यह बांसवाड़ा राज्य का सबसे बड़ा और प्रमुख ठिकाना था, जो जिला मुख्यालय से 75 किमी दूर स्थित है।
❖ **अन्य प्रमुख स्थल:** तलवाड़ा, आनंद सागर झील, डायलाब झील, गोविंद गुरु स्मृति उद्यान तथा ऐतिहासिक मानगढ़ धाम आदि।

बारां

❖ **गठन:** इस जिले का गठन 10 अप्रैल 1991 को कोटा से पृथक करके किया गया था। पूर्व काल में यह कोटा रियासत का ही एक अंग था।
❖ **सीताबाड़ी:** यहाँ सीता माता और लक्ष्मण जी का प्राचीन मंदिर स्थित है, जिसे वाल्मीकि ऋषि की तपोस्थली भी माना जाता है।
❖ **शाहबाद दुर्ग:** मुकुंदरा पर्वत श्रृंखला की भामती पहाड़ी पर इस दुर्ग का निर्माण 1577 ई. में चौहान राजा मुक्तामन द्वारा करवाया गया था। इस दुर्ग में 'सावन-भादो महल' स्थित है।
❖ **शेरगढ़ (कोशवर्धन) दुर्ग:** अटरू कस्बे में परवन नदी के तट पर स्थित इस प्राचीन दुर्ग का नाम शेरशाह सूरी के सम्मान में 'शेरगढ़' रखा गया था।
❖ **अन्य प्रमुख स्थल:** कृष्ण विलास (विलासगढ़), ऐतिहासिक गढ़गच्छ के देवालय तथा कपिलधारा तीर्थ (किशनगंज) आदि।

बाड़मेर

❖ **स्थापना व इतिहास:** बाड़मेर के संस्थापक परमार शासक 'बहाड़ राव' (बाड़ राव) थे। प्राचीन काल में यह क्षेत्र 'मल्लानी' के नाम से जाना जाता था। इसका मूल ऐतिहासिक नगर 'जूना बाड़मेर' है, जिसे जीतकर

7 राजस्थान की राजनीतिक एवं प्रशासनिक व्यवस्था

राज्यपाल

- संविधान के **भाग-6** के अन्तर्गत **अनुच्छेद 152 से 234** तक राज्य सरकार एवं उसकी कार्यप्रणाली का उल्लेख किया गया है। **अनुच्छेद 153** के अनुसार प्रत्येक राज्य का एक राज्यपाल होगा, जो उसकी कार्यपालिका का संवैधानिक प्रधान होता है।
- **7वाँ संविधान संशोधन** (1956) के बाद कोई एक व्यक्ति दो या अधिक राज्यों का भी राज्यपाल हो सकता है।
- **अनुच्छेद-155** के अनुसार राज्यपाल की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। राज्यपाल दोहरी भूमिका में कार्य करता है। वह राज्य का संवैधानिक प्रधान होने के साथ-साथ संघ सरकार का एजेन्ट भी होता है।
- अनुच्छेद-157 व 158 के अन्तर्गत किसी व्यक्ति में राज्यपाल के पद के लिए निम्नलिखित योग्यताओं एवं शर्तों का होना आवश्यक है—
  - वह भारत का नागरिक हो।
  - 35 वर्ष की आयु पूरी कर चुका हो।
  - राज्यपाल के पद पर आसीन व्यक्ति किसी राज्य या संघ क्षेत्र की सरकार के अधीन लाभ का पद धारण नहीं करेगा।
  - राज्यपाल नियुक्त किया जाने वाला व्यक्ति संसद अथवा राज्य विधान मंडल के किसी सदन का सदस्य नहीं होना चाहिए।
- **अनुच्छेद-159** के अनुसार राज्यपाल को संबंधित राज्य के उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के समक्ष शपथ लेनी पड़ती है।
- **अनुच्छेद-156** में राज्यपाल के कार्यकाल के उपबंध दिए गए हैं, जिसमें तीन बातें मुख्य हैं—

(1) राज्यपाल **राष्ट्रपति के प्रसादपर्यंत** अपना पद धारण करेगा।

(2) राज्यपाल की नियुक्ति **5 वर्ष** के लिए होती है, राष्ट्रपति राज्यपाल को दूसरे कार्यकाल के लिए पुनः नियुक्त कर सकता है। ध्यातव्य है कि कार्यकाल समाप्त होने के पश्चात् नए राज्यपाल की नियुक्ति तक वह पद पर बना रहता है।

(3) राज्यपाल राष्ट्रपति को संबोधित त्यागपत्र द्वारा 5 वर्ष से पूर्व भी अपना पद छोड़ सकता है।

- राज्यपाल को वह **वेतन, भत्ते** प्राप्त होते हैं, जो संसद द्वारा विधि बनाकर निर्धारित किए जायें। राज्यपाल को वर्तमान में **3 लाख 50 हजार** रुपये वेतन मिलता है।
- संविधान के **अनुच्छेद 361** के अनुसार राष्ट्रपति एवं राज्यपाल को विशेषाधिकार दिए गए हैं—

(1) राज्यपाल अपने पद पर रहते हुए किए गए कार्यों के लिए कभी भी न्यायपालिका के समक्ष उत्तरदायी नहीं ठहराया जायेगा।

(2) राज्यपाल के व्यक्तिगत कार्यों के लिए उसके पद के दौरान उसके विरुद्ध किसी भी न्यायपालिका में कोई **आपराधिक मामला** नहीं चलाया जाएगा।

(3) राज्यपाल के व्यक्तिगत कार्यों के लिए उसके विरुद्ध कोई सिविल मामला चलाया जा सकता है, परन्तु इसके लिए कुछ शर्तें है—
  - ऐसी व्यक्ति को अपना नाम, पता तथा राज्यपाल के विरुद्ध मामला लाने का आधार बताना होगा।
  - राज्यपाल को इस संदर्भ में लिखित सूचना देनी होगी।
  - ऐसी सूचना के बाद कम से कम **2 माह** का समय देना होगा।

राज्यपाल की शक्तियाँ कार्य एवं भूमिका

(1) कार्यपालिकीय शक्तियाँ

- राज्यपाल राज्य सरकार की कार्यपालिका का संवैधानिक प्रधान होता है।
- **अनुच्छेद 154** के तहत् राज्य की कार्यपालिकीय शक्तियाँ राज्यपाल में निहित हैं। राज्यपाल का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य मुख्यमंत्री की नियुक्ति करना तथा उसकी सलाह पर मंत्रिपरिषद के सदस्यों की नियुक्ति करना है।
- **राज्य लोक सेवा आयोग के अध्यक्ष व सदस्यों की नियुक्ति करना**, परन्तु इन्हें हटाने की शक्ति राष्ट्रपति के पास है।
- राज्य के **महाधिवक्ता, राज्य वित्त आयोग** एवं **राज्य निर्वाचन आयोग के अध्यक्ष की नियुक्ति** राज्यपाल द्वारा की जाती है।
- राज्यपाल मुख्यमंत्री की सलाह के अनुसार मंत्रियों को विभागों का वितरण करता है। राज्य के विश्वविद्यालयों के कुलपति की नियुक्ति राज्यपाल ही करता है तथा साथ ही वह राज्य के विश्वविद्यालयों का **पदेन कुलाधिपति** भी होता है। वह राष्ट्रपति को राज्य के संबंध में प्रतिवेदन भेजता है।

(2) विधायी शक्तियाँ

- राज्यपाल, राज्य विधायिका का एक महत्त्वपूर्ण भाग होता है, उसे विधानसभा का **अधिवेशन बुलाने, सत्रावसान** करने एवं विधानसभा को **भंग** करने का अधिकार है। वह नई विधानसभा में **उद्घाटन भाषण** देता है तथा प्रत्येक वर्ष के प्रथम सत्र के आरंभ में राज्यपाल विधानसभा के समक्ष अभिभाषण करता है।
- यदि राज्य का विधानमण्डल द्विसदनीय है तो राज्यपाल विधान परिषद के लिए उसके कुल सदस्यों के 1/6 भाग को मनोनीत करता है।
- उक्त मनोनीत सदस्य ऐसे होगें जिन्हें **साहित्य, कला, विज्ञान, समाजसेवा** एवं **सहकारी आन्दोलन** में से किसी विषय का व्यावहारिक ज्ञान/अनुभव हो। यदि राज्यपाल की राय में विधान मंडल में **एंग्लो-इंडियन** समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं है, तो वह उस समुदाय से **1 सदस्य** को मनोनीत कर सकता है।
- कोई भी विधेयक तभी कानून बनता है, जब राज्यपाल उस पर हस्ताक्षर करें। राज्यपाल किसी विधेयक पर अनुमति दे भी सकता है और नहीं भी। इसके अतिरिक्त वह विधेयक को राष्ट्रपति के विचारार्थ आरक्षित रख सकता है। वह राज्य विधानसभा में विचार हेतु अपना संदेश भेज सकता है।
- राज्यपाल, राज्य लोक सेवा आयोग तथा महालेखा परीक्षक के प्रतिवेदन को विधानमंडल के समक्ष रखवाता है।
- **अध्यादेश जारी करने की शक्ति**—संविधान के **अनुच्छेद 213** के अनुसार राज्यपाल को निम्नानुसार अध्यादेश जारी करने की शक्ति है—
  - जब विधानमंडल सत्र में नहीं हो और कानून बनाना अत्यावश्यक हो।
  - राज्यपाल द्वारा अध्यादेश जारी करने हेतु मंत्रिपरिषद की सलाह

8 राजस्थान में कल्याणकारी योजनाएँ

राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (R.G.A.V.P.) राजीविका

- ❖ राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (आर.जी.ए.वी.पी.) की स्थापना राजस्थान सरकार द्वारा ग्रामीण विकास विभाग के प्रशासनिक नियंत्रण में **अक्टूबर, 2010** में एक स्वायत्त संस्था के रूप में की गई।
- ❖ यह संस्था सोसायटी पंजीकरण अधिनियम, 1958 के अन्तर्गत पंजीकृत है तथा इसके द्वारा स्वयं सहायता समूह आधारित संस्थानिक अवधारणा के आधार पर समस्त ग्रामीण आजीविका कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने का कार्य किया जा रहा हैं।

प्रधानमंत्री आवास योजना-ग्रामीण

- ❖ योजनान्तर्गत लाभार्थियों का चयन सामाजिक, आर्थिक एवं जाति जनगणना-2011 (एस.ई.सीसी.-2011) के समंकों के आधार पर किया जाता है। सरकार द्वारा इस योजना के अन्तर्गत प्रत्येक लाभार्थी को सहायता राशि **₹1,20,000** देय है।
- ❖ प्रत्येक लाभार्थी को स्वच्छ भारत मिशन के तहत शौचालय निर्माण हेतु अतिरिक्त राशि **₹12,000** देय है। योजना अन्तर्गत लाभार्थियों को मनरेगा के माध्यम से दैनिक मजदूरी (90 दिवस तक) भी उपलब्ध कराई जाती है।

मेवात क्षेत्र विकास योजना

- ❖ मेव समुदाय मुख्यतः **अलवर, खैरथल–तिजारा** एवं **डीग** जिले के 14 ब्लॉक में बहुलता से निवास करते हैं। इस योजना में उपरोक्त जिलों के 807 गाँव सम्मिलित हैं।
- ❖ मेव बाहुल्य वाले क्षेत्र को मेवात क्षेत्र के नाम से जाना जाता है। इस क्षेत्र के सम्पूर्ण विकास के लिए राजस्थान सरकार द्वारा वर्ष **1986-87** से मेवात क्षेत्र विकास कार्यक्रम क्रियान्वित किया जा रहा है।
- ❖ इस योजना का मुख्य उद्देश्य आवश्यक आधारभूत सुविधाओं का विकास करना, लघु एवं कुटीर उद्योगों की स्थापना तथा लोगों को रोजगार एवं आजीविका के अवसर प्रदान करने हेतु आवश्यक संसाधनों का विकास करना है।

डांग क्षेत्र विकास योजना

- ❖ बीहड़ क्षेत्र तथा संकुचित घाटी युक्त दस्यु ग्रस्त क्षेत्र को 'डांग क्षेत्र' के नाम से जाना जाता है। ये क्षेत्र पिछड़े हुए हैं और इनमें विकास को गति प्रदान करने हेतु आधारभूत सुविधाओं को बढ़ाने के लिए निवेश की आवश्यकता है।
- ❖ इस उद्देश्य की पूर्ति हेतु डांग क्षेत्र विकास योजना वर्ष **2005-06** में राज्य सरकार द्वारा पुनः प्रारम्भ की गई। इस योजना में **8 जिलों** (सवाई माधोपुर, करौली, धौलपुर, बारां, झालावाड़, भरतपुर, कोटा एवं बून्दी) के 2,192 गांवों को शामिल किया गया है।

मगरा क्षेत्र विकास योजना

- ❖ राजस्थान का दक्षिणी-मध्य भाग, जो कि पहाड़ी क्षेत्र से घिरा हुआ है, विशेषतः ब्यावर, भीलवाड़ा, पाली, चित्तौड़गढ़, एवं राजसमन्द, जो जनजाति क्षेत्रीय विकास के अन्तर्गत नहीं आता है, स्थानीय रूप से 'मगरा' के नाम से जाना जाता है।
- ❖ इस क्षेत्र में विकास के संसाधन यथा- भूमि, पानी एवं पशुधन कम हैं तथा यहाँ के निवासियों का भारी मौसमी पलायन होता है। यहाँ के निवासियों के आर्थिक एवं सामाजिक स्तर में सुधार हेतु मगरा क्षेत्र विकास योजना वर्ष **2005-06** में शुरू की गई।
- ❖ वर्तमान में यह उक्त जिलों के **1,746 गांवों** में क्रियान्वित की जा रहा है। इस क्षेत्र के विकास के लिए जलग्रहण विकास, लघु सिंचाई, पशुपालन, पेयजल, शिक्षा, विद्युतीकरण, स्वास्थ्य एवं सड़क निर्माण की गतिविधियों को सम्मिलित किया गया है।

सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम - BADP

- ❖ सीमा क्षेत्र विकास कार्यक्रम एक केंद्र प्रायोजित योजना है जिसका उद्देश्य अंतर्राष्ट्रीय सीमा से सटे राज्यों के सीमावर्ती क्षेत्रों में रहने वाले लोगों की विशेष विकासात्मक आवश्यकताओं को पूरा करना और उनमें सुरक्षा की भावना को बढ़ावा देना है। राजस्थान में, यह कार्यक्रम उन जिलों में लागू किया जाता है जो सीधे पाकिस्तान के साथ अंतर्राष्ट्रीय सीमा साझा करते हैं। इन जिलों में **श्रीगंगानगर, जैसलमेर, बाड़मेर, फलौदी** और **बीकानेर** शामिल हैं।

श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (ग्रामीण)

- ❖ श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना **6 जनवरी, 2024** से प्रदेश के ग्रामीण कस्बों में प्रारम्भ की गई है। योजना के माध्यम से स्थानीय रुचि के अनुसार पौष्टिक एवं स्वास्थ्यवर्धक भोजन किफायती दरों पर उपलब्ध कराया जा रहा है।
- ❖ श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (ग्रामीण) राजस्थान ग्रामीण आजीविका विकास परिषद (राजीविका) के माध्यम से महिला स्वयं सहायता समूहों द्वारा प्रदेश के समस्त चिह्नित ग्रामीण कस्बों में संचालित की जा रही है।
- ❖ श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना के अन्तर्गत 796 रसोइयों के माध्यम से दोपहर एवं रात्रि भोजन उपलब्ध कराया जा रहा है, जिसमें ग्रामीण कस्बों में प्रत्येक रसोई में प्रतिदिन अधिकतम 100 दोपहर के भोजन एवं अधिकतम 100 रात्रि भोजन उपलब्ध कराने का प्रावधान है। लाभार्थी से प्रति थाली **₹8** लिए जा रहे हैं तथा प्रति थाली **₹22** राज्य सरकार द्वारा भुगतान किया जा रहा है।
- ❖ प्रत्येक लाभार्थी को 600 ग्राम भोजन (300 ग्राम चपाती, 100 ग्राम दाल, 100 ग्राम सब्जियाँ, 100 ग्राम चावल/बाजरा खिचड़ी और अचार) की थाली परोसी जा रही है। उल्लेखनीय है कि यह योजना राजस्थान सरकार द्वारा **10 सितम्बर 2023** को **'इंदिरा रसोई योजना (ग्रामीण)'** के नाम से शुरू की गई थी।

श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (शहरी)

- ❖ राज्य में यह योजना **'श्री अन्नपूर्णा रसोई योजना (शहरी)' 6 जनवरी, 2024** से प्रारम्भ की गई।
- ❖ प्रदेश में 'लक्ष्य अंत्योदय-प्रण अंत्योदय-पथ अंत्योदय' की संकल्पना को साकार कर रही सुशासन को समर्पित प्रदेश सरकार द्वारा वर्तमान में

Part-II • शैक्षिक परिदृश्य [Educational Scenario]

1 शिक्षण अधिगम के नवाचार

स्टेट एनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्युकेशन (SIQE)

❖ राज्य सरकार द्वारा प्राथमिक शिक्षा को बेहतर तथा गुणवत्ता पूर्ण बनाने के लिए राज्य में संचालित, समन्वित राजकीय उच्च माध्यमिक/माध्यमिक विद्यालयों (कक्षा 1 **से** 10 एवं कक्षा 1 **से** 12 तक) में **कक्षा 1 से 5 तक में, विद्यार्थियों के शैक्षिक स्तर उन्नयन के उद्देश्य से सत्र 2015-16** से **''स्टेट इनिशिएटिव फॉर क्वालिटी एज्यूकेशन''** (SIQE : State Initiative for Quality Education) परियोजना समन्वित कार्यक्रम के रूप में प्रारम्भ की गयी तथा इसका संचालन राजस्थान स्कूल शिक्षा परिषद् जयपुर द्वारा किया जा रहा है।

❖ **ध्येय वाक्य** : ''सब बच्चे सीख सकते हैं और सब शिक्षक पढ़ा सकते हैं।''

❖ RTE Act 2009 के प्रावधान अनुसार राजस्थान में **'सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन** (CCE) की शुरुआत **मई 2010** (सत्र 2010-11) में पायलेट प्रोजेक्ट के रूप में दो जिलों **जयपुर तथा अलवर** के 60 विद्यालयों से की गयी, जिसमें 40 विद्यालय अलवर जिले के तथा 20 विद्यालय जयपुर जिले के थे। सत्र **2015-16** से इसे राज्य के सम्पूर्ण समन्वित विद्यालयों में लागू किया गया।

❖ कार्यालय निदेशक, प्रारम्भिक शिक्षा राजस्थान, बीकानेर के आदेश क्रमांकः शिविरा/प्राशि/SIQE/दिशा-निर्देश/19568/2019/1656 दिनांक 17.09.2020 के अनुसार SIQE प्रक्रिया के प्रभावी क्रियान्वयन एवं सफल संचालन हेतु पूर्व में जारी दिशा निर्देशों के अतिक्रमण में निम्नानुसार दिशा निर्देश प्रसारित किये गये हैं—

❖ बच्चों के सर्वांगीण विकास करने वाले पाठ्यक्रम, बच्चों के अधिगम स्तर के अनुसार शिक्षण योजना तथा सतत् एवं व्यापक रूप से मूल्यांकन करने के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए **SIQE कार्यक्रम में तीन कार्यक्रम समन्वित रूप से संचालित किए गए—**

1. बाल केन्द्रित शिक्षण विद्या (CCP)
2. गतिविधि आधारित शिक्षण (ABL)
3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE)

नोट—राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के बाद FLN को भी इसमें शामिल कर लिया गया है।

❖ इन तीनों समन्वित कार्यक्रमों तथा FLN का मुख्य उद्देश्य राज्य में संचालित समस्त राजकीय विद्यालयों की प्राथमिक कक्षाओं (कक्षा 1 से 5) में अध्ययनरत विद्यार्थियों के **सीखने के प्रतिफल** (Learning out comes) के अनुरूप शैक्षिक स्तर का उन्नयन, विद्यार्थियों में रचनात्मक/सृजनात्मक क्षमता तथा शिक्षकों एवं विद्यार्थियों के मध्य अन्तःक्रिया का विकास करना है। जहाँ शिक्षण अधिगम की प्रक्रिया गतिविधि आधारित हो और संस्था प्रधान/शिक्षक इसमें मददकर्ता की भूमिका में हो। प्रत्येक बच्चे को सीखने के पर्याप्त अवसर उपलब्ध करवाये जाएँ तथा उनका सतत् मूल्यांकन करते हुए निरन्तर सुधार हेतु प्रयास किए जाएँ।

SIQE की वर्तमान संस्थाएँ

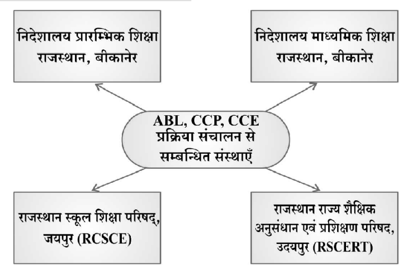

SIQE परियोजना के उद्देश्य

❖ **अधिगम (सीखने) के स्तर में सुधार:** प्राथमिक स्तर के विद्यार्थियों का उनकी आयु और कक्षा के अनुरूप शैक्षणिक स्तर सुनिश्चित करना तथा ज्ञान को स्थायी व प्रभावी बनाकर प्राथमिक शिक्षा की नींव को मजबूत करना।

❖ **बाल-केंद्रित एवं गतिविधि आधारित शिक्षण:** बाल-केंद्रित शिक्षण विधा (CCP), सतत एवं व्यापक मूल्यांकन (CCE) तथा गतिविधि आधारित अधिगम (ABL) के समन्वय से पढ़ाई को भयमुक्त, रुचिकर और आनंदमयी बनाना, जिससे बच्चों के संज्ञानात्मक कौशल, मौलिक चिंतन और व्यक्तित्व का समग्र विकास हो सके।

❖ **नामांकन, ठहराव और ड्राप-आउट में कमी:** प्राथमिक स्तर पर विद्यार्थियों के नामांकन में वृद्धि करना, स्कूलों में उनका ठहराव सुनिश्चित करना तथा स्कूल छोड़ने की दर को न्यूनतम स्तर पर लाना।

❖ **शिक्षकों व प्रशासनिक अमले का क्षमता संवर्धन:** शिक्षण को प्रभावी बनाने के लिए शिक्षकों के कौशल व क्षमता में वृद्धि करना और स्कूल प्राचार्यों, प्रभारियों व जिला-स्तरीय अकादमिक समूहों को मददगार मार्गदर्शक के रूप में तैयार करना।

❖ **अभिभावकों व समुदाय से जुड़ाव:** शिक्षकों का स्थानीय समुदाय के साथ जुड़ाव बढ़ाना और बच्चों की शैक्षणिक प्रगति व उपलब्धियों की जानकारी नियमित रूप से अभिभावकों के साथ साझा करना।

SIQE का संचालन

❖ SIQE परियोजना के संचालन हेतु निम्न समितियों का गठन किया गया है।

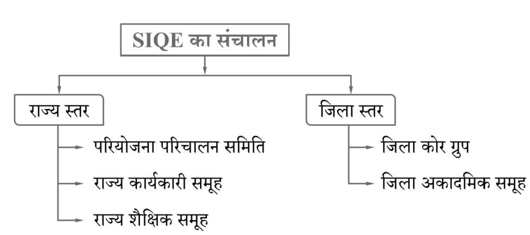

कार्यक्रम संचालन हेतु समितियाँ-

1. राज्य के **शीर्ष निकाय** के रूप में **नीति निर्धारण के लिए** प्रोग्राम स्टीयरिंग कमेटी का गठन किया गया है।

2 राज्य में केन्द्र एवं राजस्थान सरकार की विद्यार्थी कल्याणकारी योजनाएँ एवं पुरस्कार

निपुण भारत मिशन

- **NIPUN :** National Initiative for Proficiency in Reading with Understanding and Numeracy.
- नवीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की अनुशंसा के अनुसार मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राष्ट्रीय पहल के रूप में निपुण भारत मिशन का प्रारम्भ **5 जुलाई 2021** को किया।
- **विभाग :–** स्कूल शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
- **उद्देश्य :–**
  1. 2026-27 तक कक्षा 03 (3 वर्ष से 9 वर्ष आयु वर्ग) तक के विद्यार्थियों में बुनियादी साक्षरता एवं संख्या ज्ञान की दक्षताओं का विकास कर व्यस्त पाठक व लेखक और समस्या समाधान में सक्षम बनाना।
  2. विद्यार्थियों के अधिगम में खेल-खोज, गतिविधि आधारित, दैनिक जीवन व स्थानीय भाषा को शामिल कर उन्हें समावेशी कक्षा का माहौल प्रदान करना।
  3. शिक्षकों, प्रधानाचार्यों, शिक्षा अधिकारियों और शैक्षणिक संस्थाओं का निरन्तर क्षमता निर्माण करना।
  4. आजीवन सीखने के लिए सभी हितधारकों (शिक्षकों, अभिभावकों, विद्यार्थियों और समुदाय) के साथ सक्रिय रूप से जुड़ना।
- निपुण भारत मिशन के तहत प्रशिक्षण मॉडयूल **RSCERT** उदयपुर द्वारा तैयार किये गये हैं।

पी.एम. विद्यालक्ष्मी योजना (पूर्व नाम-शिक्षा ऋण योजना)

- **प्रारंभ :-** 6 नवम्बर 2024
- **पात्रता :-** वार्षिक पारिवारिक आय 8 लाख से कम
- **उद्देश्य :-** निजी व सरकारी विद्यालयों से 12वीं पास छात्रों को उच्च शिक्षा के लिए वित्तीय सहायता उपलब्ध करवाना।
- **लाभ :-** 4 से 10 लाख तक बिना गारन्टी के ऋण, बैंक दर में 3% ब्याज छूट। 7.5 लाख रुपये तक के लोन के लिए भारत सरकार की तरफ से बैंकों को 75% क्रेडिट गारन्टी दी जायेगी। योजना में वर्ष 2030 तक 3600 करोड़ तक के लगभग खर्च होगें।

इन्सपायर अवार्ड-मानक योजना

- INSPIR = Innovation in Science Pursuit For Inspired Research MANAK = Million Minds Augmenting National Aspiration and Knowledge
- **प्रारम्भ :-** इन्सपायर अवार्ड मानक योजना ''विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग'', भारत सरकार तथा National Innovation Foundation (NIF), गांधीनगर गुजरात द्वारा **2009-10** से संचालित की जा रही है।
- **विभाग :-** विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग, भारत सरकार
- **उद्देश्य :-**

(1) विद्यार्थियों में सृजनात्मक एवं नवाचारी सोच विकसीत करना

(2) देश के युवाओं को विज्ञान की रचनात्मक खोज के उत्साह के बारे में बताना तथा कम उम्र में ही विज्ञान के अध्ययन के लिए प्रतिभा को आकर्षित करना

- **पात्रता :-** सभी मान्यता प्राप्त सरकारी व निजी विद्यालयों में कक्षा **6 से 12** में (सत्र 2025-26 से) अध्ययनरत विद्यार्थी

पीएम श्री योजना

- **प्रारंभ :-** 5 सितम्बर, 2022 को शिक्षक दिवस के अवसर पर
- **पूरानाम :-** PM SHRI (Pradhan Mantri Schools For Rising India)
- **विभाग :-** शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार (Ministry of Education, Government of India)
- **कुल स्कूल :-** 14,500 स्कूल्स
- राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार ये मॉडल स्कूल होंगे।
- इसका प्राथमिक उद्देश्य एक **समावेशी** और **पोषणकारी परिवेश** तैयार करना है, जो प्रत्येक छात्र के **कल्याण तथा सुरक्षा को बढ़ावा** दे, **विविध शिक्षण अनुभव** प्रदान करे एवं **गुणवत्तापूर्ण बुनियादी अवसंरचना एवं संसाधनों तक अभिगम** प्रदान करे।
- योजना की अवधि **सत्र 2022-23 से 2026-27 तक है**, जिसके बाद **राज्यों/केन्द्रशासित प्रदेशों की जिम्मेदारी** होगी कि वे इन स्कूलों द्वारा हासिल किये गये बेंचमार्क को बनाए रखें।

नेशनल मीन्स कम मैरिट छात्रवृति योजना (NMMSS)

- **प्रारंभ :-** मई 2008, मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा।
- **मुख्य उद्देश्य :-** आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के प्रतिभाशाली विद्यार्थियों की 8वीं कक्षा के बाद विद्यालय परित्याग दर (Drop out) को रोक कर उन्हें कक्षा 12 तक अध्ययन करने हेतु प्रोत्साहित करना है।
- **लाभ :-** चयनित विद्यार्थियों को 4 वर्ष की अवधि **(कक्षा 9 से 12 तक)** के लिए ₹12000 वार्षिक छात्रवृति दी जाती है।
- इस योजना के अन्तर्गत कक्षा 8 में उत्तीर्ण विद्यार्थियों के माता-पिता/अभिभावक की समस्त स्रोतों से वार्षिक आय 1.50 लाख रुपये से अधिक नहीं होनी चाहिए।

माध्यमिक स्तर की बालिकाओं के लिए राष्ट्रीय योजना

- **प्रारंभ :-** सत्र 2008-2009 में
- **योजना का नाम :-** National Scheme of Incentive to Girls for Secondary Education
- **मुख्य उद्देश्य :-** बालिकाओं के नामांकन को बढ़ाना तथा माध्यमिक शिक्षा में ड्राप आउट दर को कम करना।
- **लाभ :-** ₹3000 की एक मुश्त F.D.R. (18 वर्ष आयु पूर्ण होने पर और कक्षा 10 की परीक्षा उत्तीर्ण होने पर)
- माध्यमिक शिक्षा के लिए बालिकाओं को प्रोत्साहन की राष्ट्रीय योजना के अन्तर्गत राजकीय / अनुदानित विद्यालय की कक्षा 8 उत्तीर्ण कर कक्षा 9 में प्रवेश लेने वाली अनुसूचित जाति/जनजाति एवं कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालयों की छात्राओं को प्रोत्साहन देने हेतु यह योजना चलाई गई है।

3 विद्यालय प्रबंधन एवं सम्बन्धित समितियाँ

शैक्षिक प्रबन्धन

- ❖ शैक्षिक प्रबन्धन एक नवीन अवधारणा है। जिसमें **'शैक्षिक'** शब्द का अर्थ **'शिक्षा' (Education)** तथा **'प्रबन्धन'** शब्द का अर्थ **'उचित व्यवस्था करना'** (To Manage) है। इस प्रकार **'शिक्षा की उचित व्यवस्था करना'** ही शैक्षिक प्रबन्धन है।
- ❖ शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित नीति निर्माण, निर्देशन, समन्वय तथा नीतियों का क्रियान्वयन शैक्षिक प्रबन्धन के अंग हैं।
- ❖ शैक्षिक प्रबन्धन मुख्यतः दो तत्त्वों पर बल देता है—
  ✧ भौतिक संसाधन ✧ मानवीय संसाधन
- ❖ इस प्रकार शैक्षिक प्रबन्धन मुख्यतः सभी चुनौतियों का सामना करते हुए उपलब्ध भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का प्रयोग कर **देश में उपयोगी नागरिकों के निर्माण** हेतु कार्य करता है। इसी संदर्भ में शिक्षक को राष्ट्र निर्माता कहा जाता है।
- ❖ शैक्षिक प्रबन्धन में तीन बातें महत्त्व पूर्ण हैं—
  1. शैक्षिक योजनाओं का निर्माण करना
  2. इनका क्रियान्वयन करना
  3. योजनाओं का मूल्यांकन करना
- ❖ शैक्षिक प्रबन्धन अध्यापकों के उन सभी प्रयासों की मॉनिटरिंग प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से वे अपने विद्यार्थियों को इस योग्य बना सकें कि **वे देश के उपयोगी नागरिक बन सकें तथा उनके व्यक्तित्व का सर्वांगीण विकास हो सके।**

शैक्षिक प्रबन्धन के उद्देश्य

- ❖ शैक्षिक नीति निर्माण एवं क्रियान्वयन
- ❖ शैक्षिक कार्यों को सम्पादित करना एवं आवश्यक भौतिक एवं मानवीय संसाधनों का प्रबन्ध करना
- ❖ मानवीय संसाधनों की कार्य कुशलता में वृद्धि करना
- ❖ शिक्षण संस्थाओं का निरीक्षण करना
- ❖ शिक्षा हेतु नवीन उद्देश्यों, मूल्यों, सिद्धांतों का निर्धारण करना
- ❖ छात्रों को उपयोगी नागरिक बनाना

शैक्षिक प्रबन्धन की प्रकृति एवं विशेषताएँ

- ❖ **कला और विज्ञान का समन्वय:** शैक्षिक प्रबन्धन सैद्धान्तिक रूप से एक 'सामाजिक विज्ञान' है क्योंकि यह निश्चित नियमों व सिद्धांतों पर आधारित है। व्यावहारिक रूप से यह एक 'कला' है, जिसमें प्रबन्धक अपनी जन्मजात प्रतिभा, कौशल, रचनात्मकता और मौलिकता का उपयोग करता है।
- ❖ **उद्देश्यपूर्ण, गत्यात्मक और निरंतर प्रक्रिया:** यह एक अमूर्त अवधारणा है, जिसका स्वरूप पहले से नियोजित उद्देश्यों को प्राप्त करना (लक्ष्यपरक) होता है। यह एक निरंतर चलने वाली मानवीय क्रिया है जो समय और परिस्थितियों के अनुसार बदलती (गत्यात्मक) रहती है।
- ❖ **सार्वभौमिक और अंतःविषयक दृष्टिकोण:** इसके सिद्धांत सार्वभौमिक हैं, जिन्हें शिक्षा के साथ-साथ सेना, चिकित्सा, राजनीति और व्यवसाय जैसे किसी भी क्षेत्र में लागू किया जा सकता है। साथ ही, इसका स्वरूप अंतः-अनुशासनात्मक है, जिसका संबंध मनोविज्ञान, समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र आदि विषयों से भी है।
- ❖ **सामूहिक और सामाजिक जिम्मेदारी:** शैक्षिक प्रबन्धन का अंतिम उद्देश्य समाज का कल्याण और विकास है। यह संगठन में कार्य-विभाजन पर बल देता है और सामूहिक प्रयासों को व्यवस्थित करके दूसरों से बेहतर कार्य करवाने की कला है।
- ❖ **व्यावसायिक एवं प्रजातांत्रिक स्वरूप:** यह एक विशिष्ट 'पेशे' के रूप में कार्य करता है जो संगठन में अनावश्यक व्यय और गतिरोध को रोकता है। यह सत्तात्मक व्यवस्था होने के साथ-साथ प्रजातांत्रिक मूल्यों की स्थापना पर बल देता है तथा संगठन के सभी स्तरों पर आवश्यक है।

शैक्षिक प्रबन्धन के कार्य

- ❖ शैक्षिक प्रबन्धन के कार्यों में सरकार अथवा कार्यपालिका स्तर पर शैक्षिक नीति निर्माण से लेकर विद्यालय स्तर पर क्रियान्वयन तक के समस्त कार्य शामिल होते हैं। शैक्षिक कार्यों के सन्दर्भ में **हेनरी फेयोल, लूथर गुलिक तथा उर्विक** ने महत्त्वपूर्ण सिद्धांत बताये हैं। सामान्य रूप से शैक्षिक प्रबन्धन के कार्यों को दो भागों में बाँटा जा सकता है—

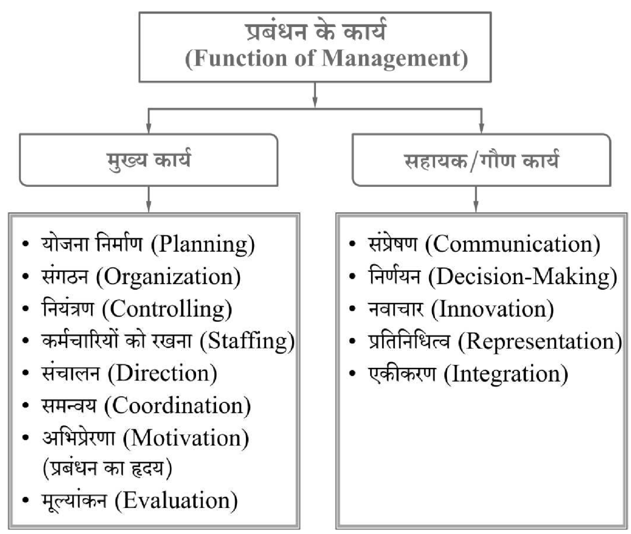

शैक्षिक प्रबन्धन के सिद्धांत

1. **सहयोग का सिद्धान्त**—विद्यालय प्रबन्धन में वांछित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु समस्त कार्मिकों में आपसी सहयोग की भावना होना आवश्यक है क्योंकि संगठन में ही शक्ति होती है। समरसता, अपनत्व की भावना, सौहार्द तथा आपसी सहयोग कार्यस्थल की परिस्थितियों को आनन्ददायी बनाते हैं।
2. **समानता का सिद्धान्त**—संगठन में नियोक्ता-कार्मिक सम्बन्ध तथा

4 राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020
(राजस्थान के परिप्रेक्ष्य में)

❖ स्वतंत्रता के बाद भारत में तीन राष्ट्रीय शिक्षा नीतियाँ लागू की गयी हैं।
  1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1968 (इंदिरा गाँधी के समय)
  2. राष्ट्रीय शिक्षा नीति-1986 (राजीव गाँधी के समय)
     इसमें नरसिम्हा राव सरकार ने 1992 में कुछ संशोधन किये थे।
  3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 (नरेन्द्र मोदी के समय)

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, **21वीं शताब्दी की प्रथम शिक्षा नीति** है जिसका लक्ष्य हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करता है।

❖ भारत सरकार द्वारा 2015 में अपनाए गए सतत् विकास **एजेंडा 2030 के लक्ष्य 4 (एसडीजी 4)** में परिलक्षित वैश्विक शिक्षा विकास एजेंडा के अनुसार विश्व में 2030 तक **''सभी के लिए समावेशी और समान गुणवत्तायुक्त शिक्षा सुनिश्चित करने और जीवन-पर्यन्त शिक्षा के अवसरों को बढ़ावा दिये जाने''** का लक्ष्य है।

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का मसौदा पूर्व इसरो प्रमुख पद्मभूषण प्राप्त **डॉ. के. कस्तूरीरंगन** की अध्यक्षता में गठित समिति द्वारा तैयार किया गया।

❖ **29 जुलाई 2020** को केन्द्रीय केबिनेट ने इसे मंजूरी प्रदान की।

❖ राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सर्वप्रथम **कर्नाटक** में लागू किया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के आधार स्तम्भ

1. सब तक पहुँच (Access)
2. भागीदारी (Equity)
3. गुणवत्ता (Quality)
4. किफायती (Affordability)
5. जवाबदेही (Accountability)

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : भाग व अध्याय

(इसके **4** भाग व **27** अध्याय है)

भाग	अध्याय
1. स्कूल शिक्षा (अध्याय 1 से 8)	1. प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षाः सीखने की नींव
	2. बुनियादी साक्षरता एवं संख्या-ज्ञानः सीखने के लिए एक तात्कालिक आवश्यकता और पूर्वशर्त
	3. ड्रॉपआउट बच्चों की संख्या कम करना और सभी स्तरों पर शिक्षा की सार्वभौमिक पहुँच सुनिश्चित करना
	4. स्कूलों में पाठ्यक्रम और शिक्षण-शास्त्रः अधिगम समग्र, एकीकृत, आनंददायी और रुचिकर होना चाहिए
	5. शिक्षक
	6. समतामूलक और समावेशी शिक्षाः सभी के लिए अधिगम
	7. स्कूल कॉम्प्लेक्स/क्लस्टर के माध्यम से कुशल संसाधन और प्रभावी गवर्नेंस
	8. स्कूली शिक्षा के लिए मानक निर्धारण और प्रत्यायन
2. उच्चतर शिक्षा (अध्याय 9 से 19)	9. गुणवत्तापूर्ण विश्वविद्यालय एवं महाविद्यालयः भारतीय उच्चतर शिक्षा व्यवस्था हेतु एक नया और भविष्योन्मुखी दृष्टिकोण
	10. संस्थागत पुनर्गठन और समेकन
	11. समग्र और बहु-विषयक शिक्षा की ओर
	12. सीखने के लिए अनुकूलतम वातावरण व छात्रों को सहयोग
	13. प्रेरित, सक्रिय और सक्षम संकाय
	14. उच्चतर शिक्षा में समता और समावेश
	15. शिक्षक शिक्षा
	16. व्यावसायिक शिक्षा का नवीन आकल्पन
	17. नवीन राष्ट्रीय अनुसंधान फाउण्डेशन (एनआरएफ) के माध्यम से सभी क्षेत्रों में गुणवत्तायुक्त अकादमिक अनुसंधान को उत्प्रेरित करना
	18. उच्चतर शिक्षा की नियामक प्रणाली में आमूल-चूल परिवर्तन
	19. उच्चतर शिक्षा संस्थानों के लिए प्रभावी शासन और नेतृत्व

Part-II • निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 [Right of Children to Free & Compulsory Education Act-2009]

1 निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009

❖ सर्वप्रथम **गोपाल कृष्ण गोखले** ने भारत में स्कूली शिक्षा को अनिवार्य करने की मांग को लेकर 18 मार्च 1910 को **'गोखले बिल'** प्रस्तुत किया।

❖ महात्मा गाँधी ने **'वर्धा योजना'** (1937) में निःशुल्क शिक्षा पर बल दिया। ये बुनियादी शिक्षा के पक्षदार थे।

❖ 'कोठारी आयोग' ने 1966 में सभी बच्चों को अनिवार्य रूप से स्कूली शिक्षा प्रदान करने की सिफारिश की।

❖ 1993 में उच्चतम न्यायालय का उन्नीकृष्ण बनाम आन्ध्रप्रदेश निर्णय आया जिसमें 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा को मौलिक अधिकार का दर्जा देने की बात कही गयी।

❖ राज्य के **नीति निर्देशक तत्वों** में संविधान के **भाग-4** में **अनुच्छेद-45** के तहत यह प्रावधान किया गया कि राज्य **14 साल** तक के बच्चों को **निःशुल्क तथा अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा** उपलब्ध करवायेगा।

❖ 42वें संविधान संशोधन 1976 द्वारा शिक्षा को राज्य सूची से हटाकर **समवर्ती सूची** में जोड़ा गया था। अतः शिक्षा पर केन्द्र सरकार व राज्य सरकार दोनों कानून बना सकती है।

86वाँ संविधान संशोधन अधिनियम 2002 के तहत किये गये प्रावधान

❖ 86वें संविधान संशोधन अधिनियम 2002 द्वारा भारतीय संविधान में निम्न प्रावधान जोड़े गए जो RTE–2009 के आधार बने–

(1) **मूल अधिकार**—संविधान के भाग 3 में **अनुच्छेद 21(क)** जोड़ा गया जिसके अनुसार राज्य 6–14 वर्ष तक की उम्र के प्रत्येक बच्चे को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा उपलब्ध करवाएगा (यह बच्चों का मूल अधिकार है)।

(2) **नीति निदेशक तत्व**—संविधान के भाग 4 के अनुच्छेद 45 में प्रावधान किया गया कि राज्य 6 वर्ष से कम उम्र के बच्चों की देखभाल करेगा एवं 6 वर्ष की उम्र होने तक शिक्षा उपलब्ध करवाने का प्रयास करेगा।

(3) **मौलिक कर्त्तव्य—संविधान के भाग–4 (क)** के अनुच्छेद **51 क** में नया वाक्यांश **'ट' (k)** जोड़ा गया। इस प्रकार **अनुच्छेद 51 क(ट)** के प्रावधानानुसार प्रत्येक माता-पिता या अभिभावक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह अपने 6 से 14 वर्ष तक के बच्चों को शिक्षा के अवसर प्रदान करें। इस प्रकार संविधान में यह **11वाँ** मूल कर्त्तव्य जोड़ा गया।

निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009

❖ सर्वप्रथम केन्द्र सरकार द्वारा यह विधेयक 20 जुलाई 2009 को **'राज्य सभा'** में पास किया गया।

❖ RTE Act-2009 लोकसभा में 20 जुलाई 2009 को पेश किया गया जिसे **'लोकसभा'** द्वारा 4 अगस्त 2009 को पारित किया गया।

❖ इस पर राष्ट्रपति द्वारा **26 अगस्त 2009** को हस्ताक्षर किये गये (इस प्रकार RTE Act 2009 भारतीय गणराज्य के 60वें वर्ष में 35वाँ अधिनियम बना।)।

❖ राष्ट्रपति के हस्ताक्षर के बाद भारत सरकार द्वारा **27 अगस्त 2009 को गजट (राजपत्र)** में प्रकाशित किया गया।

❖ RTE Act 2009 को **1 अप्रैल 2010** से सम्पूर्ण भारत में लागू किया गया। (जम्मू कश्मीर को छोड़कर)।

> **Note :–** धारा 370 हटने के बाद 5 अगस्त 2019 से RTE Act 2009 के प्रावधान जम्मू कश्मीर तथा लद्दाख में भी लागू है।

❖ RTE Act लागू करने वाला भारत विश्व का 135वाँ देश बना।

❖ विश्व में **नार्वे** प्रथम देश था जिसने 2007 में RTE लागू किया था।

❖ भारत में RTE Act 2009 सर्वप्रथम हरियाणा राज्य में उसके बाद मध्यप्रदेश में लागू किया गया था।

❖ राजस्थान सरकार ने RTE Act 2009 की **धारा 38** में प्रदत्त शक्ति का प्रयोग करते हुए **29 मार्च 2011** को राजस्थान में **''राजस्थान निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार नियमावली 2011''** के नाम से इसके प्रावधान लागू किए।

❖ RTE Act, 2009 में मूल रूप से कुल 7 अध्याय एवं 38 धाराएँ थी लेकिन निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम (संशोधित) 2012 द्वारा धारा 38 के बाद एक धारा और जोड़ दिए जाने से अब 7 अध्याय व 39 धाराएँ हैं।

RTE Act, 2009 के अध्याय एवं धाराएँ

क्र.	अध्याय का नाम	धाराएँ
1.	प्रारम्भिक	धारा 1 व धारा 2
2.	निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का अधिकार	धारा 3 से 5 तक
3.	समुचित सरकार, स्थानीय प्राधिकारी एवं माता-पिता के कर्त्तव्य	धारा 6 से 11 तक
4.	विद्यालयों एवं शिक्षकों के उत्तरदायित्व	धारा 12 से 28 तक
5.	प्रारम्भिक शिक्षा का पाठ्यक्रम एवं उसका पूरा किया जाना	धारा 29 एवं 30
6.	बालकों के अधिकार का संरक्षण	धारा 31 से 34 तक
7.	प्रकीर्ण (अन्य मुख्य बातें)	धारा 35 से 39 तक

अध्याय-1
प्रारम्भिक (धारा 1 से 2 तक)

धारा-1 : संक्षिप्त नाम - विस्तार और आरम्भ

(1) **संक्षिप्त नाम**—''निःशुल्क एवं अनिवार्य बाल शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009'' है।

विद्यालय के लिए मान और मानक

(धारा 19 व 25 के अनुसार)

क्र.सं.	मद	मान और मानक	
1.	**शिक्षकों की संख्या**	**बालकों की संख्या**	**शिक्षकों की संख्या**
	(1) कक्षा 1 से 5 तक (प्राथमिक स्तर)	60 तक	2
		61 से 90	3
		91 से 120	4
		121 से 200	5
		150 से अधिक	5 शिक्षक + 1 प्रधानाध्यापक
		200 से अधिक	छात्र शिक्षक अनुपात (H.M. को छोड़कर 40:1 से अधिक नहीं होगा) परन्तु 200 से कम बालक होने पर छात्र शिक्षक अनुपात **30 : 1** होगा।
	(2) कक्षा 6-8 हेतु (उच्च प्राथमिक स्तर)	1. कम से कम प्रति कक्षा एक शिक्षक इस प्रकार होगा कि निम्नलिखित प्रत्येक विषय के लिए कम से कम एक शिक्षक हो— (i) विज्ञान और गणित (ii) सामाजिक अध्ययन (iii) भाषा 2. छात्र शिक्षक **अनुपात 35 : 1** होगा। (35 बालकों के लिए कम से कम 1 शिक्षक) 3. **जहाँ 100** से अधिक बालक हों, वहाँ निम्न भी होंगे— (i) एक पूर्णकालिक प्रधानाध्यापक (ii) निम्नलिखित के लिए अंशकालिक शिक्षक (अ) कला शिक्षा (ब) स्वास्थ्य एवं शारीरिक शिक्षा (स) कार्य शिक्षा	
2.	भवन (अवसंरचना मापदण्ड)	सभी मौसम वाला भवन जिसमें निम्नलिखित होंगे— 1. प्रत्येक शिक्षक के लिए कम से कम कक्षा और एक कार्यालय सह-भण्डार सह प्रधानाध्यापक का कमरा 2. बाधा मुक्त पहुँच 3. लड़कों और लड़कियों के लिए पृथक शौचालय 4. सभी बालकों के लिए सुरक्षित और पर्याप्त पेयजल सुविधा; 5. जहाँ दोपहर का भोजन विद्यालय में पकाया जाता है, वहाँ **एक रसोई** 6. खेल मैदान 7. सीमा दीवाल या तारों की बाड़ द्वारा विद्यालय भवन की सुरक्षा के लिए व्यवस्थाएँ।	
3.	एक शैक्षिक वर्ष में कार्य दिवस एवं शिक्षण घंटों की **न्यूनतम संख्या**	**कक्षा 1 से 5 हेतु—कार्य दिवस : 200 प्रतिवर्ष शिक्षण घण्टे : 800 प्रतिवर्ष** **कक्षा 6 से 8 हेतु—कार्य दिवस : 220 प्रतिवर्ष शिक्षण घण्टे : 1000 प्रतिवर्ष**	
4.	शिक्षकों हेतु प्रति सप्ताह न्यूनतम कार्य घण्टों की संख्या	**45 शिक्षण घण्टे प्रति सप्ताह तैयारी सहित**	
5.	अध्यापन शिक्षण उपस्कर	प्रत्येक कक्षा के लिए यथा अपेक्षित उपलब्ध करवाए जाएँगे।	
6.	पुस्तकालय	प्रत्येक विद्यालय में एक पुस्तकालय होगा, जिसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और सभी विषयों पर पुस्तकें, जिसके अंतर्गत कहानी की पुस्तकें भी हैं उपलब्ध होंगी।	
7.	खेल सामग्री, खेल और क्रीड़ा उपस्कर	प्रत्येक कक्षा को यथा अपेक्षित उपलब्ध कराए जाएँगे।	

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा अधिनियम, 2009 ..... आयु वर्ग के बालकों को नि:शुल्क और अनिवार्य शिक्षा को सुनिश्चित करता है।

(A) 3 से 18 वर्ष (B) 6 से 14 वर्ष
(C) 6 से 16 वर्ष (D) 6 से 22 वर्ष **[B]**

2. अगर एक उच्च प्राथमिक विद्यालय में कुल 130 विद्यार्थी नामांकित हैं, तब सरकार द्वारा उस विद्यालय में कितने अध्यापकों के स्वीकृत पद होंगे?

(A) 2 (B) 3 (C) 4 (D) 5 **[D]**

3. प्राथमिक स्तर पर RTE अधिनियम 2009 द्वारा विनिर्दिष्ट छात्र शिक्षक अनुपात है—

(A) 25 : 1 (B) 30 : 1 (C) 35 : 1 (D) 40 : 1 **[B]**

4. RTE की धारा 14 सुनिश्चित करती हैं—

(A) किसी बालक की आयु का सबूत न होने के कारण विद्यालय में प्रवेश से इंकार नहीं किया जा सकता।
(B) रोकने और निष्कासन का प्रतिषेध
(C) किसी बालक को शारीरिक दंड नहीं दिया जाएगा या उसका मानसिक उत्पीड़न नहीं किया जाएगा।
(D) ये सभी **[A]**

5. RTE अधिनियम, 2009 के अनुसार एक शैक्षणिक वर्ष में कक्षा 1 से 5 हेतु कार्य दिवसों व शिक्षण घंटों की न्यूनतम संख्या कितनी होगी?

(A) 200 कार्य दिवस, 800 घंटे (B) 200 कार्य दिवस, 1000 घंटे
(C) 210 कार्य दिवस, 600 घंटे (D) 210 कार्य दिवस, 1000 घंटे **[A]**

1 बाल विकास (0 से 6 वर्ष)

बाल विकास का अर्थ एवं परिभाषाएँ

- ❖ विकास एक निरंतर चलने वाली सार्वभौमिक प्रक्रिया है। मानव विकास से तात्पर्य केवल शारीरिक वृद्धि से ही नहीं अपितु विकास के अंतर्गत व्यक्ति का **मानसिक, सामाजिक, नैतिक, सांवेगिक** एवं **भाषायी विकास** भी निहित होता है। इन सभी विकास के स्वरूपों के फलस्वरूप व्यक्ति में अनेक व्यवहारगत, शारीरिक-मानसिक परिवर्तन दिखाई देते हैं।
- ❖ **जैम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''विकास वह दशा है जो प्रगतिशील परिवर्तन के रूप में प्राणी में सतत् रूप में अभिव्यक्त होती है। यह प्रगतिशील परिवर्तन किसी भी प्राणी में भ्रूण अवस्था से लेकर वृद्धावस्था तक होते हैं।''
- ❖ **हरबर्ट सोरेंसन** के अनुसार, ''विकास का अभिप्राय परिपक्वता तथा कार्य-परक सुधार की उस प्रक्रिया से है जो संरचना एवं स्वरूप में हो रहे गुणात्मक तथा परिणात्मक स्वरूपों के फलस्वरूप होती है। विकास अभिवृद्धि (Growth) की अपेक्षा गुणात्मक परिवर्तन का विशिष्ट घोतक है।''
- ❖ **क्रो एवं क्रो** के अनुसार, ''विकासात्मक मनोविज्ञान (Developmental Psychology) को पहले बाल मनोविज्ञान (Child Psychology) के नाम से जाना जाता था, जिसमें व्यक्ति के विकास का अध्ययन गर्भकाल (Conception) के प्रारंभ से किशोर अवस्था की प्रारंभिक अवस्था तक किया जाता था परंतु अब विकासात्मक मनोविज्ञान का विस्तार हो चुका है और इसमें न केवल बाल्यकाल बल्कि सभी आयु स्तर पर व्यवहार का अध्ययन किया जाता है अर्थात् हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में 'विकासात्मक मनोविज्ञान' के अंतर्गत गर्भाधान (Conception) से लेकर मृत्यु तक व्यक्ति के सम्पूर्ण जीवन का अध्ययन किया जाता है।
- ❖ **आईजेंक** के अनुसार, ''बाल मनोविज्ञान का संबंध बालक में मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं के विकास से है। इसमें गर्भकालीन अवस्था, जन्म, शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था और परिपक्व अवस्था तक बालक की विकास प्रक्रियाओं का अध्ययन किया जाता है।''
- ❖ **हरलॉक** के अनुसार, ''बाल विकास (Child Development) में मुख्यत: बालक के व्यवहार, रुचि और लक्ष्य में होने वाले विशिष्ट परिवर्तनों की खोज पर बल दिया जाता है जो उसके एक विकासात्मक अवस्था से दूसरी विकासात्मक अवस्था में पदार्पण करते समय होते हैं। बाल विकास यह खोज करने का प्रयास करता है कि ये परिवर्तन कब होते हैं एवं इसके क्या कारण हैं?''
- ❖ यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि बाल मनोविज्ञान (Child Psychology) को वर्तमान समय में बाल विकास (Child Development) के नाम से जाना जाता है।
- ❖ **'बाल-विकास'** मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जिसमें 'गर्भाधान' (Conception) से लेकर परिपक्वावस्था अथवा किशोरावस्था तक के बालकों में होने वाले सभी प्रकार के परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है।

  उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कह सकते हैं कि **''विकास एक गतिशील, क्रमबद्ध तथा पूर्वकथनीय परिवर्तनों का प्रारूप है जो गर्भाधान (Conception) से प्रारंभ होता है तथा जीवनपर्यंत (Lifelong) चलता रहता है।''**

बाल विकास का उद्देश्य

- ❖ बाल विकास के अर्थ को समझना।
- ❖ बाल विकास की विभिन्न अवस्थाओं एवं प्रक्रियाओं से परिचय प्राप्त करना।
- ❖ विकास और वृद्धि के अन्तर को समझना।
- ❖ बच्चों के विकास को प्रभावित करने वाले विभिन्न (सहायक एवं बाधक) कारकों को जानना।
- ❖ बच्चों को समझ पाने हेतु विभिन्न तरीकों, विधियों को जानना।

बाल्यावस्था की विशेषताएँ

1. **अपेक्षाकृत धीमी शारीरिक वृद्धि**—बाल्यावस्था में वृद्धि प्रक्रिया शैशवावस्था से अपेक्षाकृत धीमी होती है। इस दौरान बच्चे की प्रतिरक्षा और प्रतिरोधक क्षमता तीव्र गति से विकसित होती है।
2. **अवलोकन और प्रयोग के द्वारा सीखना**—बच्चे ज्यादातर अवलोकन और अन्वेषण के द्वारा सीखते हैं (रोल मॉडल) और इसी के आधार पर वस्तुओं और चीजों के बारे में अपनी अवधारणाएं विकसित करते हैं।
3. **अत्यधिक जिज्ञासा**—बच्चे अति जिज्ञासु व्यवहार प्रदर्शित करते हैं और उम्मीद करते हैं कि उनके सवालों का जवाब माता-पिता और शिक्षकों द्वारा प्राथमिकता के आधार पर दिया जाना चाहिए।
4. **शारीरिक गतिविधियाँ**—इस अवस्था के दौरान बच्चे शारीरिक गतिविधियों में ज्यादा संलग्न होते हैं और उनसे लगातार सीखते रहते हैं। दिलचस्प रूप से बच्चे हार्मोनल हस्तक्षेप के कारण बैठना बहुत कम पसंद करते हैं।
5. **संज्ञानात्मक क्षेत्र में तेजी से वृद्धि**—बच्चे वस्तुओं की मानसिक अवधारणा विकसित करना शुरू कर देते हैं। उनमें वस्तु स्थायित्व का गुण, आत्म-केंद्रिता का भाव, जीवात्मवाद और तार्किक विचारों के विकास की प्रक्रिया शुरू हो जाती है ।
6. **शब्दावली में वृद्धि—वाइगोट्सकी** के अनुसार भाषा एक सामाजिक अवधारणा है जिसे कई प्रकार की अंतःक्रिया एवं अनुभव के परिणामस्वरूप सीखा जाता है। **चॉम्स्की** का दावा है कि बच्चे भाषा अर्जन उपकरण और सार्वभौमिक व्याकरण के साथ पैदा होते हैं।
7. **लिंग में अंतर**—इस अवस्था के दौरान (लगभग 7-8 वर्ष) बच्चे

2 शारीरिक विकास

शरीर के विभिन्न अंगों का विकास

बालक का शारीरिक विकास

- ❖ बालक के विकास का एक महत्त्वपूर्ण पक्ष उसका शारीरिक विकास है। हमारे शरीर के आंतरिक तथा बाह्य अवयवों में जन्म से लेकर मृत्यु तक कुछ ना कुछ परिवर्तन होते रहते हैं, परिवर्तनों की इस प्रक्रिया को ही शारीरिक विकास का नाम दिया जाता है।
- ❖ शारीरिक विकास के अंतर्गत शरीर की संरचना, मांसपेशीय वृद्धि, गामक तंत्र, अंत:स्त्रावी ग्रंथियाँ तथा अन्य शारीरिक परिवर्तन मुख्य रूप से आते हैं।
- ❖ बालक के शारीरिक विकास के अंतर्गत मुख्यत: निम्नलिखित परिवर्तनों का अध्ययन किया जाता है–

(1) तंत्रिका तंत्र का विकास

- ❖ तंत्रिका तंत्र का विकास गर्भकालीन अवस्था से ही प्रारंभ हो जाता है, 6 माह के गर्भ में लगभग 1 अरब से अधिक तंत्रिका कोश होते हैं। इन्ही तंत्रिका कोशों के आपस में मिलने से तंत्रिका तंत्र का निर्माण होता है।

(2) मस्तिष्क का विकास

- ❖ जन्म के समय नवजात शिशु के मस्तिष्क का भार लगभग 350 ग्राम होता है। जबकि प्रौढ़ अवस्था तक आते-आते मस्तिष्क का भार बढ़कर 1200 से 1400 ग्राम हो जाता है।
  जन्म के समय शिशु के मस्तिष्क का भार शरीर के कुल भाग का 1/8 भाग होता है, 10 वर्ष की आयु में 1/18 तथा 15 वर्ष की आयु में 1/40 भाग हो जाता है।

(3) हृदय एवं रक्त परिसंचरण तंत्र

- ❖ शिशु के हृदय की धड़कन गर्भाधान के समय से लगभग तीन सप्ताह अर्थात् 21 दिन के बाद प्रारंभ हो जाती है। हृदय का भार 6 वर्ष की आयु आते-आते जन्म के समय से लगभग 4 से 5 गुना हो जाता है।

(4) रक्तचाप

- ❖ रक्तचाप शैशवावस्था में कम होता है। यह शैशवावस्था में लगभग 40 mmHg होता है, जो बाद में प्रौढ़ अवस्था आते-आते सामान्यत: 120 mm Hg रहता है। जन्म के समय शिशु की नाड़ी गति अर्थात् हृदय गति लगभग 130 प्रति मिनट, 3 वर्ष में 95 प्रति मिनट, 9वें वर्ष में 80 प्रति मिनट, 13वे वर्ष में 73 प्रति मिनट और 20 वर्ष की आयु में 62 प्रति मिनट के लगभग रहती है।

(5) कंकाल एवं हड्डियों का विकास

कंकाल तंत्र या हड्डियों के विकास से तात्पर्य हड्डियों की वृद्धि, उनकी संख्या में परिवर्तन तथा शारीरिक ढाँचे में समय के साथ परिवर्तन से है। व्यक्ति की अस्थि/हड्डियों का निर्माण गर्भकालीन अवस्था से ही प्रारंभ हो जाता है लेकिन गर्भकालीन अवस्था में ये अत्यधिक मुलायम होती है एवं इनमें दृढ़ता की कमी होती है।

- ❖ नवजात शिशु में जन्म के समय में लगभग 270 हड्डियाँ होती हैं, ये छोटी मुलायम एवं झरझरी होती हैं। 13 से 14 माह के शिशु में हड्डियों की संख्या लगभग 350 तक हो जाती है।
- ❖ धीरे-धीरे खनिज पदार्थो एवं कैल्शियम के अंत:ग्रहण के परिणामस्वरूप हड्डियों में कठोरता आ जाती है तथा वह एक-दूसरे से जुड़ने लगती है जिससे हड्डियों की संख्या में पुन: कमी आने लगती है तथा पूर्ण परिपक्व अवस्था प्राप्त करने के बाद बालक में हड्डियों की कुल संख्या 206 रह जाती है।

(6) लंबाई में वृद्धि

- ❖ जन्म के समय शिशु की लंबाई सामान्यत: 17 से 22 इंच (43cm से 56cm) के मध्य होती है। बालक की लंबाई में प्रथम दो वर्षों में (शैशवावस्था में) तीव्र गति से विकास होता है; बाद में यह गति थोड़ी धीमी हो जाती है।

(7) भार/वजन में वृद्धि

- ❖ जन्म के समय नवजात शिशु का भार लगभग 7½ पौण्ड या 3½ kg के लगभग होता है। बालिकाओं का भार लगभग 7 पौंड अथवा 3 किलोग्राम के लगभग होता है। भार में वृद्धि के परिणामस्वरूप एक वर्ष में ही यह भार जन्म के समय से तिगुना हो जाता है।

(8) शारीरिक अनुपात में परिवर्तन

- ❖ जन्म के समय बालक का शारीरिक अनुपात एवं अन्य अवस्थाओं के शारीरिक अनुपात में भिन्नता होती है। बालक के शरीर के अनेक अंगों का विकास भिन्न-भिन्न अनुपात में होता है। शरीर के सभी अंगों में परिपक्वता एक साथ घटित नहीं होती, भिन्न-भिन्न समय पर भिन्न-भिन्न अंग परिपक्वता ग्रहण करते हैं। शरीर के अनुपातिक परिवर्तन एक निश्चित दिशा का अनुसरण करते हैं जो क्रमश: **सिर, चेहरा, धड़ (छाती/सीना), हाथ-पैर, दाँत** आदि के रूप में दृष्टिगोचर होते हैं। इनमें से कुछ प्रमुख का वर्णन निम्न है—

(i) सिर का विकास—जन्म के समय बालक का सिर उसकी सम्पूर्ण लंबाई का लगभग 1/4 (25 प्रतिशत) होता है, जबकि वयस्क व्यक्ति का सिर उसके शरीर की लंबाई का 1/10 (10 प्रतिशत) भाग होता है। जन्म के समय नवजात शिशु के सिर का व्यास 12-14 इंच के लगभग होता है तथा मस्तिष्क का भार 350 ग्राम होता है जो प्रौढ़ावस्था में 1200-1400 ग्राम हो जाता है। सिर के अनुपातिक परिवर्तन भी एक निश्चित दिशा का अनुसरण करते हैं।

(ii) दाँतों का विकास—सामान्य रूप से दाँतों का निकलना छ: से आठ माह की आयु से प्रारंभ होता है।

- ✧ प्रारंभ में दूध के दाँत (अस्थायी दाँत) निकलते हैं जिनकी कुल संख्या 20 होती है। बाद में 6-7 वर्ष की आयु में दूध के दाँत टूटने लगते हैं तथा इनके स्थान पर स्थाई दाँत आना प्रारंभ हो जाते हैं।

3 सामाजिक और भावनात्मक विकास

सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले तत्व

- **स्किनर** व **हैरीमन** के अनुसार – 'वातावरण और संगठित सामाजिक साधनों के कुछ ऐसे विशेष कारक हैं, जिनका बालक के सामाजिक विकास की दिशा पर निश्चित और विशिष्ट प्रभाव पड़ता है।'
- **परिवार :** परिवार ही वह स्थान है, जहाँ सबसे पहले बालक का समाजीकरण होता है। परिवार के बड़े लोगों का जैसा आचरण और व्यवहार होता है, बालक वैसा ही आचरण और व्यवहार करने का प्रयत्न करता है। एलिस के अनुसार – 'बालक का विश्वास होता है कि यदि वह बड़े लोगों की भाँति व्यवहार नहीं करेगा, तो वह किसी-न-किसी प्रकार के उपहास का लक्ष्य बनेगा।'
- **शारीरिक व मानसिक विकास :** स्वस्थ और अधिक विकसित मस्तिष्क वाले बालक का सामाजिक विकास अस्वस्थ और कम विकसित मस्तिष्क वाले बालक की अपेक्षा अधिक होता है। **सोरेनसन** के अनुसार – 'जिस प्रकार उत्तम शारीरिक और मानसिक विकास साधारणतः सामाजिक परिपक्वता में योगदान देता है, उसी प्रकार कम शारीरिक और मानसिक विकास, बालक की सामाजिकता की गति मन्द कर देता है।'
- **आर्थिक स्थिति :** माता-पिता की आर्थिक स्थिति का बालक के सामाजिक विकास पर उचित या अनुचित प्रभाव पड़ता है; उदाहरणार्थ, धनी माता-पिता के बालक अच्छे पड़ोस में रहते हैं। अच्छे व्यक्तियों से मिलते-जुलते हैं और अच्छे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करते हैं। स्वाभाविक रूप से ऐसे बालकों का सामाजिक विकास उन बालकों से कहीं अधिक उत्तम होता है, जिन्हें निर्धन माता-पिता की सन्तान होने के कारण इस प्रकार की किसी भी सुविधा के कभी दर्शन नहीं होते हैं।
- **वंशानुक्रम :** कुछ मनोवैज्ञानिकों का मत है कि बालक के सामाजिक विकास पर वंशानुक्रम का कुछ सीमा तक प्रभाव पड़ता है। इनकी पुष्टि में क्रो एवं क्रो का मत है – 'शिशु की पहली मुस्कान या उसका कोई विशिष्ट व्यवहार वंशानुक्रम से उत्पन्न होने वाला हो सकता है।'
- **संवेगात्मक विकास :** बालक के सामाजिक विकास का एक महत्वपूर्ण आधार उसका संवेगात्मक विकास है। **क्रोध** व **ईर्ष्या** करने वाला बालक दूसरों की घृणा का पात्र बन जाता है। इसके विपरीत, प्रेम और विनोद से परिपूर्ण बालक सभी को अपनी ओर आकर्षित करता है। ऐसी स्थिति में दोनों बालकों के सामाजिक विकास में अन्तर होना स्वाभाविक है। क्रो एवं क्रो के अनुसार – **'संवेगात्मक और सामाजिक विकास साथ-साथ चलते हैं।'**
- **पालन-पोषण की विधि :** माता-पिता द्वारा बालक के पालन-पोषण की विधि उसके सामाजिक विकास पर बहुत प्रभाव डालती है; उदाहरणार्थ, समानता के आधार पर पाला जाने वाला बालक कहीं भी अपनी हीनता का अनुभव नहीं करता है और बहुत लाड़-प्यार से पाला जाने वाला बालक दूसरे बालकों से दूर रहना पसन्द करता है। अतः दोनों का सामाजिक विकास दो भिन्न दिशाओं में होता है।
- **विद्यालय :** बालक के सामाजिक विकास के दृष्टिकोण से परिवार के बाद विद्यालय का स्थान सबसे अधिक महत्वपूर्ण है। यदि विद्यालय का वातावरण जनतंत्रीय है, तो बालक का सामाजिक विकास अविराम गति से उत्तम रूप ग्रहण करता चला जाता है। इसके विपरीत, यदि विद्यालय का वातावरण एकतंत्रीय सिद्धान्तों के अनुसार दण्ड और दमन पर आधारित है तो बालक का सामाजिक विकास कुण्ठित हो जाता है।
- **खेल-कूद :** बालक के सामाजिक विकास में खेल-कूद का विशेष स्थान है। खेल द्वारा ही वह अपनी सामाजिक प्रवृत्तियों और सामाजिक व्यवहार का प्रदर्शन करता है। खेल द्वारा ही उसमें उन सामाजिक गुणों का विकास होता है, जिनकी उसको आजीवन आवश्यकता रहती है। अतः खेल के अभाव में बालक का सामाजिक विकास पीछे रह जाना स्वाभाविक है।
- **स्किनर** एवं **हैरिमैन** के अनुसार –'खेल का मैदान बालक का निर्माण-स्थल है। यहाँ उसे प्रदान किये जाने वाले सामाजिक और यांत्रिक उपकरण उसके सामाजिक विकास को निश्चित करने में सहायता देते हैं।'
- **सामाजिक व्यवस्था :** सामाजिक व्यवस्था, बालक के सामाजिक विकास को एक निश्चित रूप और दिशा प्रदान करती है। समाज के कार्य, आदर्श और प्रतिमान बालक के दृष्टिकोणों का निर्माण करते हैं। यही कारण है कि ग्राम और नगर, जनतन्त्र और अधिनायकत्व में बालक का सामाजिक विकास विभिन्न प्रकार से होता है।
- **शिक्षक :** बालक के सामाजिक विकास पर शिक्षक का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। यदि शिक्षक शिष्ट, शान्त और सहयोगी है, तो उसके छात्र भी उसी के समान व्यवहार करते हैं। इसके विपरीत, यदि शिक्षक अशिष्ट, क्रोधी और असहयोगी है, तो उसके विद्यार्थी भी उसी के समान बन जाते हैं। योग्य शिक्षकों का सम्पर्क बालक के सामाजिक विकास पर निश्चित प्रभाव डालता है।
- **स्ट्रेंग** के अनुसार – 'वास्तविक सामाजिक ग्रहणशीलता और योग्यता वाले शिक्षकों से दैनिक सम्पर्क, बालक के सामाजिक विकास में अतिशय योगदान देता है।'
- **समूह :** समूह या टोली के सदस्य के रूप में बालक इतना व्यवहार-कुशल हो जाता है कि समाज में प्रवेश करने के बाद उसे किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव नहीं होता है।
- **हरलॉक** के अनुसार-'समूह के प्रभावों के कारण बालक सामाजिक व्यवहार का ऐसा महत्वपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त करता है जैसे प्रौढ़-समाज द्वारा निर्धारित की गई दशाओं में उतनी सफलता से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।
- **अन्य कारक :** बालक के सामाजिक विकास को प्रभावित करने वाले अन्य महत्वपूर्ण कारक हैं – **संस्कृति, कैम्प-जीवन, रेडियो, सिनेमा, समाचार-पत्र** और **पत्रिकाएँ**।

4 भाषाई विकास

जीवन के प्रथम 6 वर्षों में भाषा के विकास की अवस्थाएँ

❖ मानव जीवन के विकास में सबसे आधिक योगदान भाषा का ही रहता है। मानव एक सामाजिक प्राणी है उसे समाज में रह कर ही सारे काम पूरे करने पड़ते हैं। वैसे ही उसे अपने मन के भावों, विचारों, अनुभवों आदि को दूसरों तक पहुँचाने के लिए तथा उनके विचारों आदि ग्रहण करने के लिए भाषा को ही माध्यम बनाना पड़ता है।

❖ प्रकृति ने मानव को वाणी देकर ही उसे शेष सभी प्राणियों से श्रेष्ठ बना दिया है। सभी की अपनी भाषा होती है चाहे वह मानव हो या पशु-पक्षी। भाषा को वैचारिक आदान-प्रदान का माध्यम कहा जाता है भाषा के बिना मनुष्य सर्वथा अपूर्ण है और अपने इतिहास तथा परम्परा से विच्छिन्न है।

❖ ऐसी प्रक्रिया है जो मानव जीवन में बहुत पहले आरम्भ हो जाती है। नवजात बिना किसी भाषा के जन्म लेता है किन्तु मात्र 10 मास में ही बोली गयी बातों को अन्य ध्वनियों से अलग करने में सक्षम हो गया होता है। विकास एक प्रक्रिया है जिसे मानवीय जीवन की शुरुआत में शुरू किया जाता है।

❖ शिशुओं का विकास भाषा के बिना शुरू होता है, फिर भी 10 महीने तक, बच्चे भाषण की आवाज को अलग कर सकते हैं और वे अपनी मां की आवाज़ और भाषण पैटर्न पहचानने लगते है और जन्म के बाद अन्य ध्वनियों से उन्हें अलग करने लगते है।

❖ भाषा के विकास को सीखने की साधारण प्रक्रियाओं के द्वारा आगे बढ़ना माना जाता है जिसमें बच्चों को भाषाई इनपुट से शब्दों, अर्थों और शब्दों के प्रयोग और बोलने का उपयोग होता है।

भाषा और विकास

❖ भाषा की उत्पत्ति का सम्बंध इस बात से हैं कि मानव ने सर्वप्रथम किस काल में अपने मुख से निसृत होनेवाली ध्वनियों को वस्तुओं-पदार्थों, भावों से जोड़ा। इतिहास के किस काल में मानव ने सामूहिक स्तर पर यह निश्चय किया कि किस शब्द का क्या अर्थ होगा।

❖ भाषा विकास बौद्धिक विकास की सर्वाधिक उत्तम कसौटी मानी जाती है। बालक को सर्वप्रथम भाषाज्ञान परिवार से होता है। **कार्ल सी गैरिसन** के अनुसार ''स्कूल जाने से पूर्व बालकों में भाषा ज्ञान का विकास उनके बौद्धिक विकास की सबसे अच्छी कसौटी है।''

❖ भाषा का विकास भी विकास के अन्य पहलुओं के लाक्षणिक सिद्धान्तों के अनुसार होता है। यह विकास परिपक्वता तथा अधिगम दोनों के फलस्वरूप होता है और इसमें नयी अनुक्रियाएँ सीखनी होती है और पहले की सीखी हुई अनुक्रियाओं का परिष्कार भी करना होता है।

❖ बालकों के विकास में विभिन्न आयाम होते हैं। भाषा उन्हीं में से एक है। भाषा को अर्जित किया जा सकता है, यह अर्जन बालक के जन्म से ही शुरू हो जाता है। अनुकरण, वातावरण के साथ अनुक्रिया, शारीरिक, सामाजिक व मनोवैज्ञानिक आवश्यकताओं की पूर्ति की मांग इसमें विशेष भूमिका निभाती है।

भाषा के भाग

(1) स्वनिम
(2) रूपिम
(3) वाक्य विन्यास
(4) अर्थ विन्यास

भाषा विकास की प्रारंभिक अवस्था

❖ बालक जन्म होते ही रोने-चिल्लाने की कोशिश करता है।

❖ रोने-चिल्लाने के कोई इसके साथ ही वह अन्य ध्वनि निकालने लगता है, यह पूर्ण तरह स्वाभाविक होती है। इन्हें सिखाया नहीं जाता।

❖ हड़बड़ाने की क्रिया, हड़बड़ाने के माध्यम से स्वर व व्यंजन के अभ्यास का अवसर पाते हैं।

❖ दूसरों को सुनकर उन्हें दोहराने की कोशिश करते हैं। इनके द्वारा **आ, ई, उ, ए** इत्यादि को उच्चारित किया जाता है।

❖ हाव-भाव व इशारों की भाषा बालकों को धीरे-धीरे समझ में आने लगती है।

भाषा विकास के चरण

❖ बालक के के भाषा विकास के दो चरण होते हैं जो कि इस प्रकार हैं।

1. प्राक्‌भाषा विकास

❖ **रुदन**—यह भाषा का सबसे पहला विकास होता है। रिबल ने इसे "आपात श्वासन" कहा है।

❖ **बलबलाना** — इस चरण में बालक 2 माह तक स्वर ध्वनियां उत्पन्न करना सीखता है। 3 से 4 माह में स्वर तथा व्यंजन साथ में प्रयोग करता है तथा 12 माह तक अर्थपूर्ण बलबलाना जैसे - **''मा मा, दा दा''** आदि।

❖ **हावभाव**— इस चरण में शिशु शरीर के अंगों के प्रयोग द्वारा अपनी बात समझाना सीखता है। जैसे - खुशी होने पर बाहें फैलाना, खुश होना।

❖ **संवेगिक अभिव्यक्ति (:** भाषा का यह चरण 12 से 13 माह तक रहता है।

2. उत्तर कालीन भाषा विकास

❖ **दूसरों की भाषा समझना**—भाषा विकास की सबसे पहली अवस्था है।

❖ **शब्दावली का निर्माण**— सबसे पहले बालक भूख प्रेरणा से संबंधित शब्द सीखते हैं।

18 माह - 10 शब्द
24 माह - 29 शब्द
इसके बाद - 200 से 300 शब्द

❖ **शब्दों का वाक्य में संगठन**—शब्दों का वाक्य संगठन में बालक इस प्रकार से सीखता है।

2 वर्ष - पहला प्रयास
ढाई वर्ष - संज्ञा + क्रिया
5 वर्ष - सभी शब्द भेदों का प्रयोग
उच्चारण - इस चरण में शिशु अनुकरण से उच्चारण सीखता है।

5 संज्ञानात्मक विकास

ज्ञानेन्द्रियों का महत्व

बच्चों के जीवन में ज्ञानेन्द्रियों का महत्व

❖ मनुष्य के पास पाँच मुख्य ज्ञानेन्द्रियाँ होती हैं—**आँख (दृष्टि), कान (श्रवण), नाक (सूंघना), जीभ (स्वाद), और त्वचा (स्पर्श)।** बच्चों के जीवन में इनका महत्व निम्नलिखित है—

1. **मस्तिष्क का विकास :** जन्म के समय बच्चे के मस्तिष्क में न्यूरॉन्स होते हैं, लेकिन उनके बीच संपर्क नहीं होते। जब बच्चा कुछ देखता, सुनता या छूता है, तो ज्ञानेन्द्रियां मस्तिष्क को संकेत भेजती हैं, जिससे न्यूरल नेटवर्क बनते हैं। ज्ञानेन्द्रियों का जितना अधिक उपयोग होगा, मस्तिष्क उतना ही तेज़ विकसित होगा।
2. **प्रथम शिक्षक :** जब तक बच्चा स्कूल जाना या पढ़ना-लिखना नहीं शुरू करता, तब तक उसकी ये पाँचों ज्ञानेन्द्रियाँ ही उसकी असली शिक्षक होती हैं। वह छूकर जानता है कि आग गर्म है, और चखकर जानता है कि चीनी मीठी है।
3. **संज्ञानात्मक विकास का आधार :** विचार करना, तर्क करना, याद रखना और समस्या सुलझाना— ये सब संज्ञानात्मक कौशल हैं। इनकी शुरुआत ज्ञानेन्द्रियों द्वारा प्राप्त जानकारी से ही होती है। (जैसे- लाल रंग की गेंद देखकर उसे पहचानना और याद रखना)।
4. **पर्यावरण से समायोजन :** ज्ञानेन्द्रियाँ बच्चे को अपने आस-पास के वातावरण को समझने और उसमें सुरक्षित रहने में मदद करती हैं (जैसे- तेज़ आवाज़ सुनकर सतर्क हो जाना)।
5. **भाषा विकास में सहायक:** जब बच्चा किसी सेब को देखता है (आँख), उसे छूता है (त्वचा), उसका स्वाद लेता है (जीभ) और उसी समय माँ बोलती है "यह सेब है" (कान), तब वह उस वस्तु को एक शब्द ('सेब') से जोड़ पाता है।

ज्ञानेन्द्रियों का प्रशिक्षण

❖ ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण का अर्थ यह नहीं है कि हम बच्चे की देखने या सुनने की शारीरिक क्षमता बढ़ा रहे हैं (वह तो प्राकृतिक है)। इसका अर्थ है— **मस्तिष्क को इस योग्य बनाना कि वह ज्ञानेन्द्रियों से मिलने वाली जानकारी को तेज़ी से, सूक्ष्मता से और सही ढंग से पहचान सके।**

❖ **विविधतापूर्ण वातावरण:** बच्चों को अलग-अलग रंग, आकार, बनावट, आवाज़ें और स्वाद का अनुभव करने के अवसर दें।

❖ **प्रकृति से जुड़ाव:** बच्चों को पार्क, बगीचे या मिट्टी में खेलने दें। प्रकृति ज्ञानेन्द्रियों के प्रशिक्षण का सबसे बड़ा स्कूल है।

❖ **पृथक्करण के खेल:** किसी एक ज्ञानेन्द्रिय को तेज़ करने के लिए बाकी ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग कुछ देर के लिए रोक देना। (जैसे- बच्चे की आँखों पर पट्टी बांधकर उसे चीज़ें छूकर या सूंघकर पहचानने को कहना)। इससे उस विशेष ज्ञानेन्द्रिय की संवेदनशीलता बढ़ती है।

❖ **तुलना और वर्गीकरण:** बच्चों को चीज़ों को छाँटने के लिए कहना (जैसे- "सख्त चीज़ें एक तरफ रखो और मुलायम चीज़ें दूसरी तरफ")।

ज्ञानेन्द्रियों से सम्बन्धित न्यूनतम सीखने की दक्षताएँ

❖ पूर्व-प्राथमिक स्तर पर एक सामान्य बच्चे से यह अपेक्षा की जाती है कि वह अपनी पांचों ज्ञानेन्द्रियों का उपयोग करके कम से कम निम्नलिखित बुनियादी बातें (दक्षताएँ) सीख ले—

1. **दृष्टि ज्ञानेन्द्रिय की दक्षताएँ:**

❖ **रंगों की पहचान:** प्राथमिक रंगों (लाल, पीला, नीला, हरा आदि) को पहचानना और उनमें अंतर कर पाना।

❖ **आकार की पहचान:** बुनियादी आकृतियों **(गोल, चौकोर, तिकोना)** को देखकर पहचानना।

❖ **आकार और दूरी का ज्ञान:** बड़ा-छोटा, लंबा-छोटा, मोटा-पतला, और पास-दूर का अंतर देखकर बता पाना।

❖ **दृष्टि-भेद :** बहुत सी एक जैसी चीज़ों में से किसी अलग चीज़ को छांट लेना (जैसे- बहुत सारे सेबों के बीच रखे एक टमाटर को पहचान लेना)।

2. **श्रवण ज्ञानेन्द्रिय (कान) की दक्षताएँ:**

❖ **आवाज़ों की पहचान:** जानवरों की आवाज़ें, वाहनों की आवाज़ें और परिवार के सदस्यों की आवाज़ों को बिना देखे पहचानना।

❖ **तीव्रता का ज्ञान:** तेज़ और धीमी आवाज़ में अंतर कर पाना।

❖ **दिशा का ज्ञान:** आवाज़ किस दिशा से आ रही है, यह बता पाना।

❖ **ध्वनि-भेद :** मिलती-जुलती ध्वनियों या तुकबंदी वाले शब्दों (जैसे- काम, नाम) के बीच के अंतर को सुनकर समझना।

3. **स्पर्श ज्ञानेन्द्रिय (त्वचा/हाथ) की दक्षताएँ:**

❖ **तापमान का ज्ञान:** छूकर गर्म और ठंडे के बीच स्पष्ट अंतर बता पाना।

❖ **बनावट का ज्ञान:** बिना देखे छूकर बता पाना कि कोई वस्तु खुरदरी है या चिकनी।

❖ **कठोरता का ज्ञान:** सख्त (जैसे लकड़ी) और मुलायम (जैसे रुई) वस्तुओं को छूकर अलग कर पाना।

❖ **वज़न का आभास:** हाथों में पकड़कर भारी और हल्की वस्तु का अनुमान लगाना।

4. **स्वाद ज्ञानेन्द्रिय (जीभ) की दक्षताएँ:**

❖ **बुनियादी स्वादों की पहचान:** मीठा, खट्टा, नमकीन, और कड़वा/तीखा स्वाद पहचानना।

❖ **स्वाद के आधार पर वर्गीकरण:** आँखें बंद करके नींबू (खट्टा) और चीनी (मीठा) का स्वाद बता पाना।

❖ अपनी पसंद और नापसंद के स्वाद को स्पष्ट रूप से बता पाना।

5. **घ्राण ज्ञानेन्द्रिय (नाक) की दक्षताएँ:**

❖ **सुगंध और दुर्गंध का अंतर:** अच्छी गंध (जैसे फूल या परफ्यूम) और

6 सृजनात्मक विकास

सृजनात्मकता का अर्थ

❖ सृजनात्मकता शब्द अंग्रेजी शब्द का हिन्दी रूपान्तर है। सृजनात्मकता **'सर्जन'** शब्द से बना है। सर्जन शब्द द्वारा शून्य से किसी रचना का आभास होता है। सृजनात्मकता का अर्थ है, ज्ञात शब्द को नवीन रूप में प्रस्तुत करना।

❖ मनुष्य की सृजनात्मकता की मात्रा उसके आयाम तथा बौद्धिक क्षमता पर निर्भर करती है। मनुष्य नवीन परिस्थितियों के साथ समायोजन करने में समर्थ होता है तथा अपनी सृजनात्मकता का विकास वैज्ञानिक, तकनीकी तथा औद्योगिक विकास के साथ सार्थक रूप से कर सकता है।

सृजनात्मकता की परिभाषाएँ

❖ **स्कीनर के अनुसार,** ''सृजनात्मक चिन्तन का अर्थ है कि व्यक्ति की भविष्यवाणियाँ या निष्कर्ष नवीन मौलिक **अन्वेषणात्मक तथा असाधारण** हों सृजनात्मक चिन्तन वह है जो नए क्षेत्र की खोज करता है, नए निरीक्षण करता है, नई भविष्यवाणियाँ करता है और नए निष्कर्ष निकालता है।''

❖ **जेम्स ड्रेवर के अनुसार,** ''अनिवार्य रूप से किसी नूतन वस्तु का सृजन करना, रचना करना जिसमें नवीन विचार संग्रहीत हों, जिसमें विचारों का संश्लेषण हो और जहाँ मानसिक उत्पाद केवल विचारों या योगमात्र हो।''

❖ **गेटजल्स और मेडन्स** ने सृजनात्मक बालकों की पहचान विधियों को निम्नलिखित पाँच भागों में बाँटा था—

✧ **सृजनात्मकता परीक्षण अंक—टोरेन्स, गिलफोर्ड, मेडिनिक** आदि कुछ मनोवैज्ञानिकों ने सृजनात्मकता परीक्षण बनाये हैं। भारत में **पासी, बाकर मेहदी, कौल, मजूमदार** आदि ने भी इस प्रकार के परीक्षण बनाये हैं।

✧ **मापनी**—साथियों, अध्यापकों, निरीक्षकों, प्रधानाचार्यों अथवा मनोवैज्ञानिकों द्वारा मापनी की सहायता से सृजनात्मक बालकों का पता लगाया जा सकता है।

✧ **उपलब्धि**—अत्यन्त उच्च श्रेणी की उपलब्धि सृजनात्मकता को बताती है।

✧ **बुद्धि**—बुद्धि लब्धि परीक्षण भी उच्च बुद्धि सृजनात्मकता के द्योतक हैं।

✧ **व्यक्तित्व**—सृजनात्मक व्यक्तित्व की विशेषताओं के आधार पर सृजनात्मक बालकों की पहचान की जा सकती है।

❖ **क्रो एवं क्रो** के अनुसार ''सृजनशीलता मौलिक परिणामों को अभिव्यक्त करने की एक मानसिक प्रक्रिया है।

❖ **कॉल एवं ब्रुस** के अनुसार सृजनशीलता मौलिक उत्पाद के रूप में मानव मस्तिष्क को समझने, व्यक्त करने तथा सराहना करने की योग्यता व क्रिया है।''

सृजनात्मकता के तत्त्व

❖ **गिलफोर्ड** (1950) के अनुसार, सृजनात्मकता अभिसारी चिंतन के विपरीत अपसारी चिंतन से संबंधित है । अभिसारी चिंतन पारंपरिक सोच प्रक्रिया को सूचित करता है जहाँ अपसारी चिंतन इससे अलग है।

❖ अपसारी चिंतन में भिन्न-भिन्न प्रकार के विचार एवं संभावनाएँ होती हैं। जैसे - सोचिए कि आप एक ईंट का प्रयोग कितने तरीके से कर सकते हैं। हमारी शिक्षा प्रणाली प्रायः अपसारी चिंतन से अधिक प्रोत्साहन अभिसारी चिंतन को देती है जिसमें विद्यार्थियों से **'विशिष्ट'** उत्तर देने के बजाय **'सही'** उत्तर देने की अपेक्षा होती है।

❖ सृजनात्मकता का एक पहलू अपसारी चिंतन है। इसमें चार प्रक्रियाएँ/पहलू निहित हैं जैसे—

✧ **प्रवाह**—इसका अर्थ है कि व्यक्ति कितनी जल्दी से अनेक विचार उत्पन्न कर सकता है। यह शब्दों, विचारों, अभिव्यक्ति या संबंद्ध के रूप में हो सकता है।
उदाहरण—विशेष अक्षरों को निहित करते हुए शब्दों को लिखिए जैसे - पी से **'पॉट'**, **'हॉप'**, **'ऑप्शन'** आदि।

✧ **नम्यता**—यह विचारों की विस्तृत विविधता को उत्पन्न करने से संबंधित है। जैसे –

(i) एक विशेष पदार्थ का अनेक प्रकार से प्रयोग करने के बारे में सोचना।

(ii) एक रस्सी या एक अखबार का प्रयोग करने के विभिन्न तरीके की सूची बनाना।

❖ **टोरेंस** के अनुसार **मौलिकता, लचीलापन, धाराप्रवाहिता** सृजनात्मकता के आयाम हैं।

❖ विभिन्न मनोवैज्ञानिकों जैसे—**गिलफोर्ड, टोरेंस, मेडनिक** तथा **वर्नन** ने अपने मनोवैज्ञानिक अध्ययनों के दौरान सृजनात्मकता के मुख्यतया निम्नलिखित तत्त्व बताये हैं—

1. धारा प्रवाहिता

❖ धारा प्रवाहिता से तात्पर्य विभिन्न तरह के विचारों की खुली अभिव्यक्ति से होता है।

❖ एक सृजनात्मक व्यक्ति किसी समस्या के समाधान या किसी वस्तु, कौशल इत्यादि की रचनात्मकता के लिए विचारों को खुला रखता है तथा उसके समाधान एवं निर्माण के लिए सभी प्रकार के विचारों पर मनन करके उनमें से किसी उपयुक्त विचार को ग्रहण कर लेता है।

2. लचीलापन

❖ लचीलेपन से तात्पर्य समस्या के समाधान के लिए विभिन्न ढंगों या तरीकों को अपनाये जाने की क्षमता से होता है।

❖ इससे यह पता चलता है कि व्यक्ति समस्या का कितने तरीकों से समाधान करता है तथा यदि कोई तरीका गलत सिद्ध हो गया है तो नवीन

7 दिव्यांगजन बच्चे, मानसिक स्वास्थ्य एवं स्वच्छता

वर्तमान समाज एवं दिव्यांग बालक की स्वास्थ्यसंबंधी समस्या

❖ दिव्यांगता शब्द का अर्थ 'अलौकिक' या 'दिव्य' है, जो संस्कृत के शब्द 'दिव्य' और 'अंग' से मिलकर बना है।

❖ ऐसे व्यक्ति जिन्हें शारीरिक, मानसिक या इंद्रिय क्षमता में किसी भी प्रकार की कमी होती है, ''दिव्यांग'' कहलाते हैं। जिसका शाब्दिक अर्थ होता है **"अद्वितीय शारीरिक अंग"**। यह शब्द भारतीय समाज में उनकी विशेषता और सम्मान को दर्शाने के लिए चयनित किया गया है।

❖ **'दिव्यांग' शब्द का प्रयोग प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा 15 दिसंबर 2015 को मन की आवाज रेडियो प्रोग्राम में किया गया था।**

❖ विकलांग व्यक्ति शारीरिक या मानसिक रूप से असमर्थ होते हैं, और उन्हें अपंग भी कहा जाता है, जो एक उचित और सम्मानजनक शब्द नहीं है। समाज में इन्हें समानता और सम्मान का हक मिलना चाहिए, और उन्हें भी स्वतंत्रता, समर्थन और सेवाएँ प्राप्त करने का अधिकार होना चाहिए।

❖ दिव्यांगजनों की संख्या भारत में लाखों में है, और उनको जीवन भर कई प्रकार की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। ये चुनौतियाँ शारीरिक पहलु, सामाजिक स्थिति, और व्यक्तिगत स्वतंत्रता सहित होती हैं।

❖ भारत सरकार ने इन व्यक्तियों की मदद के लिए कई कार्यक्रम और योजनाएं शुरू की हैं, जिनमें से कुछ कार्यक्रम **शिक्षा, रोजगार, आरामदायिता,** और **स्वास्थ्य** के क्षेत्रों में संघर्ष कम करने के लिए हैं।

❖ समाज में दिव्यांग जनों को सम्मान और समर्थन की आवश्यकता होती है। उन्हें समाज में समावेशी बनाने, उनकी आत्मविश्वास को बढ़ाने और उनकी स्वतंत्रता को बढ़ाने के लिए सरकारी नीतियों की आवश्यकता होती है।

❖ दिव्यांगजनों की सुविधा हेतु केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार द्वारा अनेक प्रकार की योजनाएँ संचालित हैं, जैसे दिव्यांग पेंशन योजना व सहायक उपकरण योजना, दिव्यांग छात्र/छात्राओं को छात्रवृति योजना, दिव्यांग भरण पोषण योजना दिव्यांगजनों एवं उनके सेवायोजकों को राज्य पुरस्कार, दिव्यांगजनों हेतु शिविरऔर सेमिनार का आयोजन, दिव्यांग युवक-युवती विवाह प्रोत्साहन अनुदान और दिव्यांगजनों हेतु आश्रित कर्मशाला संचालित हैं ।

❖ सरकारी नियमों के अनुसार, एक व्यक्ति को दिव्यांग माना जाता है अगर उसकी विकलांगता का स्तर 40% से अधिक हो। **भारतीय सरकार द्वारा दिव्यांगता अधिकार अधिनियम 2016 के अनुसार**, कई प्रकार की विकलांगता मान्य हैं, जैसे – **दृष्टि हीनता, निम्न दृष्टि, कुष्ठ रोग, श्रवणबाधिकता, बौद्धिक विकलांगता, मानसिक रोग, ऑटिज्म स्पेक्ट्रमडिस ऑर्डर, सेरिब्रल पाल्सी, मस्कुलर डिस्ट्रॉफी, और अन्य।**

❖ दिव्यांगजनों को बहुत सी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, जिसमें से एक स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी शामिल है जिसके कारण उन्हें काम नहीं कर पाना, पढ़ नहीं पाना, नेतृत्व का अभाव आदि की समस्याएं हो सकती हैं। इसलिए, उनको विशेष ध्यान और समर्थन की आवश्यकता होती है।

❖ भारत में विकलांग व्यक्तियों के लिए कई सरकारी और गैर-सरकारी संगठन कार्य कर रही हैं जो विकलांग व्यक्तियों को चिकित्सा सहायता देने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। इन संगठनों द्वारा विभिन्न चिकित्सा,अनेक सामाजिक समर्थन, हरसंभव शिक्षा, और प्रत्येक क्षेत्र में स्वरोजगार आदि सेवाऐं प्रदान की जाती हैं, ताकि वे समाज में अन्य लोगो के समान अपनी भागीदारी व कंधे से कन्धा मिलाकर चल सके।

❖ भारतीय समाज में विकलांग समुदाय एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, लेकिन सामाजिक भेदभाव के कारण वे अक्सर समाज की मुख्य धारा से अलग महसूस करते हैं। विकलांगता उन व्यक्तियों को संकेतित करती है जिन्हें किसी भी शारीरिक या मानसिक विकृति की समस्या होती है, जिसके कारण वे सामान्य व्यक्तियों सेअलग दिखाई देते हैं।

❖ विकलांगता एक ऐसी स्थिति है, जिसमें व्यक्ति की शारीरिक या मानसिक क्षमताओं में कुछ कमी होती है, जिसके कारण उनके लिए कुछ निश्चित गतिविधियां करना और अपने आसपास की दुनिया के साथ अंतःक्रिया करना कठिन होता है। **विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO)** ने दिव्यांगता की परिभाषा को तीन चरणों में विभाजित किया है—

(i) **क्षति**—व्यक्ति के स्वास्थ्य से संबन्धित ऐसी अवस्था जिसमें शरीर के किसी अंग की रचना अथवा कार्य में दोष/अकार्यक्षमता/दुर्बलता होना।

(ii) **दिव्यांगता**—क्षति के कारण दिव्यांगता निर्मित होती है अर्थात् संरचनात्मक अथवा कार्यात्मक क्षति लंबे समय तक रहकर व्यक्ति को उसके दैनिक क्रियाकलापों में रुकावट बन जाती हैं। इस अवस्था को दिव्यांगता कहा जाता हैं।

(iii) **बाधिता**—दिव्यांगता के कारण बाधिता निर्मित होती हैं यानि दैनिक क्रियाकलापों को पूरा करने की अकार्यक्षमता के कारण व्यक्ति को समाज की गतिविधियों और मुख्य धारा में सहभागिता से वंचित होना पड़ता हैं अर्थात, व्यक्ति समाज द्वारा अपेक्षित भूमिका नहीं निभा पाता हैं। इस अवस्था को **बाधिता** कहते हैं।

दिव्यांगता के प्रकार

❖ भारत सरकार द्वारा **दिव्यांगता अधिकार अधिनियम 2016** के तहत मान्यता प्राप्त 21 प्रकार के विकलांगता होती हैं जो निम्न प्रकार हैं—

✧ **अंधापन**—देखने में असमर्थता को ही अंधापन कहते हैं।व्यक्ति की दृष्टि कमजोर होती है। अंधापन विकार वाले व्यक्ति को दूरी, रंग, या क्लियरिटी की समस्याएँ हो सकती हैं।

✧ **कुष्ठ रोग**—बैक्टीरिया के कारण अपंगता होती है। यह एक संक्रामक बीमारी है, जो परिधीय तंत्रिका, त्वचा, आँख, और ऊपरी श्वसन

8 अधिगम-प्रेरणा, हित, अभ्यास एवं आचरण

अधिगम - अर्थ, प्रभावित करने वाले घटक

- ❖ जीवन सतत परिवर्तनशील एवं गतिमान है। एक नवजात शिशु कुछ स्वचालित सहज क्रियाओं के साथ पैदा होता है लेकिन वयस्क होते-होते वह कई जटिल व्यवहारों को करने में समर्थ हो जाता है, यह सीखने से ही संभव हो पाता है।
- ❖ सीखना या अधिगम एक ऐसी प्रक्रिया है जिसे व्यक्ति उचित तरीके से तथा पूर्ण मनोयोग से संपादित करें तो व्यक्ति वह बन सकता है जो वह बनना चाहता है।
- ❖ अधिगम की प्रक्रिया के कारण ही **डॉ. होमी जहाँगीर भाभा, विक्रम साराभाई, ए.पी.जे. अब्दुल कलाम जैसे वैज्ञानिक; महात्मा गाँधी, नेताजी सुभाष चंद्र बोस, डॉ. भीमराव अम्बेडकर, अटल बिहारी वाजपेयी जैसे राष्ट्रीय नेता; सचिन तेंदुलकर, अभिनव बिंद्रा, नीरज चौपड़ा जैसे खिलाड़ियों** के महान व्यक्तित्व का निर्माण हुआ।
- ❖ सामान्य अर्थ में अधिगम व्यवहार में परिवर्तन को कहा जाता है लेकिन सभी तरह से व्यवहार में हुए परिवर्तनों को सीखना नहीं कहा जाता है।
- ❖ व्यवहार में परिवर्तन थकान, परिपक्वता, दवा को खाने, बीमारी, अभिप्रेरणात्मक स्थिति में उतार-चढ़ाव आदि से भी होते हैं, परंतु ऐसे परिवर्तनों को अधिगम नहीं कहा जाता इसके साथ-साथ व्यवहार में होने वाले अस्थाई एवं क्षणिक परिवर्तनों को भी अधिगम में सम्मिलित नहीं किया जाता।
- ❖ मनोविज्ञान में अधिगम से तात्पर्य व्यवहार में होने वाले उन्हीं परिवर्तनों से हैं जो अभ्यास अनुभव एवं प्रशिक्षण के फलस्वरूप होते हैं।

  अत: उपर्युक्त विवरण के आधार पर हम कह सकते हैं कि—

  अभ्यास, अनुभव एवं प्रशिक्षण के फलस्वरूप व्यवहार में सापेक्ष एवं अपेक्षाकृत स्थायी परिवर्तन को अधिगम कहते हैं।
- ❖ **गिलफोर्ड** के अनुसार, ''सीखना व्यवहार के फलस्वरूप व्यवहार में कोई भी परिवर्तन है।''
- ❖ **गेट्स** एवं अन्य के अनुसार, ''अनुभव एवं प्रशिक्षण के द्वारा व्यवहार में परिवर्तन को सीखना कहते हैं।''

अधिगम की प्रक्रिया

- ❖ अधिगम एक विस्तृत और व्यापक प्रक्रिया है। इसमें निरंतरता का गुण पाया जाता है तथा विभिन्न सोपानों/चरणों से गुजर कर यह प्रक्रिया संपन्न होती है।
- ❖ अधिगम की प्रक्रिया मुख्यत: निम्नलिखित क्रमानुसार संपन्न होती है—

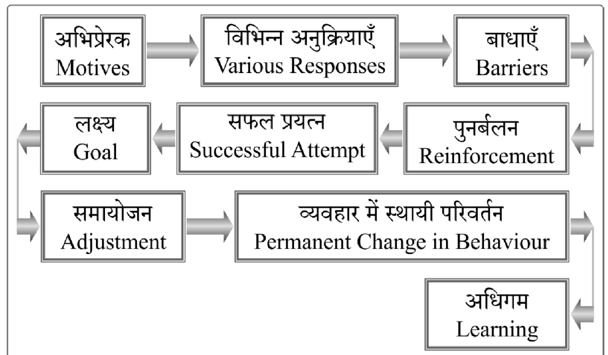

चित्र : अधिगम की प्रक्रिया (Learning Process)

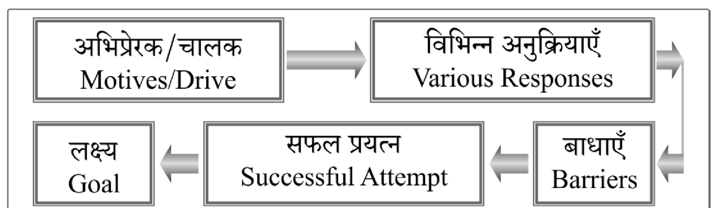

चित्र : स्मिथ के अनुसार अधिगम प्रक्रिया

अधिगम की विशेषताएँ

अधिगम प्रक्रिया की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं—

- ❖ सीखने के द्वारा हमारे व्यवहार में जो परिवर्तन होते हैं वे पूरी तरह से अर्जित होते हैं, यह व्यवहार जन्मजात नहीं होते हैं तथा वंशक्रम के रूप में हमें विरासत में प्राप्त नहीं होते हैं।
- ❖ अधिगम व्यवहार में अपेक्षाकृत स्थाई परिवर्तन है।
- ❖ व्यवहार में परिवर्तन अभ्यास, अनुभव/अनुभूति तथा प्रशिक्षण के फलस्वरूप होते हैं।
- ❖ सीखना जीवन पर्यंत चलने वाली एक सतत प्रक्रिया है।
- ❖ अधिगम एक सक्रिय प्रक्रिया है।
- ❖ अधिगम एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है।
- ❖ अधिगम वातावरण में क्रियाशीलता की उपज है।
- ❖ अधिगम उद्देश्यपूर्ण एवं लक्ष्य निर्देशित होता है।
- ❖ अधिगम एक प्रकार का नवीन अनुभव होता है।
- ❖ अधिगम का स्थानांतरण होता है।
- ❖ अधिगम के माध्यम से शिक्षण-अधिगम उद्देश्यों को प्राप्त किया जा सकता है।
- ❖ अधिगम के द्वारा अधिगमकर्ता को उचित वृद्धि एवं विकास में सहायता पहुँचती है।
- ❖ अधिगम व्यक्तित्व के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है।

9 अध्यापन अधिगम प्रक्रिया एवं प्रणाली विज्ञान

❖ अध्यापन (शिक्षण) और अधिगम एक ऐसी अंतःक्रियात्मक और व्यवस्थित प्रक्रिया है, जिसमें शिक्षक ज्ञान, कौशल और मूल्य छात्र तक पहुँचाता है, और छात्र उसे समझकर अपने व्यवहार में ढालता है।

अधिगम के चरण

❖ **पूर्व ज्ञान से जोड़ना**—नए विषय को छात्र के पुराने ज्ञान से जोड़ा जाता है।
❖ **विषय प्रस्तुति**—शिक्षक सरल तरीकों और सहायक सामग्री से पाठ पढ़ाते हैं।
❖ **सक्रिय सहभागिता**—छात्र चर्चा और गतिविधियों में हिस्सा लेते हैं।
❖ **पुनरावृत्ति और अभ्यास**—सीखी गई बात को पक्का करने के लिए अभ्यास किया जाता है।
❖ **मूल्यांकन और पुष्टि**—फीडबैक के जरिए सुधार किया जाता है।

अध्यापन-अधिगम की प्रक्रिया के चरण

❖ यह प्रक्रिया मुख्य रूप से तीन चरणों में पूरी होती है—
  ✧ **शिक्षण-पूर्व चरण**—इसमें शिक्षक पाठ योजना बनाते हैं, उद्देश्य तय करते हैं और शिक्षण विधियों का चुनाव करते हैं।
  ✧ **शिक्षण-अंतःक्रियात्मक चरण**—इस चरण में शिक्षक और छात्र कक्षा में आमने-सामने होते हैं। ज्ञान का आदान-प्रदान और चर्चा होती है।
  ✧ **शिक्षण-पश्च चरण**—इसमें मूल्यांकन होता है। परीक्षा या प्रश्नों के माध्यम से यह जाँचा जाता है कि छात्र ने कितना सीखा।

प्रक्रिया की विशेषताएँ

❖ **सचेत और उद्देश्यपूर्ण**—यह हमेशा किसी निश्चित लक्ष्य या उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए की जाती है।
❖ **त्रि-ध्रुवीय प्रक्रिया**—इसमें तीन मुख्य बिंदु हैं— शिक्षक, शिक्षार्थी और पाठ्यक्रम।
❖ **व्यवहार में परिवर्तन**—इसका मुख्य लक्षण छात्र के ज्ञान, कौशल और दृष्टिकोण में बदलाव लाना है।
❖ **कला और विज्ञान दोनों**—यह एक कला है क्योंकि इसमें रचनात्मकता चाहिए, और विज्ञान है क्योंकि यह व्यवस्थित नियमों पर चलती है।
❖ **द्वि-मार्गी संचार:** यह केवल एकतरफा भाषण नहीं है, बल्कि इसमें छात्र और शिक्षक दोनों सक्रिय रहते हैं।

अध्यापन-अधिगम के प्रकार

❖ शिक्षण और सीखने के तरीकों को तीन मुख्य भागों में बाँटा जा सकता है—
  ✧ **औपचारिक**—यह स्कूलों, कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में निश्चित पाठ्यक्रम और नियमों के तहत होता है।
  ✧ **अनौपचारिक**—यह जीवनभर चलता है। व्यक्ति अपने परिवार, समाज, मित्रों और अनुभवों से अनजाने में सीखता है।
  ✧ **निरौपचारिक**—यह लचीला होता है। जैसे- डिस्टेंस लर्निंग, ऑनलाइन कोर्सेज या प्रौढ़ शिक्षा।

शिक्षण की प्रमुख विधियाँ

❖ शिक्षकों द्वारा छात्रों को समझाने के लिए अलग-अलग विधियों का प्रयोग किया जाता है—
  ✧ **व्याख्यान विधि**—शिक्षक विषय पर भाषण देते हैं। यह उच्च कक्षाओं के लिए उपयोगी है।
  ✧ **प्रदर्शन विधि**—शिक्षक प्रयोग या मॉडल दिखाकर विषय को स्पष्ट करते हैं।
  ✧ **परियोजना विधि**—छात्र किसी समस्या पर व्यावहारिक रूप से समूह में काम करके सीखते हैं।
  ✧ **आगमन-निगमन विधि**—आगमन में उदाहरण से नियम की ओर और निगमन में नियम से उदाहरण की ओर बढ़ते हैं।
  ✧ **खोज विधि**—छात्र स्वयं शोध और खोज करके ज्ञान प्राप्त करता है।
  ✧ **खेल विधि**—छोटे बच्चों को खेल-खेल में सिखाया जाता है।

अध्यापन-अधिगम के कार्य

❖ इस प्रक्रिया के प्रमुख कार्य निम्नलिखित हैं—
  ✧ **निदानात्मक कार्य**—छात्र की कमजोरियों, समस्याओं और कठिनाइयों की पहचान करना।
  ✧ **उपचारात्मक कार्य**—पहचानी गई समस्याओं को दूर करने के लिए विशेष शिक्षण देना।
  ✧ **मूल्यांकन कार्य**—यह जाँचना कि शिक्षण के उद्देश्य किस हद तक पूरे हुए हैं।
  ✧ **प्रेरणा देना**—छात्रों में सीखने के प्रति रुचि और जिज्ञासा पैदा करना।

अध्यापन-अधिगम का महत्व

❖ **व्यक्तित्व का विकास**—यह छात्र के **शारीरिक, मानसिक, नैतिक** और **सामाजिक विकास** में मदद करता है।
❖ **समाज की प्रगति**—शिक्षित नागरिक एक बेहतर और जागरूक समाज का निर्माण करते हैं।
❖ **आजीविका की तैयारी**—यह छात्रों को भविष्य में रोजगार और आत्मनिर्भर बनने के योग्य बनाती है।
❖ **समस्या समाधान क्षमता**—इसके जरिए छात्र जीवन की चुनौतियों और समस्याओं का सामना करना सीखते हैं।
❖ **संस्कृति का संरक्षण**—इसके माध्यम से ज्ञान और संस्कृति एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी में हस्तांतरित होती है।

10 बच्चों की उपलब्धियों का निर्धारण एवं मूल्यांकन

मूल्यांकन का अर्थ, महत्व एवं प्रकार

- **'मूल्यांकन'** अंग्रेजी शब्द **'इवैलुएशन'** का हिन्दी रूपान्तरण है। इवैलुएशन का अर्थ है—**किसी तथ्य के सम्बन्ध में निर्णय लेना** या **निष्कर्ष निकालना।**
- हिन्दी का **'मूल्यांकन'** शब्द **मूल्य + अंकन** से मिलकर बना है, जिसका अर्थ है—**मूल्य आंकना।**
- **मूल्यांकन विद्यार्थी के ज्ञानात्मक, भावात्मक तथा मनोप्रेरित क्षेत्र को परखने के लिए निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है।** मूल्यांकन का क्षेत्र परीक्षा से विस्तृत है।
- परीक्षा या मापन केवल यह बता सकता है कि किसी विशेष समय परीक्षार्थी की बौद्धिक क्षमता की स्थिति क्या है?
- मूल्यांकन में परीक्षार्थी की बौद्धिक स्थिति जानने के अलावा उस स्थिति का कारण और उसको सुधारने के उपायों पर भी विचार किया जाता है।
- **मूल्यांकन उद्देश्य आधारित होता है।** इसलिए हमारे उद्देश्य मूल्यांकन किए जा सकने वाले होने चाहिए। निर्धारित उद्देश्य हमारी शिक्षण प्रक्रिया का संचालन करते हैं।
- शिक्षा में उद्देश्यों की कितनी पूर्ति हुई, यह जानना ही मूल्यांकन है। उद्देश्य, शिक्षण प्रक्रिया और मूल्यांकन के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध है। इसे हम निम्नांकित त्रिभुज द्वारा समझ सकते हैं—

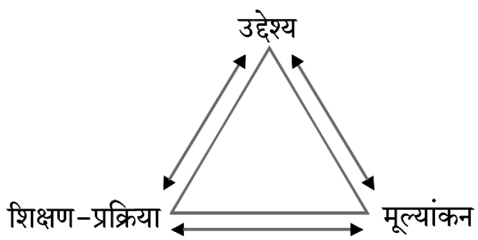

मूल्यांकन की परिभाषाएँ

- **क्रानबेक** के अनुसार, ''मूल्यांकन वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा अध्यापक व छात्र इस बात का निर्णय करते हैं कि शिक्षण के उद्देश्यों को प्राप्त किया जा रहा है या नहीं।''
- **कोठारी आयोग (1966)** के अनुसार, ''मूल्यांकन एक अविरल चलने वाली प्रक्रिया है जो कि समग्र शिक्षा प्रणाली का एक अभिन्न अंग है तथा इसका शैक्षिक उद्देश्यों से घनिष्ठ सम्बन्ध है।''
- **माध्यमिक शिक्षा प्रसार कार्यक्रम निदेशालय** के अनुसार, ''मूल्यांकन का सम्बन्ध सम्पूर्ण शिक्षा कार्य से है। इसका मूल उद्देश्य शिक्षण में सुधार करना है। यह उन कारकों का पता लगाने में समर्थ है जिसका सम्बन्ध छात्र के विकास से होता है।''
- **0 से 6 वर्ष के बच्चों की योग्यता का मूल्यांकन** बाल मनोविज्ञान और प्रारंभिक शिक्षा का एक अत्यंत संवेदनशील और महत्वपूर्ण हिस्सा है।
- जीवन के शुरुआती 6 वर्ष (प्रारंभिक बाल्यावस्था) मानव मस्तिष्क के विकास का 'स्वर्ण काल' होते हैं। इस दौरान बच्चा जितनी तेज़ी से शारीरिक, मानसिक, भाषाई और सामाजिक रूप से विकसित होता है, उतना जीवन में फिर कभी नहीं होता। इसलिए, इस उम्र में बच्चे का सही मूल्यांकन करना उसकी भविष्य की नींव को मजबूत करने के समान है।

मूल्यांकन का अर्थ

- जब हम 'मूल्यांकन' या 'परीक्षा' शब्द सुनते हैं, तो हमारे दिमाग में पेन-पेपर, पास-फेल या ग्रेडिंग का चित्र आता है। लेकिन **0 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए मूल्यांकन का अर्थ इससे बिल्कुल अलग है।**
- **तनावमुक्त अवलोकन:** इस उम्र में मूल्यांकन कोई परीक्षा नहीं है। यह बच्चे के प्राकृतिक माहौल (खेलते समय, खाते समय, बातें करते समय) में उसका **व्यवस्थित अवलोकन** और **प्रलेखन** है।
- **क्षमता की पहचान:** इसका अर्थ यह जाँचना नहीं है कि बच्चा क्या *नहीं* कर सकता, बल्कि यह खोजना है कि बच्चा क्या *कर* सकता है और उसकी रुचियाँ क्या हैं।
- **स्वाभाविक प्रक्रिया:** बच्चा यह नहीं जानता कि उसका मूल्यांकन हो रहा है। वह अपनी स्वाभाविक गतिविधियों (जैसे- ब्लॉक जोड़ना, मिट्टी से खेलना) में व्यस्त रहता है, और शिक्षक/माता-पिता उसकी विकासात्मक प्रगति का आकलन करते हैं।

प्रारंभिक वर्षों में मूल्यांकन का महत्व

- इस आयु वर्ग के लिए मूल्यांकन एक 'निदान' और 'मार्गदर्शक' टूल के रूप में कार्य करता है—

1. **विकासात्मक प्रगति की ट्रैकिंग**—हर उम्र के अपने लक्ष्य होते हैं (जैसे- 1 साल का बच्चा चलेगा, 2 साल का बच्चा छोटे वाक्य बोलेगा)। मूल्यांकन से यह सुनिश्चित होता है कि बच्चा अपने आयु-उपयुक्त शारीरिक, संज्ञानात्मक और सामाजिक पड़ावों को सही समय पर पार कर रहा है।
2. **शुरुआती पहचान और हस्तक्षेप**—यह मूल्यांकन का सबसे बड़ा लाभ है। यदि किसी बच्चे को सुनने में, बोलने में, या सामाजिक घुलने-मिलने (जैसे ऑटिज्म के लक्षण) में कोई विकासात्मक देरी है, तो सही समय पर उसकी पहचान करके तुरंत थेरेपी या विशेष मदद शुरू की जा सकती है। देरी से पहचान होने पर सुधार मुश्किल हो जाता है।
3. **पाठ्यचर्या और शिक्षण विधियों में सुधार**—यदि एक शिक्षक देखता है कि मूल्यांकन में अधिकांश बच्चे रंगों को नहीं पहचान पा रहे हैं, तो शिक्षक को यह समझ आ जाता है कि उसे रंगों को रटाने के बजाय, रंगों के खेल और नई शिक्षण सामग्री का उपयोग करना चाहिए।
4. **माता-पिता को उचित मार्गदर्शन**—अभिभावकों को लगता है कि उनका बच्चा स्कूल में क्या कर रहा है। मूल्यांकन रिपोर्ट के आधार पर

(C) जाँचसूची एवं रेटिंग स्केल
(D) प्री स्कूल प्रोग्राम योजना **[C]**

13. पूर्व बाल्यकाल देखभाल एवं शिक्षा केन्द्र के मूल्यांकन में सम्मिलित है— [NTT 2013]
(A) स्वच्छता एवं सफाई का मूल्यांकन
(B) पाठ्यचर्या मूल्यांकन
(C) जगह एवं खेल सामग्री का मूल्यांकन
(D) उपर्युक्त सभी **[D]**

14. अभिकथन (A): 0 से 6 वर्ष के बच्चों का मूल्यांकन करने के लिए 'सतत अवलोकन' को सबसे प्रामाणिक और 'स्वर्ण नियम' माना जाता है।
कारण (R): इस आयु वर्ग के बच्चों का मूल्यांकन पेन-पेपर टेस्ट या औपचारिक परीक्षाओं के माध्यम से किया जाना चाहिए ताकि वे बचपन से ही परीक्षा के दबाव को झेलना सीख सकें।
उपर्युक्त कथनों के आलोक में, नीचे दिए गए विकल्पों में से सही उत्तर का चयन कीजिए:
(A) (A) और (R) दोनों सही हैं और (R), (A) की सही व्याख्या करता है।
(B) (A) और (R) दोनों सही हैं, लेकिन (R), (A) की सही व्याख्या नहीं करता है।
(C) (A) सही है, लेकिन (R) गलत है।
(D) (A) गलत है, लेकिन (R) सही है। **[C]**

15. 0 से 6 वर्ष के बच्चों के लिए 'मूल्यांकन' का मुख्य उद्देश्य क्या होता है?
(A) उन्हें पास या फेल करना
(B) ग्रेडिंग देना
(C) यह खोजना कि बच्चा क्या कर सकता है और उसकी रुचियाँ क्या हैं।
(D) बच्चों की कमियों पर उन्हें डाँटना **[C]**

16. शिक्षक द्वारा किसी डायरी में बच्चे के जीवन की किसी विशिष्ट घटना का तथ्यात्मक रिकॉर्ड रखना क्या कहलाता है?
(A) पोर्टफोलियो (B) चेकलिस्ट
(C) उपाख्यानात्मक रिकॉर्ड (D) रेटिंग स्केल **[C]**

17. बच्चों की रचनात्मकता और प्रगति का एक 'विजुअल एल्बम' या 'दस्तावेज़ी साक्ष्य', जिसमें उनके चित्र, तस्वीरें और गतिविधियाँ इकट्ठी की जाती हैं, उसे क्या कहते हैं?
(A) चेकलिस्ट (B) पोर्टफोलियो
(C) रेटिंग स्केल (D) स्क्रीनिंग टेस्ट **[B]**

18. 1 महीने से 3.5 वर्ष के बहुत छोटे बच्चों के सूक्ष्म मूल्यांकन के लिए 'स्वर्ण मानक' नैदानिक उपकरण किसे माना जाता है?
(A) CAT (चिल्ड्रेन एपरसेप्शन टेस्ट)
(B) BSID (बेले स्केल्स ऑफ इन्फेंट डेवलपमेंट)
(C) ASQ
(D) समय नमूनाकरण **[B]**

19. मूल्यांकन का क्या अर्थ है?
(A) जाँचना (B) परखना
(C) परीक्षा लेना (D) निर्णय देना **[D]**

20. मूल्यांकन एवं परीक्षा में अन्तर है—
(A) पाठ्यक्रम की दृष्टि से
(B) व्यापकता की दृष्टि से
(C) अंकन की दृष्टि से
(D) औपचारिकता की दृष्टि से **[B]**

21. मूल्यांकन द्वारा परीक्षण किया जाता है—
(A) छात्र का (B) शिक्षक का
(C) पाठ्यक्रम का (D) अभिभावक का **[B]**

22. जब मूल्यांकन द्वारा अभीष्ट लक्ष्य का ही मापन होता है, जब वह परीक्षण कहा जाएगा—
(A) वस्तुनिष्ठ (B) व्यावहारिक
(C) वैध (D) व्यापक **[C]**

23. किसी विशेष समय विद्यार्थी की बौद्धिक क्षमता का पता लगाया जाता है—
(A) मापन द्वारा (B) मूल्यांकन द्वारा
(C) उद्देश्य द्वारा (D) लक्ष्य द्वारा **[A]**

24. मूल्यांकन के विशिष्ट क्षेत्र में सम्मिलित है—
(A) चारित्रिक विकास (B) शारीरिक विकास
(C) सामाजिक विकास (D) उपर्युक्त सभी **[D]**

25. प्राथमिक कक्षाओं को पढ़ाने वाले शिक्षक का मुख्य कर्त्तव्य है—
(A) छात्र का आदर करना (B) छात्र को पुचकारना
(C) छात्र को समझना (D) मात्र शिक्षण करना **[C]**

26. वस्तुनिष्ठ परीक्षण का गुण नहीं है—
(A) वस्तुनिष्ठता (B) विश्वसनीयता
(C) विभेदीकरण (D) आत्मनिष्ठता **[D]**

27. निष्पत्ति परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है—
(A) छात्र के शैक्षिक विकास का पता लगाने के लिए।
(B) छात्र की पूर्व योग्यता का पता लगाने के लिए।
(C) छात्र के चारित्रिक विकास का पता लगाने के लिए।
(D) छात्र के सांवेगिक विकास का पता लगाने के लिए। **[A]**

28. एक शब्द में उत्तर देने योग्य सरल प्रत्यास्मरण प्रश्नों को वर्गीकृत किया जा सकता है—
(A) अति लघुत्तरात्मक प्रकार (B) वस्तुनिष्ठ प्रकार
(C) लघुत्तरात्मक प्रकार (D) आत्मनिष्ठ प्रकार **[B]**

Part-IV • शिक्षा मनोविज्ञान [Education Psychology]

1 शिक्षा मनोविज्ञान

❖ **रूडोल्फ गोइइक्ले** ने अपनी पुस्तक **'साइकोलोजिया' (Psychologia)** में मनोविज्ञान (Psychology) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया। मनोविज्ञान का **आदिजनक** (Founder) **अरस्तू (Aristotle)** को माना जाता है जबकि **आधुनिक मनोविज्ञान का जनक (Father of Modern Psychology) विलियम जेम्स (William James)** को माना जाता है।

❖ **वुडवर्थ** के अनुसार, ''मनोविज्ञान ने सर्वप्रथम अपनी आत्मा का त्याग किया फिर इसने अपने मन को त्याग दिया फिर चेतना को त्यागा और वर्तमान में व्यवहार की विधि को अपनाए हुए है।''

❖ **मैकडूगल** के अनुसार, ''मनोविज्ञान एक विज्ञान है जिसका उद्देश्य सभी प्रकार से प्राणी के व्यवहार का नियंत्रण करने और उसे अच्छी तरह से समझने में सहायता प्रदान करना है।''

❖ **मॉर्गन** के अनुसार, ''मनोविज्ञान मानव एवं पशु व्यवहार का विज्ञान है।''

❖ **स्कीनर** के अनुसार, ''मनोविज्ञान व्यवहार और अनुभव का विज्ञान है।''

❖ **वॉटसन** के अनुसार, ''मनोविज्ञान व्यवहार का सकारात्मक विज्ञान है।''

❖ **एबिंगहॉस** के अनुसार, ''मनोविज्ञान का भूतकाल अत्यन्त लम्बा है लेकिन इसका इतिहास काफी छोटा है।''

❖ मनोविज्ञान के प्रमुख कार्य क्षेत्र निम्नलिखित हैं—
 ✧ शिक्षण (Teaching) ✧ शोध (Research)
 ✧ उपयोग (Application)

शिक्षा मनोविज्ञान

❖ शिक्षा मनोविज्ञान की उत्पत्ति प्रसिद्ध मनोवैज्ञानिक **एडवर्ड ली थॉर्नडाइक** के प्रयासों के फलस्वरूप 1900 ई. से मानी जाती है।

❖ **ई.एल थॉर्नडाइक, जुड, टर्मन, स्टेनले हॉल** इत्यादि मनोवैज्ञानिकों के अनवरत प्रयासों के फलस्वरूप शिक्षा मनोविज्ञान ने 1920 ई. में स्पष्ट और निश्चित स्वरूप धारण किया अर्थात् शिक्षा मनोविज्ञान ने मनोविज्ञान की एक स्वतंत्र शाखा के रूप में अपने आप को स्थापित किया।

❖ ई.एल. थॉर्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है।

❖ थॉर्नडाइक की शिक्षा से संबंधित महत्त्वपूर्ण पुस्तक **'शिक्षा मनोविज्ञान'** (Educational Psychology) है, जिसका प्रकाशन 1903 ई. में हुआ।

शिक्षा मनोविज्ञान का अर्थ एवं परिभाषाएँ

❖ शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की एक ऐसी अनुप्रयुक्त (Applied) एवं व्यवहारात्मक (Behavioural) शाखा है जिसमें मनोविज्ञान के नियम, सिद्धांत, विषय-वस्तु एवं क्रियाविधि इत्यादि का शिक्षा के क्षेत्र में प्रयोग किया जाता है तथा विद्यार्थी के व्यवहार का शैक्षिक वातावरण के संदर्भ में अध्ययन किया जाता है।

❖ **बी.एफ. स्किनर** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण व अधिगम से संबंधित है।''

❖ **क्रो** एवं **क्रो** के अनुसार ''शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने संबंधी अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करती है।''

❖ **स्किनर** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शिक्षा से संबंधित संपूर्ण व्यवहार और व्यक्तित्व आ जाता है।''

❖ **स्टीफन** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान बालक के शैक्षिक वृद्धि एवं विकास का व्यवस्थित अध्ययन है।''

❖ **ऐलिस क्रो** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान वैज्ञानिक विधि से प्राप्त किए जाने वाले मानव-प्रतिक्रियाओं के उन सिद्धांतों के प्रयोग को प्रस्तुत करती है जो शिक्षण और अधिगम को प्रभावित करते हैं।''

❖ **जेम्स ड्रेवर** के अनुसार, ''शिक्षा मनोविज्ञान प्रयुक्त मनोविज्ञान की एक ऐसी शाखा है जो शिक्षा में मनावैज्ञानिक नियमों एवं परिणामों के उपयोग से तथा समस्याओं के वैज्ञानिक अध्ययन से संबद्ध होती है।''

शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति

❖ शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति के संबंध में मनोवैज्ञानिकों द्वारा निम्नलिखित मत स्वीकार किए गए हैं—

1. **शिक्षा मनोविज्ञान की प्रकृति वैज्ञानिक/विज्ञानमयी है**—शिक्षा मनोविज्ञान को विज्ञान मानने के निम्नलिखित आधार प्रमुख हैं—
 ✧ शिक्षा मनोविज्ञान के नियम व सिद्धांत निरीक्षण तथा परीक्षण योग्य हैं।
 ✧ शिक्षा मनोविज्ञान के नियम व सिद्धांत मनोविज्ञान की तरह सार्वभौमिक व सर्वमान्य हैं।
 ✧ शिक्षा मनोविज्ञान एक तर्क संगत विज्ञान है।
2. **शिक्षा मनोविज्ञान एक व्यावहारिक एवं अनुप्रयुक्त विज्ञान है**—शिक्षा मनोविज्ञान के अंतर्गत शैक्षिक परिस्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान के नियमों एवं सिद्धांतों का प्रयोग मानव के सर्वांगीण विकास के लिए किया जाता है इसलिए इसे मनोविज्ञान की अनुप्रयुक्त शाखा के अंतर्गत रखा गया है।
3. **शिक्षा मनोविज्ञान एक सामाजिक विज्ञान है**—शिक्षा मनोविज्ञान को शुद्ध/प्राकृतिक विज्ञानों में न रखकर सामाजिक विज्ञानों के अंतर्गत रखा गया है क्योंकि मानव व्यवहार की गत्यात्मकता के कारण इसमें इतना सटीक पूर्वकथन नहीं किया जा सकता है जितना प्राकृतिक विज्ञान में किया जा सकता है।
4. **शिक्षा मनोविज्ञान एक धनात्मक/सकारात्मक विज्ञान है**—मानव के व्यक्तित्व विकास एवं प्रगति में शिक्षा मनोविज्ञान का अत्यधिक महत्त्व है इसलिए इसे सकारात्मक विज्ञान कहा जाता है।
5. मनोविज्ञान में जीवधारियों (प्राणियों) के जीवन की समस्त क्रियाओं से संबंधित व्यवहार का अध्ययन होता है जबकि शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक संदर्भों/पृष्ठभूमि में विद्यार्थी के व्यवहार का अध्ययन करने तक ही अपने

का अनियमित आकार, अक्षरों की आकृति या तिरछा मिश्रण, अधूरा शब्द या अक्षर, छोड़े गए शब्दों और वर्तनी की अनेक त्रुटियाँ, अच्छे कौशल की कठिनाई, लिखते समय दर्द या मांसपेशियों में ऐंठन आदि समस्याओं का सामना करता है।

❖ **डिसग्राफिया** विकार जो मुख्यतः लेखन या टाइपिंग के दौरान ही व्यक्त होता है हालांकि कुछ मामलों में यह आँखों और हाथों के समन्वय गाँठ बाँधने या दोहरावदार जैसे दिशापरक या अनुक्रम सम्बन्धित कार्यों को करने आदि में समस्या उत्पन्न कर सकता है।

❖ **डिस्ग्राफिया डिसप्राक्सिया** से भिन्न है। **जब व्यक्ति लेखन सम्बन्धी व्यतिक्रम** (Over Lapping) **करता है तो इसे 'डिस्प्रेक्सिया'** कहते हैं।

❖ **डिस्प्रैक्सिया (Dyspraxia)**—इस प्रकार की विकृति में बालक में गति एवं समन्वयात्मक (Co-ordination) कठिनाइयाँ उत्पन्न होती है जिसके कारण उसका हस्तलेखन नकारात्मक रूप से प्रभावित होता है।

❖ **डिस्ग्राफिया (Dysgraphia)**—इसमें मस्तिष्क में समन्वय के अभाव के कारण बालक को सुसंगत तरीके से लिखने में कठिनाई होती है तथा वह वर्णमाला से संबंधित अशुद्धियाँ लेखन में त्रुटियाँ इत्यादि करता है।

❖ **अप्रेक्सिया (Apraxia)**—इसमें भी पेशीय तथा गति से संबंधित समस्याओं के कारण बालक को लिखने में कठिनाई आती है।

❖ **अग्रेफिया (Agraphia)**—मस्तिष्क के संज्ञानात्मक, भाषात्मक तथा संवेदी क्षेत्र में विकृति के कारण अग्रेफिया होता है। अग्रेफिया में व्यक्ति शुद्ध रूप से भाषा को नहीं लिख पाता है।

❖ इसे **'डिस्कालकूलिया'** (Dyscalculia) कहा जाता हैं। **डिसकल्क्यूलिया** एक स्नायुविक स्थिति है जिसमें मनुष्य को कुछ सीखने में या संख्याओं के साथ कठिनाई होती है। प्रायः इससे ग्रस्त लोग गणित की जटिल अवधारणाओं और सिद्धान्तों को तो समझ लेते हैं किन्तु गणितीय सूत्रों को समझने या साधारण गुणाभाग करने में उन्हें समस्या आती है।

❖ यह सामान्यतः एक विकासात्मक विकार है। अंकगणित विकास में सामान्यतः सीखने में या गणित को समझने में समस्या होती है।

अधिगम की प्रमुख अयोग्यताएँ

1.	**डिस्लेक्सिया**	पठन/वाचन अयोग्यता
2.	**डिस्ग्राफिया**	लेखन विकार
3.	**डिस्आर्थोग्राफिया**	वर्तनी विकार
4.	**डिस्प्रेक्सिया**	लेखन सम्बन्धी व्यतिक्रम
5.	**एफासिया**	वाचन, लेखन, भाषा में अयोग्यता
6.	**सेन्सरी एफासिया**	समझने की शक्ति की हानि
7.	**मोटर एफासिया**	बोलने/विचार-विमर्श की हानि
8.	**अलेक्सिया**	वाचन योग्यता की हानि (शब्द दृष्टिहीनता)
9.	**एकाल कूलिया**	गणितीय योग्यता की कमी
10.	**एग्राफिया**	लेखन की अयोग्यता
11.	**डिस्कालकूलिया**	गणितीय विकार

बहुविकल्पीय प्रश्नोत्तर

1. ज़ीन पियाजे के अनुसार संज्ञानात्मक विकास की अंतिम अवस्था कौनसी है?
(A) संवेदिक पेशीय अवस्था (B) अमूर्त संक्रियात्मक अवस्था
(C) उत्तर संक्रियात्मक अवस्था (D) मूर्त संक्रियात्मक अवस्था **[B]**

2. ज्यादातर बच्चे प्रथम सार्थक शब्द इस उम्र में बोलते हैं—
(A) 3 महीने में (B) 6 महीने में
(C) 35-40 महीने में (D) 10-13 महीने में **[D]**

3. शारीरिक विकास का क्षेत्र है—
(A) स्नायुमण्डल (B) माँसपेशियों की वृद्धि
(C) एंडोक्राइन ग्लैण्ड्स (D) उपरोक्त सभी **[D]**

4. 6 से 10 वर्ष की अवस्था में बालक रुचि लेना प्रारम्भ करते हैं—
(A) धर्म में (B) मानव शरीर में
(C) यौन सम्बन्धों में (D) विद्यालय में **[D]**

5. 'जीवन, अस्तित्व के संघर्ष और उत्तरजीविता की एक सतत् श्रृंखला प्रस्तुत करता है ।' ये किसके द्वारा कहा गया है?
(A) डार्विन (B) शेफर (C) जरसेड (D) स्पेन्सर **[A]**

6. पियाजे द्वारा दिए गए संज्ञानात्मक विकास के सिद्धांत में निम्नलिखित में से कौन सा विकास का प्रमुख 'काल' नहीं है ?
(A) संवेदीप्रेरक स्थिति (B) पूर्व-संक्रियात्मक स्थिति
(C) चक्रीय चरण (D) औपचारिक प्रचालन **[C]**

7. कौन सिद्धान्त व्यक्त करता है कि मानव मस्तिष्क एक बर्फ की बड़ी चट्टान के समान है जो कि अधिकांशतः छिपी रहती है एवं उसमें चेतन के तीन स्तर हैं—
(A) गुण सिद्धान्त (B) प्रकार सिद्धान्त
(C) मनोविश्लेषणात्मक सिद्धान्त (D) व्यवहारवाद सिद्धान्त **[C]**

8. जीन्स का जोड़ा, जो विशेष गुणसूत्र पर एक विशिष्ट स्थान अधिगृहित करता है तथा समान गुण को नियंत्रित करता है, ... कहा जाता है।
(A) कार्योटाइप (B) आर.एन.ए.
(C) ऐलील (D) आटोसॉम्स् **[C]**

9. सीखने की प्रक्रिया का क्रम क्या है?
(a) बाधा (b) लक्ष्य
(c) अभिप्रेरक (d) सफल प्रयत्न
(e) विभिन्न अनुक्रियाएँ
कूट: (A) a, b, c, d, e (B) a, d, e, c, b
(C) c, e, a, d, b (D) b, e, a, d, c **[C]**

10. बाल विकास में वातावरण की भूमिका ____ के द्वारा सबसे सही रूप में प्रतिबिम्बित होती है।
(A) स्वभावगत प्रवृत्तियाँ (B) व्यक्तित्व की प्रकृति
(C) प्राथमिक प्रतिक्रिया के तरीके (D) आदत निर्माण **[D]**

11. मानव विकास किन दोनों के योगदान का परिणाम है—
(A) अभिभावक एंव अध्यापक का
(B) सामाजिक एवं सांस्कृतिक कारकों का
(C) वंशक्रम एवं वातावरण का
(D) इनमें से कोई नहीं **[C]**

12. ''वातावरण वह बाहरी शक्ति है जो हमें प्रभावित करती है।'' यह परिभाषा किसने दी?
(A) रॉस (B) निम्बर्ट
(C) वुडवर्थ (D) बोरिंग व लैंगफील्ड **[A]**

13. स्वभाव में व्यक्तिगत विभिन्नताएँ आधारभूत रूप से .... होती हैं।

1 सूचना प्रौद्योगिकी

- सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology - IT) वह तकनीक है, जिससे हम **सूचना (Information) को एकत्रित (Collect), संग्रहीत (Store), संसाधित (Process) और साझा (Share)** कर सकते हैं। यह मुख्य रूप से कंप्यूटर, इंटरनेट, सॉफ्टवेयर और नेटवर्किंग पर आधारित होती है।
- आईटी (IT) वह तकनीक है, जो हमें डिजिटल रूप में सूचना को संभालने और दुनिया भर में प्रसारित करने में मदद करती है अर्थात् डाटा को एकत्रित करने, भण्डारित करने, डाटा को सूचना में बदलने और सूचना को दुनिया भर में संचारित करने के लिए प्रयुक्त की जाने वाली प्रविधि 'सूचना प्रौद्योगिकी' कहलाती है।
- जब हम कंप्यूटर, मोबाइल, इंटरनेट और सॉफ्टवेयर की मदद से किसी भी सूचना को बनाते, सेव करते, भेजते या उपयोग करते हैं, तो यह सूचना प्रौद्योगिकी कहलाती है।
- सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) में ऐसे सभी उपकरण शक्ति है जो इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से अंकीय प्रारूप में सूचना का भण्डारण, प्रकलन (Calculation), संचरण एवं सूचना की प्राप्ति करते हैं।
- पर्सनल कम्प्यूटर (PC), रेडियो, मोडेम, टेलीफोन, ब्रॉडबैन्ड आदि सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के उदाहरण हैं।
- IT पर आधारित शिक्षण में **विद्यार्थी केन्द्रित** अधिगम स्थिति को महत्व दिया जाता है।
- **संयुक्त राष्ट्र की रिपोर्ट** (United Nations Report 1999) के अनुसार, ICT के अन्तर्गत इंटरनेट सेवा-सुविधाएँ, दूरसंचार संसाधन तथा सेवाएँ, सूचना प्रौद्योगिकी (Information Technology) संसाधन तथा सेवाएँ, मीडिया तथा प्रसारण, पुस्तकालय तथा प्रलेखीकरण (Documentation) केन्द्र, व्यवसायिक सूचना प्रदानकर्त्ता, नेटवर्क पर आधारित सूचना सेवाएँ तथा दूसरी सूचना संप्रेषण गतिविधियाँ सम्मिलित हैं।
- **यूनेस्को** (UNESCO-2002) के अनुसार, सूचना तथा संप्रेषण तकनीक (ICT) को सूचना तकनीक (Information Technology) की दूसरी संबंधित तकनीक से संयोजन के रूप में समझा जाना चाहिये, विशेषतः सम्प्रेषण तकनीक (Communication -Technology) से।
- सूचना प्रौद्योगिकी में **कम्प्यूटर** एवं **संप्रेषण तकनीकी** (Computing & Communication Technology) को शामिल किया जाता है।
- सूचना प्रौद्योगिकी के विभिन्न पक्ष- हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर, सम्बद्धता (Connectivity), दूर संचार (Tele-Communication), विज्ञान व मानव-कम्प्यूटर इंटरफेस इत्यादि हैं।
- **यूनेस्को (UNESCO) के अनुसार,** ''वैज्ञानिक तकनीकी एवं इंजीनियरिंग अनुशासन तथा प्रबंधकीय तकनीकें जो सूचना को सम्भालने, संशोधन व प्रयोग के लिए इस्तेमाल की जाती हैं का कम्प्यूटर उन मानव व मशीनों के साथ अंतर्क्रिया तथा संबंधित सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक मुद्दों का आपसी मेल ही सूचना संप्रेषण तकनीकी है।
- **प्रो. पीटर्स के अनुसार,** ''यह एक नवीन एवं उभरती हुई, विशिष्ट आवश्यकताओं की पूर्ति करने वाली एक शैक्षिक प्रक्रिया है, जिसमें समय और स्थान के आयामों का शिक्षण और अधिगम में कोई हस्तक्षेप नहीं होता है। इस तकनीकी के माध्यम से दूरस्थ छात्रों को भी उत्तम गति से शिक्षा प्रदान की जा सकती है।''
- **श्रीमती आर. के. शर्मा के अनुसार,** ''सूचना एवं संप्रेषण तकनीकी का आशय उन समस्त संचार साधनों के व्यावहारिक प्रयोग की ओर संकेत करता है, जो मानव के कल्याण एवं आवश्यकता पूर्ति हेतु सूचनाओं का आदान-प्रदान करते हैं।''
- **प्रो. एस. के दुबे के अनुसार,** ''आई.सी.टी (ICT) का आशय संचार साधनों की व्यवस्था के कुशलतम संचालन से है, जो सूचनाओं को एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रेषित करने में सहायता करती हैं।''
- आई.सी.टी. (ICT) में सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के साथ-साथ दूरभाष संचार, प्रसारण मीडिया और सभी प्रकार के ऑडियो और वीडियो प्रकरण एवं संप्रेषण शामिल हैं।
- सूचना प्रौद्योगिकी की व्यापक परिभाषा के तहत रेडियो, टीवी, वीडियो, डीवीडी, टेलीफोन, मोबाईल, सैटेलाइट प्रणाली, कम्प्यूटर तथा नेटवर्क, हार्डवेयर एवं सॉफ्टवेयर आदि सभी आते हैं। इसके अलावा इन प्रौद्योगिकियों से जुड़ी हुई सेवाएँ और उपकरण जैसे-वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, ई-मेल और ब्लॉग्स आदि भी आई.सी.टी के दायरे में आते हैं।

सूचना प्रौद्योगिकी की मूलभूत अवधारणाएँ

- शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थी के व्यवहार में समुचित परिवर्तन करना है। इस व्यवहार परिवर्तन के कुशलतापूर्वक सम्पन्न होने का उत्तरदायित्व शिक्षक पर है। अतः शिक्षण तकनीकी एवं IT विद्यार्थी के अन्दर यथेष्ट अधिगम व्यवहार उत्पन्न करने में प्रमुख एवं महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
- सूचना प्रौद्योगिकी का सीधा संबंध व्यवहारिक परिस्थितियों से है, इन परिस्थितियों की रचना, उनकी प्रभाविता और उनका मूल्यांकन सूचना प्रौद्योगिकी के द्वारा संभव है।
- शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार एवं उसे उत्पन्न करने वाले साधन तन्त्र को जिस सीमा तक पहचानना एवं परिभाषित करना संभव होता है, उसी सीमा तक उपयुक्त शैक्षिक प्रौद्योगिकी एवं IT का प्रयोग किया जा सकता है।
- सूचना प्रौद्योगिकी (IT) के माध्यम से एक ऐसे साधन तंत्र की कल्पना की जा सकती है, जो शिक्षण उद्देश्यों को उपलब्ध कराने में पूर्ण सक्षम हो।
- इसके द्वारा विद्यार्थियों की व्यक्तिगत विभिन्नताओं को ध्यान में रखते हुए, उन्हें सीखने का अवसर दिया जा सकता है।
- इसके द्वारा विद्यार्थी को समुचित पुनर्बलन (Reinforcement) दिया जा सकता है।
- इसके द्वारा पाठ्यवस्तु को छोटे-छोटे तत्त्वों में विभाजित कर, उन्हें विद्यार्थियों के सम्मुख स्वतन्त्रापूर्वक प्रस्तुत किया जा सकता है।

10. नेटवर्क के प्रकार हैं—
(A) LAN (B) MAN
(C) WAN (D) All of the Above **[D]**

11. एक वेब पेज को इन्टरनेट पर प्रस्तुत करने के लिए आवश्यक हैं—
(A) वेब सर्वर (B) वेब ब्राउजर
(C) इन्टरनेट कनेक्शन (D) उपर्युक्त सभी **[D]**

22. निम्न में से किसे आउटपुट डिवाइस कहा जाता है?
(A) जॉयस्टिक (B) मॉनीटर
(C) सी.पी.यू. (D) पेन-ड्राइव **[B]**

23. निम्न में से कौन सा एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर नहीं है?
(A) वर्ड प्रोसेसर (B) एन्टीवायरस प्रोग्राम
(C) ऑपरेटिंग सिस्टम (D) रेल रिजर्वेशन सिस्टम **[C]**

14. SMPS का पूर्ण रूप बताएँ—
(A) Simple Mode Power Supply
(B) Switched Mode Power Supply
(C) Simple Multiple Power Supply
(D) Switched Multiple Power Supply **[B]**

15. कम्प्यूटर में मेमोरी का मापन किसमें होता है?
(A) Bits (B) Hertz
(C) Volts (D) उक्त में से कोई नहीं **[A]**

16. सर्च इंजन हैं—
(A) Yahoo.com (B) Khoj.com
(C) Altavista.com (D) उपरोक्त सभी **[D]**

17. निम्न में से कौनसी प्राथमिक स्मृति युक्ति है?
(A) रैम (B) CD रोम
(C) हार्डडिस्क (D) पैन ड्राइव **[A]**

18. ALU किसका संक्षिप्त रूप है—
(A) Arithmatic Legal Unit
(B) Arithmetic Logic Universal
(C) Arithmetic Logic Unit
(D) Arithmetic Loyer Unit **[C]**

19. USB पोर्ट का तात्पर्य है-
(A) यूनाइटेड सीरियल बस पोर्ट
(B) यूनिवर्सल सीरियल बस पोर्ट
(C) यूनिवर्सल सीरियल सीरियल पोर्ट
(D) यूनिवर्सल BIOS पोर्ट **[B]**

20. निम्नलिखित में से कम्प्यूटर में प्रयुक्त सबसे तेज (सबसे उच्च गति वाली) मेमोरी हैं—
(A) सीडी रोम (B) रैम (C) रजिस्टर (D) कैश **[C]**

21. MODEM का पूरा नाम क्या हैं?
(A) Main Digital (B) Modulator Demodulator
(C) Modulator Data (D) Modulator Discom **[B]**

22. कम्प्यूटर सिस्टम की विशेषताएँ है—
(A) गति (B) सार्वभौमिकता
(C) कर्मठता एवं परिशुद्धता (D) उपरोक्त सभी **[D]**

23. निम्नलिखित में सें सॉफ्टवेयर के प्रकार है—
(A) सिस्टम सॉफ्टवेयर (B) एप्लीकेशन सॉफ्टवेयर
(C) यूटिलिटि सॉफ्टवेयर (D) उपरोक्त सभी **[D]**

24. कम्प्यूटर में उपयोग किए जाने वाले उपकरण कहलाते हैं—
(A) सॉफ्टवेयर (B) हार्डवेयर (C) फ्लॉपी (D) सीपीयू **[B]**

25. निम्न में से सबसे बड़ा नेटवर्क हैं।
(A) LAN (B) WAN (C) SAN (D) PAN **[B]**

26. भारत का पहला सुपर कम्प्यूटर है—
(A) क्रे (B) तनिष्क (C) परम-8000 (D) सम्मिट **[C]**

27. Internet का उपयोग कर सकते हैं—
(A) E-mail के लिए
(B) File Download के लिए
(C) दूसरे लोगों से Online Chat के लिए
(D) उपरोक्त सभी **[D]**

28. निम्नांकित में से किसे कम्प्यूटर का मस्तिष्क कहा जाता है?
(A) इनपुट उपकरण (B) सी.पी.यू
(C) आउटपुट उपकरण (D) प्रिंटर **[B]**

29. यू.आर.एल. का पूर्ण रूप है—
(A) यूनिफॉर्म रिसोर्स लिंक (B) यूनिफॉर्म रजिस्टर्ड लिंक
(C) यूनिफाइड रिसोर्स लिंक (D) यूनिफॉर्म रिसोर्स लोकेटर **[D]**

30. .... एप्लीकेशन का प्रयोग प्रस्तुतिकरण (presentation) के लिये किया जाता है—
(A) M.S. Word (B) M.S. Access
(C) M.S. Excel (D) M.S. Powerpoint **[D]**

31. नोटपैड किस प्रकार का सॉफ्टवेयर है?
(A) फोटो एडिटिंग (B) सिस्टम सॉफ्टवेयर
(C) टेक्स्ट एडिटर (D) उपरोक्त सभी **[C]**

32. ई-शासन द्वारा उपलब्ध करवाई जाने वाली सेवा है?
(A) ई-नागरिक (B) ई-परिवहन (C) ई-शिक्षा (D) उक्त सभी **[D]**

33. सूचना प्रौद्योगिकी के उपयोग कौन-कौनसे हैं?
(A) ई शासन (B) डिजिटल इंडिया कार्यक्रम
(C) ई-मित्र (D) उक्त सभी **[D]**

34. शिक्षण में इंटरनेट का सबसे अच्छा उपयोग क्या है?
(A) ऑडियो-विजुअल मीडिया के माध्यम से सामग्री प्रस्तुत करने के लिए
(B) नवीनतम जानकारी प्रदान करने के लिए
(C) एक शिक्षक के समय और ऊर्जा की बचत के लिए
(D) सीखने को अंतःक्रियात्मक बनाने के लिए **[D]**

35. इंटरनेट का मुख्य उपयोग है?
(A) संचार (B) शिक्षा
(C) वित्तीय लेनदेन (D) उपरोक्त सभी **[D]**

36. कौनसा रोजगार सूचना प्रौद्योगिकी क्षेत्र में सम्मिलित है?
(A) डाटाबेस मेनेजर (B) वेब डेवलपर
(C) सिस्टम एडमिनिस्ट्रेटर (D) उक्त सभी **[D]**

37. सोशल नेटवर्किंग प्लेटफार्म का उदाहरण है—
(A) फेसबुक (B) ट्विटर
(C) इन्स्टाग्राम (D) उपर्युक्त सभी **[D]**

38. सूचना प्रौद्योगिकी अधिनियम का कौनसा सेक्शन कम्प्यूटर सिस्टम की हैंकिंग करने पर दण्ड का प्रावधान करता है—
(A) सेक्शन 65 (B) सेक्शन 66
(C) सेक्शन 62 (D) सेक्शन 67 **[B]**

39. ऑनलाइन/डिजिटल भुगतान के माध्यम हैं—
(A) नेट बैंकिंग (B) डेबिट/क्रेडिट कार्ड
(C) मोबाइल वॉलेट, प्वाइंट ऑफ टर्मिनल
(D) उपर्युक्त सभी **[D]**

40. E-Commerce में 'E' का मतलब है?
(A) Electric (B) Electronic
(C) Easy (D) Equity **[B]**

दक्ष की पुस्तकें Online Order करने के लिए www.dakshbooks.com पर जायें

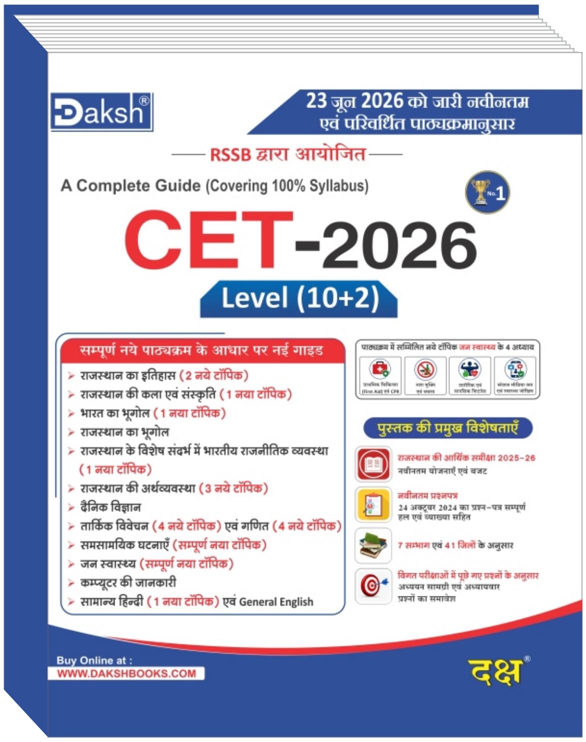

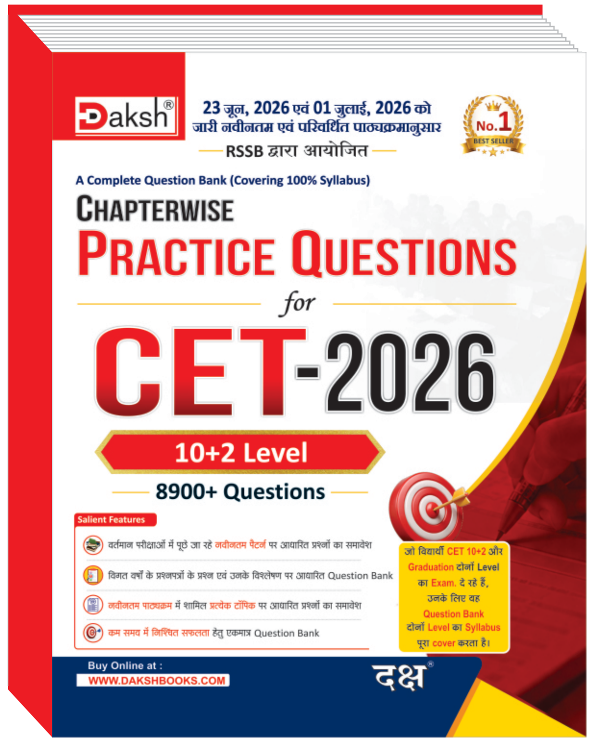

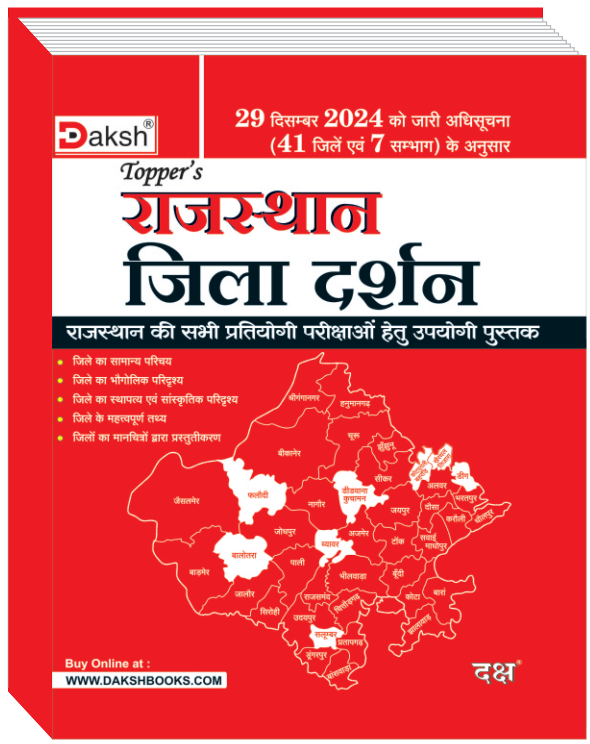

DAKSH PUBLICATIONS

(A Unit of College Book Centre)

A-19, Sethi Colony, Jaipur (Raj.)

Contact : 98291-49659

Code No. D-973	₹ 640/-

इस पुस्तक को ONLINE खरीदने हेतु

WWW.DAKSHBOOKS.COM

पर ORDER करें

★ SPECIAL DISCOUNT + FREE DELIVERY ★